रामाश्वमेध

उत्तर रामायण

रामाश्वमेध

उत्तर रामायण

संपादक

प्रो० इन्द्रजित पाण्डेय डॉ० विद्याधर मिश्र
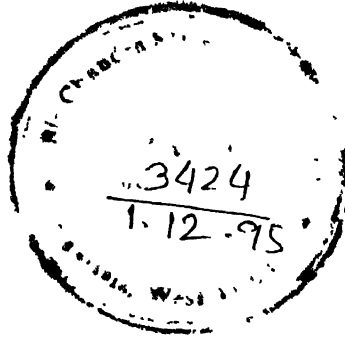
प्रकाशक

जीवन-ज्योति न्यास

५-६, पन्नालाल बनर्जी लेन (फैन्सी लेन)

कलकत्ता-७०० ००१

प्रकाशक

जीवन-ज्योति न्यास
५-६, पन्नालाल बनर्जी लेन (फैन्सी लेन)
कलकत्ता-७०० ००१

वितरक

भाषा-भवन
१०६-बी, अमहर्स्ट स्ट्रीट, कलकत्ता-७०० ००६
दूरभाष-३५०१७६५

मूल्य : २५० रु० (दो सौ पचास रुपए)

मुद्रक

अरुण कुमार द्विवेदी
भारत पेपर एण्ड बोर्ड कम्पनी
१०६-बी, अमहर्स्ट स्ट्रीट, कलकत्ता-७०० ००६
दूरभाष-३५०१७६५

प्रतिवेदन

भक्ति-रसामृत-पान का सुअवसर प्रभु के असीम अनुग्रह पर अवलम्बित है। ब्रह्म की निर्गुण-भक्ति और सगुण-भक्ति, दोनों मेरे मानस को सदा से मुग्ध करती रही हैं। निर्गुण-भक्ति जहाँ एक ओर अपनी रहस्यात्मक गोपनीयता के फलस्वरूप मन को रिझाती रही है, वहीं सगुण-भक्ति अपनी मधुरता और सहजता से तादात्म्य प्रदान करती रही है। राम-कथा-साहित्य के प्रति मेरे हृदय में एक रागात्मक प्रेरणा का अंकुरण मेरी जननी ने तुलसीदास के गीतों को गुनगुना कर बाल्यावस्था में ही कर दी थीं। परिवार में सदा साहित्यकारों, संगीतज्ञों तथा साधु-संतों के समागम से मेरा एक भक्तिमय मानस निर्मित हो गया था।

पूज्य गुरुवर प्रोफेसर पाण्डेय जी ने जब मुझे बताया कि 'रामाश्वमेध' ग्रन्थ अब अप्राप्य है और आचार्य शुक्ल ने उसे सभी तरह से रामचरित मानस का परिशिष्ट माना है और शैली की दृष्टि से रामचरित मानस का सा ही है, तभी मेरी जिज्ञासा उस ग्रन्थ को देखने की हो गई थी।

प्रभु राम की अनुपम कृपा से जैसे ही मेरे सम्मुख डॉ॰ विद्याधर जी मिश्र, वर्द्धमान विश्वविद्यालय (वर्द्धमान) ने रामाश्वमेध की पाण्डुलिपि प्रस्तुत की, मैंने इसके प्रकाशन का दायित्व स्वीकार कर लिया। आज इस ग्रन्थ को पूर्ण देखकर मैं आत्म-विभोर हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हिन्दी राम-भक्ति-काव्य के अध्येताओं, समीक्षकों और शोध-कर्त्ताओं को इस ग्रन्थ को पुनः प्रकाशित देखकर असीम हर्ष का बोध होगा। ग्रन्थ-प्रकाशन के इस पुनीत अवसर पर मैं अपने दादा स्वनामधन्य स्वर्गीय भगीरथ जी कानोड़िया, पिता श्रीतुलसीदास जी कानोड़िया माता श्रीमती उर्मिला जी कानोड़िया एवम् स्नेहमयी धर्मपत्नी सुश्री वीणा के प्रति आभार प्रकट करना कर्त्तव्य समझता हूँ, जिनकी प्रत्यक्ष और परोक्ष प्रेरणा-अनुप्रेरणा का ही पुण्य फल इस ग्रन्थ का समर्पण है।

गुरुपूर्णिमा,
वि॰ स॰ २०५०

निवेदक
राजीव लोचन कानोड़िया

भूमिका

वेदों का समस्त ज्ञान भंडार अकेले 'यज्ञ' ही में निहित है। वैदिक ज्ञान यज्ञों से ही ओत-प्रोत है। यज्ञ शब्द 'यज्' धातु से बना है। यज् धातु का अर्थ है देवपूजा, सङ्गतिकरण और दान। समस्त जड़ और चेतन जगत् को परस्पर एक दूसरे से लाभ पहुँचाना ही यज्ञ है। "यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म।"[1] अर्थात् यज्ञ श्रेष्ठतम कर्म कहा गया है। इन यज्ञों के तीन विभाग हैं—कर्म-यज्ञ[2], ज्ञानयज्ञ[3] और उपासना[4] यज्ञ। इन्हीं तीनों प्रकार के यज्ञो मे वेद का लौकिक और पारलौकिक ज्ञान चरितार्थ होता है। ब्राह्मण और सूत्र ग्रन्थों में यज्ञों के अनेकों प्रकार विस्तार से वर्णित हैं, परन्तु बीज रूप से अथर्ववेद मे कतिपय यज्ञों का वर्णन निम्नलिखित है—

राजसूयं वाजपेयमग्निष्टोमस्तदध्वरः।
अर्काश्वमेधावुच्छिष्टे जीवबर्हिर्मदिन्तमः ॥७॥
अग्न्याधेयमथो दीक्षा कामप्रश्छन्दसा सह: ॥८॥
अग्निहोत्रं च श्रद्धा च वषट्कारो व्रतं तपः ॥९॥
चतुर्होतार आप्रियश्चातुर्मास्यानि नीविदः ॥

(—अथर्व ११/७)

इन मंत्रों में राजसूय, वाजपेय, अग्निष्टोम, अश्वमेध, अग्निहोत्र, अग्न्याधान और चातुर्मास्य का उल्लेख आता है। अथर्ववेद के गोपथ ब्राह्मण मे भी इन

1. शतपथ ब्राह्मण—१-७-४५
2. षोडश संस्कार विवाह, संतान, शिक्षा, आहार, वस्त्र, गृह, समाज, राज्य, कृषि, पशुपालन, संगीत, गणित, भूगोल, ज्योतिष, वैभव, रसायन, भवन निर्माण, यन्त्र, शस्त्र, वाहन और युद्ध विद्या आदि पदार्थ और विद्याएँ।
3. ईश्वर, जीव, पुनर्जन्म, कर्मफल, सृष्टि, प्रलय, वर्ण, आश्रम और स्वाध्याय आदि।
4. सदाचार दया, प्रेम, दर्शन, भक्ति, वैराग्य, योग और समाधि आदि क्रियाएँ।

यज्ञों का जिस क्रम से वर्णन है, वह उल्लेखनीय है—अग्न्याधान, पूर्णाहुति, अग्निहोत्र, राजसूय, वाजपेय, अश्वमेध, पुरुषमेध, सर्वमेध ।

'राज्ञ: एवं सूयं कर्म ।[1] राजा वै रायसूयेन इष्टवा भवति ।—अर्थात् राजसूय से ही राजा होता है। इसी क्रम में 'अश्वमेध' यज्ञ की व्याख्या करते हुए शतपथ ब्राह्मण में स्पष्ट कहा गया है कि सभी देवता अश्वमेध में आते हैं अश्वमेध करने वाला सभी दिशाओं को जीतने वाला हो जाता है। ऐश्वर्य ही राज्य है और राष्ट्र ही अश्वमेध है एतदर्थ सम्राट के लिए अश्वमेध यज्ञ अवश्य करणीय है ।[2] वेदों में 'गोमेध यज्ञ' के माध्यम से समस्त पृथ्वी को मातृत्व-भाव से सम्पन्न करने का जहाँ मूल स्वर उच्चरित किया गया है वहीं 'अश्वमेध' यज्ञ के द्वारा सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य के मंत्र को अनुगूंजित किया गया है। वैदिक धर्म और वैदिक यज्ञों के प्रचार के लिए ही अश्वमेध यज्ञ आयोजित होते थे और साथ ही यज्ञ विद्वेषी अनार्यों, म्लेच्छों को दण्ड देकर आर्यधर्म की पुर्नस्थापना ही युद्ध का स्थायी लक्ष्य होता था। ब्राह्मणो, पुराणों में विशेषत: महाभारत में ऐसे अनेकों चक्रवर्ती राजाओ और उनके द्वारा आयोजित अश्वमेध यज्ञों का वर्णन आता है। ऐतरेय ब्राह्मण में जनमेजय, पारिक्षित, शार्यात, मानव, शतनीक, सात्रःजित, आम्बष्ठा, युधांश्रोष्ठि, सुदास, मरुत्त, भरत दौष्यन्ति, पाञ्चाल प्रभृति राजाओं के अश्वमेध यज्ञ का प्रमाण है ।[3] अश्वमेध यज्ञ सभी मनुष्यो को एक समान सुख–दुःख मे सम्मिलित करने के निमित्त, दुर्जन राजाओ के यज्ञ विद्वेषी म्लेच्छ विचारो के उच्छेद के शुभ उद्देश्य से आयोजित किये जाते रहे हैं। संक्षेप में यज्ञो का साभिप्राय सार्वजनिक दु:खों का निवारण और लोकमगल की प्रतिष्ठा ही है। अनेक जातीयता की भावना के विनष्टीकरण और साम्यभाव की स्थापना के समर्थन में वेदों मे वर्णित यज्ञों का स्वर निहित है ।[4]

---

1. शतपथ—१३/२/२/१
2. राजा वै एष यज्ञानां यद् अश्वमेध: । १३/२/२/१ ।
   सर्वा: वै देवता: अश्वमेधे अन्वयत्ता: तस्माद् अश्वमेधयाजी सर्वदिशो अभिजयन्ति: । श्रीर्वै राष्ट्रं । राष्ट्रं वै अश्वमेध: । तस्माद्राष्ट्री अश्वमेधेन यजेत् । १३/१/२/६/३
3. ऐतरेय ब्राह्मण, ८ प० ३६ अ० ३ से ६ खण्ड तक ।
4. ऋक् सहिता (१म मण्डल १६२ सूक्त) तैत्तिरीय संहिता ।

श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण में श्रीराम भरत और लक्ष्मण से राजधर्म की चरम सीमा रूप राजसूय यज्ञ के अनुष्ठान की अभिलाषा प्रकट करते हैं और राजसूय यज्ञ की महिमा का भी उल्लेख करते हैं—

कृतं मया यथा तथ्यं द्विजकार्यमनुत्तमम् ।
धर्मसेतुमथो भूयः कर्तुमिच्छामि राघवौ ।।३।।
अक्षयश्चाव्ययश्चैव धर्मसेतुर्मतो मम ।
धर्मं प्रवचनं चैव सर्वपापप्रणाशनम् ।।४।।

राजसूय यज्ञ को श्रीराम अक्षय एवम् अविनाशी फल देने वाला, धर्म का पोषक, समस्त पापों का नाश करने वाला और राजा के शाश्वत धर्म की प्रतिष्ठा तथा परमात्मा के भजन का उत्तम अनुष्ठान मानते हैं। परन्तु लोक मगल की कामना से अभिभूत भरत-हृदय राजसूय में पुरुषार्थी पुरुषों का संहार मानते हैं—

स त्वमेवविधं यज्ञमाहर्तासि कथं नृप ।
पृथिव्यां राजवंशानां विनाशो यत्र दृश्यते ।।१३।।
पृथिव्यां ये च पुरुषा राजन् पौरुषमागताः ।
सर्वेषां भवति तत्र संक्षयः सर्वकोपजः ।।१४।

भरत के अमृतमय उदार वचनों को सुनकर श्रीराम उनके वचनों को धर्म-संगत समस्त पृथ्वी की रक्षा करने वाला मानते हैं तथा राजसूय यज्ञानुष्ठान से इतर कोई यज्ञ करने की अभिलाषा व्यक्त करते हैं।

श्री भरत के कथन से प्रेरित होकर लक्ष्मण भगवान् राम से अश्वमेध यज्ञ के अनुष्ठान के आयोजन का अनुरोध करते हैं—

अश्वमेधो महायज्ञः पावन सर्वपाप्मनाम् ।
पावनस्तव दुर्धर्षो रोचतां रघुनन्दन ।।२।।[3]

'महाभारत' में उसके 'अनुगीता' पर्व में अश्वमेध यज्ञ का प्रसंग भगवान् वेदव्यास प्रस्तुत करते हैं। युधिष्ठिर की चिन्तनधारा को और उदात्तता

---

1. रामायण, उत्तरकाण्ड - चतुरशीतितम सर्ग ।
2. ,, ,, ,, ,,
3. रामायण, उत्तरकाण्ड-चतुरशीतितमः सर्ग ।

और स्थिरता प्रदान करने के लिए व्यासजी ने उन्हे आज्ञा दी और कहा—

अनुजानामि राजस्त्वां क्रियतां यदनंतरम ।
यजस्व वाजिमेधेन विधिवद् दक्षिणावता ।।[1]

व्यास की दृष्टि में अश्वमेध यज्ञ समस्त पापों का नाश करने वाला है और यजमान को पवित्र बनानेवाला है साथ ही नि:सदेह इस अनुष्ठान से उसे समस्त रूप में मुक्तता प्राप्ति हो जाती है।[2]

'कालिदास' ने अपने महाकाव्य 'रघुवंश' मे राम के अश्वमेध यज्ञ के निमित्त अश्व छोड़ने की अनुपम उपमा का आनन्द दिया है। उनकी दृष्टि मे राक्षस, वानर और मनुष्यों के राजाओं ने अश्व पर उसी प्रकार भेंट और उपहारो की वृष्टि की, जिस प्रकार मेघ फसलों पर जल-वृष्टि करता है।[3] महाकवि ने अपनी सर्वोत्तम काव्य-प्रतिभा से वैदेही के त्याग को भी अपूर्व सिद्ध करते हुए निम्नलिखित श्लोक की संरचना की है—

श्लाघ्य स्त्यागोऽपि वैदेह्या:पत्यु: प्राग्वंशवासिन: ।
अनन्यजान: सैवासीद्यस्माज्जाया हिरण्मयी ।।

अर्थात् वैदेही का (राम द्वारा) त्याग भी प्रशंमनीय था।

क्योकि यज्ञशाला में स्थित एवं किसी अन्य पत्नी से विवाह न करने वाले अपने पति की (राम की) सुवर्ण प्रतिमा के रूप मे वही पत्नी बनी थी।

संत भास्कर चूड़ामणि 'गोपाल' ने अपने प्रसिद्ध 'रामप्रताप रामायण' में यज्ञशाला मे अवस्थित सुवर्ण प्रतिमा वाली सीता का बहुत ही भावपूर्ण अभिनव वर्णन निम्न पद में प्रस्तुत की है—

बैठे मखशाला मंजु मेखला बिराजमान ।
देखि मुरझाती रूपराज सुकुमारिका ।।

---

1. महाभारत, अनुगीता पर्व ।
2. अश्वमेधोहि राजेन्द्र ! पावन: सर्वपाप्मनाम ।
तेनेष्ट्वा त्वां विपाप्मा वै भवति न संशय. ।।
(महाभारत, अनुगीता पर्व)
3. 'तमध्वराय मुक्ताश्वरक्ष: कपि नरेश्वरा: ।
मेघा: सस्यमिवाम्भोभिरम्य वर्षन्नुपायनै ।।
(रघुवंश-५८)

पंकज मलीन, राग रंग हू की छबि छीन ।
जोति मनि हीन, डोलैं मौन सुक सारिका ।।
मन ही हरष मुनि, सुनिबै को वेदधुनि ।
मोरि मोरि जाति मुख रिषिन की नारिका ।।
भनत गोपाल रघुनाथ जू के साथ आजु ।
सोहती कनकहूँ की जनककुमारिका ।।[1]

हिन्दी-रामभक्ति-धारा के श्रेष्ठ भक्त कवि गोस्वामी तुलसीदासजी ने भी 'रामचरित मानम' में अश्वमेध यज्ञ की चर्चा करते हुए कथा की प्रासंगिकता के संस्पर्श का दायित्व-निर्वाह करते हुए कहा है कि—

"कोटिन्ह बाजिमेध प्रभु कीन्हे ।
दान अनेक द्विजन्ह कहँ दीन्हे ।।
श्रुति-पथ पालक धर्म धुरन्धर ।
गुनातीत अरु भोग पुरन्दर ।।"

रामाश्मेध के हिन्दी पद्यानुवाद की एक लम्बी परम्परा रही है किसी ने पद्मपुराण के आधार पर तो किसी ने महाभारत के सत्योपाख्यान को स्वीकार कर पद्यानुवाद किया । इटावा के ही भक्तकवि नारायण दास ने सबसे पहले संवत् १७३९ वि० में रामाश्वमेध ग्रन्थ विविध छन्दों में लिखा । उसके पश्चात् माधुरी दास (मधु अरिदास) देवकृष्ण संवत १८२८ वि०, नाथ गुलाम त्रिपाठी, (सवन १८६४) गंगाप्रसाद मंसाराम, मोहनदास मिश्र, हरिसहाय गिरि, हरिदेव आदि कवियों ने रामाश्वमेध ग्रन्थ लिखा ।[3]

इस प्रकार रामकाव्य के विविध ग्रन्थों में 'अश्वमेध यज्ञ' की महिमा और राम द्वारा सम्पादित अश्वमेध यज्ञ के विवरणों की एक विस्तृत भूमिका की अपेक्षा स्वयं अनिवार्य हो जाती है, परन्तु रामाश्वमेध ग्रन्थ के सम्बन्ध में प्रस्तुत इतनी भूमिका ही इतिहास-सन्दर्भ में पर्याप्त प्रतीत होती है ।

---

1. गोपालदास कृत रामप्रताप, कुशलव युद्ध-शत्र, धन-विमोहन, पृष्ठ-५६४, प्रकाशन श्री बड़ाबाजार कुमार सभा पुस्तकालय, कलकत्ता ।
2. तुलसीदास कृत रामचरित मानस, उत्तरकाण्ड, गीताप्रेस गोरखपुर ।
3. हस्तलिखित हिन्दी पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण, पृष्ठ ३१८-३२०, नागरी प्रचारणी सभा, वाराणसी ।

कथा का मूल स्रोत

कथा के मूल स्रोत के सम्बन्ध में ग्रन्थ की पुष्पिका में ग्रन्थकार ने यह स्वयं स्वीकार किया है कि यह ग्रन्थ पद्मपुराण के पाताल खण्ड के शेष और वात्स्यायन के संवाद का अनुवाद है किन्तु ग्रन्थ मे नवीनता लाने के लिए व्यास और सूत से कथा प्रारम्भ करके मूल ग्रन्थ से कुछ भिन्न स्वरूप देने का प्रयास किया गया है । जिस तरह से व्यास ने सूत को यह कथा सुनाई थी उसी तरह से श्री गोविन्दवर ने मुझे यह कथा सुनाई और मैं उसी कथा का वर्णन अपनी मति के अनुसार इस प्रकार कर रहा हूँ—

जेहि विधि व्यास सूत सन गावा ।
श्री अनन्त मुनिवरहिं सुनावा ॥
मति मैं निज मति के अनुसारा ।
बरनहु रघुपति चरित उदारा ॥
कवित बिचार न जानहु एकू ।
भेदु पंगु गंगादि अनेकू ॥
× × ×
सूत पराशर-तनयकर, जेहि विधिभा संवाद ।
प्रथमहि बरनहु सो कथा, सीताराम प्रसाद ॥[1]
एक समय मुनि व्यास कृपाला ।
निज आसन आसीन दयाला ॥
सूत महा मति सब सुखदाई ।
तिन सन प्रश्न कीन्ह असजाई ॥
× × ×
सो सुनि भयउ मोहि सुख भारी ।
अब प्रभु पूछहु कहहु बिचारी ॥
केहि विधि जज्ञ कीन्ह रघुबीरा ।
कहहु बुझाई मोहि मतिधीरा ॥
सुनिवर प्रश्न हर्ष मुनिराई ।
सुमिरसि मन महँ सिय रघुराई ॥

---

1. श्री गोविन्दवर दास, तिन प्रापति वैभव कियो ।
तिन मोहि किन्ह प्रकाश, बरणहु रघुबर गाथ मख ॥
अध्याय १, पृष्ठ-२ मधुसूदन दास कृत रामाश्वमेध अध्याय

बोले मुनिवर गिरा सुहाई।
सुनहु सूत मैं कहहु बुझाई ॥
एक समय श्री सेस सन, वात्स्यायन मुनि राज।
विमल चरित रघुनाथ कर, पूछा सब सुख साज ॥ ४ ॥
सो संवाद कहौं समुझाई।
सुनहु तात तुम मनु चितलाई ॥[1]
× × ×

इसके पश्चात् मधुसूदन दास कथा-क्रम को पद्म पुराण के पाताल खण्ड के प्रथम अध्याय के चौथे श्लोक अनुवाद से प्रारम्भ करते हैं। किन्तु बीच-बीच में 'व्यास उवाच' कह कर रघुपति की कथा को सूत को सुनाने का उल्लेख करते हैं, उदाहरणार्थ—पातालखण्ड मे (पद्मपुराण मे) जब श्रीराम अयोध्या में प्रवेश करते हैं तो शेष इस प्रवेश का वर्णन करते है परन्तु ग्रन्थ-प्रणेता ने श्रीराम के अयोध्या प्रवेश का वर्णन शेष से न कराकर वात्स्यायन से कराया है—

अब तीसर अध्याय मँह, होइहै कथा रसाल।
करिहै अवध प्रवेस प्रभु, दलि सब के दुख जाल ॥
वात्सायन मुनि कथा रसाला।
अवध बिलोकि राम तेहि काला ॥
आये प्रजा लोग बड़ भागी।
रामचरन पंकज अनुरागी ॥
सुनहु सूत अब कथा सुहाई।
रघुपति सुर विमान समुदाई ॥
अवध प्रवेस कीन्ह रघुबीरा।
प्रमुदित हृदय हरन-भव-धीरा ॥[2]

कवि एक ओर जहां राम-कथा के माहात्म्य के संबन्ध में पुराण द्वारा अनुमोदित वर्णन करता है[3] वहीं दूसरी ओर अपने तरफ से यह भी

---

1. मधुसूदन दास कृत रामाश्वमेध अध्याय १, पृष्ठ ४, ५।
2. मधुसूदन दास कृत रामाश्वमेध अध्याय ३, पृष्ठ-१६, २२
3. कथा सूक्ष्म हयमेध की, तुम बरनी मम नाथ।
कहहु सहित बिस्तार प्रभु कहि मुनि नावौं माथ ॥
मधुसूदन दास कृत रामाश्वमेध अध्याय १, पृष्ठ ५।

जोड़ देता है कि 'निज मति' के अनुकूल राम के सुजस का वर्णन कर रहा हूँ—

जाके सुनत संत मन माहीं।
प्रमुदित होंहि न हृदय अघाहीं॥
× × ×
जा पै कृपा राम की होई।
पार लहै मुनिवर मुनि सोई॥
तदपि कहौ निज मति अनुकूला।
रघुवर सुजस हरन स्रम सूला॥[1]

ग्रन्थकार का यह ग्रन्थ यद्यपि पद्मपुराण का हिन्दी पद्यानुवाद है किन्तु कहीं-कहीं अपनी रुचि के कारण अथवा असावधानी के कारण स्थान-स्थान पर कुछ-कुछ अंश छोड़ दिया है।[2] शेष ने जो कथा वात्स्यायन को सुनाई थी वही कथा सूत ने ऋषियों को भी सुनाई थी परन्तु मधुसूदन दास ने व्यासको इस कथा का प्रधान वक्ता बनाया है और सूत ने व्यास से राम के अश्वमेध की कथा को सुनने के लिए निवेदन किया है।[3] इस प्रकार रामाश्वमेध के प्रधान वक्ता व्यास स्वयं हो गए है। ग्रन्थ के प्रत्येक अध्याय का आरम्भ वक्ता और श्रोता से होता है किन्तु स्थान-स्थान पर शेष और वात्स्यायन को भी श्रौता और वक्ता के रूप मे उपस्थित किया गया है।[4]

ग्रन्थ का समापन पहले तो कवि पद्म् पुराण की 'फलश्रुति' के अनुवाद से प्रारम्भ करता है इसके पश्चात् उसी क्रम में स्वतन्त्र रूप से कुछ 'फल श्रुति' अपनी तरफ से जोड़ देता है—

तव प्रसाद मैं अहिकुल केतू।
सुनी कथा बिस्तार समेतू॥
करौ बिनै प्रभु कौन प्रकारा।
सकल भाँति मैं दास तुम्हारा॥

---

1. मधुसूदन दास कृत रामाश्वमेध अध्याय १, पृष्ठ ६, ७।
2. पद्मपुराण पाताल खण्ड १।१।१५ तथा १।२१।२५।
3. सूत सुनहु यहि भाँति मुनि वात्स्यायन मुनि नाथ।
   जोरि उभय कर सेस सन, बोले धरि पद माथ॥
   (मधुसूदन दास कृत रामाश्वमेध, १।४
4. मधुसूदन दास कृत रामाश्वमेध अध्याय, ४।२६

दुर्लभ राम चरित मोहि दीन्हा ।
सकल प्रकार कृतारथ कीन्हा ।।
येहि विधि कहि बहु भाँति मुनीसा ।
परम प्रीति जुत नायो सीसा ।।[1]

और अन्त में व्यास और सूत के संवाद से कथा का अन्त करता है ?[2] कवि परम्परित ढंग से ग्रन्थ की समाप्ति के पश्चात् अपनी ओर से ग्रन्थ में त्रुटियों के लिए क्षमा याचना भी करता है ।[3]

सारांश यह कि ग्रन्थ का कथा स्रोत भिन्न रूप में प्रस्तुत करते हुए भी मूल आख्यान में कोई परिवर्त्तन नहीं किया गया है ।

कथानक-कसौटी

यह ग्रन्थ पद्मपुराण पाताल खण्ड में वर्णित रामाश्वमेध के कथानक का अनुवाद है । ग्रन्थ के प्रत्येक अध्याय की पुष्पिका "इति श्री पद्मपुराणे पाताल खण्डे शेष वात्सायन संवादे मधुसूदन दास कृते[4]" को देखने से पता चलता है कि यह ग्रन्थ पद्मपुराण के पातालखण्ड की कथा का अविकल अनुवाद है परन्तु स्थान-स्थान पर कवि ने अपनी रुचि के अनुसार राम-कथा संबन्धी अन्यान्य ग्रन्थों के कथा-प्रसंगों को भी इस में समाहित किया है ।

ग्रन्थ के कथानक में कतिपय प्रसंग वाल्मीकि रामायण से भिन्न हैं, जैसे— पाँच गुप्तचरों से राम की प्रशंसा में भिन्न-भिन्न बातें करना और छठें गुप्तचर से रजक द्वारा राम और सीता को गृह से निकाले जाने की बात करना एवं

---

1. मधुसूदन दास कृत रामाश्वमेध अध्याय, ६८, पृष्ठ-७६१ ।
2. पुलकि गात येहि भाँति बाद, कीन्हों चरन प्रणाम ।
   हर्षे व्यास उदार तब, परम कृपा के धाम ।।
   मधुसूदन दास कृत रामाश्वमेध अध्याय, ६८, पृष्ठ-७६२
3. छमहु संत समुदाइ, कीन्ह ढिठाई विपुल मैं ।
   कीजे कृपा बनाइ, अबुध जानि निज दास लखि ।।
   मधुसूदन दास कृत रामाश्वमेध अध्याय ६८/पृष्ठ-७६२
4. मधुसूदन दास कृत रामाश्वमेध ग्रन्थ की प्रत्येक पुष्पिका ।

उसकी माँ से सीता को शुद्ध एवं पवित्र कहलाना रामायण से भिन्न है। वाल्मीकि रामायण में रजक का उल्लेख नहीं है किन्तु वाराह पुराण और रामाश्वमेध में इसका उल्लेख मिलता है। इसी प्रकार रामायण मे सीता-परित्याग के प्रसग में भरत और शत्रुघ्न के संबन्ध में उल्लेख नहीं है। रामने लक्ष्मण को बुला कर सीता के संबन्ध में फैले लोकोपवाद पर चिन्ता व्यक्त तथा सीता के परित्याग संबन्धी आदेश[1] लक्ष्मण को दिया।[2] भरत और शत्रुघ्न यह आदेश चुप-चाप सुनते रहे।

पद्म्पुराणकार ने सीता को वाल्मीकि के आश्रम में पहुँचने की कथा को वाल्मीकि रामायण से भिन्न रूप में प्रस्तुत किया है। पद्मपुराण मे सीता का विलाप वाल्मीकि ने स्वयं अपने कानों सुना और विलाप करती हुई सीता के पास पहुँचे जब कि वाल्मीकि कृत रामायण में मुनि-कुमारों ने रोती हुई सीता को देख कर वाल्मीकि से सीता की स्थिति के सन्दर्भ में बताया तब मुनि-कुमारो को साथ लेकर सीता के पास गए।

वाल्मीकि के आश्रम से लौटने पर सीता और राम के मिलने का प्रसंग वाल्मीकि आश्रम मे दुखान्त है। उसमे सीता के बिना ही उनकी स्वर्ण-मूर्ति के साथ ही यज्ञ पूर्ति हो जाती है किन्तु पद्मपुराण में यह सन्दर्भ भिन्न है। पद्मपुराण मे राम का वाल्मीकि आश्रम मे जाना, लव और कुश से मिलना, सीता को बुलाना तथा एक नही दो-दो अश्वमेध यज्ञ कराने का प्रसग सर्वथा भिन्न है। सीता-निर्वासन–आख्यान अश्वमेध यज्ञ पूर्ण होने पर भी पद्म्पुराण में वर्णित है। बाल्मीकि रामायण में सीता-निर्वासन के पश्चात् लवणासुर और शम्बूक के आख्यान वर्णित है। इसके बाद अश्वमेध का वर्णन है। साथ ही लव, कुश, पुष्कल शत्रुघ्न आदि से हुए युद्धों का वर्णन है। पद्म्पुराण और वाल्मीकि रामायण के कथानक में एक मौलिक अन्तर यह है कि यज्ञाश्व मे प्रमुख राजाओं द्वारा सम्मानित होने या बाँधे जाने तथा युद्धों का वर्णन है जब कि वाल्मीकि रामायण मे किसी भी युद्ध की चर्चा तक नहीं की गई है।

हिन्दी रामकथा के परवर्ती कृतिकारों ने (केशव, गोपालचन्द मिश्र) पद्म्पुराण के आधार पर सुखान्त रूप दिया है।

---

1. वाराह पुराण—७।४३ तुलनीय रामाश्वमेध, अध्याय ५७। पृष्ठ-५८२
2. वाराहपुराण ७।४३।१५-१९।
3. वाराहपुराण—७।६६।६

काव्य-वैशिष्ठ्य

छन्द योजना, भाषा-शैलो की दृष्टि से मधुसूदन दास ने तुलसी के राम-चरित मानस का रचनादर्श स्वीकार किया है। सम्पूर्ण ग्रन्थ में सबसे अधिक चौपाइयां इसके पश्चात् दोहा, सोरठा, हरि गीतिका, त्रोटक, त्रिभगी, भुजंग प्रयात और तोमर छन्दों का प्रयोग किया गया है।

रामचरित मानस में तुलसीदास ने हरि गीतिका को इस प्रकार प्रस्तुत किया—हरि गीतिका का प्रथम चरण ऐसे शब्द से प्रारम्भ होता है जो उसके पूर्व की अर्द्धालीका अन्तिम शब्द होता है या उसके श्रेणी में आते हैं जब अर्द्धाली के कई शब्द हरि गीतिका के आरम्भ में ग्रहण किये जाते है तब कभी-कभी उनका क्रम हरिगीतिका में आगे–पीछे भी हो जाता है, किन्तु रामचरित मानस में इस नियम का निर्वाह सर्वदा नहीं देखा जाता। रामाश्वमेध में मधुसूदन दासने इसका पूर्ण निर्वाह किया है।

रामचरित मानस की शैली पर पं० ज्वाला प्रसाद मिश्र ने यद्यपि लव-कुश काण्ड मिलाया है कहीं-कहीं पर कुछ छन्दो म तुलसी का नामोल्लेख भी मिलता है किन्तु भाषा और शैली की दृष्टि से यह ग्रन्थ तुलसी दास द्वारा रचित नही कहा जा सकता। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में मधुसूदन दास के रामाश्वमेध के सन्दर्भ में जो समीक्षा प्रस्तुत की वह उल्लेखनीय है— इन्होंने गोविन्द नामक किसी व्यक्ति के अनुरोध से संवत् १८३९ में रामाश्वमेध नामक एक बड़ा और मनोहर प्रबन्ध बनाया जो सब प्रकार से गोस्वामी जी के रामचरित मानस का परिशिष्ट होने के योग्य है। इसमें श्रीरामचन्द्र द्वारा अश्वमेध यज्ञका अनुष्ठान, घोड़े के साथ गई हुई सेना के साथ सुबाहु, दमन, विद्युन्माली राक्षस, वीरमणि, शिव, सुरथ आदि का घोर युद्ध, अन्त में राम के पुत्र लव और कुश के साथ भयकर संग्राम श्री राम द्वारा युद्ध का निवारण और पुत्रों सहित सीता का अयोध्या में आगमन ; इन सब प्रसंगों का पद्म पुराण के आधार पर बहुत हो विस्तृत और रोचक वर्णन है। ग्रन्थ की रचना बिल्कुल रामचरित मानस की शैली पर हुई है। प्रधानता दोहों के साथ चौपाइयो की है पर बीच-बीच में गीतिका आदि और भी छन्द हैं। पद विन्यास और भाषा सौष्ठव रामचरित मानस का ही है। प्रत्यय और रूप भी बहुत कुछ अवधी के रखे गए है। गोस्वामी जी की प्रणाली के अनुसरण में मधुसूदन दास को पूरी सफलता हुई है। इनकी प्रबन्ध कुशलता, कवित्व शक्ति और भाषा की श्लिष्टता तीनों उच्च कोटि की हैं। इनकी चौपाइयाँ अलबत्तः गोस्वामी जी की चौपाइयों में बेखटक मिलाई जा सकती

है। सूक्ष्म दृष्टिवाले भाषा मर्मज्ञों को केवल थोड़े ही से ऐसे स्थलों में भेद लक्षित हो सकता है जहाँ बोल-चाल की भाषा होने के कारण भाषा का असली रूप अधिक स्फुटित है। ऐसे स्थलों पर गोस्वामीजी के अवधी के रूप और प्रत्ययन देख कर भेद का अनुभव हो सकता है पर जैसा कहा जा चुका है, पदविन्यास की प्रौढ़ता और भाषा का सौष्ठव गोस्वामी जी के मेल का है—

सिय रघुपति पद कंज पुनीता।
प्रथमहि बंदन करौ सप्रीता॥
मृदु मजुल सुन्दर सब भाँती।
ससिकर-सरिस-सुभग नख पाँती॥
प्रणत कल्पतरु तर सब ओरा।
दहन अज्ञतम जन चित चोरा॥
विविध कलुष कुञ्जर घन घोरा।
जगत प्रसिद्ध के हरि वर जोरा॥
चिंतामणि पारस सुर धेनू।
अधिक कोटि गुन अभिमत देनू॥
जनमन मानस रसिक मराला।
सुमिरत भजन विपति विसाला॥
निरखि कालजित कोपि अपारा।
विदित होय करि गदा प्रहारा॥
महावेग युत आवै सोई।
अष्टधातुमय जाय न .जोई॥
अयुत भार भरि भार प्रमाना।
देखिय जम पति दड समाना॥
देखि ताहि लव हनि इषु चंडा।
कीन्ही तुरत गदा त्रय खंडा॥
जिमि नभ माँह मेघ समुदाई।
वरषहि बारि महा झरि लाई॥
तिमि प्रचंड सायक जनु व्याला।
हने कीस तन लव तेहि काला॥
भए विकल अति पवन कुमारा।[1]
लगे करन तव हृदय विचारा॥

---

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास, लेखक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल। पृ-२५७-२५८

डॉ० भगवती प्रसाद सिंह ने रामाश्वमेध के सबन्ध में जो टिप्पणी दी है वह भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है—इनकी भाषा अवधी है किन्तु ब्रज प्रदेश में निर्मित होने से स्थानीय भाषा की छाप पड़ी है। काव्य-सौष्ठव और प्रबन्ध कुशलता की दृष्टि से मधुसूदन दास की यह कृति रामचरित मानस से इतनी मिलती-जुलती है कि उसे निःसंकोच उसका परिशिष्ट माना जा सकता है। इस प्रसंग पर मधुसूदन दास के पहले और बाद को अनेक ग्रन्थ लिखे गए किन्तु भाषा का जैसा लालित्य और काव्य की जैसी छटा उस ग्रन्थ में दिखाई[1] पड़ती है उसकी छाँह भी अन्य कवि नहीं छू सके। उपरोक्त विद्वानों का विवेचन कवि के काव्यगत और भाषागत वैशिष्ट्य के लिए पर्याप्त है। निःसन्देह हिन्दी रामाश्वमेध काव्य परंपरा में ग्रन्थ सर्वांगीण दृष्टि से अनुपम है तथा तुलसी-दासान्तर राम-काव्य की परंपरा में रामचरित मानस का परिशिष्ट होने योग्य एकमात्र ग्रन्थ है।

जीवन-वृत्त

साहित्यकार के व्यक्तित्व का उसके कृतित्व से बहुत घनिष्ठ संबन्ध रहता है। उसकी प्रतिभा, स्वभाव, जीवन-दर्शन, शिक्षा-दीक्षा आदि सभी व्यक्तित्व संबन्धी बातों का पता उसके द्वारा रचित साहित्य से लगाया जा सकता है। कवि मधुसूदन दास भी इसके अपवाद नहीं है। वहि:साक्ष्य के अभाव में अन्त:साक्ष्य का आश्रय लेकर कवि के जीवन-वृत्त की एक सम्भावनामूलक पुनर्रचना प्रस्तुत करने की चेष्टा की जा रही है। मधुसूदन दासने रामाश्वमेध ग्रन्थ में अपना परिचय इस प्रकार दिया है—

प्रथम बुझाइ कहौ निज नामा।
संवत देस जाति पुनि ग्रामा॥
मधुअरिदास नाम यह मोरा।
माथुर वंश जनम मति थोरा॥
भानु-सुता सुर सहित सम्हारा।
पावन देस विदित संसारा॥
नगर इष्टिका पुरी सुहावन।
निकट कलिंद सुता बहि पावन॥

---

1. हिन्दी साहित्य कोश भाग-२ पृष्ठ ४४७
टिप्पणी डॉ० भगवती प्रसाद सिंह।

सवत् बसु सत गुणहु, पुनि नव तीस मिलाइ।
विदित मास आषाढ़, रितु पावन सुखद बनाइ॥

शुक्ल पक्ष, तिथि द्वैज सुहाई।
जीववार सुभ मंगल दाई॥
हर्षण योग पुनरवसु रिच्छा।
प्रगटी प्रभु जस बरनन इच्छा॥
श्री रामानुज कूट मझारी।
कीन्ह कथा आरम्भ विचारी॥[1]

उक्त चौपाइयों से स्पष्ट ज्ञात होता है कि रामाश्वमेध ग्रन्थ के प्रणेता का नाम मधुसूदन दास है। ये जाति के माथूरवंशीय चौबे ब्राह्मण थे। इनका जन्म एटा (इष्टिकापुरी) में हुआ था। इन्होंने अपने गुरु श्री गोविन्द दास[2] से श्रीराम के यश की कथा सुनी थी। श्री गोविन्द दास जो स्वय कवि थे और अपने ही ग्रन्थ 'हरिप्रपत्ति वैभव' से राम की कथा मधुसूदन दास को सुनाई थी। यह ग्रन्थ ब्रज भाषा में लिखा गया है।

मधुसूदन दास ने आषाढ़ शुक्ल द्वितीया दिन बृहस्पतिवार को 'हर्षण योग' और 'पुनर्वसु नक्षत्र में सवत् १८३९ (सन् १७८२ ई०) मे रामाश्वमेध ग्रन्थ का शुभारम्भ किया था'। कवि ने इस ग्रन्थ की रचना रामानुजकूट (रामानुज का आश्रम अथवा कुटी) में की थी। रामानुज कूट की स्थापना मधुसूदन दास के गुरु श्री गोविन्द दास ने स्वय इटावा में की थी। इटावा में आज भी श्री वैष्णव चतुर्वेदियों का मन्दिर है। वहाँ के माथुरवंशीय चतुर्वेदी ब्राह्मण अपना शुभकार्य (विवाह, यज्ञोपवीत, व्रत आदि) प्रारम्भ करने के पूर्व आज भी पहले वहीं जाते हैं। रामाश्वमेध ग्रन्थ में कवि ने अपने संबन्ध मे केवल इतना ही लिखा है। भारतीय जीवन दृष्टि मुख्यत: अन्तर्मुखी और आत्मपरक है इसलिए कुछ अपवादों को छोड़कर कवियो और साहित्यकारों ने आत्म विज्ञापन से बचने का प्रयास किया है। मधुसूदन दास इसके अपवाद नहीं हैं।

---

1. मधुसूदन दास कृत रामाश्वमेध, अध्याय १/पृष्ठ-३
2. श्री गोविन्दवर दास, तिन प्रापति वैभव कियो।
   तिन मोहि कीन्ह प्रकास, बरणहु रघुवर गाथ मम॥
   मधुसूदन दास कृत रामाश्वमेध, अध्याय १।पृ० २

पाण्डुलिपि के प्रसंग में

मधुसूदन दास के स्वाच्छरों में लिखा रामाश्वमेध ग्रन्थ की हस्त लिखित प्रति अब तक उपलब्ध नहीं हो सकी है। जो भी प्रतियाँ उपलब्ध हैं वे सब उनके मूल ग्रन्थ के प्रतिलिपि की प्रतिलिपि हैं।

रामाश्वमेध की पहली हस्त लिखित प्रति हमें श्री उदय शंकर दुबे के माध्यम से प्राप्त हुई थी। प्रतिलिपिकर्त्ता अयोध्या पांडे ने रामनगर के सारावती तट पर सम्वत् १९३२ शाके शालवाहनीय १७९७ में श्री ठाकुर गंगा बकस को पढ़ने के लिए लिखी थी।[1]

ग्रन्थ की दूसरी प्रति जो सम्प्रति ब्रिटिश म्यूजियम में सुरक्षित है। उस ग्रन्थ की प्रतिलिपि लोकमणि ने सम्बत् १८३० में की थी।[2] ब्रिटिश म्यूजियम से अनेक बार पत्राचार करने पर भी ग्रन्थ की छाया प्रति उपलब्ध नहीं हो सकी।

रामाश्वमेध ग्रन्थ की तीसरी प्रति हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के पुस्तकालय में है किन्तु यह मुद्रित प्रति दोनों ओर से अपूर्ण है इसलिए इसके सम्बन्ध में पूरा विवरण नहीं मिलता।

पाठालोचन के सन्दर्भ में

जो हस्तलिखित ग्रन्थ श्री उदय शंकर दुबे के माध्यम से प्राप्त हुआ है उसी को आदर्श प्रति (आधार) मानकर ग्रन्थ सम्पादित किया गया है। यह

---

1. जेष्ठ मासे शुक्ल पक्षे तिथौ नवम्यां शनिवासरे हस्त नाम नक्षत्रे व्यतीतपात नाम योगे शुभंभूयात् सम्वत् १९३२ शके शालवाहनीय: १७९७ श्रीमत ठाकुर गंगा बकस तस्य पठनार्थम् लिखी अयोध्या पांडे रामनगर के सारावती तट प्रवाहयेत।

   मधुसूदन दास कृत रामाश्वमेध हस्तलिखित ग्रन्थ, पृष्ठ २००
2. कालिन्दी तट स्थित इच्छापुर निवासी राधाचरण सुत महुअरि दास (माधुरी दास) आषाढ़ सु० २ सं० १८३०, नागरी, ३५४ प्रति लोकमणि श्रावण सं० १८९६। ब्रिटिश म्यूजियम, ओ आर—१००७

प्रति अत्यन्त जजर हो चुकी है कही–कही कीट दष्ट भी है। ग्रन्थ में कुल १०० पत्रक हैं ग्रन्थ की लिखावट साफ है।

प्रतिलिपि कर्त्ता ने जिस ग्रन्थ से प्रतिलिपि तैयार की है या तो उस ग्रन्थ में ही कही-कहीं कुछ चौपाइयाँ अधूरी रह गई है अथवा प्रतिलिपि करते समय असावधानी वश कुछ चौपाइयो के अंश छूट गए है। पाठानुमन्धान करते समय विभिन्न प्रतियों से प्राप्त पाठ भेदो मे से स्वीकृत पाठ मुद्रित प्रति में दे दिया गया है और अस्वीकृत पाठ जो विभिन्न प्रतियों में उपलब्ध है उसे ग्रन्थ के अन्त मे परिशिष्ट 'क' पाठानुसन्धान (स्वीकृत और अस्वीकृत दोनो पाठ) शीर्षक से एक तालिका संलग्न की गई है।

रामाश्वमेध ग्रन्थ को पाण्डित्य के धरातल पर मूर्त्तरूप प्रदान करने में पाण्डुलिपि—सम्पादन के अधीत विद्वान डॉ० किशोरी लाल गुप्त का प्रमुख योगदान रहा है। अत्यन्त व्यस्त होने के उपरान्त भी डॉ० गुप्त ने अक्षरश: पाठानुसन्धान में जो अमूल्य सुझाव एवं दिशा–निर्देश किया है वह ग्रन्थ की अमूल्य निधि है।

इसी सन्दर्भ में श्रद्धेय डॉ० शिवादत्त द्विवेदी (गोरखपुर) के दिशा-निर्देश एवं पाण्डित्य पूर्ण चर्चा-परिचर्चा के योगदान के प्रति हम अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करते है साथ ही श्री उदयशंकर दुबे की भी हम अनुशसा करते है जिनके साधु प्रयास से हमे यह दुर्लभ ग्रन्थ की पाण्डुलिपि उपलब्ध हो सकी।

रामकथा के प्रख्यात विद्वान एव समीक्षक आचार्य विष्णुकांत शास्त्री के सत परामर्श तथा दिशा–निर्देशन के सम्बल से ही यह ग्रन्थ अपना सम्यक रूप प्राप्त कर पाया है।

वास्तविक अर्थ में इस ग्रन्थ के प्रकाशन की प्रेरणा के मूलाधार आचार्य पं० रामचन्द्र शुक्ल की इस ग्रन्थ के सम्बन्ध मे "हिन्दी साहित्य का इतिहास" मे की गई वैज्ञानिक समीक्षा ही है।

ग्रन्थ के प्रकाशन-यज्ञ-समिधा की सम्यक् व्यवस्था को रूपायित कर जिस उत्साह और मनोयोग का परिचय स्नेही राजीव लोचन ने दिया वह प्रशंसनीय और अभिनन्दनीय है।

सुश्री वीणा ने अपने गार्हस्थ्य जीवन के व्यस्ततम कार्य-क्रमों में से समय निकाल कर जिस तन्मयता और वैदुष्य से सम्पादित ग्रन्थ का प्रूफ संशोधन किया वह उनके विद्यानुराग का सहज परिचायक है।

ग्रन्थ के प्रकाशन में हमें जो विशेष सहयोग श्री सूरज मल जालान पुस्तकालय, कलकत्ता तथा श्री बड़ा बाजार कुमार सभा पुस्तकालय कलकत्ता के दोनों पुस्तकाध्यक्षों (श्री श्रीराम तिवारी और श्री त्रिभुवन तिवारी) से मिला उसके प्रति हम कृतज्ञ है। इसी क्रम मे ग्रन्थ के मुद्रक स्नेही अरुण कुमार द्विवेदी के प्रति हम अपना अभार प्रकट करते है जिनके प्रयास एवं धैर्य से यह ग्रन्थ मुद्रित हो पाया है।

ग्रन्थ में मुद्रण संबन्धी कुछ अशुद्धियाँ रह गई है इस कमी को दूर करने का एक मात्र उपाय शुद्धि पट्टिका (शुद्धि-पत्र) है जो ग्रन्थ के अन्त मे परिशिष्ट 'ख' मे सलग्न है।

इस ग्रन्थ के सम्पादन एवं प्रकाशन में प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से जिनका सहयोग मिला है उन सब के प्रति भी हम कृतज्ञ हैं।

इन्द्रजित पाण्डेय एवं विद्याधर मिश्र

सम्पादक द्वय

अनुक्रमणिका

श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीसरस्वत्यैनमः ॥ नारायणंनम
स्कृत्यनरंचैवनरोत्तमं देवींसरस्वतींव्यासंततोजयमुदीर
येत् ॥१॥ दोहा ॥ वंदिप्रथमगुरुपदकमलनिजशिरधरि
सुखपाय ॥ त्रिविधितापनमदलनकहदिनकरसरि
ससुभाय ॥ निजदेशिकगुरुकंजपदवंदनकरहुसप्री
ति ॥ विबुधप्रयासजिनकीकृपामहामोहदलजीति ॥२
॥ विसकलगुरूपदकमलपुनिपतिराजकृपाल ॥
जिनकेपदवंदनकरतमिटतसकलभवजाल ॥३॥ वं
दिपरंकुशचरनजुगसुरतेरशारसुभाय ॥ सुमि
रहुमुनिपदकमलशरणागतसुखदाय ॥४॥ प्रम
रियाप्रणामकरिकमलनयनपदकंज ॥ नाथमु
नीशहिवंदिपुनिशठगंजनभवभंज ॥५॥ सकलगु
णनशिरमेरश्रीविश्वक्सेनकृपाल ॥ जिनकेसुमि
रनकेकरेमिटहिमहाभ्रमजाल ॥६॥ श्रीमन्नारा
याप्रियाजगतजननिसुखमूल ॥ तिनकेपदपंकज
भजहुहरणसकलभ्रमसूल ॥७॥ श्रीनिवासश्री
नारायनशरणागतपरनेह ॥ वंदहुतिनकेपद
कमलसंततसहितसनेह ॥८॥ विमलज्ञानआनं
दनिधिनिर्मलफटिकसमान ॥ हयग्रीवपदभज
हमेवेदत्रयअस्थान ॥९॥ श्लोक ॥ अश्वमेधज
प्रांद्रिआंगायंतिमुनिपुंगवाः ॥ श्रीहयग्रीवकृत
युक्तंसर्वपापैःप्रमुच्यते ॥१॥ शोरठा ॥ श्रीगोविन्द
वरदासतिनप्रापतिवैभवाद्योगो ॥ तिनमोहिकीन्ह
प्रकाश ॥ वरणहुरघुवरगाथमंथ ॥ चौपाई ॥ शि
यरघुपतिपदकंजपुनीता ॥ प्रथमहिवंदनकेरउ
प्रीता ॥ मृदुमंजुलसुंदरसबभांती ॥ शशिकरस

रघुनाथ-भरत द्वार दर्शन

।। श्री गणेशाय नमः । श्री सरस्वत्यै नमः ।।

नारायणं नमस्कृत्यं नरं चैव नरोत्तमम् ।
देवीं सरस्वतीं चैव ततो जय मुदीरयेत् ।।
वंदे विष्णु प्रियां देवीं दुःख दारिद्रय नाशिनीम् ।
क्षीरोद पुत्रीं कमलां विष्णोवंक्ष विलासिनीम् ।।

दोहा

बंदि प्रथम गुरु-पद कमल, निज सिर धरि सुख पाय ।
त्रिविध-ताप-तम-दलन कहँ, दिन कर सरिस सुभाय ।।
निज देसिक गुरु-कज-पद, वंदन करहुं सप्रीति ।
बिनु प्रयास जिनकी कृपा, महा मोह दल जीति ।।
प्रणवि सकल गुरु-पद-कमल, पुनि यतिराज कृपाल ।
जिनके पद वंदन करत, मिटत सकल भव-जाल ।।
वंदि परांकुस चरन जुग, सुर तरु सरिस सुभाय ।
सुमिरहुं या मुनि पद-कमल, सरनागत सुख दाय ।।
राम सियहिं पद प्रणवि करि, कमल नयन, पद, कंज ।
नाथ मुनीसहिं-वदि पुनि, सठ गजन भव भज ।।
सकल गुणन सिरमोरु श्री, विस्वक सेन कृपाल ।
जिनके सुमिरन के करे, मिटहिं महा भ्रम जाल ।।
श्री मन्नारायण प्रिया, जगत जननि सुख मूल ।
तिनके पद-पंकज भजहुं, हरन सकल स्रम सूल ।।
श्रीनिवास करुनायतन, सरनागत पर नेह ।
बंदहुं तिनके पद-कमल, संतत सहित सनेह ।।
विमल ज्ञान आनंद निधि, निर्मल फटिक समान ।
हय ग्रीव पद भजहुं मैं, वेद-त्रय अस्थान ।।

अश्लोक

अश्वमेघ कथां दिव्यां, गायन्ति मुनि पुंगवा: ।
श्रवण श्रद्धयायुक्तं पापैः प्रमुच्यते ॥

सोरठा

श्री गोविंद वर दास, तिन प्रापति वंभव कियो ।
तिन मोहि कीन्ह प्रकास, बरणहु रघुवर गाय मख ॥

चौपाई

सिय रघुपति पद कंज पुनीता ।
प्रथमहिं वंदन करहुं सप्रीता ॥
मृदु मजुल सुन्दर सब भाँती ।
ससि कर सरिस सुभग नख-पांती ॥
प्रनत कल्प तरु नर सब ओरा ।
दहन अज्ञतम, जन चित चोरा ॥
त्रिविध कलुख कुंजरगन घोरा ।
गज प्रसिद्ध केहरि वर जोरा ॥
चिंतामणि पारस सुर धनू ।
अधिक कोटि गुन अभिमत देनू ॥
जन मन मानस रसिक मराला ।
सुमिरत भजत बिपत्ति बिसाला ॥
चिंतत सकृत बार मनु लाई ।
ससय रहित परम पद पाई ॥
अकुस कंज कुलिस धुज रेखा ।
संतत लसित उदार विसेखा ॥

दोहा

अस रघुपति पद कंज गुनि, परिहर आन उपाय ।
करहुं ढिठाइ एक अब, छिमहु संत समुदाय ॥१॥

चौपाई

जेहि विधि जज्ञ कीन्ह रघुनाथा।
बर्नन काज चहौं सोइ गाथा॥
मसक चाह जिमि नभ कर पारा।
मोर मनोरथ तिमि संसारा॥
जन बिचारि रघुवंश-विभूषन।
निजु दिसि निरखि प्रनत तरु पूषन॥
करिहौं पूरन आस निदाना।
भंजन करि मम दूषन नाना॥
प्रथम बुझाइ कहौं निज नामा।
संवत देस जाति पुनि ग्रामा॥
मघु अरि दास नाम यह मोरा।
माथुर वंश जनम मति थोरा॥
भानु-सुता सुर सरित सम्हारा।
पावन देस विदित संसारा॥
नगर इष्ठिकापुरी सुहावन।
निकट कलिंद सुता बहि पावन॥

दोहा

संवत बसु दस सत गुणहु, पुनि नव तीस मिलाइ।
विदित मास आषाढ़, रितु पावस सुखद बनाइ॥

चौपाई

शुक्ल पक्ष, तिथि द्वैज सुहाई।
जीववार सुभ मंगल दाई॥
हर्षण योग पुनरवसु रिच्छा।
प्रगटी प्रभु जस बरनन इच्छा॥
श्री रामानुज कूट मझारी।
कीन्ह कथा आरम्भ बिचारी॥

जेहि बिधि ब्यास सूत सन गावा।
श्री अनंत मुनिवरहिं सुनावा॥
मति मैं निज मति के अनुसारा।
बरनहुं रघुपति चरित उदारा॥
कबित विचार न जानहुं एकू।
भेद पंगु गंगादि अनेकू॥
पावन जीह करन हित भाई।
बरनहुं प्रभु कीरति सुख दाई॥
जसि सुरसरि मराल पय फेनू।
अमल अनंत गुनी छवि देनू॥

दोहा

सूत परासर-तनय कर, जेहि बिधि भा संवाद।
प्रथमहि बरनहुं सो कथा, सीता राम प्रसाद॥३॥

चौपाई

एक. समय मुनि ब्यास कृपाला।
निज आसन आसीन दयाला॥
सूत महा मति सब सुख दाई।
तिन सन प्रस्न कीन्हि अस जाई॥
अहहु नाथ तुम दीनदयाला।
कीन्हीं मो पर कृपा बिसाला॥
तुम प्रभु रघुवर चरित बखाना।
सुनत सुखद सुचि सुधा समाना॥
सो सुनि भयउ मोहिं सुख भारी।
अब प्रभु पूछहुं, कहहु बिचारी॥
केहि बिधि जज्ञ कीन्ह रघुबीरा।
कहहु बुझाइ मोहि मति धीरा॥
सुनि वर प्रस्न हृष मुनि राई।
सुमिरसि मन महं सिय रघुराई॥

बोले मुनिवर गिरा सोहाई।
सुनहु सूत मैं कहहुं बुझाई ।।

दोहा

एक समय श्री सेस सन, वात्स्यायन मुनिराज।
विमल चरित रघुनाथ कर, पूछा सब सुख साज ।।४।।

चौपाई

सो संवाद कहौं समुझाई।
सुनहु तात तुम मनु चितलाई ।।
जोरि पानि जुग, सीस नवाई।
बोलेउ वात्स्यायन मुनिराई ।।
सेस असेस कथा तुम बरनी।
जगत स्रजत पालनि अरु हरनी ।।
धरनि अकास केरि बिस्तारा।
सो सब बरनेउ करि प्रभु न्यारा ।।
जोतिस चक्र आदि जग भेदा।
बरनेउ नाथ हरन भ्रम खेदा ।।
महदादिक गुन सृष्टि बिभागा।
बरनेउ सकल सहित अनुरागा ।।
नाना राज-चरित तुम गावा।
रबि बंसिन कर सुजस सुनावा ।।
तेहि कुल महँ श्री राम उदारा।
प्रगटेउ आपु हरन भुव-भारा ।।
तिन कर चरित कहा तुम गाई।
तिहि महँ एक कहौ समुझाई ।।

दोहा

कथा सूक्ष्म हय मेध की, तुम बरनी मम नाथ।
कहहु सहित बिस्तार प्रभु, कहि मुनि, नावौं माथ ।।५।।

चौपाई

जासु स्रवन सुमिरन के कीन्हें ।
चितत कहत महा अघ छीन्हें ॥
जाके सुनत सत मन मांही ।
मुदित होंहि नहि हृदय अघाँही ॥
सुनि मुनि वर के बचन रसाला ।
बोले अहि पति परम कृपाला ॥
धन्य-धन्य मुनिवर विज्ञानी ।
अस मति तुव, किमि कहहुँ बखानी ॥
श्री रघुपति पद-पदुम-परागा ।
भ्रमर सरिस मन तुव अनुरागा ॥
सत समागम, सम जग माहीं ।
मुनिवर कहहि कछुक सुख नाही ॥
जिनके सग सुनौ मुनि राई ।
रघुवर कथा होंहि सुख दाई ॥
वात्स्यायन सुनु बचन रसाला ।
मो पर कीन्हीं कृपा बिसाला ॥

दोहा

श्री रघुवर चरनन विषै, दीन्हो सुमिरनु मोहि ।
हे मुनिवर बिज्ञान निधि, सकइ प्रसंसि को तोहि ॥६॥

चौपाई

सुर नर असुर कीट मनि जाला ।
प्रभु पद आरति करहिं रसाला ॥
रावनादि जस-उदधि अपारा ।
ब्रह्मादिक लहि सके न पारा ॥
मंद बुद्धि मम मसक समाना ।
गा चहि पार बिना जलजाना ॥

जा पै कृपा राम का होई ।
पार लहै मुनि बर सुनु सोई ॥
तदपि कहौं निज मति अनुकूला ।
रघुवर सुजस हरन स्रम सूला ॥
जिमि अनत नभ सुनहु मुनीसा ।
खग सब उड़हिं सहित निज ईसा ॥
पार न पाय सकइ मुनि कोई ।
अैसो प्रबल गगन चर होई ॥
अस बिचारि रघुपति गुन-गाथा ।
बरनहुं सुमति जथा मुनि नाथा ॥

दोहा

राम चरित सत कोटि जुग, अति पुनीत सुखदान ।
जा मुनि की जैसी प्रकृति, तेहि तस कीन्ह बखान ॥७॥

चौपाई

मुनिवर सावधान सुनि बानी ;
कथा सनातन कहौं बखानो ॥
निमल करै मोरि मति कैसे ।
करे निमली जल सुचि जैसे ॥
सूत सुनहु अस कहि अहिनाथा ।
लागे करन ध्यान रघुनाथा ॥
ध्यान मध्य प्रभु हृदय बिचारा ।
ज्ञान दृष्टि सब चरित निहारा ॥
राम चरित देखें उर माँहीं ।
भये मगन पुनि पुनि पुलकाँहीं ॥
गद - गद गिरा, हरष उर छावा ।
बुंद सहस्र नयन जल आवा ॥
हर्ष बिबस मुख बचन न आवा ।
तब मन महँ प्रभु - पद सिर नावा ॥

सावधान मन करि श्री सेषे ।
लागे बरनन कथा असेषे ॥

दोहा

असुभ हरनि मगल करनि, सकल लोक सुखदानि ।
सावधान होइ सुनहु मुनि, मैं अब कहहु बखानि ॥८॥

चौपाई

सुर-नर असुर सबनि दुखदाई ।
लकेस्वर हति श्री रघुराई ॥
रावन बस—सहित सहारा ।
सुनत सकल जग भयेउ सुखारा ॥
नाक-नटिन निजु निजु छबि पाई ।
सुखित भई सब दुखन बिहाई ॥
इन्द्रादिक सुरगण सब आंये ।
जहा राम सुख-धाम सुहाये ॥
आइ सबनि सादर सिर नाये ।
प्रनत सरिस तिन बचन सुनाये ॥
अस्तुति करि सुर भवन सिधाये ।
राम विभीषन निकट बुलाये ॥
धर्म निपुनता कहं प्रभु चीन्हा ।
लकेस्वर विधिवत तेहि कीन्हा ॥
सीता सहित बहुरि रघुराई ।
पुष्पक जान चढे सुख पाई ॥

दोहा

सीता लषन कपीस पुनि, अगदादि हनुमान ।
सहित विभीषन मुदित मन, चढ़े जान भगवान ॥९॥

चौपाई

चलत विमान कुलाहल भयऊ ।
राम दुर्ग देखत सुख लहेऊ ॥
भग्न कँगूरा बंदनवारा ।
मंदिर देखे भवन अगारा ॥
बिपिन असोक देखि रघुबीरा ।
मूर्छित भये हरन भव-भीरा ॥
सावधान उठि बैठि कृपाला ।
देखा सिंसप वृक्ष बिसाला ॥
तेहि बन मध्य निसाचरि देखी ।
पवन-तनय भय त्रसित बिसेखी ॥
सीतहिं समर-भूमि दरसावा ।
निज पुर कहँ पुनि जान चलावा ॥
ब्रह्मादिक सुर साजि बिमाना ।
अस्तुति करहिं बजाइ निसाना ॥
मुदित देवगन बरषहिं फूला ।
नाचहिं नाक नटी सुख मूला ॥

दोहा

बरनत गुन ब्रह्मादि सुर, चले कोसलाधोस ।
बाट देखावहिं सियहिं प्रभु, मधुसूदन के ईस ॥१०॥

चौपाई

नाना तीर्थ मुनिन के धामा ।
सादर सियहि देखाये रामा ॥
मुनि-पतो, मुनि-पुत्र, मुनीसा ।
सोतहिं दरसावत सुर-ईसा ॥
जँह-जँह प्रथम बास प्रभु कीन्हा ।
लषन समेत तिन्हहिं हरि चीन्हा ॥

यहि बिधि सकल बास दरसाये ।
अवध समीप तबहि चलि आये ॥
तेहि तट नदी ग्राम अनूपा ।
बसै भरथ जेहि थल तप रूपा ॥
धर्म समेत प्रजहि नित पाला ।
बधु वियोग हृदय अति साला ॥
कुस आसन बठे सब काला ।
ब्रह्मचय सिर जटा बिसाला ॥
कृस सरीर दुख अति मन माहीं ।
वल्कल बसन अपर कछु नाही ॥

दोहा

बधु विरह व्याकुल भरत, नयनन तें जलजात ।
कबहुक बारि अहार करि, नहि फलादि कछु खात ॥११॥

चौपाई

दिन-दिन प्रति रघुपति गुन-गाथा ।
प्रमुदित सुनहि जोरि जुग हाथा ॥
प्रातहि भानु-उदय अवलोकी ।
जोरि पानि करि विनय ससोकी ॥
प्रम सहित करि दड प्रनामा ।
बोले भरत सकल सुख धामा ॥
जगत-नयन सुर-पति भगवाना ।
सुत अनुमानि हरहु दुख नाना ॥
जगत पूज्य रघुवर मम हेतू ।
बन कह गये धम स्रुति सेतू ॥
जनक-सुता सुकुमारि समेता ।
बन बीथिन बिचरहिं मम हेता ॥

पुष्प-सयन नहिं सियहिं सुहाई ।
आतप देखि बिकल होइ जाई ॥
सो सिय मम हित-लागि दिनेसा ।
घोर बनन महँ कीन्ह प्रवेसा ॥
जो सिय-राज वृंद नहिं देखी ।
काल रूप भीलनि सोइ पेखी ॥
मधुर अन्न हित करइ न जोई ।
वृक्षन सों फल जांचति सोई ॥

दोहा

रघुबर-बल्लभ भरत उठि, प्रात प्रात इहिं रीति ।
दुखित देखि कुल द्रवहु प्रभु, बिनती करहुँ सप्रीति ॥१२॥

चौपाई

सचिव सुमन्त आदि समदर्सी ।
नीति निपुन सास्त्रानि-मति-पर्सी ॥
सुनहु बचन मम सचिव सुजाना ।
मम अभाग्य किमि करौं बखाना ॥
मो सम अधम कवनु संसारा ।
जेहि लगि राम बनहिं पगु धारा ॥
मम अभाग्य अघ ओघ मलोना ।
दलहु राम पद करि मनु दीना ॥
धन्य सुमित्रा पति पद सेवी ।
सती सिरोमनि निज कुल देवी ॥
जासु तनय लछिमन बड़भागी ।
रघुवर - चरन - कमल अनुरागी ॥
एहि बिधि रघुबर बिरह बिहाला ।
नंदि ग्राम बसि बितवत काला ॥

भरत ग्राम रघुपति जब देखा ।
बंधु - बिरह उर भयउ बिसेखा ॥

दोहा

रघुबर भरत मिलाप अब, सुनु मुनीस मन लाय ।
कहत सुनत समुझत हृदय, ताप त्रयी नसि जाय ॥१३॥

इति श्री पद्म पुराणे पाताल खडे शेष वात्स्यायन सवादे मधुसूदन
दास कृते रघुनाथस्य भरत बार दर्शनो नाम
प्रथमोऽध्यायः ॥१॥

राजधानी-दर्शन

दोहा

लखन जानकी सहित प्रभु, राजत कोस समाज ।
अति आतुर आवहिँ चले, बंधु-मिलन के काज ॥

चौपाई

भरत बास निरखत रघुबीरा ।
पुलकि गात भयं सिथिल सरीरा ॥
गद-गद गिरा बचन नहिँ आवा ।
बंधु-मिलाप मही मनु छावा ॥
अति लालसा बरनि नहिँ जाई ।
भरत चरित सुमिरत रघुराई ॥
धर्म धुरधर बधुहिँ जानी ।
बोले राम सकल सुख खानी ॥
सुनु हनुमान सकल बल रासी ।
कहत बचन रद भयेउ प्रकासी ॥

ससि समान दुति बरनि न जाई।
जनु उर तिमिर दहन मुनि राई॥
सुनहु तात मम गिरा सुहाई।
बेगिहिं कहहु भरत सन जाई॥
सह्यो वियोग मोर बहु काला।
अस कहि विह्वल भये कृपाला॥

दोहा

मम बियोग ब्याकुल भरत, कृस सरीर सुनु तात।
सीस जटा बल्कल बसन, नयनन त जल जात॥१॥

चौपाई

नहिँ फलादि कछु भोजन करहीं।
हठ बस सोक हृदय महँ धरहीं॥
पर तिरिया जिन मातु समाना।
कंचन लोह सरिस अनुमाना॥
पालहिँ प्रजहिँ पुत्र इव नाता।
सकल धरम विज्ञ मम भ्राता॥
मम वियोग दुख अनल समाना।
दहहिं सरीर सुनहुँ हनुमाना॥
मो आगमन-वारि अनुमाना।
सींचहु बेगि तात तुम प्राणा॥
सिया लखन सहु आयेउ रामा।
अस कहि तिन्हहिँ देहु अभिरामा॥
सहित विभीषण अरु सुग्रीवा।
जान चढ़े आवत बल सीवा॥
यह संदेस कहहु तुम जाई।
मम आगमन बंधु-सुखदाई॥

दोहा

रघुवर बचन बिनोत सुनि, चले तुरत कपिराज।
नदी ग्राम प्रवेस करि, जहाँ भरत तप साज ॥२॥

चौपाई

सचिव समाज भरत कहँ देखा।
राम-बिरह उर दुखित विसेखा ॥
तेहिं समाज रघुपति गुन स्रेनी।
बरनत भरत सकल सुख देनी ॥
श्री रघुपति पद पदुम परागा।
निर्भर प्रम भरत मनु लागा ॥
करि प्रनाम कपि भरतहिं देखा।
मूरतिवत धर्म जनु पेखा ॥
बहुरि बिलोकि भरत छबि कैसी।
विस्व सांति तनु धरि जनु बैसी ॥
भरत कपीसहिं आवत देखी।
उठ बेगि उर हरष बिसेखी ॥
स्वागत पूछि कहा सुनु भाई।
सानुज सिया कुसल रघुराई ॥
ऐसे बदत भरत कपि पाँहीं।
सुखद नयन भुज फरकत जाँहीं ॥

दोहा

कपिहि बिलोकत भरत उर सोक-जनित-दुख भाग।
हृष विबस भा सिथिल तनु करहि नयन जल त्याग ॥३॥

चौपाई

देखि भरत गति बिकल कपीसा।
कहन लाग सदेस मुनीसा ॥

सीता लखन सहित रघुबीरा ।
आये निकट सुनहु मति धीरा ॥
प्रभु आगमन सुनत गा दूखा ।
मृतक उठ जनु पाइ पिऊषा ॥
जो सुख भरतहिं भा मुनिराई ।
सहसानन तेहि सकत न गाई ॥
कहहुं बुझाइ सूत तोहि पाहीं ।
मो मति परसि सकति तेहि नाहीं ॥
कहेउ राम आगम सुख—साजू ।
देउँ कहा कपि तो कहँ आजू ॥
जन्म प्रजंत दास में तोरा ।
होइ न सनमुख कपि मन मोरा ॥
प्रभु सदेस सुनावहु मोहीं ।
केहि बिधि तात प्रसंसौं तोहीं ॥

दोहा

मंत्रिन्ह सहित बसिष्ठ कर, अरघु लीन्ह हरषाइ ।
चले भरत रघुनाथ पहँ, आगे करि कपिराइ ॥ ४ ॥

चौपाई

पुष्पक जान चढ़े रघुबीरा ।
देखत भयेउ भरत मति धीरा ॥
उभय ओर सिय लषन बिराजै ।
ब्रह्मादिक पुष्पांजलि साजैं ॥
देखि राम-छबि भरत जुड़ाने ।
पुलकित रोम-रोम हरषाने ॥
उहाँ कृपानिधि भरतहि देखा ।
रहित जान उर दुखित बिसेखा ॥

जटा मुकुट बलकल कोपीना ।
कृस सरीर जनु मुनि का लीना ॥
सहित समाज भरत येहि बेषा ।
देखि राम भये बिकल विसेषा ॥
बहुरि बंधु लखि राम उदारा ।
सोचहिं दसरथ विभव अपारा ॥
राज-राज दसरथ बड़ भागो ।
उठहिं सुरेस देखि ज़िहिं लागी ॥

दोहा

तासु तनय आवत भरत, बिना जान मुनि वेष ।
जो दुख लह्येउ न मैं विपिन, सो इन्ह येहि थल देख ॥ ५ ॥

चौपाई

अहह बंधु मम प्रान पिआरा ।
बिपति सही मो लागि अपारा ॥
मो आगमन सुनत हरषाये ।
सहित समाज आजु चलि आये ॥
सहित बसिष्ट निकट लखि भ्राता ।
कहत सबहि सन जन-सुख-दाता ॥
लषन बिभीषन आदि कपीसा ।
पूजन योग कोसलाधीसा ॥
भूतल जान प्ररि रघुबीरा ।
बिरह बिबस भा सिथिल सरीरा ॥
तुरत बिमान तज्यौ तेहि काला ।
बंधु-बंधु कहि बंधु दयाला ॥
बहुरि बंधु कहि बंधु कृपाला ।
हरष बिबस दृग स्रवहिं बिसाला ॥

सुरगन सहित प्रभुहिं अवलोकी ।
कीन्ह दंडवत भरत ससोकी ॥

दोहा

स्रवहिं नयन जल, बिकल अति, देखि भरत गति राम ।
दीन बंधु प्रभु, बन्धु प्रति, आपुन कीन्ह प्रनाम ॥ ६ ॥

चौपाई

दोउ भुज भरि भेटहिं रघुबीरा ।
हर्ष सोक बस सिथिल सरीरा ॥
राम उठाव, भरत नहिं उठहीं ।
बहुत भांति करुना तहं करहीं ॥
सुनु मुनीम पद गहि अनुरागी ।
उठहिं न भरत मानि हत भागी ॥
सुनहु बिनय रघुनाथ उदारा ।
दुराचार मैं दुष्ट अपारा ॥
अघ-समूह मैं सुनहुं कृपाला ।
रामचन्द्र तुम दीनदयाला ॥
महाबाहु करुणा-सुख-सागर ।
कृपा करहु प्रभु लखि खल आगर ॥
सिव कर चाँपनि लागि कठोरा ।
सोइ पद मम हित भ्रमि बन घोरा ॥
अस कहि भरत रहे अरुगाई ।
करि मुख मलिन भेटि रघुराई ॥

दोहा

जोरि उभय कर हर्ष बस, बिह्वल बदन बिसेषि ।
देखि बंधु-गति कृपानिधि, कीन्ही कृपा अलेखि ॥ ७ ॥

चौपाई

सानुज भरतहिं भेंटि कृपाला ।
पुनि सुमत कहँ मिलि तेहि काला ॥
सादर स्वागत कहि भगवाना ।
मिलि करि सबनि दीन्ह सुख नाना ॥
बहुरि कृपा निधि भरत समेता ।
पुष्पक जान चढ़े सुख देता ॥
भरत सिया कर दरसन कीन्हा ।
बंधु-प्रिया सुचि मन महं चीन्हा ॥
बहुरि अत्रि त्रिय के सम जानी ।
कुंभज-नारि-सरिस अनुमानी ॥
मातु छमहु अपराध अपारा ।
दुराचार रत खल मैं भारा ॥
पतिदेवता सिरोमनि माता ।
सकल सिद्धि-दायक जन-त्राता ॥
सुनि सिय देवर की बर बानी ।
महा भाग मन महं हरषानी ॥

दोहा

सादर स्वागत पूछि सिय, दै असीस हरषाइ ।
सुफल होहु मन-कामना, सुनि हर्ष दोउ भाइ ॥
सहित समाज विमान चढ़ि, कृपा सिंधु रघुनाथ ।
आये छिन महँ अवध तट, सुर गावत गुन गाथ ॥ ८ ॥

इति श्री पद्म पुराणे पाताल खंडे शेष वात्स्यायन सवादे
राजधानी दर्शनो नाम द्वितीयो अध्यायः ॥२॥

रघुनाथपुर प्रवेश

दोहा

अब तीसर अध्याय महँ, होइहैं कथा रसाल।
करिहैं अवध प्रवेस प्रभु, दलि सब के दुख-जाल ॥

चौपाई

वात्सायन सुनु कथा रसाला।
अवध बिलोकि राम तेहि काला ॥
संतत नित्य जीव जहँ रहई।
प्राकृति गुन बाधा नहिँ करई ॥
बहुत काल बिछुरी प्रभु जानी।
अति लालसा हृदय मँह आनी ॥
सुनहु सूत अब कथा सुहाई।
कहहिँ सुमुख सन भरत बुझाई ॥
जाहु सुमत सहित तुम ताता।
रचवावहु रचना सुख-दाता ॥
करहु नगर महँ यह सुधि जाई।
आवत सिया सहित दोउ भाई ॥
प्रति मदिर न करावहु जाई।
रचना अति विचित्र सुखदाई ॥
पुनि बीथिन्ह प्रति मन हरषाई।
चदनादि छिरकावहु जाई ॥

दोहा

सुमन सुगंधित भार बहु बिछवावहु तिन माँहि।
हृष्ट पुष्ट नर मुदित होइ, नृप मारग महं जाहिं ॥

चौपाई

ध्वज पताक तोरन बहु भाँती।
चित्रित करहु जाइ गृह पाँती॥
अजिर सँवारहु सब विधि जाई।
सिंदुर मनि के चौक पुराई॥
ध्वजा धरहु गृह-गृह प्रति कैसे।
घन घमंड महँ हरि-धनु जैसे॥
देखत तिन्हहिं बली मुख जाहीं।
मुदित होत पुनि-पुनि पुलकाहीं॥
गृह प्रति पुनि पुर के चहुं पासा।
अगर धूप कर करहु प्रकासा॥
जासु समूह देखि चहुँ ओरा।
घन दव लखि नाचहिं 'कल' मोरा॥
सैल समान मत्त गज राजा।
गेरुकादि रचि सजहु समाजा॥
मन-गति-हरन तुरग सुभ सीला।
लाजहिं अमर बाजि लखि लीला॥

दोहा

तिन्हहि सँभारहु बिबिधि बिधि, सुनहु सचिव मति धीर।
सहसनि कन्या सुमुखि सुचि, सजि नव-सप्त सरीर॥२॥

चौपाई

गजनि चढ़ावहु तिनहि संभारी।
मुक्तागन बरषहि सुकुमारी॥
आवहिं विप्र थार गहि पानी।
[illegible]रद दूब धरि मंगल खानी॥
[illegible]भग सुबासिनि साजि आरती।
करहि राम पर मुदित बालती॥
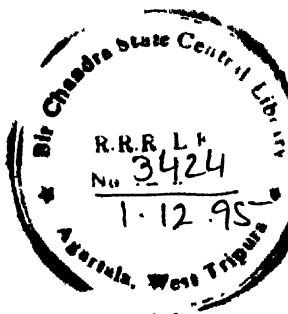
कौसल्या रघुबीर वियोगा।
दुखित महा त्यागे सब भोगा॥
कृस सरीर मुख बचन न आवैं।
राम दरस बिनु कछु नहिं भावैं॥
ता कहं राम-सदेस सुनावहु।
बहुरि तात रचना रचवावहु॥
अति विचित्र रचना रचवाई।
मोर सदेस सबहि समुझाई॥
सहित समाज साजि सब साजा।
आवहु बेगि तात करि काजा॥

सोरठा

सुनत सचिव हरषाइ, तुरत गये श्री अवध मह।
कहेउ सबहि समुझाइ, रचना रचहु विचित्र अति॥३॥

चौपाई

पुनि रघुपति आगमन सुनावा।
सुनि सब के आनंद उर छावा॥
प्रभु आगमन महोत्सव भारी।
रचहु सकल पुरजन सुविचारी॥
सीता लषन सहित रघुराई।
हरषित आवहिं जन सुखदाई॥
प्रथम बिरह बस सुनु मुनिराई।
तजे भोग सुख सबनि बनाई॥
नाना व्रत संयग तिन कीन्हे।
राम दरस लगि सुतनु न चीन्हे॥
विविधि भोग सुख सबनि बिहाये।
प्रभुहिं विपिन लखि मनहिं न भाये॥
ते सब सुखित भए मुनि राइ।
सुनहु बिचित्र कथा मनु लाई॥

बेद विसारद विप्र सुजाना।
कुस-मुद्रिका पहिरि सुख माना॥

छंद

कुस मुद्रिका कर पहिरि विप्र, सुजान आनंद सों भरे।
साजे सु धोती बिमल कटि महं, थार मंगल कर धरे॥
छत्री चले सजि अस्त्र-सस्त्रनि, सूर रन मह बांकुरे।
बर वैस्य धनद समान अभरन, बसन सजि प्रभु लगि जुरे॥

सोरठा

विप्र भक्ति लव लीन्ह, परिचर्या महं निपुन अति।
करहिं न स्रुति पथ छीन, चले सुद्र रघुनाथ हित॥४॥

चौपाई

जे जे वृत्तिकार पुर माहीं।
राम दरस लगि सजि-सजि जाहीं॥
निज-निज साज साजि मुनिराई।
हरषित चले बरनि नहिं जाई॥
भरत संदेस मानि हरपाई।
कौतुक विपुल करत सुखदाई॥
आये प्रजा लोग बड़भागी।
राम - चरन पकज - अनुरागी॥
सुनहु सूत अब कथा सुहाई।
रघुपति सुर बिमान समुदाई॥
अवध प्रवेस कीन्ह रघुबीरा।
प्रमुदित हृदय हरन - भव - भीरा॥
रचना निरखत जन सुखदाता।
होइ प्रसन्न मन पुलकित गाता॥
कपि समूह हरषित नभ-बाटा।
चले जाहिँ निरखत पुर ठाटा॥

छंद

पुर ठाट निरखत मनुज तनु धरि, सोभ नहि बरनत बने।
सुनु मूत तब प्रभु चढ़े सिविका, निरखि सुर दुंदुभि हने ।।
सीता समेत बिलोकि पुर जन, सहित परिजन मन गुने।
हम धन्य तन भये आजु, मधुसूदन हरष बस सुख सुने ।।

सोरठा

प्रमुदित मीता राम, चले जात श्री अवध महं।
निरखत सुन्दर धाम, अति विचित्र रचना अयन ।। ५ ।।

चौपाई

सुंदर वदनवार पताका।
मोहे देखि न अस मनु काका ।।
कौतुक बिपुल होंहि मग माहीं।
जन समूह प्रमुदित अति ताहीं ।।
उत्सव हेत साजि नव भूषन।
करहि आइ दरसन दुख दूषन ।।
बीना प्रनव भेरि सहनाई।
बजहि निसान मृदग बनाई ।।
झालरि झांझि आदि जे बाजै।
सबनि द्वार प्रति प्रमु हित साजै ।।
सोभा भवन राम सुख पावहिं।
मागध सूत बदि गुन गावहि ।।
जय रघुबर जय रघुकुल भूषण।
जय दसरथ - सुत दुष्ट - विदूषण ।।
जयति जगत - नायक भगवाना।
अगम चरित्र वेद नहि जाना ।।

छंद

अति अगम चरित न वेद जानहि, सुनु मुनीस कथा भली।
पुर की सुकन्या गजन पर चढ़ि, जलज गन बरषति चली॥
सब द्वार द्वारनि करहि आरति, निरखि छवि हरषित अली।
मानहुँ प्रभात बिलोकि दिनकर, उदय पंकज की कली॥

दोहा

जयति बचन सुनि नगर जन, हरषित हृदय अपार।
तिनकी त्रिय मंदिरन पर, गावइं मंगलचार॥६॥

चौपाई

पुलक सरीर सकल नर-नारी।
दरस लागि तन दसा बिसारी॥
राम राज-मारग-महं जाहीं।
रुचिर बाट निरखत जहं ताहीं॥
नव पल्लव प्रसून बहु भारा।
चंदन पंक सुबाट मझारा॥
तहं पुर-नारि झरोखन लागी।
राम-दरस-हित मन अनुरागी॥
सीता सहित राम-छबि देखी।
कहहिं परस्पर बचन बिसेखी॥
धन्य सखी वै भील-कुमारी।
जिन्ह रघुवर छबि विपिन निहारी॥
निज सुभाग्य तनु प्रगटेउ नीको।
पायेउ दरस भावते जी को॥
धन्य भील कन्या सखि वोई।
दिन प्रात लहहिं राम छवि जोई॥

दोहा

वीर भवन रघुवंस मणि, जलज-नयन छवि धाम।
बिनु स्रम दरसन लहहि नित, सखि नहिं उन सम वाम॥७॥

चौपाई

ब्रह्मादिक सुर बिपुल उपाई।
करहिं दरस लगि मुनि समुदाई॥
पाइ न सकहिं सुनहु पुनि सोऊ।
सोइ सिय सहित बघु ये दोऊ॥
भरि लोचन छवि लहेहु निहारी।
सोहै कोटि बदन सुख कारी॥
मंद मंद मुसकात कृपाला।
देखु सखी छवि बड़ी विसाला॥
अधर अरुन बंधूक लजावहिं।
तिन बिच दसन महा छवि पावहिं॥
अस कहि प्रभुहिं विलोकन लागीं।
तन मन बचन रूप रस पागीं॥
तिनकी प्रीति जानि मन माहीं।
प्रभु कृतज्ञ चितये दिन पाहीं॥
कमल बदन मुसक्यात दयाला।
कृपा कटाक्ष करहिं तेहि काला॥

दोहा

अखिल लोक गुरु कृपानिधि, चितवत करत निहाल।
हरषि जननि गृह चलेउ प्रभु, मुनिवर सुनु तेहि काल॥

इति श्री पद्म पुराणे पाताल षंडे सेष वात्सायन संवादे
रघुनाथस्य पुर प्रवेसनो नाम तृतीयोऽध्यायः॥३॥

राज्याभिषेक

दोहा

सूत सुनहु यहि भाँति सुनि, वात्सायन मुनि नाथ।
जोरि उभय कर सेष सन, बोले धरि पद माथ॥

चौपाई

धरा धरनि भुजगेस कृपाला।
संसय हरहु नाथ यहि काला॥
रघुवर विपिन गये बिनु जाना।
राखे जननि कवनि विधि प्राना॥
मलिन चित्त व्याकुल दिन-राती।
सुत वियोग बस कछु न सुहाती॥
छीन सरीर हृदय दुख मानी।
सुनि सुत-आगम किमि हरषानी॥
कहा भयउ तेहि समय कृपाला।
चिन्ह दसा सब कहहु दयाला॥
सुनत सुमुख प्रति सुत-आगमना।
कहा कहेउ प्रभु - जननि न बचना॥
यह मम संसय दलहु कृपाला।
बुद्धिमान अहिनाथ दयाला॥
करहु उदय रघुपति गुण गाथा।
दलि संसय मोहि करहु सनाथा॥

दोहा

अग्रनीय द्विज वरण महं, वात्सायन मुनिराज।
सुखद प्रस्न जो कीन्ह तुम, सुनहु सकल सुखु साज॥

चौपाई

सुनु मुनीस करि थिरु मन अपना।
भाषहुं तुम हित सुंदर बचना ।।
सुमुख बचन पंकज ते जाता।
राम गमन अमृत सम ताता ।।
पियत-पियत थकि रहेउ सरीरा।
बिह्वल भई सुनहु मुनि धीरा ।।
चित भ्रम भयउ कि स्वप्न विधाता।
मै मतिमंद कहां यह बाता ।।
मैं हतभाग्य सकल दुख-खानी।
सुमिरेउ मोहि राम कह जानी ।।
राम-दरस मो कंहं जग माहीं।
दुर्लभ सब विधि संसय नाहीं ।।
पूरब हम तप कीन्ह विसाला।
पायेउ सुत बीते बहु काला ।।
पुनि कछु पाप भये अति भारी।
गये बिपिन सुत, कह महतारी ।।

दोहा

कहहु सुमुख सीता सहित, कुसल लखन रघुबीर।
बिचरहिं बन मैं दुखित अति, मोहि किमि सुमिरैं धीर ।।२।।

चौपाई

अस कहि रोदन करै अपारा।
सुमिरि-सुमिरि सुत चरित उदारा ।।
बिरह बिबस व्याकुल महतारी।
निजु परान नहिं हृदय सम्हारी ।।
सुमुख देखि व्याकुल अति माता।
निज करि करहिं बीजन वाता ।।

सावधान भइ जननि बहोरी।
कहे सुबदन बचन कर जोरी॥
आनँद हृदय बढ़ावन हारे।
सचिव सोई बर बचन बिचारे॥
सावधान होइ देखहु माता।
आये भवन राम सुख दाता॥
लखन जनकी सहित कृपाला।
ठाढ़े जननि मुदित यहि काला॥
देहु असीस मातु सुख पाई।
मुदित होहु, दुख देहु बहाई॥

दोहा

सुनत सचिव के बचन प्रिय, उर आनंद अधिकान।
सो सुख सुनु मुनि राज मैं करि नहिं सकौं बखान॥३॥

चौपाई

सुत-आगम सुनि आँगन आई।
हर्ष बिबस पुलकावलि छाई॥
विह्वल तन दृग वारि विमोचे।
राम दरस लगि मन मँह सोचे॥
तेहि अवसर सिविका चढ़ि रामा।
केकइ भवन गये सुख धामा॥
भरत समेत दंडवत कीन्हा।
सकुच बिबस तेहि उतरु न दीन्हा॥
नम्र बदन करि अति पछिताई।
चिंता मगन रही अरगाई॥
रवि कुल केतु उभय कर जोरी।
मातु बिलोकि बिनय सुनु मोरी॥
जननि-प्रबोधनि-गिरा सुहाई।
बोले राम सुजन - सुखदाई॥

तव प्रसाद जननी रन माहीं।
बधे निसाचर मम कृत नाहीं॥

दोहा

सुनहु मातु मैं बिपिन बसि, तुव आयसु प्रतिपाल।
अब कह अज्ञा करहु तुम, बेगि करहुँ येहि काल॥४॥

चौपाई

मोतैं कियो कवन अघ भारी।
हेरहु मोहि तन तनय बिचारी॥
भरत समेत परसु सिर पानी।
देहु असीस मातु सुख मानी॥
रघुपति बचन सुनत मुनिराई।
दीन्ह असीस सकुचि सिर नाई॥
एहि विधि भरत मातु सनमानी।
चले सुमित्रा गृह सुख खानी॥
पुरुषोत्तम रघुबर तेहि काला।
निरखि मातु कहि बचन रसाला॥
करि दंडवत हृदय हरषाई।
कृपा सिंधु प्रभु जन सुखदाई॥
लखन समेत राम कहं देखा।
उठि जननी मन हर्ष विसेषा॥
चिरजीव कहि बारहि बारा।
सुनि असीस बर राम उदारा॥

दोहा

परे सुमित्रा चरन गहि, राम भद्र तेहि काल।
मिलि सप्रेम रघुबंस-मनि, बोले बचन रसाल॥५॥

चौपाई

केहि विधि कहौं लखन गुन माता।
मो लगि सहि बन आतप-बाता॥

जहं-जहं परेउ महा दुख भारी।
तहं-तहं इन्ह मोंहि लीन्ह उबारी॥
इन्ह सम बुद्धिमान नहि माता।
मो कहं सबै काल सुख-दाता॥
मातु दसानन सुर-दुखदाई।
हरी सिया एक अवसर पाई॥
अति अगम्य लका लेइ गयऊ।
लखन बाहु बल प्रापति भयऊ॥
देहु असीस लखन कह माई।
परसहु सीस सुकर सुखदाई॥
अस कहि करि प्रनाम कर जोरी।
कौसिल्या गृह चले बहोरी॥
देव समूह सहित रघुबीरा।
गये मातु पह सुनु मति धीरा॥

दोहा

देखो मातु प्रसन्न अति, निज दरसन की चाह।
तुरंत छाड़ि प्रभु पालकी, परे हरषि पद मांह॥६॥

चौपाई

बिहवल चित्त बचन नहि आवा।
ललकि हृदे सुत कंठ लगावा॥
पुनि - पुनि मिलहि मातु भरि अका।
पारस लहेउ मनहु अति रका॥
मातहि मिलि सुख पाव कृपाला।
पुनि जननी निरखी तेहि काला॥
छीन सरीर हरष उर छावा।
गद - गद गिरा कठ रुकि आवा॥
लोचन स्रवहि तप्त जल - धारा।
बिरह बिहात अवधि अनुसारा॥

नूपुरादि बिनु, दुखित बिलोकी।
मलिन बसन, तन छीन, ससोकी॥
निज सनेह बस देखि अधीरा।
कहेहु राम जननी धरु धीरा॥
समय बिलोकि सोक तजु माता।
अस कहि बोले जन सुखदाता॥
बहुत काल मैं तुव सेवकाई।
कीन्ह न सो अघ छमियहु माई॥

दोहा

भाग्यहीन मैं मातु सुनु, करहु कवन विधि सेव।
छिमहु मकल अघ मद लखि, कहि बिलखे द्विज देव॥७॥

चौपाई

जे सुत मातु पिता सेवकाई।
करहि न मोह - बिबस, सुनु माई॥
ते जड़ कोट सरिस जग माहीं।
अंत काल अपि नरकहि जाहीं॥
पितु आयसु मैं बन कहं गयऊ।
दुसह दुःख वारिध महं परेऊ॥
कृपा तुम्हारि पार मैं भगऊ।
अब पद निरखि सकल सुख लहेऊ॥
मातु हरी दसमुख वंदेही।
तुम्हरो कृपा बध मै तेही॥
जनक सुता कह प्रापति भयऊ।
तुम्हरो कृपा सकल सुःख लहेऊ॥
पतिव्रता सब कह सुखदाई।
सो सिय तव चरनन महं पाई॥
तन मन बच तव पदमनु लाई।
देहु असीस मातु हरषाई॥

दोहा

सुनु सुत-बचन विलोकि सिय, हरषि आसिषा दीन्ह ।
पतिव्रता सिर मौर गुनि हृदय ल्याइ तव लीन्ह ॥८॥

चौपाई

निज पति सहित राज बहु काला ।
करहु सीय, दलि बिपति बिसाला ॥
होहु पुत्र दुइ सब सुखदाई ।
बंस पवित्र करन सुखदाई ॥
तो सम स्वपति-परायण नारी ।
सुनु सिय नाहिं भुवन दसचारी ॥
आपु सहित निज पितु कुल पावन ।
कीन्ह राम-पद सेइ सुहावन ॥
कोटिन सत्रु करहिं कह ताके ।
पतिव्रता वर भामिनि जाके ॥
बंधु समेत कुसल रघुराई ।
आये तुव प्रताप कहि माई ॥
दे असीस कहि बचन रसाला ।
पुनि अरुगाइ रहीं तेहि काला ॥

दोहा

सुनत सासु के बचन सिय, उर आनद अधिकान ।
स्रवहिं नयन जल, पुलकि तन, निज पर कछू न जान ॥९॥

चौपाई

भरत सरल चित मन हरषाई ।
रामहिं राज समरपेउ जाई ॥
बुद्धिमान दिनकर कुल केतू ।
सकल राज दै कीन्हेउ हेतू ॥

मंत्रिन देखि भरत कै रीती।
गनक मंत्रविद बोल सप्रीती॥
सुखद महूर्त पूछि तेहि काला।
करन हेत रामहिं भुव पाला॥
सुभ नछत्र सुभ दिन मन जानी।
मगल द्रब्य राज हित आनी॥
विधिवत रामहि कीन्ह नरेसा॥
सुखित भये सुर सिद्ध सुरेसा॥
तब मंत्रिन्ह लै मृग-पति-छाला।
सप्त दीप लिखि अवनि विसाला॥
राज अवध रामहि दर साई।
सुखित भये सब बिपति बिहाई॥

छंद

तजि विपति तेहि दिन ते सुजन मन मुदित होइ बिचरहिं मही।
भये दुखित खल सब ओर ते मुनि राज ते अहिपति कही॥
मन बचन कर्म बिहाइ छल पति भक्तिरत अबला सही।
नर नारि राम प्रताप ते, सब भाँति नहिं भय गति लही॥

सोरठा

देव दनुज नर नाग, निसिचर किन्नर यक्ष अहि।
सकल सहित अनुराग, सिर धरि प्रभु आयसु करहि॥१०॥

चौपाई

पर उपकार निरत सब लोगा।
करहिं कर्म प्रभु प्रापति-जोगा॥
निज-निज धर्म निरत नर-नारी।
संतत मुदित रहहिं सुबिचारी॥
पंडित सब, नास्तिक नहिं कोऊ।
धनद समान रंक अति सोऊ॥

मारुत मंद बहै सब काला ।
प्रभु उर डर पति हृदय विसाला ।।
झीन वसन पहिरे पुर नारी ।
सकै उड़ाव न, आयसु धारी ।।
श्री रघुनाथ कृपा मुनिराई ।
जड़ जंगम सब मुदित बनाई ।।
प्राकृत गुन व्यापहि नहिं काहू ।
नित नव पुर महँ होहिं उछाहू ।।
भ्रातन सहित राम भगवाना ।
दिन प्रति गुरू सेवा करि नाना ।।

सोरठा

मुनि वसिष्ठ लखि रीति, अति प्रसन्न निसि-दिन रहे ।
देहिं असीस सप्रीति मधुसूदन प्रभु भक्ति बस ।।

इति श्री पद्म पुराणे पातालखंडे शेष वात्सायन संवादे
श्री रघुनाथ राज्याभिषेको नाम चतुर्थोऽध्यायः ।।४।।

अगस्त-समागमन

दोहा

सूत अनूप कथा सुनहु, सावधान धरि कान ।
सुर अस्तुति करिहैं महा, कुंभज आगम जान ।।

चौपाई

मुनिवर सुनि रामहि भुवपाला ।
सकल अमर आये तेहि काला ।।

बिगत त्रास प्रमुदित मन माहीं ।
निरखि राम छबि दृग न अघाहीं ।।
रावण-बध गनि भा सुख भारी ।
पुलकि गात, अस्तुति अनुसारी ।।
सावधान सुनि मुनिवर बानी ।
अस्तुति करन लगे सुर ज्ञानी ।।
जय दिनकर-कुल-मंडन रामा ।
सदा प्रणत जन पद अभिरामा ।।
करुणा उदधि प्रकृति पर नाथा ।
सदा स्वतंत्र विदित स्रुति गाथा ।।
खल बन दहन अज्ञ तम भानू ।
कोहादिक-धन पवन निदानू ।।
जयति-जयति जय रमा निवासू ।
सकल जगत उर करन प्रकासू ।।

छंद

जय दासरथं, सुर ताप-हर ।
जय दानव-बंस बिनास-करं ।।
जय देव-वधू दुख-देन-दलं ।
दनुजेन्द्र बध्यो निज बाहुबलं ।।
यह कीरति जे कवि गान करें ।
भव बंधन तैं प्रभु पार परें ।।
जग सम्भव पालन नास करं ।
निजु लीलहिं सों जन-दोष-हरं ।।
जय जन्म जरादिक दुःख परं ।
बलवान निसाचर नास करं ।।
जय धर्म धुरंधर न्याय रत ।
प्रभु प्राकृत दोषनि ते रहितं ।।

जय देव-सिरोमणि मोदकर।
तव नाम असेषनि पाप-हर॥
तुव अघ्रिन की रज पाप प्रभो।
मुनि नारि भई तन दिव्य विभो॥

छंद

रघुनाथ तव पद-कज सिव, जलजात-भव उर ध्यावही॥
जन भजहि संतत मुदित मुनि, मन-भावते फल पावहीं॥
ते चरण मह रघुवस मणि जुत, चिन्ह, मन महंल्यावहीं॥
सनकादि नारद सिद्ध मुनि, अघाइ जस नित गावही॥
हे नाथ जब-जब मदन मोहन, रूप जग मै धरत हौ॥
करि सुखित तब-तब हमहि प्रभु, अघ औघ ते उद्धरत हौ॥
खल बढ़हिं जब-जब धरनि मैं, दलि तिनहि आनद करत हौ॥
अवतार धरि करि कृपा तब-तब जनम के दुख हरत हौ॥

दोहा

अजया विषई स्वर विभू, निज इच्छामय नाथ।
अमृत सरस अवनी विषै, है प्रभु तव गुन गाथ॥१॥

चौपाई

तुम्हरे चरित सकल अघ हारी।
गावहिं नारदादि उर धारी॥
अहो ईस तव गुन-गन पाँती।
दुरलभ मनुजन कह सब भाँती॥
अस कीरति जग महँ विस्तारी।
पुनि जैहौ निज धाम खरारी॥
आदि अनादि अजर वपु धारी।
सीस क्रीट उर हार बिहारी॥
काम कोटि छबि जीतन हारे।
तुम प्रभु कीन्हे देव सुखारे॥

तव पद कमल संभु नित भजहीं ।
उर धरि विषम प्रकृति गुण दहहीं ॥
इहिं विधि व्रह्मादिक मुनिराई ।
अस्तुति कीन्ह सुरन हरषाई ॥
पुनि दसमुख बध गुनि मन माही ।
विगत मान सुर प्रनवत ताही ॥

दोहा

सुनि सुर बिनय प्रसन्न होइ, गुन गनपति रघुनाथ ।
बोले बचन रसाल लखि, त्रिदस नवाये माथ ॥२॥

चौपाई

सुनहु त्रिदस वरदेहुं बिसाला ।
दुरलभ मनुज जच्छ दिगपाला ॥
कहहिं देव गुन सुनहु कृपाला ।
हम सब बिधि पूरन एहि काला ॥
सदा दुखद रिपु रावन मारा ।
पूरन भयउ नाथ एक बारा ॥
तदपि नाथ जो तुम बर देहू ।
माँगे हम, दीजै करि नेहू ॥
जब-जब हमहिं असुर दुख देहीं ।
धरि अवतार बधौ तब तेहीं ॥
एवमस्तु तब कहि रघुबीरा ।
बोले पुनि भंजन भव-भीरा ॥
सुनहु देव सादर मम बानी ।
तुम जो अस्तुति कीन्ह बखानी ॥
अद्‌भुत गुन मिसिरित जस मोरा ।
पढ़हिं प्रात छूटहि भव घोरा ॥

दोहा

पढ़ सुने जे मुदित मन, सुनहु देव जग माहि।
तिनको सपने में विषै, बिपति पराभव नाहि ॥३॥

चौपाई

व्याधि दरिद्र कबहुं नहिं होई।
मम पद-भक्ति अवसि भव सोई ॥
आनद मगन रहे नित तेई।
पढ़िहै प्रेम सहित सुर जेई ॥
अस कहि राम रहे अरुगाई।
भूप सिरोमनि जन सुखदाई ॥
तब सब सुर प्रभु पद सिरु नाई।
निज-निज लोक गये हरषाई ॥
यहि विधि सुर अस्तुति मैं गाई।
अब सुनि राम-राज मुनिराई ॥
भ्रातन् पर करि सुत सम प्रीती।
पालहिं प्रजहि पुत्र की रीती ॥
अखिल लोकपति नृपता देखी।
अल्प मृत्यु नहि सपनेउ लेखी ॥
रोग पराभव होइ न काहू।
बैर न हित जन लूटहिं लाहू ॥

दोहा

संतत सब तरु फलनि सों, भूमि रहे नियराइ।
जन पूरन परिवार जुत, मुदित रहे मुनिराइ ॥४॥

चौपाई

पति वियोग दुख तीय न लहहीं।
प्रभु गुन कथन दिवस निसि करहीं ॥

पर गुन दोष कबहुं नहि देखी ।
सपनेउ मन करि पाप न पेखी ।।
संतत रघुनायक भय मानी ।
करहिं न कलुष करम मन बानी ।।
राम मुखारविंद अवलोकी ।
रहे सदा जन मुदित असोकी ।।
सकल लोक करुणामय भयेऊ ।
बिन स्रम राम-राज जग लयेऊ ।।
ऋषि मुनि मुदित रहहि दिन-राती ।
हाटक भूषण सह सब भाँती ।।
प्रमुदित रहैं सदा पुरबासी ।
विमल धर्मपथ परम प्रकासी ।।
संतत अवनि कृषी-जुत राजै ।
हारन बसि किसान तिन काजैं ।।

दोहा

श्री रघुपति के राज महँ, घर प्रति मंगल बास ।
सकल अन्न तृन अपरमित, गौधन विपुल विलास ।।५।।

चौपाई

राम राज मह सुर-सकेतू ।
अगिनित लसहिं सुनौ मुनिकेतू ।।
जस खंभ अरु रुचिर बिताना ।
ग्राम-ग्राम प्रति राजहिं नाना ।।
वृक्ष फूल फल दायक भयऊ ।
सरवर नलिन सहित छबि लहेऊ ।।
सुचि जल सहित सरित जग बहहीं ।
दंभ-रहित संतत जन रहहीं ।।

घनकरि सब समान स्रम करई।
बरन आचरण सो लखि परई॥
पंडित सकल सरल चित भयऊ।
नारिन विषे चपलता रहेऊ॥
सरितन विषे कुटिलता भासी।
नर नारिन मत्सरता नासी॥
तम गुन रहित सकल जन भयेऊ।
यक रजनी बिनु अहि पति कहेऊ॥

दोहा

रज नारिन मैं लखि परै, रज गुन हत सब लोग।
घन मद परिहरि सकल जन, करहिं देव गति भोग॥६॥

चौपाई

अनय मात्र रथ महँ मुनि राई।
विगत सकल जन रहहिं सदाई॥
परसु कुदार बिजन लखि दंडा।
नहिं जीवन 'पर' त्रास प्रचडा॥
भानु मुखी आतप महं लेखी।
नरन त्रास नहिं आँखिन देखी॥
विषय मध्य दग कोउ न देई।
रघुपति रूप नयन भरि लेई॥
द्यूतहिं मधि पासे जोई।
पास बद्ध दुख लहे न कोई॥
दुरबलता तिय कटि मह देखी।
जड़ता जल बिनु अनत न पेखी॥
जन कठोर जग भयेउ न कोई।
सो निस्चय तिय उर महँ जोई॥
कुष्ठ मात्र औषध जग माहीं।
नरन विषे सपनेउ मुनि नाहीं॥

दोहा

छिद्र मनिन बिनु अपर नहिं, सूत्र सुरन कर माहिं।
दया भाव जन डरहिं अति, भयकरि कपि तन नाहिं ॥७॥

चौपाई

नर निःकाम रहैं दिन राती।
अघ दरिद्र दुख, गा सब भांती ॥
सकल वस्तु परिपूरन लोगा।
राम कृपा करि प्रापति भोगा ॥
इभ मदमत्त अपर नहि कोई।
युद्ध मात्र जल बीचिन होई ॥
दानहीनता कतहुँ न देखी।
तीक्षणता कांटे मह लेखी ॥
गुन परित्याग चाप बिच मानहु।
दृढ बंधन पुस्तक मैं जानहु ॥
नेह त्याग दुष्टन महँ देखा।
नहि सज्जननि विषे मुनि पेषा ॥
यहि विधि राम प्रजहि प्रतिपाला।
धर्म-सिंधु, दुष्टन कहँ काला ॥
ग्यारह सहस वर्ष श्री रामा।
राज धर्म जुत करि सुख धामा ॥

दोहा

छुद्र रजक के बचन सुनि, सिया त्याग प्रभु कीन्ह।
तेहि बिनु धर्म समेत हरि, पुरवासिन्ह सुख दीन्ह ॥८॥

चौपाई

एक समय रघुवीर कृपाला।
सभा मध्य राजहि नरपाला ॥
तेहि अवसर कुभज मुनि आये।
ऋषिकुल तिलक श्रुतिन मै गाये ॥

लीलहि सो सोह्यो बारोसा ।
आवत देखि कौसलाधीसा ।।
सहित वसिष्ठ उठे तेहि काला ।
अर्घ पाद्य दिय दीनदयाला ।।
पुनि पूछत भय कृपा निधाना ।
आसन दै बैठे भगवाना ।।
तुम सब जीवनप्रद अभिरामा ।
हे मुनि ब्रह्मचर्य तप धामा ।।
जगत पूज्य सब विधि अनुमानी ।
पुनि-पुनि स्वागत करि धनुपानी ।।

दोहा

तुमरो दरसन पायेउ, सुनहु महा मुनिराय ।
अति पावन भा आजुहीं, सहित कुटुम समुदाय ।।६।।

इति श्री पद्म पुराणे पाताल खंडे शेष वात्सायन संवादे
रामास्वमेधे अगस्ति समागमनो नाम पंचमोऽध्याय: ।।५।।

रावणोत्पत्ति

दोहा

वेद त्रै महँ निपुन तुम, सुनहु महा मुनि धीर ।
तुम्हरे तप महँ विघ्नकर, नहिंन अवनि-तल वीर ।।

चौपाई

मुनिवर भाग्यवन्त तव नारी ।
पतिव्रता निज धर्म सचारी ।।

पतिव्रता जाके तिय होई।
सपनेउं दुखित होइ नहिं सोई॥
महा भाग प्रभु धर्म सरूपा।
दया-सिंधु वदि बचन अनूपा॥
हम गृहस्त लघु आस्रम-वासी।
विषयासक्त सुनहु सुख-रासी॥
तव आगमन सदा सुखदाई।
हम कहँ दुर्लभ सुनि मुनिराई॥
आयसु कहा करहु मुनि स्वामी।
संतत मैं तुम्हरो अनुगामी॥
तप बल तुम परिपूरन कामा।
तदपि कछू कहिये सुख-धामा॥
कृपा-सिंधु मोहि करहु सनाथा।
असकहि रघुबर नायउ माथा॥

दोहा

सुनु मुनीस इहि भांति बदि, जग देसिक रघुनाथ।
बोले कुंभज बचन वर, जोरि सरोरुह हाथ॥१॥

चौपाई

विस्वनाथ तुम दीनदयाला।
सुनहु स्वामि मम बचन रसाला॥
ब्रह्मादिक कह दरस तुम्हारा।
दुर्लभ संतत यहि संसारा॥
अस तव दरस पाइ भगवाना।
भूप सिरोमनि कृपा - निधाना॥
नाथ सनाथ भयउ मैं आजू।
पुनि बोले प्रमुदित ऋषि राजू॥

रावण सकल देव दुखदाई।
भले बध्यौ प्रभु सहित सहाई॥
सुखित देवगण देखेउ आजू।
बहुरि विभीषण प्रापति राजू॥
हे रघुवर तव दरसन कीन्हे।
दुष्कृत कोस हृदय ते छीने॥
अस कहि कुंभज पुनि अरुगाने।
राम दरस लहि पुनि हरषाने॥

दोहा

विह्वल भये विलोकि छवि, तेहि अवसर ऋषिनाथ।
सावधान सर्वज्ञ लखि, बोले प्रभु धरि माथ॥२॥

चौपाई

हे मुनि त्रिकालज्ञ पर लोका।
दलहु नाथ मम संसय सोका॥
कहहु सहित बिस्तार कृपाला।
मुनि - नायक तुम्ह दीनदयाला॥
रावण कुंभकरण दोउ बीरा।
मलिन बुद्धि संतत रनधीरा॥
कवन जाति तिनकी मुनि ज्ञानी।
मैं जेहि बध्यो समर खल जानी॥
देव दनुज पिसाच नर माहीं।
कवन वंस कहिये मोहि पाही॥
त्रिकालज्ञ मुनि तुम सब जानहु।
कहहु सकल मोहि निज अनुमानहु॥
जो मैं कहहु, करहुं मुनि सोई।
संसय भंग मोर जिमि होई॥
यहि विधि बचन सुनत प्रभु केरे।
मुनि अगस्त बोले हरि प्रेरे॥

दोहा

भूप सिरोमनि सुनहु अब, चतुरानन जग मूल।
तेहि सुत भये पुलस्त मुनि, हरन सकल स्रम सूल ॥३॥

चौपाई

विस्वस्रवा भये मुत तासू।
कृतवेतन महँअति जसु जासू॥
पतिव्रता तिनके दुइ नारी।
मंदाकिनि कैंकसि सुखकारी॥
मंदाकिनि सुत भये कुवेरा।
लोकपाल सम सुख तेहि केरा॥
सिव प्रसाद लंका तेहि पाई।
कैंकसि कथा मुनहु रघुराई॥
विद्युन्मालि सुता तेहि जानहु।
तासु तनय पुनि तीन बखानहु॥
रावण, कुंभ करण जग जाना।
अपर विभीषण साधु सुजाना॥
निसिचर जठर जन्म तिन्ह केरा।
दिवस अंत संध्या को बेरा॥
रावण कुंभकरण दोउ पापी।
सुनहु राम देवन परतापी॥

दोहा

एक समय निज जान चढ़ि, धनद चले पितु पास।
तोरण ध्वजा पताक जुत, पुष्पक परम प्रकास ॥४॥

चौपाई

तब चलि आयउ निज पितु पासा।
सहित गणन मन परम हुलासा॥

परत चरण विह्वल होइ रहेऊ।
निरखि पुत्र पितु आसिष दयेऊ॥
अस्तुति करन लाग पुनि सोई।
मो सम धन्य आजु नहिं कोई॥
सुदिन भाग्यफल प्रापति भयेऊ।
तुम पद देखि तात दुख दयेऊ॥
अहो जनक तव चरनन देखी।
पावनता जन सहे विसेखी॥
यहि विधि करि अस्तुति पितु केरी।
प्रमुदित भवन गयेउ प्रभु फेरी॥
पुत्र सनेह सीलता देखा।
हरषे विस्वश्रवा विसेखा॥
रावण लखि कुबेर प्रभुताई।
पूछत भा मातहि सिरु नाई॥

दोहा

देव मनुज यक्षन विषै, कहहु मातु यह कौन।
जो मम पितु पद वंदि पुनि, हरषि गयो निज भौन॥५॥

चौपाई

महा भाग्य - निधि विभव-निकेता।
प्रमुदित मन बहु सेन समेता॥
विपिन बाटिका बाग बिलासा।
सुखद सुथल जेहि मध्य प्रकासा॥
मुनिवर बचन सुनत सुत केरे।
क्रोधवत होइ नयन तरेरे॥
पुनि बोली कैकसि तेहि काला।
रे सुत सुनु मम बचन रसाला॥
सिक्षा करहु अज्ञ तो पाही।
वृथा वर्ष तुव बीतत जाहीं॥

मदाकिनी तनय तेहि जानहु ।
पावन करन वस निज मानहु ॥
तेहि निज वंस उजागर कीन्हा ।
सब विधि मातु पितहि सुख दीन्हा ॥

दोहा

भये कीट मम उदर ते, तन पोषक मतिमंद ।
खरहि ज्ञान जिमि भारकर, तिमि तुम सब दुख कद ॥६॥

चौपाई

उदर भरहु कै सोवहु जाई ।
देखहु खर इव तोहि सदाई ॥
निसि मह सोवहु जगहु बिहाना ।
यह मै तव पुरुषारथ जाना ॥
देखहु तेहि तप-बल सिव तोषा ।
करहि लंक नृपता गद दोषा ॥
धन्य भाग जननी जग तासू ।
सीलवत गुन-निधि सुत जासू ॥
येहि विधि क्रोध बचन सब बोली ।
सुनत दसानन की मति डोली ॥
निज पुरुषारथ हृदय सँभारा ।
जननी सो तब बचन उचारा ॥
सुनहु मातु मम बचन उदारा ।
रतन गर्भ हौ तुम संसारा ॥
तीनि पुत्र हम रतन समाना ।
धनद कीट कर कहा बखाना ॥

दोहा

कहँ लंका कहँ राज लघु, कहाँ अल्प अति सैन ।
मन उत्साह बढ़ाइ कै, सुनु माता मम बैन ॥७॥

चौपाई

बिनु सहाइ करिहौं मैं सोई।
माता काहु करी नहिं होई॥
सकल भुवन करिहौं बस अपने।
जननी सोच करहु जनि सपने॥
करौं घोर तप विधि सुखदाई।
अन्न उदक निद्रादि बिहाई॥
इतना करहु न, तौ सुनु ताता।
लगहु मोहि अघ निजु पितु-घाता॥
येहि प्रकार सुनिये रघुराई।
कीन्हि प्रतिज्ञा तीनिहु भाई॥
भ्रातन्ह सहित गयेउ दससीसा।
घोर विपिन गिरि गुहा मुनीसा॥
पुनि बोले अगस्त मुनिराई।
सुनहु राम निज जन सुखदाई॥
करइं घोर तप सो वन माहीं।
अबु फलादि खात कछु नाहीं॥

दोहा

पद अकास, सिर धरनि धर, रवि सन्मुख दृग जोरि।
वर्ष सहस दस लागि तेहि, कीन्हिसि तप मति थोरि॥८॥

इति श्री पद्म पुराणे पातालषंडे वात्सायन संवादे रावणोत्पति वर्णनोनाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

रावण-विवस्था वर्णन

दोहा

सुनहु सूत रघुराज सन, श्री कुंभज मुनिनाथ।
लगे कहन तेहि असुर के, तप समेत सब गाथ॥

चौपाई

येहि - प्रकार सुनु दीनदयाला।
कुंभकरण तप कीन्ह त्रिसाला॥
तोमर बंधु विभीषण नामा।
कीन्ह परम तप सुनु सुखधामा॥
अखिल लोक नायक भगवाना।
श्री पति पद महं तेहि सुख-माना॥
देवाधिप विरचि जग ईसा।
आये तहँ कौसलाधीसा॥
होइ प्रसन्न ता कहं वर दीन्हा।
लोक चतुर्दस नायक कीन्हा॥
क्षीण सरीर देखि तेहि केरा।
सब विधि सुभग कीन्ह तेहि बेरा॥
निरखि प्रीति तिन्हहूँ बर दीन्हा।
पुनि-पुनि भवन गवन विधि कीन्हा॥
सकल विस्व अपने बस जानी।
तब माखेउ दसमुख अभिमानी॥

दोहा

मातु बचन गुनि कोपि उर, तब धायेउ दससीस।
बरबस भिरेउ कुबेर सन, सुनहु कौसलाधीस॥१॥

चौपाई

बुद्धिमान धर्मज्ञ यक्षपति।
बिन प्रयास तेहि जीति महामति॥
पुष्पक सहित लंक गढ़ लीन्हा।
हठ करि त्रास ताहि बहु दीन्हा॥
विस्व सकल अपनी करि राखी।
सुरन्ह जीति मन मै अति माखी॥
विप्र-बंस तेहि अमित उजारे।
मुनि कुल मूलनि तें संहारे॥
तब इन्द्रादि दुखित अति भयऊ।
करि विचार विधि के पुर गयऊ॥
निरखि विधातहिं कीन्हि प्रनामा।
अस्तुति अमित करी लै नामा॥
विधिहिं प्रसन्न कीन्ह तेहि काला।
निज बानी करि सुनु मुनिपाला॥
तब देवन प्रति कहेउ विधाता।
केहि कारण तुम व्याकुल गाता॥

दोहा

अज आयसु सुनि सुरन तब, विपति वरनि बिलखाइ।
जेहि विधि रावणु दीन्ह दुख, सो सब कहेउ बनाइ॥२॥

चौपाई

छिनक हृदय महं कीन्ह विचारा।
लै सुर संग बहुरि पगु धारा॥
पहुँचे तब गिरिवर कैलासू।
देखा तेहि कर परम प्रकासू॥
चित्र-विचित्र देखि सुर ताही।
विस्मित मति नहिं सक अवगाही॥

स्वारथ निपुन मुख्य सुर ईसा।
करि प्रनाम कहि जय गौरीसा।।
हे भुव नीलकंठ सिव सर्वा।
करहिं प्रनाम देव गधर्वा।।
स्थूल सूक्ष्म तव रूप अनेका।
किमि विनवहुँ मैं अति अविवेका।।
सुनि सुर विनय संभु तेहिकाला।
नदी सोंकहि बचन रसाला।।

दोहा

जाहु बेगि आरत अमर, लावहु बेगि बुलाइ।
सिव सकेत प्रवेस किय, सुरगन जुत हरषाइ।।३।।

चौपाई

निरखि गेह बिस्मित सुर भयऊ।
पुनि संकर सन तिन सुख लहेऊ।।
कोटिन्ह गन करहीं मुद सेवा।
नागन रूप कुटिल भय देवा।।
धूसर जटिल कपाली व्याली।
क्षीन पीन दुर्मुख भयसाली।।
सुरन समेत बदि सिव चरना।
थिर होइ विधि तिन्ह कर दुख बरना।।
सुरन्ह देखिये निपट बिहाला।
करहु कृपा शिव दानदयाला।।
रावन बधौ, पाप उर धरहू।
संभु सुरन कह निरभय करहू।।
दैत्य मोक जुत सुनि सिव बानी।
सुरन्ह समेत चले मुनि ज्ञानी।।

पहुँचें छीर-सिन्धु के तीरा।
अस्तुति करि सब पुलक सरीरा।।

छंद

जय माधव देव दया करिये।
जन जानि प्रभो दुख को हरिये।।
जय दासन्ह के दुख दोष हरं।
करुनाकर हे भव पार करं।।
सुर-नायक स्वामि कृपायतन।
करुना करि हेरहु पाहि जन।।
हम आरत है सब भांति प्रभो।
असुराधिपता उन कीन्ह प्रभो।।

सोरठा

यहि प्रकार मुनि नाथ, देव पुकारे उच्च सुर।
पुनि तिन नाये माथ, करहु कृपा मर्दहुँ असुर।।४।।

चौपाई

अमर विनय सुनिये असुरारी।
हरहु बेगि दुख हृदय बिचारी।।
बोले बचन जलद-अनुहारी।
सुनत देव-दुख नासेउ भारी।।
सिव अज सक्र सुनहु मम बानी।
करौं बेगि तुम्ह दुष्ट की हानी।।
रावन भय तुम कहं दुख भारा।
सो मै हरिहहुँ धरि अवतारा।।
अवधपुरी रवि बंस उदारा।
दान यज्ञ नृप करइ अपारा।।
बिनु प्रयास पालहिं नृप धरनी।
जज्ञथली राजहि निज करनी।।

विद्यमान दसरथ तेहि माहीं।
विभव अपार, पुत्र कोउ नाहीं॥
भूप सिरोमणि पालै धरनी।
अति समर्थ राजहिं निज करनी॥

दोहा

सो नृप शृंगी रिषिहि सन, कीन्ह प्रार्थना जाइ।
करं जज्ञ निज पुत्र हित, हरषित आयसु पाइ॥५॥

चौपाई

प्रथम मोहि उन्ह तप करि जांचा।
तासु मनोरथ करिहौं साँचा॥
पतिव्रता नृप कै तिय तीन्हीं।
तीन्हहु प्रथम जाचना कीन्ही॥
सुनहु देव मैं चारि प्रकारा।
होइहौं तिन्हके घरि अवतारा॥
राम लषन पुनि भरत शत्रुहन।
सकल अंस जुत सुनहु देवगन॥
सैन कुटुंब सहित दससीसा।
बेगिहि उद्धरिहहु सुर ईसा॥
तुम्हहू अंसन सों जग माहीं।
बानर रीछ होहु जहं ताहीं॥
सुनु मुनीस अस कहि नभ बानी।
पुनि अरुगाइ रही सुख खानी॥
सुनत देवगन श्री-पति बचना।
हरषे जानि, गयो दुख अपना॥

दोहा

प्रभु आयसु सुर सीस धरि, निज-निज अंस सम्हारि।
भये भालु कपि अवनि तल, सुनहु राम ते झारि॥६॥

चौपाई

श्री पति देवेस्वर ऋषि जोई।
भूप-सिरोमनि तुम हौ सोई॥
बुद्धिमान ऐस्वर्ज-निधाना।
तुम ते परे नाथ नहिं आना॥
भरत लखन रिपु-दहन उदारा।
तुम्हरे अंसन ते अवतारा॥
दसकंधर सुरगन दुखदाई।
सो तुम्हार सेवक रघुराई॥
प्रथम बैर सीता तेहि हरेऊ।
बध्यौ तासु तुम्ह जग जस लहेऊ॥
ज्ञाति ब्रह्म राक्षस तेहि जानहु।
मुनि पुलस्ति नाती अनुमानहु॥
अति दारुन सब जग दुखदाई।
दसकंधर सुनिये रघुराई॥
मृतक जानि जग भयउ सुखारी।
कृपा-सिंधु तुम बध्यौ विचारी॥

दोहा

विप्र-बंस तापस सकल, तीरथ मख समुदाइ।
श्रुति सुर दानव आदि जग, सुखित भये रघुराइ॥७॥

चोपाई

तुम्हरे राज मध्य रघुबीरा।
बीती सकल जनन की पीरा॥
जो तुम पूछा मोहि रघुराई।
सकल कथा मैं तुम्हहिं सुनाई॥
रावण जन्म मरन मैं गावा।
निज मति के अनुसार सुनावा॥

रावणारि यहि विधि सुनि बानी ।
मलिन भये उर अति दुख मानी ।।
बचन न आव बिकल भय भारी ।
कठ सूख बहि लोचन बारी ।।
कपित गात भूतल मह परेऊ ।
आखिल लोकपति मूर्छित भयेऊ ।।
बिप्र बस सुनि धीरज त्यागा ।
निपट आपु कह मानि अभागा ।।
अस विचारि सुनि दसा भुलाई ।
जिमि अहि-मनि बिहीन बिकलाई ।।

दोहा

वात्सायन रघुवश मनि, द्विज-बध मिस जग माहि ।
अस्वमेध मख चहौ किय, स नन-हित सक नाहि ।।८।।

इति श्री पद्म पुराण पाताल षडे शेष वात्सायन सवादे
रावणा विवस्था वर्णनोनाम सप्तमोऽध्याय. ।।७।।

रघुनाथ अगस्त-पाप-उपदेस

दोहा

सुनु अष्टम अध्याय की कथा सूत हरषाइ ।
निरखि बिकल रघुराइ कह, उपदेसहि रिषि राइ ।।

चौपाई

वात्सायन अब कथा सुहावनि ।
अति पुनीत अघ औघ नसावनि ।।
श्री ब्रह्मण्य देव रघुवोरा ।
सकल धर्म रक्षक मतिधीरा ।।

भूप - सिरोमणि मूर्छित देखी।
मुनि अगस्त्य भये बिकल विसेखी॥
तब सम्हारि निज भुज सुखदाई।
परसि राम बपु कहि मुनिराई॥
तजहु बेगि रघुनाथ गलानी।
तुम खल - दहन ब्रह्म सुख खानी॥
सत्य सनातन जग आधारा।
सकल भूत मह तुव विस्तारा॥
कवन हेत तुम मूर्छित भयेऊ।
दुष्ट दलन लगि प्रभु तन लयेऊ॥
सुनि मुनि बचन उठे रघुवीरा।
नयन स्रवहिं जल शिथिल सरोरा॥

दोहा

बिलखि बदन बोले वचन, बरन पुष्ट अतिदीन।
कुंभज मैं द्विज-दोष ते, धर्म - विमुखता कीन॥१॥

चौपाई

देखहु मोर ज्ञान मुनि राई।
अति विमूढ़ दुर्मति अधिकाई॥
काम - बिबस मैं मंद अपारा।
विप्र - वंस कह कीन्ह सँहारा॥
नृप इक्ष्याकुवंस हम जेते।
भये कलंकित मो करि तेते॥
अरहन दान जोग द्विज जेई।
घोर सरनि मैं मारे तेई॥
कवन कवन लोकनि मैं जैहौं।
कुम्भीपाक आदि दुख सहिहौं॥
तीरथ जिते सकल जग माहीं।
मो तारन कहं समरथ नाहीं॥

देव मूर्ति तप, दान अपारा।
द्विज द्रोही कहं सकि न उबारा॥
विप्रबंस जिन्ह कोपित कीन्हे।
तिनहि दुःख जम-दूतन दीन्हे॥

दोहा

सकल धर्म कर मूल स्रुति, तासु मूल द्विज जोइ।
मारे वंश समेत ते, कवन लोक मोहि होइ॥२॥

चौपाई

कवन कर्म करिबै अब मोही।
जेहि प्रकार मंगल अति होही॥
अस कहि करि विलाप श्री रामा।
मानुष चरित करत सुख-धामा॥
तब बोले कुंभज मति धीरा।
वृथा बिलाप करहु रघुबीरा॥
तुमहि विप्र-बध लगहि न स्वामी।
धरि अवतार बध्यौ अति कामी॥
तुम पुरुषोत्तम ईस प्रकृति पर।
साक्षी सर्वकाल जन सुखकर॥
विस्व सृजहु पालहु पुनि हरहू।
त्रिकालज्ञ संतत सुख करहू॥
प्राकृत गुण ते रहित कृपाला।
दिव्य गुनन-जुत दीनदयाला॥
सदा सुतंत्र रहहु भगवाना।
वृथा सोक मन मे प्रभु माना॥

दोहा

सुरा-पान विप्रादि-बध, स्वर्ण चोर अघघोर।
नासहिं छिन महँ कलुष सब, नाम जपत प्रभु तोर॥३॥

चौपाई

जनक सुता तव रमा सरूपा ।
सुमिरन करत छुटहि भव कूपा ।।
रावण तुव सेवक भगवाना ।
जय अरु विजय प्रसिद्ध पुराना ।।
सनकादिक तेहि दीन्हें स्रापा ।
पाई असुर देह तेहि पापा ।।
तापर परम अनुग्रह कीन्हा ।
अधम जानि तेहि निज पद दीन्हा ।।
यह जिय जानि सोच परिहरहू ।
कृपा - सिंधु उर धीरज धरहू ।।
येहि विधि बचन सुने श्री रामा ।
गद - गद स्वर बोले सुख - धामा ।।
उभय प्रकार पाप स्रुति भाखा ।
ज्ञान अज्ञान भेद तिन राखा ।।
ज्ञान पाप जानै ते जानौ ।
अनजानै अज्ञानी मानौ ।।

दोहा

जानि पाप ते करत है, बिनु भोगे नहिं जाहि ।
करय जोइ अज्ञान ते, तऊ पाप स्रुति माँहि ।।४।।

चौपाई

मैं अघ कीन्ह अज्ञ मुनि राई ।
करो उपाइ बेगि नसि जाई ।।
कहहुं बुझाई मोहिं मुनि सोई ।
जेहि विधि ब्रह्म - पाप छय होई ।।
दान जज्ञ तीरथ हरषाई ।
कहा करौं कहिये मुनिराई ।।

एहि बिधि विमल कीर्ति मम होई।
सकल विस्व पावन करि जोई॥
विप्र बधादि पाप जेहि लागे।
सुजस मोर सुनतै तेहि भागै॥
इहि विधि बचन कहत श्री रामा।
तिन प्रति बोले मुनि तप धामा॥
सुर नर असुर कीट पद नवँही।
मनहु राम तब आरति करही॥
ब्रह्म पाप नासन मम बचना।
राम सुनहु सुन्दर सोइ रचना॥

दोहा

अस्वमेध जे करत है, तासु कलुष नसि जाइ।
ताते तुम यज्ञहि करो, सकल लोक सुखदाइ॥५॥

चौपाई

अवसि यज्ञ कीजै रघुराई।
समधि सेन बल तुव अधिकाई॥
पूर्व दिलीप कीन्ह क्रुत एहा।
महाराज सुनु सहित सनेहा॥
प्रथम कीन्ह सत मख सुर राइ।
अमर असुर तेहि करि सेवकाई॥
पुनि मनु सगर महत क्रुत कीन्हा।
नहुष तनय करि सुर[illegible] लीन्हा॥
तुम सामर्थ करहु प्रभु सोई।
आयसु करहि बधु, मुख जोई॥
इहि प्रकार सुनि मुनिवर बानी।
रघुवर द्विज - बध ते भय मानी॥

सकल यज्ञ-विधि कहहु कृपाला ।
करहुं सीस धरि मैं येहि काला ।।
तुम उदार सब भाँति मुनीसा ।
पुनि - पुनि कहहिं कोसलाधीसा ।।

दोहा

गुरु-जन दीन विलोकि जन, कृपा करहिं निर हेत ।
अस अनुमानि मुनीस वर, बरनहु नेह समेत ।।६।।

इति श्री पद्म पुराणे पाताल षंडे शेष वात्सायन संवादे रघुनाथस्य अगस्ते पापदेशो नाम अष्टमेऽध्याय: ।।८।।

सर्व धर्म निरूपण

दोहा

चाहिय मख यह अस्व कस, केहि विधि पूजन तासु ।
पुनि कृत असि समरथ सकल, मोकहँ करहु प्रकासु ।।

चौपाई

तब बोले अगस्त मुनि राई ।
सुनहु राम निजु प्रस्न सुहाई ।।
गंगा जल समान वपु होई ।
अरुण बदन, स्रुति स्यामल जोई ।।
पीत पूंछ सुभ लक्षण जामैं ।
उच्चस्रवा सम, मन जब तामैं ।।
सर्व गम्य सनत होइ जाहीं ।
यज्ञ तुरंग जानहुं प्रभु ताहीं ।।

अति पुनीत वैसाख मास महु ।
राका मध्य दिवस पूजिय तहँ ।।
कनक-पत्र तेहि सिर 'सजि' रामा ।
बल वैभव समेत निजु नामा ।।
जतन समेत छोरि यहु ताही ।
प्रबल सैन सँगरहि जहँ जाही ।।
बल गर्भित हय बाँधहि जोई ।
जीतहिं ताहि सैन तुव सोई ।।

दोहा

भ्रमहि अवनि तल बर्ष भरि, निज मति के अनुसार ।
तब लगि तुम यहि बिधि रहौ, सुनिये राम उदार ।।१।।

चौपाई

विधि सों नियमादिक तुम्ह करहू ।
ब्रह्मचर्य ह्वै मृग - तुच धरहू ।।
यज्ञ अवधि लगि अक्षय दाना ।
देहु दीन अंधन भगवाना ।।
अन्न अनेक देहु सब काहू ।
कृपन आदि जे आवहिं ताहू ।।
दान अनेक ऋषिन्ह कहँ देहू ।
विमल कीर्ति यहि बिधि तुम लेहू ।।
यज्ञ कर्म येहि विधि अनुसरहू ।
दलि अघ शत्रु विमल जस करहू ।।
सब विधि तुम समर्थ रघुवीरा ।
निश्चय यज्ञ करहु मतिधीरा ।।
अस सुनि बोले कृपा - निधाना ।
मुनि नायक तुम परम सुजाना ।।

सुभ लक्षण लक्षित हय सोई।
तुरँग - साल देखिय जो होई ।।

दोहा

मधुसूदन प्रभु बचन सुनि, करुनानिधि मुनि नाथ।
चले बिलोकन यज्ञ हय, श्री रघुबर के साथ ।।२।।

चौपाई

साला मद्धि बाजि बहु देखे।
अति विचित्र मन वेग विसेखे ।।
सबल पीत सुभ लच्छन राजे।
बरुन अस्व कुल मनु महि भ्राजे ।।
कहूँ अरुण तन तुरग बरूथा।
कतहूँ स्याम कन के जूथा ।।
कतहूँ रुक्म - प्रभा असि देहा।
कहूँ सुनील वरन तन रेहा ।।
नाना वरन तुरग मुनि देखे।
अति बिस्मय मन भये विसेखे ।।
तुरँग सकल पुनि मुनिवर जोहे।
राम - कीर्ति जनु तनु धरि सोहे ।।
चक्रत चितय पुनि हृदय विचारे।
सुधा सिंधु मनु बहु तन धारे ।।
अपर - बाजि साला मै गयऊ।
मख - लायक हय देखत भयऊ ।।

छंद

मख जोग हय अति रुचिर देखे, सत सहस्रनि को गने।
तन पुलकि, विस्मय बिबस ह्वै, मुनि बाजि निरखहि सुख सने ।।
मुति स्याम, छीर समान तन, मुख अरुण बरनत नहि बने।
अति पीत पूँछ पुनीत मधुसूदन सुलक्षण करि घने ।।

मुनि राज पुनि बर जानि निरखे, विमल धन इव सोहही।
मनु बेग लाजै, गुनन भ्राजै, विमल छबि-जुन जोहहीं॥
सब आसु कीरति पुंज लिखि, रघुनाथ प्रति कुंभज कहा।
तव तुरँग अमित अनूप प्रभु, मख जोग छबि-बारिधि महा॥

सोरठा

सुनहु राम रघुराय, तुम्हरे अस्व विलोकि दृग।
तृप्ति न होई बनाय, उपमा मैं केहि बिधि कहौ॥३॥

चौपाई

महाराज तुम कहँ मुनि गावैं।
गुर नर असुर सीस सब नावै॥
मख विस्तार - सहित प्रभु कीजै।
अति पावन कीरति जग लीजै॥
इन्द्र कीन्ह जेहि विधि मख नाना।
इमि जिमि अरि बाँधि तम दिनमाना॥
तेहि प्रकार तुम्ह सत्रु सँघारहु।
मख करि छिति तल जसु विस्तारहु॥
भूरि भोग पुनि करहु कृपाला।
सुनि हरषे अति दीन दयाला॥
यज्ञ पदारथ सकल मँगाये।
सिलपकार - जुत जन लै आये॥
मुनि - गन सहित तबहि रघुवीरा।
सरजू तीर गये मति धीरा॥
तहँ मुनि आयसु सीस चढ़ावा।
कनक सीर निज हाथ चलावा॥

दोहा

सोधि अवनि यज्ञ लगि, जोजन चारि प्रमान।
अति विचित्र रचना रचो, मंडप विपुल वितान॥४॥

चौपाई

विधिवत कुंड रचे तिन्ह माहीं।
मेषल जोनि सहित लसि ताहीं।।
रत्न विचित्र विपुल जुत सोई।
सोभा बरनि सकै नहिं कोई।।
मुनिवर महाभाग तप - रासी।
श्री बसिष्ठ रुचि सुकर प्रकासी।।
वेद सुमृति सास्त्रनि अनुकूला।
रचे यज्ञ थल सब सुख मूला।।
तब वसिष्ठ निज सिष्य बुलाये।
जाहु मुनिन्ह गृह सकल सिखाये।।
रघुब्रर अस्वमेघ मख ठाना।
चलहु कृपा करि नीति निधाना।।
गुरु पद बंदि ऋषिन्ह गृह गयेऊ।
जज्ञ कथा तिन्ह सब सन कहेऊ।।
सुनत सकल मुनि आनंद छाये।
अति लालसा दरस लगि आये।।

दोहा

आये नारद असित पुनि, परब्रत कपिल मुनास।
जातकरण अरु अगिरा, व्यास अरिष्ठ रिषीस।।५।।

चौपाई

आये अत्रि महामुनि ज्ञानी।
कहा सु रीति आदि विज्ञानी।।
जाज्ञवल्क रिषि कुल मुनि आये।
रामहि निरखि नयन जल छाये।।
वामदेव आये मुनिराई।
मख रघुनाथ हेतु हरषाई।।

आवत तिन्हहि देखि रघुबारा।
पूजन कीन्ह महा मति-धीरा।।
मुनि प्रति कुसल पूछि श्री रामा।
अघपाद्य आसन विस्रामा।।
पुनि वर धेनु वसन बहु भूपण।
कचनादि दीन्हे दुख-दूपण।।
यथा योग दीन्हे सबकाहू।
अति उदार प्रभु सहित उछाहू।।
धर्म-धुरधर मुनि समुदाई।
जुरे तहां सुनि जो ऋषिराई।।
ाम निरूपन तेहि थल होई।
वरणाश्रम समत लै सोई।।

दोहा

सुनि अहि पति के बचन बर, वात्सायन मुनिनाथ।
प्रमुदित मन पूछत भये, नाइ चरण मह माथ।।६।।

चौपाई

कवन धर्म बार्ता तहँ होई।
अद्भुत कथा कहहु मुनि सोई।।
साधु सकल लोकन हित जानी।
बरनहि धर्म-कथा सुख-खानी।।
वात्सायन सुनु राम कृपाला।
मुनिन्ह देखि बोले ते काला।।
हे मुनि गण मो कह निज जानो।
वर्णास्रम सब धर्म बखानो।।
ते मुनि धम कहहि प्रभु पाही।
कहौ सुनहु तुव संसय जाही।।

कहैं ऋषीस सुनौ भगवाना।
हम बरनहिं निजमति अनुमाना।।
उचित सदा विप्रन कहँ एहा।
पूजहि तुव पद सहित सनेहा।।
संतत वेद पाठ रत होई।
अब ह्याँ भेद सुनहु प्रभु सोई।।

दोहा

विगत रजोगुण होइ बटु, तोपि जती वह होइ।
रज में जो मति लखि परेउ, तो गृहस्थ भव सोइ।।७।।

चौपाई

कहौं गृहस्थ धर्म समुदाई।
वात्सायन सुनु निज मन लाई।।
ऋतु बिनु रति सपने नहिं करई।
श्रुति कह परम धर्म इह अहई।।
अथवा तिय मन को गति जानी।
देहि ताहि रति सुनु मुनि ज्ञानी।।
दिवस गमन कीजै नहिं कबहूँ।
पित्र-श्राद्ध पर्वनि मह तबहूँ।।
करइ मोह बस जो ये कोई।
धर्म और बल नासहिं सोई।।
रितु बिन रतिहि करत नहि जेई।
निज नारी सन सुनु मुनि तेई।।
सदा ब्रह्महचारी नर वेई।
धर्म निपुन जानहु प्रभु तेई।।
सोरह रजनि रहे रितु नारी।
प्रथम चारि दिन देई बिसारी।।

दोहा

समदिन मैं जो रति करें, तौ सुत भव अनुमानि।
विषम दिवस अभिगमन ते, सुता प्रकट तेहि जानि ।।८।।

चौपाई

मृग सिर मघा मूल खल रिच्छा।
इन्हें विहाय करे तिय इछा ।।
येहि विधि रहै लहै सुत जेई।
पावन भाग्यवान मुनि तेई ।।
पावन कुल कन्या जे देहीं।
मोह बिबस होइ जो कुछु लेहीं ।।
सुता मोल लीन्हें अघ जोई।
अवसि होई तिन्हको प्रभु सोई ।।
बनिज भूप सेवा समुदाई।
स्रुति परित्याग आदि रघुराई ।।
मद व्याह कुल धर्मनि त्यागे।
बंस नाश महं देर न लागे ।।
आयो अतिथि देखि निज गेहा।
पूजहिं दान मान जुत नेहा ।।
सुरभी - दान - पुन्य ते लहहीं।
बेद पुरान नाथ अस कहहीं ।।

दोहा

अतिथि विमुख जेहि गेहते, जाय सुनहु रघुनाथ।
पुन्य सकल तेहि जन्म के, दलहिं आसु स्रुति गाथ ।।९।।

चौपाई

पितर देव बलि वैस्यन देहीं।
ते मल मूल उदर भरि लेहीं ।।

षष्ठमि तेल छुवै नहिं सपने।
अष्ठमि मद्य मांस मत अपने॥
रघुबर यह प्रसंग सुनि लीजै।
चतुर्दसी कह छौर न कीजै॥
रजवंती त्यागिय सब काला।
करिय न असन सग लै बाला॥
उभय बसन बिनु असन न कीजै।
असन करत तिय दरस न लीजै॥
ब्दन मरुत सन अनल न बारे।
नगिनि नारि नहिं नयन निहारे॥
बैस्वानर पद सो नहि परसै।
प्राणिन मै हिंसा नहिं दरसै॥
आदि अंत दोउ सध्यन माहीं।
भूलिहुँ असन करिय प्रभु नाहीं॥

दोहा

धेनु चुसावत कंहिय नहि, मघवा-धनुहि न देखि।
मिस्रित ओदन सार करि, पाव न असन विसेख॥१०॥

चौपाई

निसि में दधि भोजन परिहरिये।
पतिब्रता सन बाद न करिये॥
परिपूरन भोजन निसि माँही।
सपनेउ विजै करिय प्रभु नाहीं॥
गीत बाद्य सब बिधि परिहरिये।
प्रभु तुव कर्म बिना नहिं करिये॥
कास पात्र सों पद नहिं धोवै।
असुचि सरीर कबहुं नहिं सोवै॥

लोभ बिबस उछिष्ठ न लेई।
अरु परबस सपने नहिं सेई॥
पदत्रान नहिं लेई पराई।
भगन पात्र तजि असन सदाई॥
असन सजल पद करय न जाई।
मलिन पात्र पुनि देई बिहाई॥
महि उच्छिष्ठ मांह नहिं जैये।
सोवत खल कबहूँ न जगैये॥

दोहा

मनुज प्रसंसा करिय नहिं, तजि आतम उपचार।
अभिमानिन कहँ दंडवत्त, करइ न राम उदार॥११॥

चौपाई

जीव मात्र में समता राखै।
मरम छेद के बचन न भाषै॥
होई गृहस्थ यहि विधि करि कर्मा।
पुनि लहि बानप्रस्थ के धर्मा॥
सहित नारि वा नारि बिहाई।
बिगत रजोगुण मन हरषाई॥
गेही जन जै परम सुजाना।
यहि पथ चलहिं विगत मद माना॥
कछुक काल बीते रघुराई।
तब पद लहै अवसि स्नुति गाई॥
रिषिन धर्म यहि विधि सब भाषे।
सुनत राम मन में अभिलाषे॥
एहि विधि वर्णाश्रम जे चलिहैं।
सुनहु राम ते नहिं भव परिहैं॥

कहेउ धर्म लखि स्वामि सनेहा।
सदा उचित गेहिन मत येहा॥

दोहा

मधुसूदन येहि भाँति सुनि, श्री रघुबर गृह धर्म।
जद्यपि जानहिं तदपि उर, मानहि आँनद पर्म॥१२॥

इति श्री पद्म पुराणे पाताल षडे सेष वात्सायन सवादे
सर्ब धर्म निरुपनो नाम नवमोऽध्याय: ॥९॥

शत्रुघ्न-सिक्षा

दोहा

येहि दसये अध्याय महँ, होइहै कथा अनूप।
हय पालन हित अनुज कहं, सिखवहिं रघुकुल भूप॥

चौपाई

सून सुनहु सुंदर प्रभु गाथा।
बात्सायन प्रति कह अहि नाथा॥
यहि बिधि मुनि सब धर्म बखाने।
रघुपति सुने, यद्यपि मन जाने॥
कछुक दिवस येहि भांति गवाये।
तब लगि ऋतु बसंत चलि आये॥
यज्ञ क्रिया आदिक सब कर्मा।
करहि भूप मुनि निज-निज धर्मा॥
मुनि बसिष्ठ कुंभज बिज्ञानी।
मख अवसर मन महँ पहिचानी॥

अखिल लोकपति श्री रघुबीरा।
तिन्ह सन कहि बसिष्ठ मतिधीरा।।
रामचंद्र अवसर सोई आवा।
जेहि कारण मख साज सजावा।।
छोड़िय अस्व यज्ञ हित लागी।
महाराज तुम अति बड़भागी।।

दोहा

अस कहि मुनि रघुनाथ सन, सब मख बस्तु मगाइ।
विधिवत पुनि करुणायतन, पूजे बिप्र बनाइ।।१।।

चौपाई

दीन कृपन अंधन कहं दाना।
देहु जथा विधि करि सनमाना।।
जनक सुता कंचन की संगा।
लै करि व्रत उर धरहु अभंगा।।
महि सोवहु धारहु बड़ धर्मा।
तजहु भोग जुत गेहनि-कर्मा।।
मृग-तुच अंग दंड समुदाई।
मेखल अजिन धरहु रघुराई।।
अपर यज्ञ कर साजहु साजा।
सत्य बचन सुनि के रघुराजा।।
मुनिहिं प्रसंसि बहुरि रघुबीरा।
कहे लखन सन बचन गभीरा।।
सुनहु लखन मम बचन उदारा।
करहु बेगि, मति लावहु बारा।।
जतन समेत सकल विधि साजी।
आनहु तात यज्ञ हित बाजी।।

दोहा

सुनि रघुबर के बचन प्रिय, रामानुज वर बीर।
जाइ कहेउ सैनेस सन, हरषित गिरा गंभीर ॥२॥

चौपाई

सुनहु कालजित बचन रसाला।
आयसु कीन्ह राम नरपाला ॥
सजहु सैन कालहु पर भारी।
बल प्रताप जुत अग सँभारी ॥
माना नृप सिर छेदनहारी।
चारि अंग सम रच्यौ बिचारी ॥
गज रथ तुरँग चरन चर नाना।
अस्त्र-सस्त्र बल होई समाना ॥
अस्व-अबलि मारुत गति हारो।
चलहि तुरंग माल-अनुहारी ॥
चढ़हिं सूर सब आयुध धारी।
रोष करन सब जूथ बिहारी ॥
अस्व संमूह रच्यौ इहि भांती।
अपर सुनहु कृतांत आराती ॥
सैल समान करी मतवारे।
मद चुवात रण मह भयकारे ॥

दोहा

गज समूह येहि भाँति के, सजवावहु हरषाइ।
अस्त्र-सस्त्र सजि विविध विधि, चढ़े सूर समुदाइ ॥३॥

चौपाई

चतुर महावत तिन्ह सिर माहीं।
तीछून अंकुस डारत जाहीं ॥
नाना मणि कंचन रथ साजे।
पवन बेग पर हय जुत भ्राजे ॥

रथी सूर तिन्ह माह चढ़ाई।
अस्त्र-सस्त्र महँ निपुन बनाई ।।
पर-दल-दलन-हार वर जोधा।
सारथि सहित चतुर सब कौश्रा ।।
येहि बिधि रथ समूह सजि आनो।
अवर सुनहु मैं तुमहि बखानो ।।
पद चर अस्त्र-सस्त्र कर लीन्हें।
समर माह जे पर-दल छीने ।।
येहि विधि सयन साजि सब भांती।
ल्यावहु आसु समन आराती ।।
लखन बचन येहि विधि सुनि काना।
सजी चमू सैनापति नाना ।।

छंद

सुनि बचन विनीत पुनि लषन, तुरंग सव विधि साजहीं।
मणि रुचिर जलज-विसाल-माल, अनेक उर महँ भ्राजहीं ।।
छबि-धाम हय-हिय माँहि अति सुन्दर हमेल विराजहीं।
मुख ललित, ग्रीव बिसाल मृदु कच जलज वर जुत राजहीं ।।
सोभा सदन स्त्रुति स्याम लघु अति ललित रोम विमोहहीं।
बहु चिन्ह चिन्हित बाजि सजि यहि भाँति लखि सुर मोहहीं ।।
उड़राज सम दुति बदन की मणि बसन अंगन सोहहीं।
पुनि विमल चामर छत्र जुत हय चलत नर सब जोहहीं ।।

सोरठा

प्रबल चमू चहुँ ओर, चलो जात हय मध्य करि।
भयो कुलाहल घोर, पूरि रह्यो नभ अवनि तल ।।४।।

चौपाई

देव भजहि जेहि विधि निजु नाथा।
तिमि हय भजि जन मानि सनाथा ।।

गज रथ पदचर तुरग समेता।
चली चमू सूरन सुख देता॥
सेनापति कर आयसु पाई।
घटाटोप भइ जाति सुहाई॥
चलत चमू कोलाहल भयऊ।
दुंदुभि बीन आदि पुर बजेऊ॥
सो रव सुनि गिरि कंपन लागे।
थरहरात मंदिर भय पागे॥
छुटै बाजि बिचरहिं पुर माहीं।
रथ समूह निकसै मग माहीं॥
चक्र परस महि सहि सक नाहीं।
कौतुक देखि वीर हरषाहीं॥
सुनि-सुनि हिंस नगर नर-नारी।
मोहित होंहि चरित्र निहारी॥

दोहा

घटा टोप गज जूथ जहं, चलत भये मुनि राइ।
रुक्यौ अवनि-तल प्रबल रज, उठी गयेउ नभ छाइ॥५॥

चौपाई

आतपत्र अरु छत्र समूहा।
व्यापत भयेउ सैन के जूहा॥
तिन्ह की ओट न भानु लखाई।
चमूनाथ चलि आसु चलाई॥
गर्जहिं तर्जहिं बीर अपारा।
रण बांकुरे जानि सब मारा॥
रघुबर जज्ञ हेत सब बीरा।
अस्त्र-सस्त्र सजि हरषित धीरा॥
भांति अनेक प्रफुल्लित करहीं।
पुर नर नारि नेक मन हरहीं॥

येहि विधि चले जात मग माहीं।
कौतुक निरखे जन तहँ ताहीं॥
मृगमदादि तन राग अपारा।
सुमन माल जुत वीर उदारा॥
नाना मणि मुकुटादिक साजे।
विमल सरीर बसन वर राजे॥

दोहा

सूर सकल सजि विविध विधि, प्रभु आयसु सिर धारि।
चले तुरगम संग लिय, रघुवर मख हित झारि॥६॥

चौपाई

कोउ धनु पास खड्ग कर लीन्हें।
अस्त्र-सस्त्र मह परम प्रवीने॥
तुरंग खुरन रज उठी अपारा।
अवनि अकास न परय विचारा॥
येहि बिधि मद-मद सब सयना।
आई जहां राम मुख चैना॥
मख तुरंग तब रघुपति देखा।
भयेउ हृदय आनंद विसेखा॥
गुरु बसिष्ठ सन कहेउ कृपाला।
पूजहु अस्व जाई येहि काला॥
कचन सिय समेत रघुबीरहि।
बोलत भये बसिष्ठ मति धीरहि॥
पर-पुर-जीतन-हार कृपाला।
यज्ञ आरंभ करिय येहि काला॥
मडप मध्य कुंड बिधि नाना।
रचे जज्ञ हित सेष बखाना॥

दोहा

वेद सुमृति मह निपुन अति, श्री बसिष्ठ मुनि नाथ ।
मख आचरन कीन्ह प्रभु, सुनु मुनीस सुचि गाथ ॥७॥

चौपाई

कुंभज ऋषि बिधि कीन्ह बिचारी ।
देखि तपोनिधि चतुर खरारी ॥
रित्विज बालमीक मुनि भयेऊ ।
मख अधिकार सकल तिन्ह लहेऊ ॥
अष्ट द्वार रचि मंडप माहीं ।
मणि बिलसति तोरण लसि ताहीं ॥
दुई-दुई विप्र द्वार प्रति राजें ।
बेद मंत्र युत मंगल साजें ॥
देवल असित महा रिषि राई ।
पूर्व द्वार महँ लसहि बनाई ॥
दक्षिण द्वार अत्रि कस्यप मुनि ।
सोभित सब विधि वेद मंत्र गुनि ॥
जातकरणं जाबालि उदारा ।
सोह तहां पच्छिम दिसि द्वारा ॥
उत्तर द्वार महामुनि सोहैं ।
द्वार येक मख की विधि जोहैं ॥
येहि बिधि चारो दिसा बखानो ।
सोई विधि विधिसन मुनि सुज्ञानी ॥

दोहा

येहि प्रकार करि द्वार विधि, रिषिन्ह थापि हरषाइ ।
सहित अगस्त बसिष्ठ मुनि, पुनि हय साज मँगाइ ॥८॥

चौपाई

वेद विधान सहित मुनि नाहा ।
हय पूजन अरंभ रचि ताहा ॥

सुभग बसन भूषन सजि बाला।
अति बिचित्र सजि थार बिसाला।।
अच्छत हरद गंध बहु जाती।
पूर्जाहिं तुरंग नारि सब भाँती।।
पुनि आरती कीन्ह विधि नाना।
अगर धूप दै वेद विधाना।।
प्रभु आयसु सिर धरि सुख मानी।
नार्चाहं अवनि नटी छबि खानी।।
येहि विधि पूजेहु तुरग अनूपा।
चदन चारु गध जुत धूपा।।
ललित लिलार मध्य तेहि केरी।
र्चाचत छबि समेत हय हेरी।।
कचन पत्र महा छबि - खानी।
बाँधो तुरग सीस मुनि ज्ञानी।।

दोहा

तब बसिष्ठ तेहि पत्र पर, लिखन लगे हरषाइ।
प्रभु प्रताप बल सुजम जुत, सुनू मुनीस मन लाइ।।६।।

चौपाई

रवि-कुल-ध्वज, धनु-कला प्रवीना।
समर शत्रुघन करण विहीना।।
देव दनुज मणि - मौलि - समेता।
नवहि सदा पद निज - निज हेता।।
तासु तनय अरि दर्घ बिदारी।
रामचद्र रघुकुल रघ धारी।।
महा भाग वर वीर सिरोमनि।
अति उदार बल पुंज अग्र गनि।।
तासु मातु कोसल नृप कन्या।
रत्नगर्भ करणी अति धन्या।।

जेहि ते राम रत्न जग भयेऊ।
सुर-नर जीति न अरि गन हयेऊ॥
तिन्ह अब अस्वमेध मख ठाना।
विप्र बचन उर मानि प्रमाना॥
हत्यो निसाचर रावण घोरा।
सो अघमानि तुरग हय छोरा॥

दोहा

तेहि के रक्षक हेतु लगि, दीन्ही चमू अपार।
लवनांतक श्री शत्रुघन, ता प्रति पालन हार॥१०॥

चौपाई

तिनके सग सेन चतुरगा।
प्रबल वीर रण करहि अभगा॥
जो छत्री आपुहि वर मानै।
बल प्रताप जुत रण गति जानै॥
धनु विद्या मानी पुनि वीरा।
दुर्मद हम समान, नहि धीरा॥
ते यह तुरंग धरहु बलधारी।
कनक-पत्र कह बाँचि विचारी॥
मन इव वेग काम कल सोभा।
रत्न माल भूषित चित छोभा॥
हठि अस तुरग बाँधि है जोई।
रिपु सूदन कर बध तेहि होई॥
निज बल सत्रु-समन हय लैहैं।
मानिन कह दारुन दुख दैहैं॥
येहि विधि श्री बसिष्ठ मुनि नाथा।
लिखी राम - भुज - बल की गाथा॥

दोहा

स्वर्ण पत्र सिर साजि हय, भूषित कीन्ह बनाइ ।
पवन सरिस जव चपल अति, स्वग गम्य सुखदाइ ॥११॥

चौपाई

हय छोरन बिचार तब कीन्हा ।
हरषे हृदय बसिष्ठ प्रवीना ॥
तब रिपु - सूदन प्रति रघुबीरा ।
कहे नीति जुत बचन गभीरा ॥
जाहु तात हय - पालन - काजा ।
होहु बाट मह मंगल साजा ॥
अवनि विजय करिहौ सब भाँती ।
तुव भुज मह गण रिपु आराती ॥
जे रण माह चढ़ भट भारी ।
तिनहि बधौ सग्राम प्रचारी ॥
सैन समेत बाजि प्रतिपालहु ।
सन्मुख लरेहु, चढ़ै जो कालहु ॥
सोवत, वसन-विगत, भय भीता ।
भ्रष्ट-बुद्धि तजि, सुनु मम नीता ॥
समर डरपि सरनागत आवें ।
राखहु तिन्हहि तात स्तुति गावैं ॥

दोहा

विरथिन्ह सौं रथ चढ़ि समर, मन वच कर्म विहाइ ।
विमद मत्त पुनि अस्त्र हत, भय आतुर समुदाइ ॥१२॥

चौपाई

बधौ मोह बस इन कह जोई ।
निस्चै नरक जाहि, सुनु सोई ॥

पर धन विष सम मानहु भाई।
तजहु नारि सब भाँति पराई॥
नीच - संग सब विधि परिहरहू।
साधु समागम संतत करहू॥
क्षत्री वृद्ध चढ़े रण माहीं।
प्रथम प्रहार तात करि नाहीं॥
पूज्यवंत पूजा मति नासहु।
मो आयसु निज हृदय प्रकासहु॥
प्रजा सैन पर करुणा राखेहु।
सत्य बचन तजि मृषा न भाखेहु॥
विप्र धेनु वैस्नव जुत धर्मा।
करेहु प्रणाम छाड़ि सब कर्मा॥
जो येहि विधि चलिहौ तुम ताता।
तौ मगल होइहौ मग जाता॥

दोहा

अखिल लोकपति विस्नु हरि, जग व्यापक वर गात।
तासु रूप वैस्नव अवनि, विचरत है सुनु तात॥१३॥

चौपाई

महा बिस्नु सबके उरवासी।
साक्षी बपु धरि हृदय प्रकासी॥
सतत भजहि तिन्हहिं फल त्यागी।
ते हरि रूप परम बड़ भागी॥
सकल काम तजि सुनु मम भ्राता।
तिन्ह कर दरस करहु मग जाता॥
ते निजु पर कछु हृदय न जाने।
सत्रु मित्र सपने नहिं माने॥
तिन्हके दरस करत छिन माहीं।
अखिल पाप नसि संसय नाहीं॥

अवसि दरस तिन्हको तुम कीजौ।
दलि दुख जाल परम सुख लीजौ॥
वैस्नव विप्र जिनहिं प्रिय ताता।
ते बैकुंठ जीव जग जाता॥
निज नाते सन प्रीति दिढ़ावैं।
गुप्त रहैं, नहिं जगहि लखावैं॥

दोहा

जे संतत हरि नाम लहि, हृदय विस्नु बपु धारि।
सेवहिं सदा प्रसाद कहँ, प्रेम समेत विचारि॥१४॥

चौपाई

येहि विधि चलै स्वपच बरु होई।
निस्चै साध मोहि प्रिय सोई॥
वेद पढ़ै नित जग-रति नाहीं।
सदा धर्म-पथ सोधत जाहीं॥
तिन्ह कहँ कीजहु दंड प्रनामा।
सकल भाँति तजि आपन कामा॥
जे हरिहर अज सेवक जीवा।
गति विरोध चलि निज-निज सीवा॥
पुनि श्री गंग गौरि भजि जेई।
एहि प्रकार नहिं खलता सेई॥
ते पावन सरीर संसारा।
उत्तम जीव नीति आगारा॥
तिनहि स्वर्गवासी अनुमानो।
इहि विधि तात चिन्ह पहिचानो॥
वात्सायन मुनि सुनि चितलाई।
संत चिन्ह अगनित श्रुति गाई॥

दोहा

तुम सन वरणो कछुक मैं, अपर सुनहु चितलाइ।
पूजनीय जग संत सब, हरि समान श्रुति गाइ॥१५॥

चौपाई

रिपु सूदन प्रति पुनि रघुबीरा।
सिखवन करहि महामति धीरा॥
दुखित जीव सरनागत देखी।
अभय दान जे देहि विसेखी॥
नारायण आस्रित इमि करहीं।
परम भागवत ते जग चरहीं॥
कहहि वेद बुध संसय नाहीं।
प्रकट प्रभाव तासु जनमाहीं॥
पुनि जेहि नाम लेत छिन माहीं।
घोर कलुष-रासनि नसि जाहीं॥
तिन्हके जुगल चरन-जलजाता।
संतत ध्यान मगन जे भ्राता॥
साधु सिरोमणि ते जग माहीं।
कहै वेद बुध संसय नाहीं॥
पुनि सब विधि इन्द्री तिन्ह जीती।
ह्वैहैं सुमिरि श्री पतिहि प्रीती॥

दोहा

अब सुनु मन बच कर्म उर, परिहरि जो पर वाम।
तो निश्चै येहि अवनि-तल, ह्वैहै कीरति धाम॥
यह सब मम आयसु करहु, तात सहित अनुराग।
विन प्रयास हरि-पद लहै, होइ इहाँ बड़ भाग॥१६॥

इति श्रीपद्म पुराणे पाताल षंडे शेष वात्सायन संवादे शत्रुघ्न शिक्षा नाम दशमोऽध्याय: ॥१०॥

हय-मोचन

सोरठा

ह्वै है कथा अनूप, एकादस अध्याय अब।
सुभटन्ह के रण रूप, हय मोचन को आदि दै॥

चौपाई

पुनि बोले अहिराज कृपाला।
सुनु मुनीस अब कथा रसाला॥
श्री रघुबर खल बधन-प्रवीना।
येहि विधि बन्धुहि सिखवन दीना॥
पुनि प्रभु सकल वीर अवलोकी।
बोले गिरा गंभीर असोकी॥
रिपुसूदन हय-पालन हेता।
पठवहुँ मैं अब सुनहु सचेता॥
को अस सूर जाइ तिन्ह ऊपर।
रहे निदेस तासु सब भू पर॥
चढ़िहै नृप सजि सयन बंधु पर।
रक्षा करि अस कवन वीर वर॥
सो उठि हरषि लेहु यह बीरा।
होइ कुसल रण मैं अति धीरा॥
भरत तनय पुष्कल सुनि बानी।
उठे हरषि अतिसय भट मानी॥

दोहा

वंदि राम पद कमल जुग, प्रेम सहित तेहि काल।
लै कर बीड़ा बीर बर, बोल्यो बचन रसाल॥१॥

चौपाई

मैं आयुध धरि निकटहिं स्वामी।
रहिहौं रिपुसूदन अनुगामी।।
तुव प्रताप मैं राम उदारा।
बिनु स्रम जीतहुँ अवनि अपारा।।
कारण मात्र नाथ यह सैना।
जीतहिं तव प्रताप सुख ऐना।।
सुर-नर असुर आदि जग बीरा।
तव प्रताप जीतहुं रण धीरा।।
तुम सर्वज्ञ प्रणत हितकारी।
लैहौ मम बिक्रमहि निहारी।।
अवसि जाहुं रिपु सूदन संगा।
सब प्रकार करिहों रिपु - भंगा।।
तव प्रताप हय पालहुं नाथा।
अस कहि पुष्कल नायेउ माथा।।
धन्य -, धन्य करि कृपानिधाना।
पुनि बिलोकि चितवत हनुमाना।।

दोहा

सुनहु पवन-सुत बचन मम, सादर हिय हरषाइ।
तव प्रसाद कंटक रहित, पायेउँ राज बनाइ।।२।।

चौपाई

उतरे सिंधु सिया मैं पाई।
तव प्रसाद सुनिये कपिराई।।
मम आयसु उर मैं सुत धारी।
बुधि बल पालहु सैन विचारी।।
रिपु सूदन मम बंधु पियारा।
सेवहु मो सम जानि उदारा।।

जहँ - जहँ ज्ञान भूल मम भ्राता।
तहँ - तहँ तुम सिखवहु मग ज्ञाता॥
सुनि अस बचन महाप्रभु केरे।
कीन्ह दंडवत हरि मुख हेरे॥
सुनहु बचन कह कृपानिधाना।
जामवंत कपिराज सुजाना॥
वीर - सिरोमणि तुम बलवाना।
रिपु सूदन सँग करहु पयाना॥
गवय मयंद बालि - सुत बीरा।
सतबल पक्षक अति रणधीरा॥

दोहा

सुनहु नील नल अपर भट, तुम्ह बल उदधि अपार।
हरि पालन हित सजहु सब, अमित बुद्धि आगार॥३॥

चौपाई

मणि हाटक मम भूषण करहू।
कवच टोप सस्त्रादिक धरहू॥
एहि विधि सजहु बेगि कहि रामा।
सचिव सुमंत बोलि लै नामा॥
सुनि निदेस आतुर चलि आए।
तब प्रभु बोले बचन सुहाए॥
सचिव सिरोमनि कहौ बुझाई।
को समरथ हय - पालन जाई॥
सुनि बर बचन सचिव हरसाई।
बोलेउ प्रभु सन गिरा सुहाई॥
सुनहु सकल निज भट भगवाना।
जिन्ह जिन्ह कर मैं करहुँ बखाना॥

नृपति प्रताप अग्रबज धामा।
नील रतन लक्ष्मीनिधि नामा॥
रिपु तापन उग्रास भुवाला।
अपर सस्त्रवेत्ता महिपाला॥

दोहा

इन्ह सबके बल कहहुं मैं, सुनहु राम रणधीर।
नीलरत्न कहं देखिए, महारथी बलबीर॥४॥

चौपाई

लक्ष वीर सन यह रण मंडे।
निज दल रक्षि तासु दल खंडे॥
दस अक्षोहनि इन्ह के संगा।
महावीर रण करहिं अभगा॥
आयसु करहु नाथ इन्ह पाहीं।
पालन बाजि - राज कहँ जाहीं॥
भूप प्रताप अग्र कहँ देखहु।
महा स्रत्रु नासन मन लेखहुं॥
उभय बाहु सो मारहि बाना।
अस्त्र - सस्त्र विद्या सब जाना॥
अक्षोहनो बीस इन्ह संगा।
महा सूर जानहु सब अगा॥
आयसु देहु इनहिं रघुनाथा।
रहैं सदा रिपुसूदन साथा॥
देखहु लक्ष्मीनिधिहिं कृपाला।
भूप - मौलि - मणि बीर विसाला॥

दोहा

बिधि कहँ कीन्ह प्रसन्न इन्ह, प्रथम महातप साध।
तेहि प्रसाद रघुवंस - मणि, विद्या पढ़ी अगाध॥५॥

चौपाई

विधिसर, पासुपत्य इषु घोरा।
गरुड़ वान अहि - सस्त्र कठोरा॥
विद्यवान मघवा सर भारो।
नकुल मयूर अस्त्र भयकारी॥
मरुत कुलिस पर्वत सर चडा।
अनल बान इषु सलिल अखंडा॥
मंत्रन सहित अस्त्र इन पाये।
समन प्रयोग करन समुदाये॥
अक्षौहिनी एक भयकारी।
रहै संग कालहु पर भारी॥
आयसु देहु इनहिं रघुबीरा।
जाइँ शत्रुहन सँग जुत - भीरा॥
देखहु रिपुतापनहिं कृपाला।
सब आयुध महँ निपुन विसाला॥
रिपु कुल नासन या कहँ जानहु।
सूर सिरोमणि मैं पहिचानहुं॥

दोहा

इन्ह कह आयसु देहु प्रभु, सैन सहित हरषाइ।
रहैं सदा रिपु-दमन संग, तिन्ह सब सीस चढ़ाइ॥६॥

चौपाई

नृप उग्रास आदि महिपाला।
अस्त्र - सस्त्र मैं कुसल नृपाला॥
दीजिय सब कहँ आयसु नाथा।
बेगि जाहिं हय वर के साथा॥
सुनत सचिव के बचन सुहाये।
कृपा सिंधु मन में सुख पाये॥

पुनि सब भूपनि आयसु दीन्हें।
कहि मृदु बचन सुखी सब कीन्हे॥
ते सब सुनि प्रभु के प्रिय बचना।
अतिसय मगन भये लखि रचना॥
छुधित समर रस के सब वीरा।
रण दुर्मद अतिसै नृप धीरा॥
कवच टोप सजि आयुध धारी।
चले सूर पद बंदि खरारी॥
जँह रिपुसूदन सयन सुहाई।
गये तहाँ नृपगन समुदाई॥

दोहा

सुनु मुनीस रघुवंस मनि, तेहि अवसर हरषाइ।
बेद विहित विधि सोधि करि, पूजे ऋषि समुदाइ॥७॥

चौपाई

प्रथमहिं श्री बसिष्ठ कहॅ रामा।
पूजन करहिं सकल सुख-धामा॥
ऐरावत समान गज एका।
दयेउ गुरुहि तब सहित विवेका॥
तुरग मनोज एक संभारी।
मणि भूषित करि दीन्ह बिचारी॥
मणि हाटकमय स्यंदन साजी।
जोरे चारि मनोहर बाजी॥
सर्व वस्तु परिपूरण कीन्हा।
आचारज कहँ रघुबर दीन्हा॥
एक लक्ष मणि कीन्हेउ दाना।
मुक्ताहल सत तुला समाना॥

विद्रुम सहस तुला करि दाना।
सहित उछाह दीन्ह भगवाना॥
ग्राम एक बहु जन समुदाई।
कृषी भवन सपति बहुताई॥

दोहा

प्रभु उदार येहि भाँति करि, दीन्ह वसिष्ठहि दान।
रित्विज होता आदि दै, इमि कीन्हेउ सनमान॥८॥

चौपाई

दान भूरि सबको दै रामा।
पुनि विधिवत करि दंड प्रनामा॥
तब मुनि सब प्रसन्न अति भयेऊ।
प्रभुहि असीस विविधि विधि दयेऊ॥
कन्यादान बहुत करि कीन्हे।
महि गज अस्व अनेकन दीन्हे॥
हाटक तिल मुक्ताहल नाना।
अन्न छीर दै करि सनमाना॥
अभय दान भीतन्ह कहँ दीन्हे।
रक्षा-दान सबहि को कीन्हे॥
अन्न सकल भोजन जुत दयेऊ।
देहु-देहु धन, प्रभु अस कहेऊ॥
एहि प्रकार सबको दै दाना।
पुनि हय मेध जज्ञ-कृत ठाना॥
येहि अवसर रामानुज वीरा।
जननी भवन गये मति धीरा॥

दोहा

पद वंदन करि जननि के, बोले मन हरषाइ।
हय रक्षण हित जाउ मैं, आयसु दीजै माइ॥९॥

चौपाई

तुम्हरी कृपा अवनि तल जीती।
पुनि पद बंदहुं आनि सप्रीती ॥
तब बोली जननी हरषाता।
जाहु पुत्र, मंगल मग जाता ॥
रिपुगण जीति आसु मम ताता।
कुसल समेत भेंटिअहु माता ॥
पुष्कल महावीर बलवाना।
रामचन्द्र-सेवा-विधि जाना ॥
रक्षा करहु तात तेहि केरी।
जद्यपि सूर तदपि सिसु हेरी ॥
करियो जतन पुत्र तुम्ह सोई।
जाते मोहिं सोक नहिं होई ॥
अस कहि मातु रही अरगाई।
तब रिपु दहन कहा सिरुनाई ॥
तब प्रताप सत्वर मैं ताता।
पुष्कल सहित आइ कुसलाता ॥

दोहा

तब बिलोकिहौं मातु मैं, तुव पद सब सुख मूल।
अस कहि कीन्ह प्रणाम मुनि, चले सत्रु प्रद सूल ॥१०॥

चौपाई

सरजू तीर यज्ञ थल जहवाँ।
हरषित रिपुसूदन गये तहवाँ।
मुनि समाज सोहैं रघुवीरा।
जज्ञ वेष वर धरे सरीरा ॥
यहि विधि निरषि राम छवि धामा।
प्रेम सहित करि दंड प्रनामा ॥

पुनि बोले रिपु सूदन बानी।
सुनहु राम सोभा सुख खानी॥
हय पालन हित आयसु देहू।
सुनि बोले प्रभु सहित सनेहू॥
जाहु तात तुम्ह मन हरषाई।
मग महं मंगल होहु सदाई॥
बालक नारि मत्त परिहरहू।
सजग सत्रु सन सन्मुख लरहू॥
जनक-तनय लक्ष्मीनिधि नामा।
चपल नयन हंसि कहि प्रति रामा॥

दोहा

सुनहु राम आजानु-भुज, सकल धर्म की खानि।
तुम्ह इन्ह कौ सिक्ष्या दई, बंस-रीति पहिचानि॥११॥

चौपाई

पुनि बोले प्रभु सों हँसि बानी।
सुनत बिनीत हास्य-रस-खानी॥
रिपुसूदन कहं जो तुम कहेऊ।
तेहि पथ चलत इन्हिं जस नयेऊ॥
बंस उचित भ्राता कर कर्मा।
पाइय मुक्ति कहै यह धर्मा॥
भूप सिरोमणि तुम्ह यह भाषा।
बधइं न विप्र वेद-मत राखा॥
सो तुव जनक भली विधि जाना।
बध्यो स्रवण द्विज बर तकि बाना॥
पुनि तुम्हार कीरति जग माहीं।
को अस जीव जानि जो नाहीं॥

नारि अवध्य विदित संसारा।
हति ताड़का सुजस बिस्तारा।।
लछिमन सुजस सकल जग जाना।
सूपनखा कीन्ही बिनु काना।।

दोहा

महाराज इहि भांति करि, तुव आयसु सिर धारि।
करिहै रिपुसूदन अवसि, निज कुल रीति विचारि।।१२।।

चौपाई

सुनि अस बचन राम मुसकाई।
बोले गिरा गंभीर सुनाई।।
तुम्ह विज्ञान संत समदरसी।
भव-बंधन-छोरन मति परसी।।
इतना पुरुषारथ तुम माहीं।
छत्रि-धर्म पथ जानत नाहीं।।
अस्त्र-सस्त्र कोविद जो वीरा।
जानहि रण गति ते वर धीरा।।
पर दुख देन्ह कुपथ प्रिय जिन्हही।
अवसि भूप वर मारहि तिन्हही।।
सुनत सभासद प्रभु के बचना।
हंसे हास्य रस की लखि रचना।।
पुनि कुंभज विधिवत हय पूजा।
जेहि सम सुभग अस्व नहिं दूजा।।
मुनि वसिष्ठ कुंभज विज्ञानी।
बाजिराज सन मंत्र बखानी।।

दोहा

परसि पानि सो तासु तन, विजय हेतु हरषाइ।
निज लीला जुत अस्वपति, भ्रमहु अवनि तल जाइ।।१३।।

चौपाई

ए सब छोरहि तुव हित लागी।
अवनि विचरि आवहु बड़ भागी॥
अस कहि बाजिराज कहँ छोरा।
संग सूर आयुध धरि घोरा॥
प्राची दिसि महं कीन्ह प्रवेसा।
अमित चमू जुत चले नरेसा॥
अवनि सिंधु भूधर डगमगेऊ।
दिसि कुंजर कंपन सब लगेऊ॥
अहिपति सीस नयेऊ तेहि काला।
पुनि सम्हारि धरि अवनि विसाला॥
दिसा प्रकासित भई अपारा।
छिति तल महं सोभा विस्तारा॥
रिपुसूदन पीछे सुभ पवना।
सहित सुगंध मंद करि गमना॥
फरकहि दक्षिण बाहु बिसाला।
मानहु मंगल करहिं रसाला॥

दोहा

सूर सिरोमणि भरत-सुत, तेहि अवसर मुनिराज।
बिदा होन हित भवन निज, गये महा बल साज॥१४॥

चौपाई

निरखेउ तहाँ सुभग सब भांती।
सोहत तहाँ सखिन की पाँती॥
पतिदेवता कांतिव[illegible]ति नामा।
निज लालसा सहित लखि वामा॥
विधु बदनी सुंदरता रासी।
भूषित सब विधि परम प्रकासी॥

तासु समीप गये बलबीरा।
पुनि बोले अति गिरा गंभीरा॥
रिपुसूदन रक्ष्या हित लागी।
पठवहिं मोहि राम बड़भागी॥
जाहुं बाल मैं सुन मन लाई।
करियौ जननि टहल हरषाई॥
तासु प्रसाद सदा तुम्ह लेहू।
मुनि पतनिन सन करेहु सनेहू॥
तिन्ह अपराध कबहुं मति कीजै।
सेवा करि सुंदर जस लीजै॥

दोहा

तप समुद्र मुनि जानियो, कुंभजादि वर नारि।
तिन्ह को सब विधि सेइयो, मन वच कर्म विचारि॥१५॥

इति श्री पद्म पुराणे पाताल षडे शेष वात्सायन सवादे हय मोचनोनाम एकादसोऽध्याय: ॥११॥

कामदारव्यान

दोहा

सुनु मुनीस येहि विधि कहे, पुष्कल बचन रसाल।
परम नीति रसमैं पगे, महा सुखद सब काल॥

चौपाई

सुनि वर बचन स्वामि तन देखी।
प्रमुदित उर हंसि बोलि बिसेषी॥

रण मंडलहि बिजय तुम करहू।
रिपुसूदन आज्ञा अनुसरहू।।
प्रतिपालहु हय जतन बिचारी।
श्री रघुबर आयेसु अनुसारी।।
मैं दासी जद्यपि प्रिय नाथा।
बसहु हृदय जानहु पिय गाथा।।
अवसि समर सुमिरेउ जनि मोही।
करे चिंतवन विजय न होही।।
करियो नाथ जतन करि सोई।
जेहि विधि इहां हंसी नहिं होई।।
सूर सिरोमनि राजीवनैना।
सुनहु कंत विनती जुत बैना।।
मोहि उर्मिला सहित एहि ठाऊं।
हँसी न तीय करहिं लै नाऊँ।।

दोहा

जो भजिहौ रण भीत ह्वै तौ तिय कुल मुसक्याय।
मोसन कहिहै, भीरु की नारि, हृदय हरषाय ।।१।।

चौपाई

अग्रनीय तुम बोरन माहीं।
पालहु तुरंग सजग पति ताहीं।।
कार्मुक शब्द करहु रण चंडा।
सुनत होहि रिपु दल सति खडा।।
लै कर बान कंत फर माहीं।
पर दल विकल करहु जग माहीं।।
जेहि प्रकार कुल भूषित होई।
कंत जतन जुत करियौ सोई।।

रिपुसूदन संग जाहु कृपाला।
मग मै मंगल होहु बिसाला॥
यह धनु सुभग लेहु कर माहीं।
जासु गर्ज सुनि अरि विकलाहीं॥
अछै तून साजहु सुख पाई।
नास करन रिपुगन समुदाई॥
कवच अभेद कुलिस अनुहारी।
लेहु नाह तन सजि छबिकारी॥

दोहा

सीस आन अवतंस जुत, मणि हाटकमय नाह।
लेहु हरषि उर, सजहु सिर, बहु सोभा जेहि माह॥२॥

चौपाई

येहि विधि बचन कहत पति पाहीं।
निरखि स्वामि-छबि तन पुलकाहो॥
सुनि तियं बचन हरषि मन माहीं।
बोलेउ महाबीर तेहि पाहीं॥
कांतिवती जेहि विधि तुम्ह भाषा।
तैसेई करब हृदय लिखि राखा॥
वीर नारि तुम्ह सन सब कहिहैं।
तुव कीरति कहि जन जस लहिहैं॥
भामिनि कवच मुकुट जो दीन्हा।
चाप तूण अक्षय सजि लीन्हा॥
वसन विभूषनादि सब साजै।
अपर सस्त्र परिपूरण भ्राजै॥
पुष्कल सुभट सिरोमणि धीरा।
अस्त्र-सस्त्र विद्याजुत वीरा॥

सोभित भयउ महा तेहि काला।
सूर माल उर धरेउ विसाला॥

दोहा

कस्तूरी चन्दन अगर, सुमन गंध समुदाइ।
चरचित ऊर बहु कुसुम की, माला जुत छवि पाइ॥३॥

चौपाई

पति-शृंगार कीन्ह यहि रीती।
पुनि तिय आरति कीन्ह सप्रीती॥
छवि विलोकि मुक्ताहल वरषी।
करि दृग सजल भेंटि पति हरषी॥
पुनि पुष्कल लखि नेह नवीना।
विविध भांति परितोषन कीन्हा॥
सब प्रकार ससय तजु बाला।
करिहौं तुव मुख बचन रसाला॥
अस कहि वीर बाल समुझाई।
पुनि रथ चढ़े हृदय हरषाई॥
चलेउ बहोरि सैन सँग गाढ़ो।
एक टक बाल लखै गृह ठाढ़ी॥
पतिदेवता हृदय धरि धीरा।
अब सुभ कथा सुनहु मुनि धीरा॥
जनक भवन पुष्कल तब गयेऊ।
मातु पितहि लखि पद सिर नयेऊ॥

दोहा

निरखि जननि पितु प्रेम बस, अस्तुति कीन्ह बिसाल।
देहु रजायसु हरषि उर, पुनि कहि बचन रसाल॥४॥

चौपाई

करियो सदा राम सचु ताता।
पालनीय लक्ष्मण प्रिय भ्राता॥
अस कहि वंदि मातु पितु चरना।
पुनि सचु पाइ कीन्ह तब गमना॥
महावीर निज दल समुदाई।
पहुंचै रिपुसूदन कटकाई॥
महाराज रिपुनासन पासा।
निज स्यंदन तब कीन्ह प्रकासा॥
गज रथ तुरॅग चढ़े बरबीरा।
अस्त्र-सस्त्र पूरित रन धीरा॥
रिपुसूदन आयसु अनुसारा।
चली चमू हय कीन्ह अगारा॥
प्रथमहिं पांचाली कुरु देसा।
उत्तर कहॅ पुनि कीन्ह प्रवेसा॥
श्री विसाल देखी तिन्ह माही।
सोभा अमित बरनि नहिं जाही॥

दोहा

जेहि-जेहि देसन तुरग वर, गयेउ कटक समुदाइ।
तहॅ-तहॅ प्रभु कीरति विमल, सुनी सुनौ मुनि राइ॥५॥

चौपाई

रावणादि-वध भक्त-उधारन।
सुनेउ तहाँ जज्ञादिक कारन॥
प्रभु कीरति विस्तारे लोगा।
पावन सकल परम पद जोगा॥
तिन्हकी रीति सत्रुहन देखी।
प्रमुदित मन मैं भयेउ विसेखी॥

बिविध माल रतनादिक दीन्हे।
वसन बिभव दै पूरन कीन्हे॥
यहि विधि महाराज रिपुदूषन।
सबहि दीन्ह दिनकर कुल भूषन॥
अति तेजसी सुमति मत्री वर।
रघुवर भक्ति सकल विद्याधर॥
रिपुसूदन आयसु अनुसारी।
बुद्धिमान बड नीति बिचारी॥
रिपुकुलदहन सग मग माही।
अमित चमू जुत हरषित जाही॥

दोहा

नगर ग्राम देसनि विषै, चल्यौ जात हय राव।
बाँधि सकै कोऊ नही, श्री रघुवीर प्रभाव॥६॥

चौपाई

तिन्ह देसन्ह के विपुल भुवाला।
महा सूर बल तेज बिसाला॥
गज रथ तुरग चरण चर नाना।
सजि-सजि चमू सिधु अनुमाना॥
बहुधन मणि गण जलज अपारा।
भेट सजोई सबन पगु धारा॥
रिपुसूदनहि मिले ते आई।
पुनि सब बोलहि गिरा सुहाई॥
पुत्र कलत्र राज्य धन धामा।
नाथ न मम जानहु श्री रामा॥
सुनि रिपुसूदन गिरा सुहाई।
सौपहि तिन्हहि राज समुदाई॥

येहि विधि मिलहिं भूप मग आई।
लहहिं सनाथ सुनहु मुनिराई॥
हय समेत क्रम करि रघुराजू।
अहिछत्रा पुर सहित समाजू॥

दोहा

आयेउ तेहि तट सुनहु मुनि, ग्राम सकल सुख धाम।
नाना जन संकुलित जह, पतिव्रता सब वाम॥७॥

चौपाई

विप्र बेद-जुत राजहि जहवाँ।
रतन खचित थल देखिय तहंवाँ॥
हाटक मणिमय गोपुर सोहै।
सुभग नारि निरखत मन मोहै॥
बिधु-बदनी रंभा-छवि-हारी।
कनक बरन लीला संचारी॥
निज-निज धर्म निरत सब लोगा।
भाँति अनेक करहि तह भोगा॥
मनहु कुबेर नगर के वासी।
एहि प्रकार तह विभव प्रकासी॥
विचरहि सूर तहाँ धनुधारी।
अस्त्र-सस्त्र विद्या अनुसारी॥
कोटिन भट अस नृप सेवकाई।
करहि सदा उर-कपट बिहाई॥
अस वर नगर दूरि ते देखा।
कोटि निकट उद्यान बिसेखा॥

दोहा

देवदार पुन्नाग पुनि, नाग तिलक तरु जूह।
चम्पक पाटल आदि दै, मंदारादि समूह॥८॥

चौपाई

अमित असोक रसाल समेता।
कोविदार तहँ आनंद देता॥
जंबु कदंब पनस तरु जूथा।
पुनि प्रवाल जुत साल बरूथा॥
ताल तमाल मल्लिका सोहै।
जुही जोहि मदना मन मोहै॥
मौरसिरी अगनित छवि देहीं।
अपर वृक्ष जुत मनु हरि लेहीं॥
भूप सिरोमनि रिपु-कुल-हारी।
निरखत भये विपिन सुखकारी॥
सुभटन्ह सहित तुरँग तह गयेऊ।
जेहि थल सुखद सूर निर्भयेऊ॥
देव-भवन अद्भुत तहं देखा।
अति विचित्र मणि रचित विसेखा॥
अमर सेवाला एक छबि-रासी।
मनहु संभु-गिरि-सिखर प्रकासी॥

दोहा

कनक खंभ राजहि विसद, निरखत चित्त चोराइ।
देखि शत्रुहन हरषि उर, पूछहि सुमति बुझाइ॥६॥

चौपाई

सचिव सुमंत कहौ समुझाई।
इहाँ कौन सुर की प्रभुताई॥
पूज्य कौन सुर-मंदिर माही।
ए सब कहौ तात मो पाही॥
सुनत सचिव सर्वज्ञ सुवचना।
कहेउ हरषि मंदिर लखि रचना॥

कामद देवी येहि थल राजै।
विस्व-जननि निज-जन-हित भ्राजै ॥
जाके दरस करे जग माहीं।
प्रापति सिद्धि होहिं दुख जाहीं ॥
देव दनुज आश्रय यहि जानौ।
अर्थादिक दाता अनुमानौ ॥
प्रथम सुमद नृप ने तप कीन्हा।
इन हित लागि कष्ट तन दीन्हा ॥
ह्वै प्रसन्न वर ताहि प्रकासा।
तब ते येहि थल कीन्ह निवासा ॥

दोहा

नृप-दुख-नासन-हेतु लगि, पुनि तेहि करन उघार।
तासु प्रीति लखि बास किय, वंदन करहु उदार ॥१०॥

चौपाई

सुनत सचिव के बचन सुहाये।
रिपुसूदन आनंद उर छाये ॥
पुनि बोले सुमंत सन बानी।
कहौ कामदा कथा बखानी ॥
येहि पुर सुमद नृपति जेहि नामा।
कीन्ह प्रबल तप तेहि केहि कामा ॥
कामद सुबस कीन्ह केहि रीती।
कहौ जथामति सचिव सप्रीती ॥
सुनि रिपुसूदन की वर वानी।
कीन्ह सचिव तब कथा बखानी ॥
प्रथम सुमद पितु सत्रुहन मारा।
लीन्हेउ राज्य सहित भंडारा ॥

सो गलानि गुनि हृदय अपारा।
गै हिमगिरि पर तपहिं विचारा॥
सुर समूह करि सोभित सोई।
विमल तीर्थ तहँ ऋषिगण जोई॥

दोहा

तप अरंभ तहँ कीन्ह नृप, हरषित मन रघुराज।
तीनि वर्ष यक चरण करि, ठाढ़ रहा निज काज॥११॥

चौपाई

घ्राण अग्र जोरे चष दोऊ।
ठानेउ तप, करि सकै न कोऊ॥
हृदय ध्याव कामद जग माई।
सूखे परण वर्ष तिन खाई॥
परम उग्र दारुन तप साधा।
गने न एक अंग मन बाधा॥
तीनि वर्ष - भरि सीतल काला।
कीन्ह वास जल महँ महिपाला॥
पच अग्नि भरि समत तीनी।
महावीर येहि विधि तन छीनी॥
पुनि त्रय संमत लगि जुत हरषा।
लीन्ह महीप उर्द्ध मुख बरषा॥
पुनि त्रय वर्ष पवन उर रोकी।
करेहु ध्यान कामद गत सोकी॥
कामद बिना कछू नहिं देखे।
संवत अष्टादस येहि लेखे॥

दोहा

देखि घोर तप सक्र उर, कंपित भयेउ बनाइ।
मनमथ सकल समाज जुत, आदर कीन्ह बुलाइ॥१२॥

चौपाई

गर्वित महा मदन मन माहीं।
अज - सिव - बल कछु मानत नाहीं॥
तिन्ह प्रति बोले वासव बचना।
करहु सखा मो लगि निज रचना॥
सुमद नरेस घोर तप करही।
मो पद लेन हेतु अनुसरही॥
करहु भंग तेहि कर तप जाई।
तुव बल बसहुं सखा येहि ठाई॥
अस सुनि मदन गर्व जुत भारो।
जग - बिजई तब गिरा उचारी॥
नाथ सुमद नृप केतिक बाता।
जीतहुँ एक निमिष मै जाता॥
कहा तुच्छ तप तासु बखाना।
मम प्रभाव सुनिये निजु काना॥
महा ब्रह्मचारिन तप भगा।
छिन मह करहुं, भूप केहि अंगा॥

दोहा

मम सर-बल ससि विकल होइ, तारा सन रति कीन्ह।
तुम्हहू ऋषि-तिय गमन किय, घोर स्राप जहँ लीन्ह॥१३॥

चौपाई

विस्वामित्र उर्वसी साथा।
बिबस भये प्रसिद्ध यह गाथा॥
तजहु सुरेस सोच, बल मोरे।
जीतहुं सुमद हेत लगि तोरे॥
मैं सेवक तुम्हरो बहु भाँती।
जीतनसील सकल आराती॥

एहि विधि करि बासव परितोषा।
आयेउ हेम कूट जुत रोपा॥
संग वसत, अपछरा नाना।
सुमद समीप आव बलवाना॥
तहाँ बसंत कीन्ह निरमाना।
वृक्ष फूल जुत भय बहुनाना॥
केकी सुक कलकंठ समेता।
बोलन लगे, बिहँग वर जेता॥
भ्रमर करहि गुंजार सुहाई।
सुनि - मुनि काम अनल अधिकाई॥

दोहा

मद, - मंद मारुत बहै सीतल गंध समेत।
दक्षिण कृत मलया परसि, आवै करत अचेत॥१४॥

चौपाई

अगर लवंग सुगंध सुहाई।
ल्याव पवन सुनहु रघुराई॥
एहि प्रकार सोभा तहँ टानी।
रभादिक आई हरषानी॥
निज - निज सखी समाज बनाई।
सुमद निकट आये सचु पाई॥
किन्नर सुर इव गीत रसाला।
गान करन लागी तेहि काला॥
पवन मृदग बीन करताला।
सहित तरग बजावहि बाला॥
सुनत गान जागेउ महिपाला।
देखा अद्भुत चरित विसाला॥
पुनि तिन्ह लखा भूप मति भागी।
त्रिविध कटाछ करन सब लागी॥

तन मनमथ अतिसय रिस कीन्हा।
पाछे आइ कुसुम - सर दीन्हा॥

दोहा

सर - ताड़न लखि अपछरा, धरि नृप चरन उछंग।
करि कटाच्छ चापन लगी, दरसावहि निज अंग॥१५॥

चौपाई

कोउ गावहि कोउ नर्तन करहीं।
कोउ कटाछ करि नृप मन हरहीं॥
नाक नटी नृप सन बहु माया।
करि मन छोभ कीन्ह रघुराया॥
नृपति धीर अतिसय मन जाना।
तप नासन हित इन्ह छल ठाना॥
अवसि सुरेस काम पठवावा।
तेहि तप ते मन मोर चलावा॥
परम धीर इंद्रीजित भूपा।
अस गुनि बोला बचन अनूपा॥
को तुम्ह, कहहु कवन थल गेहा।
केहि कारन अस कीन्ह सनेहा॥
अति अद्भुत दरसन मोहि दीन्हा।
जो मुनीस बहु तप करि चीन्हा॥
अहो भाग्य मम भा येहि काला।
लघु तप लखि दिय दरस रसाला॥

दोहा

तुम्हरे दरसन अगम अति, जानहि सब संसार।
मधुसूदन नृप चतुरवर, एहि विधि बचन उचार॥१६॥

इति श्री पद्म पुराणे पाताल षंडे शेष वात्सायन संवादे
कामदाख्यानो नाम द्वादशमोऽध्यायः॥१२॥

शत्रुघ्न-अहिछत्रापुरी-प्रवेश

दोहा

सुनि तापस नृप के बचन, रंभादिक हरषानि।
नाना भाव देखाव पुनि, बोली बस पहचानि ॥

चौपाई

अहो कांत हम सब वर नारी।
आईं तुम्ह तप फल अनुसारी ॥
करहु भोग तप त्यागहु स्वामी।
जानहु हमहिं आपु अनुगामी ॥
यह अपछरा धृताची नामा।
चंपक बरन सुभग वर वामा ॥
विसद कपूर गंध मुख आवै।
महा भाग देखहु मुसुक्यावै ॥
रुचिर सरीर उरज छवि धामा।
कंत तुमहि जाँचत यह वामा ॥
मुनि इह लागि करहिं तप भारी।
तेउ न जाकौं सकैं निहारी ॥
तजि दुख मूल तपहि, अब स्वामी।
रमन करहु लखि निज अनुगामी ॥
अब तुम्ह कांत बिलोकहु मोहीं।
सुर - तरु - सुमन - माल जुत सोही ॥

दोहा

केलि करन मैं निपुन अति, करहु रमन मम साथ।
चढ़ि विमान गिरि मेरु पर, भोग करावहु नाथ ॥१॥

चौपाई

सुंदर छवि जौवन तन राजै।
निरखहु यह तिलोतमा आजै॥
संतत सिर पर चामर ढारे।
गंग प्रवाह तुल्य बपु धारे॥
काम कथा सुंदर बहु भाँती।
बरनहु तुम सन यह दिन राती॥
अमरन को दुर्लभ येहि जानौ।
अधरामृत पीजै सुख मानौ॥
चढ़ि बिमान हम सबनि समेता।
बिहरहु नंदनादि सुख देता॥
महा धीर नृप वर सुनि बानी।
करि बिचार मन महँ अस जानी॥
मम तप लागि विधन इन्ह साधा।
किये सनेह होइ बहु बाधा॥
अस बिचारि मन मै नृप धीरा।
तिन्ह सन बोले बचन गभीरा॥

दोहा

बसहु सदा मम हृदय तुम्ह, जगत जननि के रूप।
मैं चितवहुं जेहि हेतु लगि, तेहि दिय दरस अनूप॥२॥

चौपाई

तुम्ह पुनि मंद स्वर्ग सुख गावा।
तुच्छ पुन्य फल वेद बतावा॥
मम स्वामिनि मो भक्ति बिलोकी।
सोइ बर दे करि करहि असोकी॥
सत्य लोक अज जेहि भजि पावा।
जन आरति-भंजन मुनि गावा॥

दे है वर मो कहँ सुनि सोई।
आनंद रुप सदा रहै जोई॥
कह नंदन-गिरि कंचन मंदा।
कहा अमृत दानव दुख कंदा॥
स्वल्प पुन्य कर जह सब भोगा।
अंतकाल दायक भव रोगा॥
सुनि अस बचन मदन तेहि काला।
कीन्ह कोप तब हृदय बिसाला॥
पाँचहु बाण स्रवण लगि तानी।
हनेउ महीप पीढ़ि लखि ज्ञानी॥

दोहा

काम क्रोध लखि अपछरा, करहिं कटाछ अपार।
कोउ नाचहिं, कोउ गान करि, कोउ परिरंभ बिचार॥३॥

चौपाई

सकल कला मनमथ नृप पाहीं।
कीन्ह कोप, करि व्यापउ नाहीं॥
तब खिसिआइ इंद्र पहँ गयेऊ।
सकल प्रसंग सुनावत भयेऊ॥
सुनि सुरेस अतिसय भय पावा।
तब हरि सन निज विनय सुनावा॥
सुमद कथा सुनिये रघुराई।
कामद पद महँ निपुन बनाई॥
विषय विगत नृप को अनुमानी।
होइ प्रसन्न तब प्रगटि भवानी॥
बसन विभूषण ?रे रसाला।
अस छवि निरखि हरद महिपाला॥
सिंह बैठि कर अंकुस पासा।
धनुष वान अति सहित प्रकासा॥

जग पावन तब नृपहि निहारी।
कोटि भानु दुति निज तन धारी॥

दोहा

मंद - मंद मुसक्यानि पुनि, सिर पर परसत पानि।
बहु विधि भूप प्रणाम करि, मुदित हृदय पहिचानि॥४॥

चौपाई

स्वारथ निपुन भूप रघुराई।
अस्तुति करहि भक्त समुदाई॥
गद - गद कंठ हरष उर छावा।
तेहि बस नयन नीर भरि आवा॥
पुनि भुवाल निज दसा सँभारी।
सीस नाइ अस्तुति अनुसारी॥
जयति महा देवी सुखदाई।
सेय मानि निजु जननि सदाई॥
ब्रह्मरुद्र . इन्द्रादिक नाना।
सेवहिं चरन करहि नित ध्याना॥
धारनि सक्ति धरनि तुव माई।
बन समुद्र पर्वत समुदाई॥
तुम्हरो रूप सकल संसारा।
तपहि भानु नित तोर प्रचारा॥
रसनि देहि महि. पुनि लय करही।
सो तुम्हार आयसु अनुसरही॥

दोहा

अंतर बाहिर व्यापि करि, अनल सबहि सुख देहि।
महादेवि सो करहि तब, जब तुम्हार सच लेहि॥५॥

चौपाई

सुर नर असुर सबहि हरषाई।
नावहिं तुव चरनन्ह सिरुनाई ॥
तुम्ह भगवान विस्व की माया।
जग पालन विद्या सुख दाया ॥
विस्व सृजन आदिक तुम करहू।
मोहि जन जानि दुसह दुख हरहू ॥
दुर्लभ दरस सुरन्ह कहँ तोरा।
पायेउँ आज भाग बड़ मोरा ॥
तुव पद सरन बिना नहि मोरे।
अस कहि पुनि बोले कर जोरे ॥
पुरवहु मोर मनोरथ माता।
तुम्ह विराट ते पूरुब्र जाता ॥
रिपुसूदन नृप की सुनि बानी।
भई मगन जग मातु भवानी ॥
निरखि विपुल तप पुनि कृस गाता।
माँगु - माँगु बर कहि हरषाता ॥

दोहा

अस सुनि बोलेउ सुमद नृप, अरि हत नृपता देहु।
दीजं रति चरनन विषै, पुनि तुम्ह करहु सनेहु ॥६॥

चौपाई

अक्षय मुक्ति अवसि मोहिं दीजै।
निज जन जानि काज यह कीजै ॥
सुनि नृप की वर गिरा सुहाई।
तब बोली कामद हरषाई ॥
कंटक रहित राज नृप तोरा।
होइहै सत्य बचन सुनु मोरा ॥

पतिदेवता सुभग सुख धामा ।
मिलिहै तोहि नृपति असि वामा ।।
अजय सत्रु करि कबहुन होई ।
सुनहु मुक्ति कारण सुत होई ।।
आगे रघुकुल मणि श्रीरामा ।
रावण - बध करिहैं सुख धामा ।।
करिहैं जज्ञ तासु बध मानी ।
तुरँग छोड़िहै सुन नृप ज्ञानी ।।
रिपुसूदन तेहि पालन हेता ।
अैहै तुव पुर सैन समेता ।।

सोरठा

सकल राज धन धाम, सुत कलत्र आदिक सबै ।
तजि महीप निज काम, मिलियौ जाइ अवस्य तुम ।।७।।

चौपाई

पुनि निज सैन सकल लै संगा ।
तिनके साथ भ्रमहु बस अंगा ।।
करि महि विजय सहित हय राई ।
रिपुसूदन संग मन हरषाई ।।
करहु प्रवेस अवध एहि भाँती ।
जहाँ राम खल - गण - आराती ।।
सिव व्रह्मादि भजहि पद जासू ।
करियो दरस तात तुम्ह तासू ।।
तिन्ह की सरनागत जब करिहौ ।
होइहौ मुक्ति प्रकृति परिहरिहौ ।।
जोगिन कौ दुर्लभ गति जोई ।
निस्चय तात मिलिहि सुनु सोई ।।

तब लगि नृपति करहु तुम राजू।
जब लगि हरि आवै सुख साजू॥
करियो सरन त्यागि सब कामा।
पुनि जैहौ महीप पर-धामा॥

दोहा

अस कहि अंतर हित भई, कामाख्या हरषाइ।
पुनि महीप सब सत्रु बधि, लीन्ही राज्य छड़ाइ॥८॥

चौपाई

अहिछत्रापुर यह सुख साजू।
सोई नृप सुमद करै यह राजू॥
संग चमू चतुरंग अपारा।
समरथ पुनि बलवान उदारा॥
कामद बचन समुझि रघुराजा।
यह नृप सुमद पकरिहै बाजा॥
आगम पुर समीप सुनि तोरा।
पुनि मन समुझि राम मख घोरा॥
भूप सिरोमनि सो हरषाई।
सहित समाज यज्ञ हय राई॥
मिलिहै तुमहि विगत अभिमाना।
पुनि करिहै सेवा विधि नाना॥
श्री रघुनाथ प्रताप न आना।
सुमति कीन्ह येहि भाँति बखाना॥
सुमद नरेस केरि सुनि गाथा।
सुनि मुनीस बोले रघुनाथा॥

सोरठा

सुमति ज्ञान आगार, साधु साधु पुनि साधु तुम।
कीन्हीं कृपा अपार, अस कहि हरषेउ सत्रुघन ॥९॥

चौपाई

सुमद कथा अब करहुं बखाना।
सुनहु सूत विज्ञान निधाना ॥
सुख आसीन सभा भुवपाला।
परिजन गनन सहित तेहि काला ॥
सेवहिं विपुल भूप कर जोरे।
धर्मसील लखि ताहि निहोरे ॥
भूसुर वेद निपुन बहु जूथा।
पुनि कुबेर सम वैस्य बरूथा ॥
मन बच कर्म भूप सेवकाई।
करहिँ सकल सुनिये मुनिराई ॥
असा मनाय पुनि न्याय प्रवीना।
भूसुर देहिं असीस नवीना ॥
पालहि प्रजा सकल जुत-धर्मा।
सतत करहि बेद कर कर्मा ॥
एहि विधि सभा-मध्य महिपाला।
विद्यमान जुत सोभ बिसाला ॥

दोहा

तेहि अवसर हय देखि येक, दूत गयो नृप पास।
बार-बार पद वंद पुनि, करहि सु बचन प्रकास ॥१०॥

चौपाई

हेम-पत्र-जुत तुरँग अनूपा।
आवा पुर समीप सुख रूपा ॥

नाथ न मैं जानौ कछु भेवा।
करहिं सूर बहु ताकी सेवा॥
ताके बचन सुनत महिपाला।
सेवक चतुर बोलि तेहि काला॥
कवन नरेस केर वह बाजा।
सत्वर खबरि करहु मम काजा॥
तब पद वंदि जाइ छिन माहीं।
लै सब खबरि आये नृप पाहीं॥
कीन्ह निवेदन सकल प्रसगा।
सुनत मात्र पुलके नृप अंगा॥
रघुनायक मख तुरंग बिचारी।
प्रेम बिबस तन दसा बिसारी॥
सावधान होइ पुनि महिपाला।
बोला सब सन बचन रसाला॥

दोहा

पुरजन विचरहु नगर सब, विविध भांति हरषाइ।
ध्वजा पताका तोरन सहित, बहु मंगल समुदाइ॥११॥

चौपाई

संपति विपुल सहित संकेता।
करहु जाइ मम आयसु जेता॥
कन्या सुभग सहस्त्रनि नाना।
सब विधि भूषित करहु सुजाना॥
गज आरूढ़ होइ सब तेई।
वरषहिं मुक्ताहल - गण सेई॥
पुर जन निज - निज साजहु साजा।
मिलन चलहु रिपुसूदन राजा॥

एहि विधि सब कहँ आयसु दीन्हा।
सहित कुटुंब गवन तब कीन्हा॥
इहाँ सत्रुहन सहित समाजा।
पुर ते आवत देखेउ राजा॥
विपुल करी सिंदन हय गाजे।
अमित पालकी पद चर भ्राजे॥
चित्र विचित्रित चमू बनाई।
आवहि मिलन सुमद हरषाई॥

दोहा

येहि प्रकार मन मुदित होइ, पुनि सत्वर महिपाल।
रामानुज-पद-कमल महँ, परेउ आइ तेहि काल॥१२॥

चौपाई

जोरि पानि बोले पुनि राजा।
महाराज तुम पूरण काजा॥
निरखि आजु तुव पद सुखदाई।
भयो धन्य तन मैं रघुराई॥
यह मम राज कोस परिवारा।
मनि मानिक गृह विभव अपारा॥
सो यह सकल नाथ निज मानहु।
मो कह निज अनुचर करि जानहु॥
कामाख्या पूरुब मोहि कहेऊ।
सो सुनि हय मग जोवत रहेऊ॥
देवी-बचन सत्य भय आजू।
आयेउ तुरंग सहित रघुराजू॥
अब मम नगर बिलोकहु स्वामी।
करहु कृतारथ लखि अनुगामी॥

प्रतिपालहु मो बंस कृपाला।
महाराज तुम्ह दीनदयाला।।

छंद

महराज दीन दयाल कहि, गजराज तुरत मंगायेऊ।
उड़ राज-सम वर गात सोभा, सदन बिरचि बनायेऊ।।
करि विनय श्री रिपुदहन पुष्कल, सहित चढ़ि छबि पायेऊ।
तब कहेउ हनहु निसान मधु, सूदन बहुरि सुख छायेऊ।।

दोहा

पणव भेरि वीणा सहित, हनेउ निसान अगार।
नरसिंघा आदिक तहाँ, बाजे एकहि बार।।

सोरठा

वरषहिं जलज अपार, कन्या सुंदर गजन चढ़ि।
गावहिं मंगलचार, तेहि अवसर आनंद - जुत।।१३।।

चौपाई

बासवादि पद - सेवन जोगा।
सो रिपुसूदन मग जुत लोगा।।
मंद - मंद आनद समेता।
पहुँचे नगर माहिं सुख देता।।
सब विधि ग्राम अनूप सुदेखी।
मन-महं आनंद भयेउ विसेखी।।
जज्ञ तुरंग पुनि सुभट अपारा।
बहु गज रथ पालकी नगारा।।
सकल समाज सहित नृप रानी।
महाराज कहं मंदिर आनी।।

विधिवत अर्घादिक तब दीन्हें।
बहु प्रकार पूजन तब कीन्हें ॥
चारि प्रकार असन समुदाई।
अमिय सरस कीन्हे मुनिराई ॥
अति आनंद - जुत सकल जिमाये।
यथा योग्य पुनि बास दिवाये ॥

दोहा

राजकोस परिवार पुनि, सकल साज समुदाइ।
कीन्ह समपण राम हित, सुमद हृदय हरषाइ ॥१४॥

इति श्री पद्म पुराणे पाताल षंडे शेष वात्सायन संवादे
शत्रुहन अहिछत्रापुरी प्रवेशोनाम त्रयोदशोऽध्याय: ॥१३॥

च्यवनोपाख्यान

दोहा

वात्सायन रिपु दहन को, कीन्ह प्रसन्न बनाइ।
पुनि नरेस रघुनाथ की, कुसल पूछि हरषाइ ॥

चौपाई

कहौ कृपाल कुसल श्रीरामा।
अखिल लोक नायक सुख - धामा ॥
भक्तन - हित लीन्हेउ अवतारा।
मोहि उधारन - हार उदारा ॥
धन्य अवध - वासी नर - नारी।
जे नित प्रभु - मुख - कमल निहारी ॥

महा अनंद - समुद्र अपारा।
संतत ही जे करत बिहारा ।।
जाइ सरन होइहौं मैं जबहीं।
करिहैं मुक्ति बंस - जुत तबहीं ।।
पुनि मम राजकोस समुदाई।
अवसि पवित्र करहिं रघुराई ।।
कामद प्रथम कहेउ समुझाई।
रामहि निरखि बंस समुदाई ।।
होइहै मुक्ति अवसि तेहि काला।
सोइ अवसर अब दीनदयाला ।।

दोहा

प्रेम सहित सुनि सुमद के, बचन हृदय हरषाइ।
तब बरन श्रीराम - गुन, सकल कुसल-जुत भाइ ।।१।।

चौपाई

पुनि निसि तीनि बास तहं कीन्हा।
भाँति अनेक नृपहिं सुख दीन्हा ।।
रिपुसूदन तब गवन बिचारा।
सो लखि सुमद महीप उदारा ।।
तुरत पुत्र वह दीन्हे राजू।
पुनि महीप सजि भेंट समाजू ।।
रामानुज पुष्कल जुत जहँवाँ।
सुमद हरषि उर आयेउ तहँवाँ ।।
सहित सनेह बिनय बहुभाषी।
अमित भेंट आगे पुनि राखी ।।
महाराज रिपुसूदन केरी।
सब विधि कृपा देखि उर हेरी ।।
बसन बिभूषण रतन अपारा।
बहु बिधि मनि धन भूप उदारा ।।

रिपुसूदन परिचारक जेते ।
बिबिधि भाँति पहिराये तेते ।।
महाराज पुनि कीन्ह पयाना ।
संग चमू चतुरंगिन नाना ।।

दोहा

कोटिन गज रथ तुरंग पुनि, पद चर गर्जत जाहिं ।
रिपुसूदन पुष्कल सुमद, सचिव सहित तिन माहिं ।।२।।

चौपाई

हँसत परस्पर सहित समाजा ।
अभय जाहिं मग मैं सब राजा ।।
येहि बिधि प्रभु - प्रताप सब बीरा ।
पहुँचे पयस्वरनी के तीरा ।।
आगे चल्यौ जाइ मख बाजा ।
तेहि पाछे सब सैन समाजा ।।
महाराज रिपुदहन उदारा ।
संग . चमू चतुरंग अपारा ।।
चले जाइँ प्रमुदित तिन पाछे ।
मुनि संकेत बिलोकत आछे ।।
तप - निधान मुनि - जन तिन्ह माहीं ।
बरनहिं राम - सुजस थल ताहीं ।।
रिपुसूदन आनंद समेता ।
मुनत जाहिं मग सुनु मुनिकेता ।।
अद्भुत चमू निरखि तेहि काला ।
कहै मुनीस्वर बचन रसाला ।।

दोहा

बुद्धिमान हरि जातु यह, हरि रच्छहिं बलवान ।
हरि सब हरि के भक्त हैं, हरिवर चढ़े सुजान ।।३।।

चोपाई

येहि बिधि सुनत मुनिन्ह की बानी।
रिपुसूदन अतिसय सुख मानी॥
भये प्रेम - बस धर्म - धुरधर।
पुनि मुनि - सदन विलोके सुंदर॥
पावन करन सील सब काला।
मुनि समूह स्रुति पढ़ै रसाला॥
जाकौ सुनि सतत छिन माही।
सकल अमगल गन नसि जाही॥
अगिनि होत्र अगनित सुखमूला।
करहि महा मुनि स्रुति अनुकूला॥
तिन्ह के धूम मकल नभ माही।
ब्यापि रह्यौ घन इव जह ताही॥
यज्ञ थभ अगिनित तहँ सोहैं।
जीव बैर - हत लखि मन मोहैं॥
सहित सनेह सिघ बन माही।
धेनु समूह चरावन जाही॥

दोहा

बिगत त्रास मूषक सदा, सोवहिं सग बिलार।
पुनि मयूर अहि कुलन, जुत देखे करत बिहार॥४॥

चौपाई

गज हरि येक सग गत कोहा।
विचरहिं तेहि थल निरखत मोहा॥
सपनेहु बैर करहि नहिं कोई।
मुनिन प्रताप विषमता खोई॥
बिगत त्रास बिचरहि चहुं पासा।
सुहृद - भाव - जुत परम हुलासा॥

बिपुल मुनिन्ह निज हित निखारा।
राखो करन हेत आहारा॥
पसु सब चरहिं तिन्हहि भय त्यागे।
बरजहिं ऋषि-गन तदपि न भागे॥
सुरभी अपन कुंभ सम धारें।
नंदिनी धेनु सरिस मनु हारें॥
ते निज खुरन उड़ावहिं धूरी।
पावन करनि सुमंगल मूरी॥
तिन्ह के आश्रय ते मुनि झारी।
धर्म कृपा सब करहि बिचारी॥

दोहा

सचिव सिरोमनि सुमति सन, बोले बचन बिसेखि।
महाराज श्री शत्रुघन, अस आश्रम मग देखि॥५॥

चौपाई

कहहु तात येहि सुचि अस्थाना।
बसहि प्रथम मुनि कवन सुजाना॥
बैरु बिहाइ जंतु इहिं ठाईं।
बिचरहि प्रमुदित सकल सदाईं॥
पुनि अनेक राजहि मुनि वृंदा।
कहहु कथा सब पावन कंदा॥
तिन्हकी कथा सुनत मम गाता।
होइहै पावन बरनहु ताता॥
रिपुसूदन के बचन सुहाये।
सुनत सुमति के मन अति भाये॥
पुनि बोले अति गिरा रसाला।
महाराज सुनिये येहि काला॥
च्यवन नाम मुनिवर तप-रासी।
तिन्ह कर यह अस्थान प्रकासी॥

पुनि तिन्ह के तप बल अधिकाई।
भये जीव सब सुहृद बनाई॥

दोहा

मुनि अनेक पतिनिन्ह सहित, राजहिं येहि बन माहिं।
भजहिं निरन्तर च्यवन कहि, निसि दिन प्रमुदित जाहिं॥६॥

चौपाई

प्रथमहि इन्ह मुनिनै रघुराजा।
मनु समीप के जज्ञ समाजा॥
तहाँ जिस्नु-मद-गजन कीन्हा।
यज्ञ भाग सुर वैद्यन दीन्हा॥
सोइ मुनि च्यवन इहाँ मति धीरा।
राजहिं मनु स्रुति धरे सरीरा॥
अस सुनि सुमति केरि मृदु बानी।
च्यवन चरित मिश्रित सुख-खानी॥
सकल प्रसंग सहित अनुरागा।
पूछहिं रिपुसूदन बड़भागा॥
कहहु सुमंत अस्विनी कुमारा।
वैद्य कर्म महँ निपुन अपारा॥
तिन्ह सुर-पंगति मैं मख-भागा।
केहि विधि लहेउ अचंभो लागा॥
मघवा कवन पाप तहँ कीन्हा।
जेहि लगि च्यवन दंड अति दीन्हा॥

दोहा

यह सब कथा बुझाइ, मो सन बरनहु सुमति तुम।
सुनि बोले हरषाइ, महाराज तुम धन्य अब॥७॥

चौपाई

अब सोइ कथा कहौ समुझाई।
रामानुज सुनिये मन लाई ॥
मुनि भृगु विदित सकल ससारा।
सध्या समय प्रथम यक बारा ॥
समुद लेन हित वन मै गयऊ।
तेहि अवसर मुनि गृह दुख भयेऊ ॥
दमन नाम निसिचर अति घोरा।
गर्जत भाषत बचन कठोरा ॥
भृगु संकेत आव तेहि काला।
महाबली भय दैत्य कराला ॥
मुनि तिय जुत भगिगा केहि ओरा।
पुनि-पुनि जलपहि बचन कठोरा ॥
वैस्वानर ताकी भय मानी।
दीन बताइ मुनीस्वर रानी ॥
गर्भवती अघ - रहित बनाई।
पकरि लीन्ह खल ता कहँ धाई ॥

दोहा

अति व्याकुल रोदन करहि, कुरच सरिस तेहि काल।
हे भृगु, हे पतिनाथ हे, रक्षा करहु कृपाल ॥८॥

चौपाई

येहि विधि करत बिलाप अपारा।
लिये जाहि पकरे खल भारा ॥
पुनि-पुनि दुष्ट बचन सोइ कहई।
सती सिरोमनि भय-बस अहई ॥
दारुन त्रास बिबस तेहि काला।
उदर-गर्भ गत भयो नृपाला ॥

वैस्वानर सम तासु सरीरा।
भयो गर्भ अतिसय मति धीरा॥
परत अवनि तल स्राप कठोरा।
देत भये लखि खल की ओरा॥
होहु भस्म दुरमति अभिमानी।
साधु सतावन अवगुन खानी॥
मातु दुखित करि मगल - मूला।
चहै नीच होइ स्रुति प्रतिकूला॥
सुनत स्राप भा भस्म सरीरा।
सुनिये महाराज मति धीरा॥

दोहा

तब मुनि-तिय ह्वै अनमनी, पुनि सुत लीन्ह उठाइ।
आई निज मदिर विषै, कपित गात बनाइ॥९॥

चौपाई

तब लखि आये भृगु-पति धामा।
सब विधि विमल देखि निज बामा॥
अनल-पाप-कृत मन महँ चीन्हा।
करि अति क्रोध स्राप तेहि दीन्हा॥
होहु सर्व भक्षी ससारा।
सत्य स्राप, यह वृत्र हमारा॥
सुनि भृगु बचन अनल अकुलाई।
महा दीन होइ विनय सुनाई॥
स्राप अनुग्रह करहु कृपाला।
सुनि बोले भृगु दीनदयाला॥
सकल भक्षि होइहौ जग माही।
रहिहौ सुचि, अघ व्यापिहि नाहीं॥
येहि बिधि मुनि तप-तेज-निधाना।
अनल प्रतोष दीन्ह सुख नाना॥

जात-कर्म पुनि निज सुत केरी।
विधिवत सकल करे स्रुति हेरी॥

दोहा

गर्भ-पतन ते जनम गुनि, धर्‌यो च्यवन असनाम।
दिन-दिन प्रति सुत बैठ इमि, जिमि उडुपति छवि-धाम॥१०॥

चौपाई

कछुक काल येहि भाति बिहाना।
भये च्यवन विज्ञान-निधाना॥
पुनि तप करन हेत गृह त्यागी।
चले मुदित मन परम बिरागी॥
जग पावन रेवा - तट गयेऊ।
सिष्यन्ह सहित निरखि सुख लयेऊ॥
पुनि तेहि थल तप कीन्ह अपारा।
दस सहस्र सवत व्रतधारा॥
जमी रेंनु उड़ि-उड़ि तन ऊपर।
कुधर खड सम सोहे भूधर॥
अंसन पर किसुक तरु नाना।
प्रगट भये मुनि सुनहु सुजाना॥
पुनि अहि बिल बिरचित तन माही।
बसहि मर्म कछु जानत नाही॥
मृग गन देह खुजावहि आई।
मुनि तप मगन कछू न जनाई॥

दोहा

येहि विधि से मुनि करत तप, सुनहु महा महिपाल।
अब मैं मनुसर जाति को, बरनहुं कथा रसाल॥११॥

चौपाई

एक समय मनु भूप उदारा।
मन मै तीरथ-गमन बिचारा॥
सैन कुटुम्ब साज सजवाई।
रेवातीर गयेउ हरषाई॥
मज्जन कीन्ह तहां स्रुति रीती।
सुर पितरन जल दीन्ह सप्रीती॥
विप्रन दान विविधि विधि दीन्हे।
महा प्रसन्न सकल तेहि कीन्हे॥
तहँ नृप-सुता सखिन्ह समुदाई:
हाटक-भूषण मजे बनाई॥
निरखत फिरै विपिन चहुं पासा।
निज सोभा करि करत प्रकासा॥
जेहि थल च्यवन करै तप भारी।
विवर वृच्छ तन ऊपर धारी॥
तहँ मनु-सुता सखिन समुदाई।
विवर विसाल बिलोके जाई॥

दोहा

एक टक चव निरखत भई, तिन्ह मग होइ रघुराज।
बिन जाने कुसपानि गहि, भ्रम बस डारि अकाज॥१२॥

चौपाई

कुस के लगत रुधिर बहि आवा।
निरखि भूप-कन्या दुख पावा॥
सोच बिबस मन मैं पछिताई।
अति सभीत पुनि निज थल आई॥
जननि जनक सन कीन्ह दुरावा।
छिन-छिन महा सोक अधिकावा॥

गिरि कानन्ह समुद्र समुदाई।
धरनि कंप तब भा रघुराई॥
उलकापात होहिं तिन्ह माही।
प्रति दिसि विदिसि धूम भा ताही॥
रबि परिवेष भएउ तेहि काला।
रोवहिं दिवस उलूक कराला॥
बहु गज तुरंग काल-बस भयेऊ।
पुनि धन रतन नास होइ गयेऊ॥
कलह परस्पर होइ अपारा।
च्यवन पाप कृत फ़ल उजियारा॥

दोहा

मुनि विलोकि उत्पात सब, भय बस भये मलीन।
पुनि बोले निज सचिव सन, मुनि अघ काहू कीन॥१३॥

चौपाई

पुनि धरि ध्यान देखि महिपाला।
सुता-पाप जिमि कोन्ह कराला॥
महा दुखित होइ सैन समेता।
गयेउ तहां जहँ मुनि कुल केता॥
तप निधान मुनिवर कहँ देखी।
कीन्ह दडवत भूप विसेखी॥
बोले बचन दीन तेहि काला।
छमहु पाप अब दीनदयाला॥
मुनि कुल तिलक कृपा निज़ करहू।
जनु अनुमानि दुसह दुख हरहू॥
होइ प्रसन्न तब च्यवन कृपाला।
बोले नृप सन बचन रसाला॥

तुम्हरी सुता चक्षु मम फोरा।
ताते भयेउ उपद्रव घोरा॥
सोइ निज सुता देहु जो मोही।
मंगल सकल होइ तब तोहीं॥

दोहा

तब ही सब उत्पात नृप, नसि जैहैं यक बार।
सुनत च्यवन के वचन उर, दुखित भयेउ अपार॥
रूप सील गुन आगरी, सोइ निज सुता बोलाइ।
दीन्ही बिधिवत च्यवन कहँ, भूप हृदय बिलखाइ॥

सोरठा

भये नास उत्पात, पुनि महीप निज सैन जुत।
वंदि चरण-जलजात, आयेउ व्याकुल नगर महँ॥१४॥

इति श्री पद्म पुराणे पाताल षंडे शेष वात्सायन संवादे
च्यवनोपाख्यानो नाम चतुर्दशोऽध्याय: ॥१४॥

च्यवन-तप-भोग

दोहा

वात्सायन, पुनि च्यवन ऋषि, भूप-सुता कहँ पाइ।
छोड़ि घोर तप आस्रमहि जात भये हरषाइ॥

चौपाई

जदपि च्यवन ते नयन विहीना।
महा जरठ हत बल, तन छीना॥

तदपि भूप - कन्या रघुराई।
सेवन करहि हृदय हरषाई॥
जिमि हरिजन हरि भज सब काला।
तिमि सेवहि मुनि - पद सोइ बाला॥
मन गति जानि करहि सोइ काजा।
परम भाव जुत, तजि सब लाजा॥
सची सक्र - पद सेवहि जैसे।
मुनिहिं भजै प्रमुदित सो तैसे॥
सब लक्षण-सम्पन्न कुमारी।
सुभग सरीर सकल मनुहारी॥
सोइ फल मूल अंबु आहारी।
करहि कांत आयसु - अनुसारी॥
पति - सेवा - बिनु अपर न ज्ञाना।
पुनि जीवन हित मैं सुख माना॥

दोहा

काम क्रोध मद लोभ पुनि, आलस मोह बिहाइ।
सेवहि संतत च्यवन कहँ, दंभादिकहि बिहाइ॥१॥

चौपाई

मन बच कर्म रहैं ईहि भाँती।
जात न जानहिं दिन अरु राती॥
सरसत संवत लगि येहि रीती।
कीन्ह सेव - हत काम सप्रीती॥
येक समय अस्वनी कुमारा।
मुनि के आश्रम मैं पगु धारा॥
आये देखि तिनहि निज धामा।
पूजा करन लगी सोइ वामा॥
स्वागत कहि अरघादिक दीन्हे।
महा प्रसन्न चित्त ते कीन्हे॥

निरखि प्रीति अस्विनी-कुमारा।
बोले तेहि सन बचन उदारा॥
माँगहु बर सर - जात कुमारी।
तो सम धन्य न अवनि मझारी॥
तिनहि प्रसन्न देखि महिपाला।
बुद्धिमान सो बाल बिसाला॥

दोहा

पति इक्षा लखि कीन्ह मन, बर जाँचन हित बाल।
पुनि बोलो तिन्ह सुरन्ह सों, जो तुम भये दयाल॥२॥

चौपाई

तौ मम पति के नयन नवीना।
करहु देव वर परम प्रवीना॥
ताके बचन सुनत रघुराई।
वोले अमर वैद्य हरषाई॥
पतिदेवता वचन सुनु मोरे।
जो यक काज करहि पति तोरे॥
सुर पंगति महँ मख कर भागा।
प्रथमहि देहिं सहित अनुरागा॥
तौ दग नवल करौं इहि काला।
सुनि बोले मुनि तपी विसाला॥
तुम्ह सुर वर लायक मख भागा।
देहैं अवसि सहित अनुरागा॥
सुनि सुर वैद्य हृदय हरषाई।
बोले मुनि सन गिरा सुहाई॥
सिद्धि रचित यह सर सुखदाई।
मज्जन करहु सकल दुख जाई॥

दोहा

उठं च्यवन अस बचन सुनि, महा बृद्ध तन छीन।
चलहिं उतावल स्वास अति, कँपकपात बल हीन ।।३।।

चौपाई

करि बहु कष्ट गये सर माहीं।
मंजन करत हृदय हरषाहीं ।।
पुनि सुर वैद तहाँ चलि गयेऊ।
च्यवन सहित मज्जत तब भयेऊ ।।
तीनौ जन धरि सुभग सरीरा।
करि मज्जन निकसे मति-धीरा ।।
मदन - सदस - छवि तियनि पियारी।
कुंडल कनक वसन तन धारी ।।
दिव्य माल आदिक सब सोहै।
दिनकर अनल तेज जुत मोहै ।।
रूप सील वय तेज समाना।
निरखि बाल नहिं पति पहिचाना ।।
भ्रम - बस सरन गई तिन्ह पाहीं।
पति-हित बिनय कीन्ह बहु ताहीं ।।
पतिदेवता निरखि हरषाई।
तुरत च्यवन कहँ दीन्ह बताई ।।

सोरठा

पुनि रिषि आयसु पाइ, चढ़ि विमान सुर बैद तब।
जात भये हरषाइ, जज्ञ भाग की आस जुत ।।४।।

चौपाई

इहां च्यवन मन कीन्ह बिचारा।
करि सेवा मनु - सुता अपारा ।।

अमित दया लागी उर माहीं।
प्रेम - बिबस बोले तिय पाहीं॥
मैं प्रसन्न तो पर इहि काला।
परम भक्ति लखि सेव विसाला॥
जग मैं निजु तन परम पियारा।
सो मम हित लगि तुम्ह न निहारा॥
अब सुनु भूप - सुता हरषाई।
बचन परम प्रिय अनंद सदाई॥
तब सब विधि विद्यातम ज्ञाना।
प्रभु प्रसाद मम कृत जे नाना॥
तिन्ह के फल सब तौ बस कीन्हे।
मम सेवा करि दृढ़ मन दीन्हे॥
दुर्लभ भूपन कौ सुख जेई।
करहु भोग प्रमुदित होइ तेई॥

दोहा

मम तप बल ते दिव्य सुख, करहु बाल हरषाइ।
निपुन जोग माया विषै, मुनि अस कहि अरुगाइ॥५॥

चौपाई

बचन उदार सुनत पति केरे।
लज्जित होइ बोली हँसि हेरे॥
तुम समर्थ मुनि कुल मम स्वामी।
त्रिकालज्ञ प्रभु अंतरजामी॥
तदपि कहौं कछु बचन कृपाला।
जो पूछहु करि, दया विसाला॥
नारिन कौं जग मैं यह जोगा।
एकहु बार स्वामि सँग भोगा॥
कीजिय अवसि वेद अस गावा।
कृपा - सिंधु सोइ समय सोहावा॥

रिपुसूदन मुनि सुनि तिय बचना।
तप बल लगे रचन बर रचना॥
रुचिर विमान सदा सुखदाई।
विपुल रंग मनि रचित बनाई॥
दिव्य सकल कामद सब काला।
सर्व रत्न जुत सोह बिसाला॥

छंद

सो सर्व रत्न समेत सोभित, जान नहिं बरनत बनै।
नाना पदारथ सहित पुनि मनि खंभ राजहिं अति घनै॥
पय फेन सम अवदात दिव्य, विचित्र बसन बिछे तहाँ।
बहु रंग ध्वज तोरण पताक, अनेक सुंदर रचि तहाँ॥
पुनि माल फूलन की बिचित्र सुगंध अलि-जुत भ्राजहीं।
मनि जलज हेम विसाल भ्रग अगिनित सुमन तहँ राजहीं॥
बहु रंग रंगन्ह के दुकूल, अनेक अद्भुत सोहहीं।
रचना अनूप रची तहाँ लखि, अमर सिल्पि विमोहहीं॥
सुभ महा मरकत मणिन के, परजंक विपुल विराजहीं।
उड़राज सम सित तल्प सोभा सदन सदनन छाजहीं॥
तहँ दिव्य बिद्रुम वेदिका, पुनि देहरी अगिनित लसैं।
विरचे कपाट विसाल हीरनि ते अमरपुर कौ हँसैं॥
मणि इन्द्र नीलनि के कँगूरा, सुभग चहुँ दिसि जग-मगैं।
बहु हेम रतनन के कलस प्रति द्वार रवि ससि सम लगैं॥
पुनि पद्म राग समेत कंचन, कुलिसमय भीतर रची।
नाना बितान विसाल राजहिं ललित लीला दिक खची॥

सोरठा

हाटक मणिमय धाम, अति सुंदर बिरचे तहाँ।
बन सरवर आराम, सोभा मैं केहि विधि कहौं॥

दोहा

हंस कीर कोकिल तहाँ, पारावत समुदाइ।
निज प्रति बिम्ब बिलोकि सब, कूजत अति सुख पाइ ॥६॥

चौपाई

कतहुं विहार कतहुँ विस्रामा।
भिन्न-भिन्न विरचे मुनि धामा ॥
रचि विमान पुनि मुनिवर देखा।
मन मैं विस्मय भयेउ बिसेखा ॥
अस बिमान लखि भूप-कुमारी।
भई हृदय नहिं नैंक सुखारी ॥
तब मुनि त्रिकालज्ञ अस जानी।
छीन देह लखि तिय दुख मानी ॥
पुनि बोले बर गिरा सुहाई।
सुनहु बाल निज जन हरषाई ॥
सुभग सरोवर यह सुख मूला।
मज्जन करहु, जाइ स्रम-सूला ॥
पुनि प्रमुदित होइ चढ़हु विमाना।
करहु भोग सम्पति सुख नाना ॥
सुनि अस बचन उठी नृप कन्या।
पतिदेवता अवनि तल धन्या ॥

दोहा

मलिन वसन पुनि छीन तन, पंक रही लपटाइ।
भये केस बँधि के जटा, सुनहु महा मुनि राइ ॥७॥

चौपाई

तब सरवर तेहि कीन्ह प्रवेसा।
पति आयसु उर प्रेम बिसेखा ॥

मज्जन करत बारि बिच देखा।
हेम मणिन कृत भवन बिसेखा॥
एक सहस कन्या तहं राजें।
निज-छवि सों मन्मय-तिय लाजें॥
वय किसोर सुभ लच्छन-रासी।
कंज-गंध तन करहि प्रकासी॥
ते सब भूप-सुता कहं देखी।
जोरि पानि पुनि उठी विसेखी॥
बोली बचन बिनीत विचारी।
स्वामिनि हम किंकरी तुमारी॥
आयसु कहा करहुं येहि काला।
सोइ अनुसरिहैं हम सब बाला॥
येहि प्रकार कहि प्रीति बढ़ाई।
पुनि विधिवत अस्नान कराई॥

दोहा

अति बिचित्र नूतन वसन, अंग-अंग सजे बनाइ।
दिव्य बिभूषन सकल पुनि, पहिराये हरषाइ॥८॥

चौपाई

मधुर अन्न सुंदर जलपाना।
करवाये भोजन विधि नाना॥
पुनि मधु दीन्ह ताहि मन भावा।
मुकुर मनोहर फिरि दरसावा॥
येहि प्रकार सब करि सेवकाई।
प्रेम सहित निज बिनय सुनाई॥
तेहि अवसर लै मुकुर रसाला।
देखन लगी रूप निज बाला॥
बिपुल माल मुक्ताहल हारा।
निरखे उर मैं, करत बिचारा॥

ससि-सम बदन, कंबु-इव ग्रीवा।
अपर अंग देखे छवि-सीवा॥
दिव्य बसन बिचित्र सुखदाई।
सकल विभूषन सजे बनाई॥
विसद गंध तन चर्चित देखी।
रतिहू ते छवि लही विसेखी॥

दोहा

तब मन मैं निज नाथ कर, सुमिरन करि रघुराज।
जाति भई पुनि सखिन जुत, तहां च्यवन सुख साज॥६॥

चौपाई

विद्याधरी सहस छवि-रासी।
तिन बिच आपुहि देखि प्रकासी॥
मुनि को योग-निपुन पुनि देखी।
मन महँ संका कीन्ह विसेखी॥
तब मुनि तिय मन की गति जानी।
सखिन्ह सहित विमान पर आनी॥
च्यवन तियन्ह जुत राजहि कैसे।
उडगन सहित चन्द्रमा जैसे॥
कुलाचलेन्द्र सिखर सुख-रासी।
रितु वसंत तहं सदा प्रकासी॥
तेहि थल झरना झरहिं अपारा।
लोकपाल जहँ करहिं विहारा॥
करहिं सिद्ध जन मुदित निवासा।
तहाँ च्यवन मुनि सहित हुलासा॥
बिहरत फिरहिं तियन सुखदाई।
नाना विधि, सुनिये रघुराई॥

दोहा

पुष्प भद्रवन आदि दै, वैस्रंभक सुख साज।
नंदन वृंदारक विपिन, जहाँ भोग संभ्राज ॥

सोरठा

मानस हृद सुख धाम, चैत्र रथादिक विपिन सब।
मुनि विहरे जुत बाम, बिपुल काल लगि जान चढ़ि ॥१०॥

इति श्री पद्म पुराणे पाताल षंडे शेष वात्सायन संवादे
च्यवनस्य तप भोग वर्ननो नाम
पंचदशमोऽध्यायः ॥१५॥

च्यवन-आश्रम-हय-गमन

दोहा

सूत सुनहु येहि भाँति मुनि, सकल अवनि तल माहिं।
चढ़ि विमान बिहरत भये, सत संवत लगि ताहिं ॥

चौपाई

प्रिया मनोरथ पूरन जाना।
पुनि मुनीस तप मैं मन आना ॥
सकल विहार छाड़ि मति-धीरा।
आयेउ पयस्वनी के तीरा ॥
अब तप करहिं हृदय हरषाई।
येहि आस्रम सुनिये रघुराई ॥
बिगत बयर खग मृग सब चरहीं।
परम सनेह परस्पर करहीं ॥

संकल सिष्य स्रुति मध्य प्रवीना।
सेवहिं पद मन करि लव लीना।।
तप समूह विज्ञान-निकेता।
बसहिं जहां मुनि गनन्ह समेता।।
महाराज अब कथा सुहाई।
कहौं बखानि सुनहु मन लाई।।
एक समय सरजाति भुवाला।
रच्यौ सुरन हित जज्ञ विसाला।।

दोहा

तहाँ प्रथम मनु च्यवन हित, सचिव दीन्ह पठवाइ।
सुता सहित मुनि नाथ कहं, ल्यावउ नगर बुलाइ।।१।।

चौपाई

मुनिहि सुता-युत आवत देखा।
अनल भानु सम तेज विसेखा।।
भूप मलिन होइ वंदन कीन्हा।
भेंटे सुतहिन आसिष दीन्हा।।
महा दुखित होइ बचन भरोषा।
बोले भ्रम बस लखि बड़ दोषा।।
कवन कर्म तैं कीन्ह कराला।
तजे च्यवन तप-रासि-विसाला।।
महा जठर पुनि परम कृपाला।
सहनसील जग पूज्य दयाला।।
तिनहि त्यागि तू मंद अभागी।
केहि हित भई जाइ अनुरागी।।
जन्मी विमल बंस मैं आई।
कवन हेतु निज बुद्धि नसाई।।

दोहा

येहि विधि पितु के बचन सुनि, हंसि बोली तेहि काल।
ये भृगु-नंदन स्वामि मम, अस कहि सुकुचि बिहाल ॥२॥

चौपाई

वय सरूप जिमि मुनिवर पावा।
सो प्रसंग सब पितुहिं सुनावा ॥
सुनत सुता के बचन रसाला।
बिस्मय बिबस भये महिपाला ॥
प्रेम सहित पुनि भेटि कुमारी।
दै असीस तब कीन्ह सुखारी ॥
पुनि मनु भूप हृदय अनुरागे।
यज्ञ क्रिया करवावन लागे ॥
जे मख भाग जोग सुर नाहीं।
प्रथमहिं देत भये तिन्ह पाहीं ॥
अपने तप बल च्यवन उदारा।
इन्द्रादिक कर करि उपचारा ॥
यज्ञ भाग सुर वैद्यन दीन्हा।
प्रथम बचन गुनि आदर कीन्हा ॥
लेत भाग लखि सक्र रिसाना।
कुलिस लीन्ह कर काल समाना ॥

दोहा

रिपुसूदन मुनि, च्यमन कहं, बधन हेत पुर हूत।
धायेउ निज अपमान लखि, करि मन क्रोध बहूत ॥३॥

चौपाई

धरे कुलिस कर मारन हेता।
आवत लखि मन गर्व समेता ॥

तब हुंकार सब्द तेहि कीन्हा।
पवि जुत बाहु थकित करि दीन्हा ।।
थकित बाहु वासव तहं ठाढ़ा।
मंत्र बिबस अहि जिमि रिस बाढ़ा ।।
सकल लोग कौतुक तहं देखे।
विस्मय अमित हृदय महं लेखे ।।
तब सुरपति अभिमान बिहाई।
मुख सो अस्तुति करहि लजाई ।।
तप निधान हे च्यवन उदारा।
भले दीन्ह बलि इनहि अगारा ।।
होहु प्रसन्न कृपा अनुसरहू।
अब जन जानि अभै मोहि करहू ।।
छमहु मोर अघ दीनदयाला।
मुनिनायक तुम्ह परम कृपाला ।।

दोहा

सुनासीर के वचन सुनि, क्रोध सांत करि लीन्ह।
अघ छमि आसिष दीन्ह पुनि, बाहु जथारथ कीन्ह ।।४।।

चौपाई

अस कौतुक लखि लोग लुगाई।
च्यमन तेज बल सकल सिहाई ।।
लै लै भाग देव पुनि गयेऊ।
तब नृप दान द्विजन कहं दयेऊ ।।
विधिवत मख पूरन करि काजा।
मज्जत भयेउ समेत समाजा ।।
च्यवन कथा सुंदर रघुराई।
तुम्ह जो मोहि पूछि हरषाई ।।
सो मैं तुम सौं कही बुझाई।
जन्म विहार जोग समुदाई ।।

अब आस्रम चलि करहु प्रनामा।
लेहु असीस सहित अभिरामा॥
तिय समेत पुनि रघुवर पासा।
अवसि पठावहु सहित हुलासा॥
येहि विधि कहत परस्पर बाता।
प्रेम मगन दोउ पुलकित गाता॥

दोहा

तब लगि मुनि आस्रम विषै, जात भयो हय-राज।
मरुत ने तृण चरत मुख, गति जुत भूतल भ्राज॥५॥

चौपाई

मुनि जन सरि मंजन हित लागी।
तेहि थल बिचरहि अति बड़भागी॥
ते हय चकृत विलोकत ठाढ़े।
हृदय सराहत आनंद बाढ़े॥
तेहि अवसर चतुरंगिनि सैना।
पहुँची निकट च्यमन के अैना॥
तब रिपुसूदन रथ परित्यागा।
कछुक भीर लै युत अनुरागा॥
च्यमन निकेत माहि चलि गयेऊ।
भूप-सुता युत निरखत भयेऊ॥
तप मैं मूरति मन मैं लेखी।
प्रेम सहित पद वंदि विसेखी॥
पुनि बोले वर बचन रसाला।
करहु कृपा मुनिनाथ दयाला॥
श्री रघुपति कर मैं लघु भ्राता।
नाम सत्रुहन रवि कुल जाता॥

दोहा

मख हय पालन हेत मैं, आयेउ सुनहु कृपाल।
प्रणवहुं पद-जलजात अब, पावन करहु दयाल ॥६॥

चौपाई

सुनि प्रिय बचन विनीत बनाई।
मुनि सुमंत बोल्यौ हरषाई ॥
महाराज तुम्हरो कल्याना।
कीरति सहित होहु सुख नाना ॥
देखहु मुनि-जन अचरज भारी।
राम करहिं मख उर ब्रत धारी ॥
जिनके सुमिरे ते जग माहीं।
सकल पाप छिन मैं नसि जाहीं ॥
परदारादि पाप रत जेई।
सुमिरि जिन्हहि पावहिं गति तेई ॥
जिनकी पद-पंकज रज पाई।
भई अहिल्या नारि सुहाई ॥
सिव ब्रह्महि कर पावन जोई।
करहिं यज्ञ ते अचरज होई ॥
असुर पाप रत संतत जेई।
निरखि रूप रण-मंडल तेई ॥

दोहा

तजि-तजि प्राकृत देह तिन्ह, लही मुक्ति सारूप।
देखहु मुनि ते करहिं मख, अखिल लोक के भूप ॥७॥

चौपाई

जिन हित जोगी जोग कराहीं।
करि-करि ध्यान परम पद जाहीं ॥

आजु धन्य मैं भूतल माहीं।
जाइ राम-छवि देखि हौं ताहीं॥
काम कोटि छवि धरे सरीरा।
ससि सम बदन हरन भव-भीरा॥
जलज नयन, सुंदर स्रुति नासा।
सुभग कपोल अधर जुत हासा॥
मदन-चाप-इव भृगुटि बिराजे।
मुक्ताहल दुति रद-गण राजे॥
कंबु कंठ उर सोह बिसाला।
रूचिर जानु लगि बाहु रसाला॥
पानि अरुण अरविंद समाना।
करज चारु नख ससि अनुमाना॥
त्रिवलि उदर माहि अति भ्राजे।
नाभि भानु तनुजा अति लाजे॥

दोहा

इन्द्र नील मणि कदलि सम, जुगुल जंघ छवि-भौन।
रूचिर उरू पद नखन कहूँ, बरनि सकै कवि कौन॥८॥

चौपाई

मंजु मृदुल पंकज छवि हारी।
देखिहौं चरन कमल सुखकारी॥
हेम सिया जुत सकल समाजा।
सरजू तीर करत मख काजा॥
जे अस राम नाम परित्यागी।
अपर देव-नामन अनुरागी॥
तिनकी रसना सोहै कैसे।
बृथा ब्याल जिभ्या जग जैसे॥
आजु सकल तप फल मैं पावा।
भयो मनोरथ मो मन भावा॥

राम दरस करिहौं मैं आजू।
अज सिव कौं दुर्लभ सुख साजू॥
तिनकी पद रज धरि निज गाता।
करिहौं पावन आजुहिं जाता॥
बचन परस्पर करिहौ जबहीं।
रसना पावन होइहै तबहीं॥

दोहा

अस कहि प्रेम मगन भय, मुनिनायक तेहि काल।
पुनि बोले गद्‌गद् बचन, नयन स्रवत जलजाल॥६॥

चौपाई

हे रघुवर हे राम कृपाला।
धर्म मूर्ति हे दीन दयाला॥
प्रनतपाल हे स्वामि उदारा।
भव - निधि तें कीजै मोहि पारा॥
अस कहि ध्यान मगन होइ गयेऊ।
निज पराव नहिं जानत भयेऊ॥
तब रिपुसूदन बचन विनीता।
बोले मुनि सन परम पुनीता॥
नाथ राम - मख पावन कीजै।
चलहु अवध सबकौं सुख दीजै॥
रघुपति हैं अतिसै बड़ भागी।
विस्व पूज्य तुम जन हित लागी॥
प्रेम विवस होइ अति हरषाने।
राखहु उर मैं निज प्रभु माने॥
सुनि अस बचन हृदय हरषाई।
पुनि - मुनि उठे कुटुम समुदाई॥

दोहा

होम साज सब साथ लं, चले अवध तेहि काल।
मारुत सुत पद जात लखि, लागी दया विसाल ॥१०॥

चौपाई

रघुपति - भक्त सिरोमनि जानी।
रिपुसूदन सन बोले बानी॥
महाराज पायन मुनि जाहीं।
खेद बहुत होइहै मग माहीं॥
राम भक्त सुंदर अति गाता।
कोमल पद जानहु जलजाता॥
जो अनुसासन देहु कृपाला।
आवहु अवध पठै येहि काला॥
कपि के बचन सुनत हरषाई।
कहेउ जाहु आवहु पहुंचाई॥
तब हनुमान जाइ मुनि पासा।
पीठि चढ़ायेउ सहित हुलासा॥
रिषि परिवार बहोरि चढ़ाई।
धायो मरुत बेगि कपिराई॥
सरजू तीर गयेउ छिनमाहीं।
रघुनायक जहं यज्ञ कराहीं॥

दोहा

मुनि कौ आवत देखि प्रभु, उठे हरषि तेहि काल।
अर्घपाद्य दै प्रेम जुत, बोले बचन रसाल॥
आजु धन्य मैं भयेउ मुनि, तुम्हरो दरसन पाइ।
पावन यज्ञ भयो महा, सकल वस्तु समुदाइ॥
सुनि रघुवर के बचन वर, च्यवन महा मुनि राइ।
तब पुलकित लोचन स्रवत, बोले गिरा सुहाइ॥

सोरठा

तुम्ह जो पूजन कीन्ह, अहो स्वामि ब्रह्मन्य सुर ।
धर्म प्रगट सिख दीन्ह विप्रहि मानो जगत इमि ।।११।।

इति श्री पद्म पुराणे पाताल षडं सेष वात्सायन संवादे
च्यवनस्याश्रमे हय गमनोनाम षोडशोऽध्याय: ।।१६।।

ब्राह्मण-समागमन

दोहा

वात्सायन रघुनाथ-पद, वंदन करि कपिराज ।
जात भयेउ पुनि कटक मैं, जहं रिपुदमन समाज ।।

चौपाई

महाराज रिपुदहन उदारा ।
निरखि च्यवन - तप तेज अपारा ।।
विस्मय सहित सराहन लागे ।
सुनहु सूत मन मैं अनुरागे ।।
धन्य च्यवन तप - तेज - निधाना ।
सुर - दुर्लभ जिन्ह रच्यौ विमाना ।।
नाना विधि के भोग विलासा ।
प्रिया हेत जिन्ह कीन्ह प्रकासा ।।
पुनि मन मैं प्रभु करा८ बिचारा ।
कहा भोग तें च्यवन अगारा ।।
जे संतत हरि पद लवलीना ।
पुनि विराग महँ परम प्रवीना ।।

ते सुख जीवन कौं जग माहीं।
दुर्लभ सब विधि संसय नाहीं।।
येहि प्रकार मन मुनिहिं सराही।
बैठि छिनक आस्रम हरषाही।।
करि जलपान समेत समाजा।
पुनि रथ चढ़त भयेउ रघुराजा।।

दोहा

पयस्वनी जलपान करि, तेहि अवसर मख बाजि।
चल्यौ उतावल पंथ गहि, प्रबल पवन-गति लाजि।।१।।

चौपाई

तुरंग जात लखि सूर अपारा।
चले विलोकत समर जुझारा।।
कोटिन गज रथ पर असवारा।
चढ़े तुरग कोटिन्ह नहिं पारा।।
तिन्ह पाछे रिपुदहन उदारा।
सुमति सहित रथ चढ़ि पगु धारा।।
अगनित भूप चले तिन पाछे।
अस्त्र - सस्त्र युत भूपन काछे।।
महाराज सोहैं मग कैसे।
सुर - समूह महं आसव जैसे।।
येहि विधि सकल सैन मग माहीं।
जाहिं जहाँ हय निरखहि ताहीं।।
येहि प्रकार रघुपति मख-बाजा।
पहुंच्यौ विमल भूप के राजा।।
रतन तटाख्य नगर तेहि केरा।
सब प्रकार सुंदर चहुं फेरा।।

सोरठा

तेहि तट पहुंच्यौ जाइ, बाजि सरोमनि सैन युत ।
यह सुधि भूपति पाइ, सभा माहिं प्रमुदित भयो ।।२।।

चौपाई

नाग सात सै परम अनूपा ।
सजै भेंट हित ससि समरूपा ।।
दस हजार हय साजि बनाई ।
पुनि रथ रचे सहस सुखदाई ।।
अपर साज अगनित सजवाई ।
विमल नरेस चलेउ हरषाई ।।
श्री रामानुज चरन मझारी ।
परेउ सकल अभिमान बिसारी ।।
भेट राखि आगे महिपाला ।
पुनि निज नृपता कोष बिसाला ।।
सकल निवेदन करि तेहि काला ।
पुनि बिनती बहु कीन्ह रसाला ।।
लषन - बंधु सुनि बिनय बिनीता ।
भुज भरि भेंटत भयेउ सप्रीता ।।
बहुरि तासु सुत बोलि समीपा ।
सकल राज दै कीन्हि महीपा ।।

दोहा

विमल संग लै चलेउ पुनि, रामानुज मति-धीर ।
नगर विलोकत विपुल मग, विगत त्रास सब बीर ।।३।।

चौपाई

तिन्ह देसन के सकल भुवाला ।
मिलहिं आइ सजि भेंट बिसाला ।।

राम - प्रताप सकल मग माहीं।
विगत त्रास मन हरषित जाहीं॥
सपनेउ बाधा करेउ न कोई।
जो निरखै हय प्रणवहि सोई॥
रिपुसूदन इहि विधि मग जाता।
निरखत भये संल सुख दाता॥
रजत कनकमय सिखर सुहाई।
चित्र विचित्रित अवनि सुहाई॥
कहुं कहुं फटिक शृंग छवि छाई।
झरना झरहि महा सुखदाई॥
रंग - रंग के सयल अनूपा।
निरखे सकल दिव्य सुख रूपा॥
तहाँ सिंधु, जन तियन समेता।
बिगत त्रास बिहरहिं सुख देता॥

दोहा

वृंदारक गंधर्व पुनि, नाग अपसरा वृंद।
बिहरत देखत संल पर सकल त्रास कर कुंद॥४॥

चौपाई

सुर सरि परसि पवन सुखदाई।
सतत बहइ तहाँ मुनि राई॥
हंस कीर कोकिला प्रवीना।
भ्रमर आदि रव करहिं नवीना॥
नाना तरु कुसमित तहँ देखी।
सब प्रकार अद्भुत छबि लेखी॥
विस्मय जुत रिपुदहन उदारा।
सुमत सचिव सन बचन उचारा॥

सचिव सिरोमनि कहौ बुझाई।
कवन सैल यह विस्मय दाई॥
अति अद्भुत मारग अस्थाना।
राजहिं विपुल विहग मृग नाना॥
करहिं अमर अपछरा विहारा।
विगत-त्रास, मन मुदित अपारा॥
कवन देव कर इहां निवासा।
कहौ सचिव सब सहित हुलासा॥

सोरठा

भयेउ हृदय मम छोभ, जाकी सुंदरता लखे।
[illegible] अलौकिक सोभ, कहौ तात विस्तार करि॥५॥

चौपाई

सुनि अस बचन सुमति अतिधीरा।
गुणागार सेवक रघुबीरा॥
बोलेउ बचन हृदय हरषाई।
महाराज सुनिये मन लाई॥
नीलाचल यह सैल सुहावा।
अंग विसाल देत छबि पावा॥
परदारादि पापरत जेई।
दरस न पाइ सक खल तेई॥
जे पर कृत-घातक नर मंदा।
अपर वेद निंदक दुख कंदा॥
पुनि संतत स्वारथ रत जेई।
लील लाख जग बेचहिं तेई॥
अैसेहु खल करि दरसन ताता।
होइ विस्व में पावन-गाता॥

पुनि द्विज ह्वै रस बेचहिं मूढ़ा।
मधुप पान जे करें विमूढ़ा।।

दोहा

जे उत्तम कुल छाड़ि नर, लोभ बिबस मतिमंद।
कन्या बेचहिं अधम गृह, ते लायक जम-फंद।।६।।

चौपाई

पतिव्रतहिं पुनि दूखहि जेई।
तजि कुटुंब मधु भोगहि तेई।।
अैसेहु कर दरसन जग माहीं।
अतकाल ते हरिपुर जाहीं।।
पुनि बोले विप्रन हित लागी।
पाक भद नित कर हित भागी।।
मधुर अन्न छवि भोजन करहीं।
विगत स्वाद विप्रन के घरहों।।
पुनि मध्याह्न काल जे लोगा।
अतिथि-त्यागि आपुहिं करि भोगा।।
अतरिक्ष भोजन प्रिय जिनहीं।
श्री रघुनाथ विमुख जग तिनहीं।।
अैसेउ खल जो कपट बिहाई।
करहिं दरस सुनिये रघुराई।।
लहैं परम गति पाप बिहाई।
जो येहि गिरि सरनागति जाई।।

दोहा

महाराज या सैल पर, जग-पावन छवि-धाम।
श्रीपति पुरुषोत्तम बसै, जगन्नाथ अस नाम।।७।।

चौपाई

मुकुट सहित सुर नावहिं भाला।
मानहु आरति करहिं रसाला॥
पावन दरस अभय पद पाई।
नेति-नेति बदि स्तुति गुण गाई॥
इन्द्रादिक संतत पग-धूरी।
खोजत भाग्य सराहैं भूरी॥
पुनि वेदांत सार बुधि देखी।
संतत अस्तुति करें विसेखी॥
अस पुरुषोत्तम दीनदयाला।
बसें सैल इहि परम कृपाला॥
जे सुकृती जन परम पुनीता।
ते प्रणवहिं सेवहिं जुत प्रीता॥
पुनि प्रसाद लहि प्रकृति विहाई।
धारि चतुभुज वपु गति पाई॥
अब इतिहास पुरातन कहहूँ।
अचिरिज सहित तात तुम्ह सुनहूँ॥

दोहा

रतन ग्रीव नृप की कथा, कहौं बस-जुत गाइ।
प्रथम चतुभुंज रूप तिन्ह, पावा प्रकृति बिहाइ॥८॥

चौपाई

देवन कौ दुर्लभ गति जोई।
करि दरसन पाई तिन्ह सोई॥
काँचीपुरी जगत विख्याता।
अति पुनीत सुंदर सुनु ताता॥
तहां महाजन बसहिं अपारा।
अमित सैव जुत सोभ उदारा॥

राम-भक्त षट-कर्म समेता।
बसहिं विप्र सब आनंद देता॥
छत्री बसं महा रण धीरा।
अस्त्र-सस्त्र युत सब वर वीरा॥
पर-धन पर-तिय देहिं न दीठी।
सपने करहिं न रन-तन पीठी॥
बसं बैस्य तहं सकल सुजाना।
कृषि गोरक्षण बनिज प्रधाना॥
पुनि रघुनाथ चरण रति माने।
संतत पर-अनहित नहिं जाने॥

दोहा

संतत द्विज सेवा निपुन, सूद्र बसहिं सब ताहि।
श्री रघुपति के नाम कहं जपत दिवस निसि जाहि॥६॥

चौपाई

मानहु करि कोउ पाप न जाना।
दान दया दम सत्य निधाना॥
पर चबाव जन भूलि न करहीं।
पुनि परधन पर लोभहि धरहीं॥
इहि विधि प्रजा लोग तह बसई।
सब प्रकार अघ ते मन कसई॥
रत्नग्रीव नृप नीति-सुजाना।
पालहिं तिनहिं पुत्र अनुमाना॥
षष्ठम अंस प्रजा पर लेई।
अपर वस्तु पर लोभ न देई॥
धर्म सहित पालहि इहि रीती।
अति प्रवीन जानहि नृप नीती॥

येहि विधि विपुल काल चलि गयेऊ।
भोग-बिलास करत नित गयेऊ॥
येक समय निर्जन गृह माहीं।
बोले निसि में निज तिय पाहीं॥

दोहा

प्रिया, पुत्र समरथ भयेउ, सब विधि नृपता योग।
पुनि हम तुम्ह बहु भांति करि, देखेउ करि जग भोग॥१०॥

चौपाई

पुनि सब विधि पूरन परिवारू।
विगत त्रास, नहिं कवनेउ भारू॥
नाग सैल सम, बाजि सुहाये।
रथ समूह राजें मनभाये॥
विस्नु प्रसाद प्रिया सुनु आजू।
सब प्रकार परिपूरन काजू॥
अति लालसा एक मन माहीं।
परिहरि सकल तीर्थ हित जाहीं॥
जन्म जरादिक नासै जाते।
श्रीपति करै कृपा सुनु ताते॥
भयेउ वृद्ध अब्र प्रिया प्रवीना।
इन्द्री सकल भई बल हीना॥
अवसि तीर्थ करिहौं इहि काला।
जो श्रीपति प्रभु होइ दयाला॥
जो जग में नित उदरहि भरहीं।
श्री श्रीपति सेवा नहिं करहीं॥

दोहा

ते गर्दभ सम तूल, कहैं बेद अस नीति।
ताते सुंदर बिष्नु-हित, करिहौं तीर्थ सप्रीति॥११॥

चौपाई

येहि विधि मन मैं मंत्र दृढावा।
सुमिरि हरिहिं उर मैं हरषावा॥
पुनि नृप सयन कीन्ह, रघुराजू।
तहाँ विप्र देखा तप साजू॥
त्यागि नींद पुनि उठे प्रभाता।
संध्यादिक करि हरषित गाता॥
बहुरि सभा महं बैठेउ जाई।
सचिव महाजन जुत सुखदाई॥
तेहि अवसर भू सुर सोइ आवा।
जेहि सपने मै दरस देखावा॥
जटा मुकुट वलकल कोपीना।
दड पानि तापस तन छोना॥
अति पुनोत तन तेज विराजै।
विपुल तीर्थ सेवी गुन भ्राजै॥
आवत देखेउ सिव महिपाला।
करि प्रनाम जुत प्रम विसाला॥

दोहा

विधिवत द अर्घादि पुनि, पूजन करि तेहि काल।
कुसल पूछि आनद जुत, बोले बचन रसाल॥१२॥

चौपाई

सुनहु स्वामि तुव दरसन पाई।
पावन भयो कुटुम समुदाई॥
महा भागवत तुम्ह मैं मूढ़ा।
आयेउ कृपा करन प्रभु गूढ़ा॥
सब प्रकार सर्वज्ञ गुसाई।
रहहु ध्यान मैं मगन सदाई॥

सकल तीर्थ तुम्ह विधिवत कीन्हे।
पृथक भेद पुनि मन महं चीन्हे॥
ताते नाथ विप्र वर स्वामी।
मोहि जानि आपन अनुगामी॥
कहौ बुझाइ सकल मोहि पाहीं।
जाते जन्म मरण दुख जाहीं॥
कवन देव तीरथ अस नाथा।
जेहि विधि सुनी होइ तुम गाथा॥
सो बिस्तार सहित येहि काला।
बरनहु प्रभु करि दया बिसाला॥

दोहा

बोलेउ विप्र प्रसन्न ह्वै, सुनहु भूप - मणि तात।
जेहि विधि पूछी प्रस्न तुम, सो सब बरणहुं तात॥१३॥

चौपाई

गर्भबास नासन भगवाना।
सीतापति बिनु अपर न आना॥
उन्ह बिनु सेवन जोग न कोऊ।
दूसरि प्रस्न कहौ सुनु सोऊ॥
अब नृप पूज्यमान भगवाना।
पुरुषोत्तम बिनु अपर न आना॥
मैहुं अगनित तीरथ देखे।
पाप दहन सुखकरन विसेखे॥
तिनकौ बरनन करहु बनाई।
सुनहु भूप मन मैं हरषाई॥
देखी अवधपुरी सुखदाई।
संतत बसैं जहाँ रघुराई॥

पुनि सरजू तापी हरिद्वारा।
पाप-तूल कह प्रगट अंगारा ।।
रेवा सागर संगम देखा।
पुनि अवन्तिका पुरी विसेखा ।।

दोहा

अति पुनीत कांचोपुरी, विमल आदि नरेश।
हाटकाख्य गोकरण मै, विधिवत कीन्ह प्रवेस ।।१४।।

चौपाई

ये सब तीरथ पाप विनासी।
अपर बखानो पुन्य प्रकासो ।।
मलिक नाम गिरिवर मैं देखा।
मोक्ष-देन अघ-हरन विसेखा ।।
निरखी द्वारावति सुखदाई।
जाको देव दनुज सिर नाई ।।
जहां गोमती बहै सुहाई।
ब्रह्म वारि जुत स्त्रुति जेहि गाई ।।
कवनेउ जीव देह तह त्यागा।
येक वर्ष मैं अस्थि विभागा ।।
होहि चक्र सुख संसय नाहीं।
पुनि पाषान चक्रमय ताहीं ।।
सकल मनुज चक्रादिक धारी।
त्रिजग कीट खग सहित निहारी ।।
बसे तहां श्रीपति भगवाना।
निरखी सो मै भूप सूजाना ।।

दोहा

पुनि कुरुछेत्र के तीर्थ सब, देखे मैं निज नैन।
नासहि हत्या सकल ते, महा मोह के ऐन ।।१५।।

चौपाई

निरखो बारानसी बनाई।
विस्वनाथ जह् बसै सदाई॥
कवनौ जीव तजै तहं देहा।
कर्म भोग तजि सहित सनेहा॥
अवसि बसै कैलासहिं सोई।
मत्र प्रसाद जान सब कोई॥
मणिकणिका तीरथ तहं भ्राजै।
उतर बहनि सुरसरि राजै॥
मुंड-माल अहि-भूषण साजे।
नाग-छाल जुत सिव तहं भ्राजे॥
धर्मराज तहं दंड न देई।
भरव सकल न्याय करि लेई॥
अस कासी सुंदर सुखदाई।
निरखो मैं सब भाँति बनाई॥
अवर अनेक तीर्थ मैं देखे।
दहन पाप, सुभकरन विसेषे॥

सोरठा

सुनहु भूप मनु लाइ अचिरिज एक महा लख्यौ।
नीलाचल सुखदाइ जगन्नाथ राजहिं जहाँ॥१६॥

इति श्री पद्म पुराणे, पाताल षंडे, शेषवात्सायन संवादे
ब्रह्मण समागमनोनाम सप्तदशोऽध्याय:॥१७॥

ब्राह्मणोपदेश

दोहा

नील चरण गिरि राज पर, भयो चरित सुनु सोइ।
तहाँ जात ही प्रेम जुत, हरि पद प्रापति होइ॥

चौपाई

येक बार मैं तिहि थल गयेऊ।
गंगासागर मज्जत भयेऊ॥
तहां सैल पर भील निहारे।
चारि बाहु जुत सुंदर भारे॥
धनुष बान धारे कर माहीं।
कंद मूल फल भच्छत जाहीं॥
उनहि देखि मन ससय भयऊ।
यह सरूप कह ते निर्भयऊ॥
चारि भुजा चक्रादिक धारे।
वन-माला उर माहिं विहारे॥
अस सरूप इन केहि विधि पावा।
संसय यह मोरे मन छावा॥
तब मैं नृप बोल्यौ तिहि काला।
केहि विधि पायेउ रूप रसाला॥

दोहा

कहहु नाम पुनि बन तुम्ह, कहाँ बसहु सुख पाइ।
भाव सकल बरनन करो, जेहि विधि संसय जाइ॥१॥

चौपाई

तब नृप-भील बिहसि मोहि पाहीं।
बोले, द्विज कछु जानत नाहीं।।
प्रगट प्रसाद महत संसारा।
सो नहिं जानौ, अचिरिज भारा।।
सुनि अस तिन्ह के बचन भुवाला।
पुनि मैं बोलत भा तेहि काला।।
कहाँ प्रसाद कहाँ ते होई।
सकल प्रसंग सुनावहु सोई।।
बोले भील तबै हरषाई।
सुनहु विप्र हम कहैं बुझाई।।
प्रथमहिं मम सुत सिसुन समेता।
बिचरहि इहिं गिरि जो मन लेता।।
येक वार बिहरत फल खाता।
गयेउ सैल ऊपर हरषाता।।
तहाँ देव मंदिर येक देखा।
हेम हरित-मनि रचित बिसेखा।।

दोहा

ता थल सुर गण देखि करि, विस्मित भये बनाइ।
पुनि सबेर सोचन लगे, सुनहु विप्र हरषाइ।।२।।

चौपाई

आजु कहा हम अचरज देखं।
भवन कौन को इहि थल पेखे।।
पुनि मंदिर लखि अस अनुमाना।
काहू सुरकर यह अस्थाना।।
महाभाग ते अस उर धारी।
तब मंदिर तट गयेउ सुखारी।।

सकल देव पति श्री भगवाना।
जगन्नाथ अस नाम सुजाना॥
जिनको देव दनुज सिरु नावें।
वेद पुरान सकल गुन गावें॥
तिन्हको सिसु ते देखन लागे।
तब ही प्रेम बिबस अनुरागे॥
दिव्य कनक मनि क्रीट सुहावा।
निरख्यौ सीस महा छवि छावा॥
पुनि करुना भूषन उर हारा।
अंगदादि किंकनी उदारा॥

दोहा

नव प्रसून जुत तुलसिका, चढ़ि चरन महं देखि।
तेहि सुगंध बस मत्त ह्वै, गुंजहि भ्रमर विसेखि॥३॥

चौपाई

संख चक्र पुनि गदा सुहाई।
कंज सहित कर अति छबि पाई॥
एहि प्रकार राजत भगवाना।
नारदादि सेवा करि नाना॥
कोउ गावहि, कोउ नृत्य कराहीं।
कोउ सप्रेम जुत बिहसत जाहीं॥
कोउ प्रनवहि, कोउ अस्तुति करहीं।
कोउ छवि निरखि हृदय महं धरहीं॥
येहि विधि ब्रह्मादिक हरषाई।
पूजन कर दै धूप बनाई॥
पुनि आरती कीन्ह तेहि काला॥
बिनय दीन ह्वै करी विसाला।

नाना भोग लगाइ बहोरी।
पुनि श्री कहं अर्पेउ कर जोरी ॥
एहि विधि करि सेवन स्रुति रीती।
लीन्ह प्रसाद बहुरि जुत प्रीती ॥

सोरठा

सुर समूह हरषाइ, पद वदन करि प्रम जुत।
पुनि लखि कृपा बनाइ, निजु-निजु लोकन कौ गयेउ ॥४॥

चौपाई

सुनहु विप्र ते सुत बड़ भागी।
प्रविस्यौ मंदिर कौतुक लागी ॥
तहाँ प्रसाद सीथ महि पावा।
अज सिवादि दुर्लभ स्रुति गावा ॥
तहाॅं नरन की केतिक बाता।
अति पुनीत जग मै विख्याता ॥
करि सम भाग असन तिन्ह लीन्हा।
पुनि पुरुषोत्तम दरसन कीन्हा ॥
भए चतुर भुज ते ततकाला।
संख चक्र जुत रूप रसाला ॥
सुभग पानि विच गदा अनूपा।
चारु कंज जुत चारु सरूपा ॥
धारन्ह कीन्ह सबन रघुराई।
प्रभु प्रसाद महिमा स्रुति गाई ॥
सुनहु विप्र मम बालक सोई।
आवा भवन तासु वपु जोई ॥

दोहा

तब मैं विस्मृत ह्वै हृदय, पूछी सुत सन बात।
कहौ बेगि अपनी कथा, केहि विधि पलटेउ गात ॥५॥

चौपाई

तब सो सुत बोल्यौ मोहिं पाहीं।
कह्यौ कथा जिमि संसय जाहीं ।।
नील सिखर ऊपर मैं गयेऊ।
तहाँ देव-पति दरसन भयेऊ ।।
तिन्ह कर हम प्रसाद मोहि पावा।
सो सब सिसु मिलि कं तहँ खावा ।।
तबही अस स्वरूप ह्वै गयेऊ।
सो सुनि द्विज मोहिं अचिरिज भयेऊ ।।
पुनि मै गयेउ जहां भगवाना।
श्रीपति जगन्नाथ अस्थाना ।।
दरसन करि प्रसाद तहँ पावा।
भयेउ चतुर्भुज रूप सुहावा ।।
देवन कौ दुर्लभ बपु जोई।
हमकौ मिल्यौ विप्र सुनु सोई ।।
अब तुम्ह जाहु तहां हरषाई।
श्रीपति दरस करहु मनु लाई ।।

दोहा

लेतहि तहां प्रसाद द्विज, रूप चतुर्भुज तोर।
होइ अवसि संसय नहीं, सत्य बचन यह मोर ।।

सोरठा

सुनहु विप्रवर बात, जेहि विधि पूछी प्रस्न तुम।
सो मैं हरषित गात, कही सकल बिस्तार जुत ।।६।।

इति श्री पद्म पुराणे पाताल षंडे शेष वात्सायन संवादे
ब्रह्मणोपदेशोनाम अष्टादशोऽध्यायः ।।१८।।

रत्नग्रीव का तीर्थ-पावन

दोहा

येहि प्रकार कहि भील नृप, बहुरि गये सिरु नाइ।
तब मैं तन पावन कियां, गंगासागर न्हाइ॥

चौपाई

पुनि मैं गिरि ऊपर चढ़ि गयेऊ।
सोइ मदिर निरखत तहँ भयेऊ॥
नाना मनि-कंचन–मै भ्राजै।
अति विचित्र सोभा युत राजै॥
श्रीपति देवेस्वर भगवाना।
पुरुषोत्तम जेहि स्तुति करि गाना॥
तिन्ह कर दरस तहाँ मैं कीन्हा।
वंदि चरन प्रसाद पुनि लीन्हा॥
तब ही रूप चतुर्भुज भयेऊ।
प्रभु प्रसाद भवरुज नसि गयेऊ॥
संख चक्र जुत सुकर सुहाये।
भये भूप मन मै लखि भाये॥
नीलाचल गिरि राज अनूपा।
चलि तहँ होहु कृतारथ भूपा॥
गर्भबास दुख तहाँ तुम्हारा।
अवसि नासि है बचन हमारा॥

दोहा

बिप्र बचन इहि भाँति सुनि, भूप हृदय हरषाइ।
प्रेम सहित पद वंदि पुनि, बोले गिरा सुहाइ॥१॥

चौपाई

साधु-साधु तुम विप्र कृपाला।
मो पर कीन्ही कृपा विसाला॥
जगन्नाथ महिमा तुम गाई।
सुनत पाप मम नसे बनाई॥
अब मुनिवर मोहि कहौ बुझाई।
आमनाय विधि सोधि बनाई॥
कहौ तीर्थ विधि सकल कृपाला।
जिमि पुरुषोत्तम मिलहिं दयाला॥
बोल्यौ विप्र तबै हरषाई।
सुनौ तीर्थ विधि भूप बनाई॥
जाते जगन्नाथ सुख-धामा।
मिलिहि अवस्य सहित निज वामा॥
बालक जुवा वृद्ध नर कोई।
जो श्रीपति सरनागति होई॥
इस्त्री आदि वासना जीती।
जगन्नाथ पद भजहिं सप्रीती॥

दोहा

अर्चन कीर्तन वंदना, स्रवन आदि महिपाल।
करहिं भक्ति भगवंत की, जाही विधि सब काल॥२॥

चौपाई

एहि प्रकार संतत जे रहहीं।
ते भय छूटि परम गति लहहीं॥
सेवक सो श्रीपति मन भावा।
होइ अवस्य वेद अस गावा॥
काम क्रोध मद लोभ सहेता।
दंभ विवस भय दोष समेता॥

कसेहु भजहु जीव भगवाना।
लहे परम सुख तजि दुख नाना॥
अस कृपाल श्रीपति सुख रासी।
गुनागार स्त्रुति-धर्म-प्रकासी॥
तिन्हके जन अवनीतल माहीं।
बिचरत फिरहि मुदित जहँ ताहीं॥
महा सुखद तिन्हकर सतसंगा।
सत्वर करनहार भव भंगा॥
विगत राग लोभादि विहीना।
श्रीपति-पद-रति जिमि जल मीना॥

दोहा

ते बिचरहि तीर्थन्ह विषे, बिना हेत सब काल।
जीवन को गति देन हित, केवल सुनु महिपाल॥३॥

चौपाई

ऐसे हरिजन कृपानिधाना।
पाप-तिमिर कहं भानु-समाना॥
तिन्ह कर दरसन तीर्थन माहीं।
होइ अवस्य मुदित जे जाहीं॥
भव-भय तें अति भीत बनाई।
जाहि तीर्थ ते मन हरषाई॥
अब तिनकी बिधि सुनहु भुवाला।
बेद बिहित पुनि परम रसाला॥
प्रथम बिराग हृदय महं धारै।
नस्वर जानि कुटुम्ब विसारै॥
पुनि श्रीपति सुमिरन उर करई।
दृढ़ बिस्वास मानि मन धरई॥

कोष मात्र पुनि भवन विहाई।
रघुवर-नाम जपत तहं जाई॥
विधिवत तहाँ छौर करवाई।
मज्जन करै बहुरि हरषाई॥

दोहा

मनुजन के सब पाप हय, छिपहिं केस महं आइ।
ताते प्रथमहिं छौर करि, ज़ात्रा - हित हरषाइ॥४॥

चौपाई

पुनि बिनु ग्रन्थि दंड कर धारै।
कपट लोभ उर ते संहारै॥
चारु कमडल अरु मृगछाला।
धारै तापस रूप रसाला॥
कंद मूल फल करहिं अहारा।
गावहि श्रीपति चरित उदारा॥
विधि सो तीरथ करै भुवाला।
बेगि मिलै फल परम रसाला॥
ताते निरखि बेद की रीती।
करिये तीरथ गमन सप्रीती॥
मन बच कर्म धारि उर दृढ़ताई।
गमन समय हरि पद मन लाई॥
पुनि श्री कृस्न-कृस्न भगवाना।
भक्त बछल हे कृपा निधाना॥
हे गोपाल प्रनत हितकारी।
हरे हरे हे विष्णु मुरारी॥

दोहा

रक्षा करहु कृपाल अब, मैं सरनागत तोरि।
एहि विधि रसना अपर नृप, रटहि बहोरि-बहोरि॥५॥

चौपाई

गमन करै पुनि मन हरषाई।
पाद-त्रान बिना कुरुराई॥
एहि विधि गमन करै जो कोई।
तौ पूरन फल प्रापति होई॥
पाद-त्रान सहित जे जाहीं।
चौथो अंस लहै ते ताहीं॥
जो चढ़ि जान जाहि नर कोई।
तौ आधौ फल पावै सोई॥
गो-सुत-जान जाहि सठ जेई।
गो-बध-दोष लहै जग तेई॥
पुनि व्यवहार हेतु जे जाहो।
तीसर भाग लहैं ते ताहीं॥
सेवक होइ करि तीरथ जोई।
अष्टम भाग लहै नृप सोई॥
इच्छा - हित तीरथ जे करहीं।
लहै अर्ध फल, पुनि अघ दहहीं॥

दोहा

ताते विधिवत कीजिये, तीर्थ गमन हरषाइ।
श्रीनिवास जाते लहै, सकल त्रास नसि जाइ॥६॥

चौपाई

पुनि तहं साधु समागम होई।
तिन्हकौ पूजहिं बंदहिं जोई॥
तिन्ह द्वारा हरि भक्ति अनूपा।
लहे अछत तन सुनु तहं भूपा॥
एहि विधि मैं संछेप बखानी।
सार भाग सब कर जिय जानी॥

अब उर मैं धरि भूप सुजाना।
पुरुषोत्तम हित करहु पयाना।।
लखि समीप तो कहं भगवाना।
देहैं भक्ति सहित विज्ञाना।।
पुनि भव ते ह्वइहौ तुम पारा।
सत्य बचन यह भूप हमारा।।
जे सुनिहै यह विधि मनु लाई।
सकल पाप ते छुटहिं बनाई।।
रिपुसूदन नृप सुनि मुनि बानी।
वंदे चरन महा सुख मानी।।

दोहा

श्री पुरुषोत्तम दरस लगि, उर आनंद अधिकान।
विह्वल भयेउ बहोरि नृप, निज पर कछू न जान।।७।।

चौपाई

पुनि होइ सावधान महिपाला।
मत्री सन बोले तेहि काला।।
सुनहु सचिव वर वसन रसाला।
चलहु तीर्थ हित महि येहि काला।।
तुम्ह मम आयसु परम पुनीता।
पुरवासिन्ह सन कहौ सप्रीता।।
श्री पुरुषोत्तम दरसन हेतू।
चलौ सकल निज कुटुम समेतू।।
जे मम आयसु पालन हारे।
वृद्ध जुवा अथवा जे बारे।।
ते मम संग चलहु हरषाई।
पुरुषोत्तम हित साज सजाई।।
पुनि जे नर मम बचन विहाई।
रहिहैं घरन्ह विषै मनु लाई।।

तिन्ह को नाना विधि जम दूता।
देहैं त्रास कराल बहूता ॥

दोहा

कहाँ पुत्र, धन धाम कहं, कहाँ बंधु, कहं बाल।
जो पुरुषोत्तम सरन में, प्रगटें संसय जाल ॥८॥

चौपाई

जिनके सुत नाती जग माहीं।
श्रीपति सरन होंहि सठ नाहीं ॥
तिन्हके जन्म वृथा संसारा।
जिमि खर सूकर स्वान अपारा ॥
जिन्ह श्रीपति कर नाम उदारा।
सुमिरन करि-करि पाप प्रजारा ॥
तिन्हको वंदन करि हरषाई।
बहुरि महीप रहै अरुगाई ॥
श्रीपति - गुण - संजुत सुनि बानी।
हरषेउ सचिव महा मति ज्ञानी ॥
तब नर एक बोलि समुझावा।
प्रणव - सहित गज ताहि चढ़ावा ॥
पठवा नगर माहि तेहि काला।
सचिव आव पुनि जहं महिपाला ॥
अब तेहि नर कै कथा सुहाई।
महाराज सुनिये मन लाई ॥

दोहा

बार - बार हनि प्रणव सो, बोला बचन पुकारि।
नीलाचल कहं चलइ नृप, सुनहु नगर सब झारि ॥९॥

चौपाई

तुम्हहूँ सकल कुटुम - जुत भाई।
चलौ भूप सँग मन हरषाई॥
श्रीपति पुरुषोत्तम सुख रासी।
रहैं सदा तेहि सैल प्रकासी॥
तिन्ह कर दरस जबहिं तुम करिहौ।
गो-पद इव भव - सागर तरिहौ॥
संख चक्र भुज चारि अनूपा।
होइहौ हरिजन सदस स्वरूपा।
एहि प्रकार सब नगर मझारी।
ठोंकि प्रणव तेहि कहेउ पुकारी॥
पुनि महीप पद वदेउ आई।
लखि तेहि सचिव महा हरषाई॥
तेहि के बचन सुनत पुरवासी।
भये महा आनन्द निवासी॥
तब लालसा सबन्ह उरधारी।
श्री पुरुषोत्तम दरस बिचारी॥

छंद

दरसन बिचारि सुबेष धरि-धरि विप्र आनद में सने।
सिष्यन समेत चले अगार असीम नृप प्रति घने॥
छत्री घने वर वीर निकसे, बैस्य अगनित को गनै।
पुनि सूद्र सेवाकरन हित, निकसे विपुल अहिपति भनै॥
बहु सूत मागध वंदिजन, नृप वचन गुनि हरषित चले।
पुनि वेद पौरानिक सभा, चातुर विपुल स्वादी भले॥
नाना सुआख जतरी नट, चटकी ज्वारी जिते।
तेलो तमोली रजक सूची, चित्रकारक पुर तिते॥

दोहा

बनिक बजाज सराफ पुनि, सिल्प छौर कर जोइ।
चर्मकादि पुर लोग सब, चले हरषि उर सोइ॥

सोरठा

प्रात क्रिया करि भूप, पुनि बंदेउ तेहि बिप्र पद।
चलि सचु बहुरि अनूप, गयेउ हरषि बाहेर नगर॥१०॥

चौपाई

पुर जन सहित सोह नृप कैसे।
उडगण सहित सरद ससि जैसे॥
कोस मात्र तब जाइ नृपाला।
बिधिवत छौर कीन्हि तेहि काला॥
दंड कमंडल अरु मृगछाला।
धारण करि युत प्रेम बिसाला॥
श्रीपति ध्यान मगन पुनि भयेऊ।
काम क्रोध आदिक छुटि गयेऊ॥
मगल महा भये तह भारी।
आनंद मगन सकल नर-नारी॥
विपुल निसान बजे तेहि काला।
भेरी प्रणव मृदग रसाला॥
बीणा संख झांझ सहनाई।
ताल दुंदुभी पुलक बजाई॥
पुनि मंजीर बजै सुखदाई।
घोर सकल दिसि निदिसिन छाई॥

दोहा

जयति सकल सुर ईस प्रभु, पुरुषोत्तम भगवान।
आरत-हर, करूणायतन, सरणागत सुखदान॥

सोरठा

दीजै दरस कृपाल, बार-बार अस भाषि जन।
मधुसूदन तेहि काल, कीन्हौ सबन पयान तब ॥११॥

इति श्री पद्म पुराणे पाताल षंडे शेष वात्सायन संवादे
रत्नग्रीवस्य तीर्थं पावनो नाम
एकोनविंशोऽध्यायः ॥१६॥

गंडकी-माहात्म्य

दोहा

महाराज रिपुदहन अब, सुनहु कथा मन लाइ।
रत्नग्रीव नृप प्रजा जुत, चलेउ हृदय हरषाइ ॥

चौपाई

महाभाग पुरजन मुनिराई।
हरि गुन गावत जात बनाई ॥
जय माधव जय दीनदयाला।
प्रणतपाल जय परम कृपाला ॥
जय पुरुषोत्तम कृपानिधाना।
जयति-जयति श्रीपति भगवाना ॥
करहिं भजन पुरजन येहि रीती।
सुनत जाहिं नृप पंथ सप्रीती ॥
नाना तीर्थं मिलहिं मग माहीं।
प्रेम सहित भूपति तहं जाहीं ॥
दरसन परसन करहिं बनाई।
कहै विप्र तेहि कथा बुझाई ॥

अति विचित्र श्रीपति गुन-गाथा।
गावत जात पंथ सब साथा॥
भूप महा मति विषम विरागा।
स्रवण करत उर जुत-अनुरागा॥

दोहा

कृपिन अंध्र पुनि दीन जे, पंगु गुंग युत रोग।
तिन्हहि निबाहत जात नृप, करवावत वर भोग॥१॥

चौपाई

एहि प्रकार बहु तीर्थ भुवाला।
करत जाहिं जुत प्रजा विसाला॥
चले जात नृप नदी सुहावनि।
निरखी अति पुनीत जग पावनि॥
सकल सिला चक्रन्ह जुत सोहैं।
श्रीपति-रूप लखत मन मोहैं॥
ऋषि गन विमल करन सुखदाई।
वेद सुमृति संतत गुन गाई॥
मुनि गन विपुल बास तहं करहीं।
सरसादिक पक्षी मनु हरहीं॥
अस पुनीत सर देखि नृपाला।
मुनि वर सन बोलेउ तेहि काला॥
तीर्थ महातम तुम सब सोधा।
मुनिनायक कीजै मम बोधा॥
कवन नदी यह मुनिन्ह समेता।
अति पुनीत मोहि आनंद देता॥

दोहा

सुनि अस नृप के बचन वर, विप्र हृदय हरषाइ।
सरित महातम सुखद अति, करन लगे रघुराइ॥२॥

चौपाई

नाम गंडकी सरित पुनीता।
देव दनुज एहि भजहिं सप्रीता॥
मानस पाप दरस ते जाहीं।
परसत सकल कलुष रह नाहीं॥
नाम लेत पावक, अघ जेते।
सतत नास होइं नृप तेते॥
पान करत जल पाप अपारा।
कोटि जन्म कर जुरा भंडारा॥
नास होइ छिन महँ महिपाला।
सत्य-सत्य यह बचन रसाला॥
प्रथमहिं चतुरानन जग देखा।
पाप कर्म मैं निपुन विसेखा॥
करि विचार मन ठीक दृढ़ाई।
जग पावन हित उर हरषाई॥
निज कपोल ते प्रगटत भयेऊ।
नाम गडकी मन गनि दयेऊ॥

दोहा

सो यह सरित पुनीत नृप, नासन पाप पहार।
कंसेउ खल मजन करं, पुनि न होइ ससार॥३॥

चौपाई

सकल सिला चक्रांकित राज।
भगवत रूप स्वयं भुव भ्राजै॥
जे पूजहिं इन्ह कहं मनु लाई।
तिन्ह कर गरभ - वास नसि जाई॥
पुनि जे बुद्धिमान जग माहीं।
सदा सुधर्महि रत मद नाहीं॥

दंभ लोभ ते रहहि विहीना।
पर-धन पर-तिय विमुख प्रवीना॥
ते जन जतन समेत भुवाला।
पूजहिं सालिग्राम कृपाला॥
द्वारावती चक्रजुत जोई।
प्रभु स्वरूप प्रमुदित मन सोई॥
तिन्ह के कोटि जन्म के पापा।
नासै सालिग्राम-प्रतापा॥
एक निमिष मैं संसय नाही।
कही वेद बानी तो पाही॥

दोहा

पुनि दिन-दिन प्रति सहस अघ, करे जाव जग जोइ।
चरनामृत के पियत ही, महा सुधा सोइ होइ॥४॥

चौपाई

सुनहु भूप अब नीति सुहाई।
वेद सुमृति इतिहासन गाई॥
पूजै नारि न सालिग्रामा।
पति-विहीन अथवा सुभ-वामा॥
उभै लोक सुख चाहै जोई।
सपनेऊ पूजन करै न सोई॥
मोह बिबस जौ परसै बाला।
सकल पुन्य नासै ततकाला॥
पुनि बहु काल नरक मै बासा।
पावै मुनि अस बचन प्रकासा॥
तिय-कर सुमन कुलिस अनुमाना।
लागहिं हरि तनु भूप सुजाना॥
महा कलुष भागिनि पुनि होई।
सपनेउ सुगति लहै नहिं सोई॥

चंदन कालकूट सम जानहु।
कुमकुम विप्रहार इव मानहु॥

दोहा

भूप हलाहल ते परे, नैवेद्यहि पहिचानि।
ताते श्रुति महँ तियन को, पूजन नहीं बखानि॥५॥

चौपाई

जो पं सालिग्राम - स्वरूपा।
परस न करहिं नारि जग भूपा॥
तौ अवस्य लहि नर्क निवासा।
जब लगि चौदह इन्द्र प्रकासा॥
ताते सब प्रकार जग माहीं।
प्रभु के परस जोग तिय नाहीं॥
अयुत ब्रह्म - हत्या - जुत जेई।
सतत पाप निपुन पुनि तेई॥
पान करत चरनामृत भूपा।
लहैं परम पद परम अनूपा॥
तुलसी ·चदन सख सुहावा।
द्वारावती चक्र छवि छावा॥
घंटा वेद वाद्य समुदाई।
सालिग्राम सिला सुखदाई॥
अरु तामें कर - पात्र अनूपा।
ये नव वस्तु होइ जब भूपा॥

दोहा

विधिवत चरनामृत तबै, होइ महा सुख मूल।
पाप तूल कहं अनल इव, हरन सकल भव सूल॥६॥

चौपाई

सुनि कोविद इहि भाँति बखाना।
हरि - चरनामृत करे प्रमाना॥

पुन्य सकल तीरथ कर जोई।
चरनामृत - सीकर महं होई॥
सालिग्राम केरि सेवकाई।
जेहि थल विषं होइ रघुराई॥
तुलसी सुमन धूप समुदाई।
चंदनादि नैवेद्य सुहाई॥
जोजन भरि तहं अवनि पुनीता।
कोटिन तीर्थ बसैं युत प्रीता॥
सम सरूप पूजिय सब काला।
उभय बिहाइ सुनहु महिपाला॥
श्री द्वारावति चक्र मिलाई।
जे पूजहिं प्रभु कहं मन लाई॥
गंगासागर सम थल सोई।
दरस परस त परम गति होई॥

दोहा

सुभग सचक्रन चिन्ह - युत, लखि पूजे हरषाइ।
तिनकी सब मन-कामना, पूरन होहि अघाइ॥७॥

चौपाई

अतकाल लहि मुक्ति सुहाई।
वेद पुरानन्ह मैं जो गाई॥
कैसेउ मंह जीव जग होई।
अंत समय लखि व्याकुल सोई॥
सालिग्राम हृदय पर राखै।
पुनि हरि - मंत्र करन मैं भाखै॥
तौ ब्रह्मांड पंथ बहु जीवा।
लहै परम पद सब सुख सोवा॥
सालिग्राम प्रताप न आना।
सत्य बचन यह भूप सुजाना॥

प्रथमहिं श्रीपति कृपा निधाना।
अंबरीष सन कीन्ह बखाना॥
सालिग्राम बिप्र संन्यासी।
मम सरूप ये अवनि प्रकासी॥
जो इन्ह कर करिहैं अपमाना।
तिन्ह की गति मैं करहुं बखाना॥

दोहा

घोर नर्क महं बसहि ते, जब लगि भानु उदोत।
नाना दुख गन भोगि खल, पुनि पुरीष कृमि होत॥८॥

चौपाई

अपर नीत सुनु भूप सुजाना।
कहै वेद इतिहास पुराना॥
सालिग्राम केरि सेवकाई।
करहिं विप्र विधिवत मनु लाई॥
तिन्हको बरजै ते मतिमंदा।
महा दोष - पापी दुख - कंदा॥
तिनके मातु - पिता - सुत - दारा।
बंधादिक जितना परिवारा॥
करहिं बेगि ही नरक निवासा।
जब लगि रवि ससि केर प्रकासा॥
जे विप्रन्ह सन कहैं भुवाला।
पूजहु सालिग्राम कृपाला॥
ते गोपद - इव तरि संसारा।
बसैं अवसि वैकुंठ उदारा॥
अब महीप इतिहास पुराना।
बरनन कहौं, सुनौ धरि काना॥

दोहा

काम-क्रोध-हत, सांत मन, मुनिवर एक कृपाल।
कीकट देस अधर्ममय, गये तहाँ यक काल ॥९॥

चौपाई

सबर नाम तहं बधिक प्रचंडा।
संतत धरे बान कोदंडा ॥
बधे अनेक जीव नित सोई।
सपनेउ विषं दया नहिं जोई ॥
जे जन तीर्थ करन हित जाहीं।
बसन हरहि तिनको बधि ताहीं ॥
येहि विधि विपुल जीव संहारे।
पर - दारा पर - धन परिहारे ॥
काम क्रोध लोभादि बिकारा।
पुनि बहु पापन कर भडारा ॥
घोर बिपिन बिच बिहरहिं सोई।
बधहि अनेक जीव निसि होई ॥
बान हलाहल केर कराला।
धरे चाप महि फिरहि भुवाला ॥
महा असंक मंद अभिमानी।
पाप परायन ता कहि प्रानी ॥

दोहा

तेहि अवसर जमराज भट, आयेहु सुनहु भुवाल।
महा भयानक कर धरे, मुग्दर फाँस कराल ॥१०॥

चौपाई

अरुन केस, नख दीरघ भारी।
महा कराल दसन भयकारी ॥

देखि सबर कहं कोपि अपारा।
बहुरि परस्पर बचन उचारा॥
प्रथमहि एक दूत उठि बोला।
जीव अनेक बधत इहि टोला॥
ताते मैं अब ही इहि प्राना।
लैहौ काढ़ि त्रास दै नाना॥
बोला दूसर दूत बहोरी।
काटहु जीह अबहि बरजोरी॥
पुनि तीसर करि कोप कराला।
बोला बचन सुनहु महिपाला॥
नाना ताड़न करि येहि काला।
काढ़हु दृग हति सूल कराला॥
येहि खल सपनेहु कीन्ह न दाया।
हरत रहेउ पर-धन जुत जाया॥

दोहा

बोल्यौ चौथो दूत पुनि, महा कोप उरधारि।
काटहु इहि के पानि जुग, अब ही खड्ग प्रहारि॥११॥

चौपाई

अपर दूत बोला महिपाला।
कण निपातहुँ मैं इहि काला॥
येहि विधि कहहिं परस्पर बाता।
महाक्रोध ब्यापेउ सब गाता॥
तेहि एकछन दूत होइ व्याला।
डस्यो चरन तहं सुनहु नृपाला॥
परो धरनि महं व्याकुल गाता।
कंठ सूख, मुख आव न बाता॥
तेहि अवसर जम दूतन आई।
बांध्यौ पासन सो हरषाई॥

पुनि मुगदर कुठार बिधि नाना।
ताड़हिं करि जमपति की आना॥
बोले बचन बहुरि भयकारी।
रे खल तैं स्रुति रोति बिसारी॥
सो फल देहिं तोहि ततकाला।
डारहिं रौरव नरक कराला॥

दोहा

तुव आमिख खल काग गन, भच्छन करैं बनाइ।
हरि हरिजन पूजे नहीं, सोफल प्रगटेउ आइ॥१२॥

चौपाई

रे खल निजु परिवार विरोधी।
केवल तन-पोषक सठ क्रोधी॥
सतत पाप माहिं मनु लावा।
सुनु सठ तू हरि सरन न आवा॥
तातें बाँधि तोहि येहि काला।
नाना विधि दै त्रास कराला॥
पुनि जमराज बचन ते तोही!
कुंभीपाक डारि कुल-द्रोही॥
एहि प्रकार कहि करि जमदूता।
चलन लगे दैं त्रास बहूता॥
तेहि अवसर मुनिवर तहँ आए।
जासु चरित मैं प्रथम सुनाये॥
बीतराग कामादि बिहीना।
सुद्ध सत्वमय हरि-पद-लीना॥
धर्मराज-किंकर तिन्ह देखे।
अस्त्र-सस्त्र कर धरे बिसेखे॥

दोहा

महा भयानक रूप सब, बोलहिं बचन कराल।
चलहि वेगि लै दुष्ट कहं, ताड़न करहिं विसाल ॥१३॥

चौपाई

येहि विधि देखि दुखित वन बाधा।
प्रगटी उर मह दया अगाधा॥
पुनि लागे मन करन बिचारा।
मम समीप यह दुखित अपारा॥
यम-दूतन तं मैं इहि काला।
अवसि छुटावहुं निपट विहाला॥
अस बिचारि मुनि परम कृपाला।
गयउ निकट पुनि सुनु महिपाला॥
तब तिन्ह सालिग्राम सरूपा।
लीन्हेउ सिर ते परम अनूपा॥
पुनि पादोदक करि ततकाला।
तुलसीदल युत प्रीति बिसाला॥
सबर बर्दन महं डारत भयेऊ।
ऊर्द्ध पुंड माथे पर दयेऊ॥
श्री रघुनाथ मंत्र स्रुति - माहीं।
देत भयो प्रमुदित मन ताहीं॥

दोहा

श्री तुलसीय धराइ सिर, पुनि महीप तेहि काल।
श्रीपति सालिग्राम उर, धारे जानि कृपाल॥१४॥

चौपाई

जम - किकर नाना करि त्रासा।
तिन प्रति मुनिवर बचन प्रकासा॥
सालिग्राम परसि सब पापा।
नासै आसु, करहु किमि दापा॥

येहि विधि कहत बचन तिन्ह पाहीं।
तब लगि हरिगन आयेउ ताहीं॥
सुभग पीत अम्वर तन राजै।
संख चक्र आदिक कर भ्राजै॥
जम-दूतन सन बचन रिसाई।
बोलत भयेउ सुनहु रघुराई॥
रे खल हैं हरिजन केहि हेता।
बाँधि निडर होइ ताड़न देता॥
मोचहु आसु जाइ एहि काला।
नाहि त ताड़न करहि कराला॥
अस कहि लोह पास निखारी।
पुनि रिसाइ कै गिरा उचारी॥

दोहा

बाँधेउ हरिजन कवन अघ, केहि आयसु सिर धारि।
करहु अनीति न डरहु मन, कहहु सुबेगि सम्हारि॥१५॥

चौपाई

येहि विधि सुनि यम किंकर बानी।
बोलेउ बचन महा अभिमानी॥
धर्मराज आयसु अनुकूला।
आयेउँ लेन निरखि अघ-मूला॥
सपनेउ येहि खल कीन्ह न दाया।
बधेउ अनेक जीव करि माया॥
केवल अघमय जासु सरीरा।
महा मंद लायक बहु पीरा॥
विपुल तीर्थ यात्री मग माही।
बहु विधि लूटि संघारेउ ताही॥
सदा कीन्ह पर-तिय महं प्रीती।
सपनेउ विषै न चीन्ही नीती॥

सबही भांति निरखि अघमूला।
आये लेन समन-अनुकूला॥
तुम्ह केहि हेतु छुड़ावहु पाही।
पुनि निज नाम कहहु हम पाही॥

दोहा

अस सुनि बोले विष्नु गन, बचन महा सुखदाइ।
रे खल तुम अज्ञान अति, करहु अनीति बनाइ॥१६॥

चौपाई

श्रीहरि सालिग्राम उदारा।
महिमा विदित सकल संसारा॥
विप्र-बधादि-पाप-जुत जेई।
विस्व-द्रोह-रत संतत तेई॥
परसत सालिग्राम स्वरूपा।
पावन होइ गति लहहिं अनूपा॥
पुनि श्री राम मंत्र जुत काना।
पाप तूल कहं अनल समाना॥
श्री तुलसी माथे पर राजै।
सालिग्राम हृदय महं भ्राजै॥
उद्ध पुंड माथे पर सोहै।
अति पुनीत निरखत मन मोहै॥
पुनि पादोदक पाप-प्रहारी।
परेउ बदन महं सब सुखकारी॥
सब प्रकार पावन तन येहा।
तुम्ह केहि भाँति कीन्ह संदेहा॥

दोहा

दुर्लभ पापिन को सदा, स्वर्ग-लोक सुख-धाम।
अयुत वर्ष भरि भोग करि, पुनि सुख लहि परिनाम॥१७॥

चौपाई

कासी जनम भूमि-सुर-गेहा ।
तहं हरि-सरन करं जुत नेहा ॥
पुनि ब्रह्मादिक-दुर्लभ धामा ।
लहिहै यह तजि प्राकृत कामा ॥
तुम्ह सठ मालिग्राम-प्रभाऊ ।
विदित जगत जानौ नहिं काऊ ॥
जिनके दरस-परस को कीन्हे ।
पाप समूह निमिष मह छीने ॥
अस कहि विष्नु-दूत हरषाई ।
पुनि बैकुंठ गये रघुराई ॥
धर्मराज भट गयेउ बहोरी ।
बरनी निज पति सन कर जोरी ॥
इहां बधिक लखि त्रास-विहीना ।
जात भयेउ मुनि परम प्रवोना ॥
तेहि अवसर विमान सुनु भूपा ।
आवा सुर पुर ते सुख रूपा ॥

दोहा

अति अनूप अद्भुत महा, निरखत मन हरि लेहि ।
मणि कंचनमय जलज कै, जाल सहित छवि देहि ॥१८॥

चौपाई

तेहि पर चढ़ि वह बधिक भुवाला ।
गयेउ अमर पुर हरषि बिसाला ॥
नाना विधि तहं भोग विलासा ।
करत भयौ उर सहित हुलासा ॥
पुनि अवतरेउ संभु-पुर आई ।
पावन विप्र बंस मैं जाई ॥

कछुक काल बीते उर ज्ञाना।
प्रगटा सुनहु महीप सुजाना॥
तब श्रीपति सरनागत भयेऊ।
मंत्रराज कह विधिवत लहेऊ॥
पुनि कछु दिवस गये, तन त्यागो।
नित्य धाम कहं गा बड़ भागी॥
हरिजन सालिग्राम प्रभाऊ।
लही परम गति तजि दुख राऊ॥
सालिग्राम-कथा सुखदाई।
मति अनुरूप कही हम गाई॥

दोहा

जे यह सुनिहैं प्रेम जुत, ते दुख जाल विहाइ।
करि नाना विधि भोग जग, अंत परम पद पाइ॥१९॥

इति श्री पद्म पुराणे, पाताल षंडे शेष वात्सायन संवादे
गंडकी माहात्म्यं नाम विंसोऽध्याय: ॥२०॥

संन्यासि-दर्शन

दोहा

येहि विधि महिमा अतुल सुनि, सरि वर की रघुराइ।
रतनग्रीव निज आतमा, सुनी सनाथ बनाइ॥

चौपाई

पुनि सप्रेम होइ मज्जन कीन्हा।
विधिवत जल पितरन कहं दीन्हा॥

सालिग्राम-स्वरूप सुहाये।
लिये भूप चौबिस मन भाये॥
वेद-विधान-सहित हरषाई।
चंदनादि करि पूजि बनाई॥
बहुरि दीन्ह अंवन कहं दाना।
यथा योग दीन्हें विधि नाना॥
श्री पुरुषोत्तम दरसन हेता।
चले भूप पुनि सैन समेता॥
इहि प्रकार क्रम सो हरषाई।
गगासागर पहुंचेउ जाई॥
निरखि ताहि मुनिवर सन बानी।
बोलेउ भूप प्रेम - रस - सानी॥
कहहु स्वामि, गिरि नील सुहावा।
केतिक दूरि रहा निज गाँवाँ॥

दोहा

सरनागत प्रतिपाल श्री, पुरुषोत्तम कृतवास।
देव दनुज जेहि भजहिं नित, सो मोहिं करहु प्रकास॥१॥

चौपाई

सुनि अस बचन विनीत उदारा।
बिस्मय जुत मुनि बचन उचारा॥
भूप सैल तुव आगे सोहा।
करहु प्रनाम, होइ किमि मोहा॥
अति प्रकासमय राजहि येहा।
पावन दरस रहित संदेहा॥
कारन कवन दरस, नहिं होई।
पुनि-पुनि कहहि विप्र मुख जोई॥
प्रथमहि मैं इह मज्जन कीन्हा।
पुनि भीलन कर दरसन लीन्हा॥

जाही माग होइ सुनु भूपा।
चढ़ेउ प्रथम मैं सैल अनूपा॥
अब मोकहँ बड़ अचरज होई।
मैं निरखौं, तुम नाहिन जोई॥
अस सुनि दुखित भयेउ नृप भारी।
पुनि लालसा महा उर धारी॥

सोरठा

कहहु मुनीस बुझाई, अब केहि विधि दरसन लहौं।
पुरुषोत्तम सुखदाइ, नीलाचल गिरि राज जुत॥२॥

चौपाई

सुनि अस बचन दुखित लखि भूपा।
बोलेउ मुनिवर गिरा अनूपा॥
गंगासागर मज्जन करहू।
दृढ़ विस्वास हृदय महं धरहू॥
तब लगि ठाढ़ रहौ महीसा।
जब लगि निरखि न परं गिरीसा॥
पुनि अघहरन देव भगवाना।
पुरुषोत्तम-जस करहु बखाना॥
प्रनतपाल करुणानिधि स्वामी।
करहु कृपा उर अंतरजामी॥
एहि विधि श्री हरि नाम उदारा।
प्रेम सहित नृप करहु उचारा॥
जह-जहं निज भक्तन उद्धारी।
दलि दुख जेहि विधि कीन्ह सुखारी॥
ते सब चरित करहु तुम्ह गाना।
देहैं दरसन कृपानिधाना॥

दोहा

सुनि अस मुनि के बचन वर, महा दुखित महिपाल।
पुनि गंगासागर विषं, मजेउ हरषि विसाल ॥३॥

चौपाई

दृढ़ विस्वास धारि मन माही।
असन पान त्यागेउ सब ताही॥
नीद अंगरागादिक जेते।
रामानुज त्यागेउ नृप तेते॥
पुनि विधिवत हरि-पूजन कीन्हा।
सब प्रकार उर संजम लीन्हा॥
तब श्रीपति गुण-ग्राम सुहाये।
कहन लगे उर आनद छाये॥
जय प्रभु प्रणतपाल भगवाना।
दीन दयाकर जय सुखदाना॥
जयति प्रणत-दुख-भजन स्वामी।
जयति-जयति उर अतरजामी॥
जयति भक्त-वत्सल सुख-रासी।
जय दयाल दुख पुंज बिनासी॥
जहॅ-जह दुखित दास निज देखे।
तहँ-तह दलि दुख रच्छि विसेखे॥

छंद

दलि दुसह दुख तहं-तहं स्वजन, रच्छे कृपा करिकै हे हरे।
लखि अंबरीष महा दुखी, मुनि स्राप ते तुम उद्धरे॥
पुनि द्रोण-सुत जब क्रोध करिकै, ब्रह्म-सर प्रेरो प्रभो।
तब चक्र धरि कर मैं जठर महं, पुंड सुत रच्छो विभो॥
पुनि असुर-पति प्रहलाद को, जब विविधि विधि ता दिन कर्‌यो।
दलि दुष्ट, तब नर सिंह तन धरि, कृपा निधि जन दुख हर्‌यो॥

गजराज दीन विलोकि करुणा, सिंधु गरूड़ बिसारि कै।
हति चक्र सों खल ग्राह राख्यो, ताहि सरन विचारि कै॥

दोहा

जब-जब असुरन दास तुव, कीन्हें दुखित कृपाल।
तब-तब तुम अवतार धरि, सब विधि किये निहाल॥

सोरठा

ते तुव चरित उदार, गान करं सुर मुनि सदा।
करि अस हृदै बिचार, पाप पुंज करि इहि समा॥४॥

चौपाई

अज सिवादि सुर कपट बिहाई।
संतत भजहिं चरन हरषाई॥
पुनि कृपाल तव पद जलजाता।
पूजन करि नर हरषित गाता॥
सकल पाप दलि बिनहिं प्रयासा।
लहहिं परम पद सहित हुलासा॥
ते पद मोहिं देखावो स्वामी।
दुखित जानि प्रभु अंतरजामी॥
जदपि नाथ मैं अवगुन खानी।
महा मंद अघ औघ नसानी॥
सब प्रकार नहिं दरसन जोगू।
जिमि खल चहै परम पद भोगू॥
तदपि सरन लखि दीनदयाला।
देहु दरस प्रभु परम कृपाला॥
तुम अघहरन प्रणत-भयहारी।
सुद्ध सत्वमय सब सुखकारी॥

दोहा

भव-भय-भंजन विरद निज, सत्य करहु भगवान।
नाहिं त हंसिहैं लोग सब, करि तुम्हार गुन-गान॥५॥

चौपाई

अस अनुमानि प्रनत-हितकारी।
देहु दरस लखि दास दुखारी॥
जे तुव सरन होहिं जगमाहीं।
ते तनु तजि बैकुंठहि जाहीं॥
संतत पाप-परायन जेऊ।
सुमिरि नाम तुव बिनु स्रम तेऊ॥
गोपद - इव भव-सागर पारा।
होत अवसि, अस बेद उचारा॥
पुनि प्रभु नेति-नेति कर बेदा।
गावहिं गुण संतत बिनु खेदा॥
मैं केहि भाँति करौं गुन गाना।
महा मंद मति मनुज अयाना॥
आरतहर निजु ओर निहारी।
देहु दरस अस हृदय विचारी॥
रिपुसूदन येहि भाँति भुवाला।
कीन्ही अस्तुति परम रसाला॥

दोहा

येहि विधि निसि दिन रटहि नृप, लहै न छिन विस्राम।
असन पान निद्रा सहित, छूटि गयौ सब काम॥६॥

चौपाई

बैठत उठत चलत इहि भाँती।
गान करहि श्री हरि गुन - पाँती॥
तलफत पाँच दिवस रघुराई।
सुरसरि सागर तटहि बिहाई॥
तब श्रीपुरुषोत्तम भगवाना।
करुणा निधि अस उर अनुमाना॥

मम सेवक इह भूप बनाई।
करि अस्तुति अघ ओघ नसाई॥
अब देहौं निज दरस सुहावा।
देव दनुज वंदित मनु भावा॥
इहि विधि करि बिचार भगवाना।
प्रेम बिबस लोचन जल आना॥
पुनि सन्यास वेष प्रभु धारा।
लीन्हेउ कर त्रैदंड उदारा॥
भूप समीप गयेउ हरषाई।
भक्त बछल प्रभु त्रिभुवन राई॥

दोहा

कृपा-दृष्टि करि भूप कहँ, निरखत भये कृपाल।
नमो विष्णु करि प्रणवयुत, पुनि हरषित महिपाल॥७॥

चौपाई

अर्घपाद्य आसन वर दीन्हा।
विधिवत हरि-सम पूजन कीन्हा॥
पुनि नृप बोलेउ गिरा रसाला।
दयेउ दरस मम भाग्य विसाला॥
जती सिरोमनि दरस तुम्हारा।
पुरुषोत्तम सम लाग पियारा॥
अस सुनि नृप के बचन बिनीता।
बोलेउ जती हृदय युत प्रीता॥
निज विज्ञान केर बल भूपा।
जानौ भूत भविष्य अनूपा॥
ताते कहउँ सुनहु मन लाई।
बचन परम प्रिय सब सुखदाई॥
श्रीहरि - दरस हरन सब सूला।
अज - सिवादि - दुर्लभ सुख-मूला॥

अवसि काल बीते जुग जामा।
लहिहौं सत्य सहित अभिरामा॥

दोहा

पुनि प्रमुदित वैकुंठ कौं, तुम समेत जन पाँच।
जैहौ अवसि प्रयास बिनु, कहहुँ वचन सब साँच॥८॥

चौपाई

तुम, तव नारि, सचिव, मुनि ताता।
ततुकार येक होइ सुचि गाता॥
पाँचौ जन मैं कहौ बुझाई।
समुझि हृदय लिखि लेहु बनाई॥
ब्रह्मादिक-दुर्लभ गिरि नीला।
प्रगटहिं कालिह मुक्तिप्रद सीला॥
येहि प्रकार भूपहि समुझाई।
पुनि 'भय' अंतरहित रघुराई॥
तिनके वचन सुनत महिपाला।
निपट प्रेम-बस भा तेहि काला॥
सावधान होइ बहुरि निहारा।
जती अलखि भा विस्मय भारा॥
पुनि बोलेउ मुनिवर सन बानी।
चकित महा विस्मय रस सानी॥
कहहु स्वामि को जती स्वरुपा।
मो सब बरनेउ बचन अनूपा॥

सोरठा

पर न मोहिं लखाइ, गयौ कितै सत्वर कहा।
मुनि बोले हरषाइ, महाराज बड़ भाग तव॥९॥

चौपाई

अति अगाध तव प्रेम निहारी।
आयौ पुरुषोत्तम अघहारी॥
अवसि काल्हि गिरी नील अनूपा।
प्रगटहि तुमहि सत्य, सुनु भूपा॥
तेहि चढ़ि श्रीहरि-दरसन पाई।
पुनि लहिहौ गति परम सुहाई॥
सुनि अस बचन सुधा रस पागे।
उर ते दुख संसय सब भागे॥
पुनि नृप प्रेम मगन भयभारी।
तन रोमांच, बहे दृग बारी॥
ब्रह्मादिक - दुर्लभ - पद जासू।
करिहौ दरस काल्हि मै तासू॥
पुनि-पुनि उर अस करहि बिचारा।
तेहि अवसर रिपुदहन उदारा॥
दुंदुभि वीण प्रणव समुदाई।
गोमुखादि तहँ बजेउ बनाई॥

दोहा

छिन गावहि, छिन हंसहि नृप, छिन तिष्ठहि रघुराइ।
श्री पुरुषोत्तम चरित इमि, गान करहि हरषाइ॥१०॥

इति श्री पद्म पुराणे पाताल षडे शेष वात्सायन सवादे
संन्यासि दर्सनोनाम एकविंशोऽध्यायः॥२१॥

नीलाचल-गिरि-वर्णन

दोहा

महाराज इहि भाँति नृप, दिन भरि करि गुनगान।
पुनि आलस बस नयन किय, सुरसरि तट सुखदान ।।

चौपाई

तहाँ सपन मैं निज तन देखा।
चारि बाहु-युत सुभग बिसेखा ।।
सख चक्र कर गदा सुहाई।
जलज चाप सर जुत छवि छाई ।।
पुनि पुरुषोत्तम दरस सुहावा।
लहेउ नील गिरि पर मनभावा ।।
मदन कोटि छवि तन मैं राजै।
चारि बाहु करि-कर सम भ्राजै ।।
संख चक्र आदिक युत तेई।
मुकुट माल अंबर छवि देई ।।
पुनि श्री निकट लखो रघुराई।
करत चड आदिक सेवकाई ।।
अज सिव आदि सुरासुर वृंदा।
करत नृत्य देखे जुत नदा ।।
येहि विधि निरखि दडवत कीन्हा।
तब प्रभु ने वांछित वर ‹ीन्हा ।।

दोहा

सब विधि प्रभुहिं दयाल लखि, पुनि मन महं हरषाइ।
कृपापात्र मुनि आपु कहं, नृप निस्चै रघुराइ ।।१।।

चौपाई

येहि विधि निरखेउ सपन सुहावा।
जगेउ प्रात बिस्मय उर छावा॥
तब तापस मुनि सन सब कहेऊ।
सुनत महा अचिरिज तिन लहेऊ॥
पुनि बोलेउ भगवत अनुरागा।
भूप तोर अतिसय बड़ भागा॥
प्रणतपाल हरि कृपा-निधाना।
निरखेउ पुरुषोत्तम, नहि जाना॥
श्रीपति विष्णु भक्त - भय - हारी।
सख चक्र आदिक करधारी॥
ताते हरि बिनु अपर न कोई।
अवसि आजु दरसन नृप होई॥
सुनि मुनि के बर बचन सुहाये।
दिये दान दीनन मन भाये॥
पुनि , मज्जन कीन्हेउ हरषाई।
सुर पितरन जल दीन्ह बनाई॥

दोहा

तव श्रीहरि गुन गन बिसद, करन लगे नृप गान।
हृदय विचारत जाहि अस, होइ कबै मध्यान॥२॥

चौपाई

बड़ी लालसा रसना माही।
छिन-छिन प्रेम-मगन होइ जाही॥
बीते उभय जाम इहि भांती।
गान करत श्रीपति गुन-पाँती॥
तेहि अवसर नभ बजे निसाना।
गरजहिं मनहुं उपल घन नाना॥

आकसमात सुमन समुदाई।
बर्षेउ भूप सीस रघुराई॥
सुरगन कहहिं गगन मह ठाढ़े।
बधुन सहित उर आनद बाढ़े॥
धन्य भूप वर तुम बड़ साधू।
लहहु नील गिरि दरस अगाधू॥
अस सुर बचन परम सुखदाई।
सुनेउ सकल नृप वर हरषाई॥
तेहि अवसर प्राची दिसि माही।
प्रगटेउ नील सैल वर ताही॥

दोहा

अतुल तेज धारण करे, कनक सिखर बहु सोह।
सकल ओर सम राज ही, निरखि नृपहिं भा मोह॥३॥

चौपाई

उभय भानु प्रगटे कह भाई।
अथवा तड़ित-पुंज ठहराई॥
कै कृसानु करि कोप प्रचंडा।
धारेउ तेज देन जम दंडा॥
येहि विधि नृप मन करै बिचारा।
तब लगि गिरि तेहि विप्र निहारा॥
हरषवंत ह्वै बोलेउ बचना।
निरखि भूप अब गिरिवर रचना॥
अति पुनीत दरसन एहि केरा।
भव-भय-हरन करै नहि देरा॥
अस सुनि कीन्ह प्रनाम भुवाला।
पुनि पूजेउ जुत प्रेम विसाला॥
आजु धन्य मैं धन्य बनाई।
पुरुषोत्तम गिरि दरसन पाई॥

अस कहि प्रेम मगन होइ गयेऊ।
बहुरि धारि धीरज थिर भयेऊ॥

सोरठा

मुनि, तिय, सचिव समेत, अवर तंतुवायक सहित।
नृप हरि नामहि लेत, चढ़त भयो गिरि नील पर॥४॥

चौपाई

ये पांचौ रिपु दहन उदारा।
बड़भागी विजयी संसारा॥
अति विचित्र गिरिवर कै सोभा।
निरखत जाहि विगत मद लोभा॥
तेहि अवसर नभ भूतल माही।
अमित बाजने बाजन जाहीं॥
अति उतंग तह गोपुर राज।
पुनि मनि कनक भीति सब भ्राजै॥
करै विरंचि सदा सेवकाई।
पुरुषोत्तम-पद, कपट बिहाई॥
जगत जननि कमला हरषाई।
करहि स्वामि - हित पाक बनाई॥
रिपु सूदन नृप तेहि थल जाई।
निरख्यौ देव बरन सुखदाई॥

दोहा

अति उतंग सुंदर महा, धवल विचित्रित देखि।
करि प्रनाम पाँचौ जने, प्रविसे हरष बिसेखि॥५॥

चौपाई

तहाँ सिंघासन सुभग निहारी।
दिव्य कनक मनिमय द्रुतिकारी॥

अति विचित्र वरनी नही जाई।
निरखत मन कह लेहि चुराई॥
तेहि पर जगन्नाथ छबि-धामा।
राजहिं लाजत कोटिक कामा॥
चारि बाहु चक्रादिक धारे।
सीस मुकुट, उर माल बिहारे॥
अंग-अंग भूपन छबि देहीं।
बसन विलोकत मन हरि लेहीं॥
जगत जननि श्री सहित कृपाला।
राजे छवि किमि कहै विसाला॥
पुनि निरखे नृपगन समुदाई।
तिनके नाम कहौ समुझाई॥
विस्व करन बेत कर लीन्हे।
निरखहिं प्रभु स्वरूप चित दीन्हे॥

दोहा

श्री अनंत खग कुमुद, पुनि कुमुदाव्य बखानि।
भद्र सुभद्र प्रचड जय, विजय चंड पहिचानि॥६॥

चौपाई

नंद सुनद आदि हरषाई।
निरखे भूप करत सेवकाई॥
तब सब जन समेत रघुराई।
कीन्ह दंडवत पुलकि बनाई।
पुनि होइ सावधान महिपाला।
वेद-विधान-सहित तेहि काला॥
अर्घपाद आचमन सुहावा।
प्रेम सहित निज हाथ करावा॥

पुनि मज्जन करवावत भयेऊ।
चदनादि बहुतन महँ दयेऊ॥
तुलसी सुमन माल सुखदाई।
पुलकित प्रभु उर मैं पहिराई॥
वसन विचित्र नवीन सुहाये।
नाना भूषन जुत पहिराये॥
धूप दीप नैवेद्य लगाये।
कीन्हि बहुरि आरती सुहाये॥

दोहा

तांबूलादिक अर्पि करि, कीन्हेउ बहुरि प्रनाम।
तब इहि विधि श्री आदि दै, अरचेउ होइ निष्काम॥७॥

चौपाई

पुनि तापस युत हरषि अपारा।
जोरि पानि निज मति अनुसारा॥
अस्तुति करत भयेउ तेहि काला।
पुरुषोत्तम. मुख निरखि रसाला॥
तुम भगवान प्रकृति पर ईसा।
एक पुरुष, सब जग आवीसा॥
पुनि कारज कारन पर स्वामी।
कृपा सिंधु प्रभु अंतरजामी।
महदादिक पूजित पर-धामा।
सकल त्रास-भंजन तव नामा॥
प्रभु तव नाभि-कुंज विधि भयेऊ।
संभु क्रोध दृग ते निरमयेऊ॥
ते तुम्हार आयसु अनुसारा।
संतत विस्व करहु बिस्तारा॥
रुद्र विनास करै सब काला।
पुनि बरषहिं भूतल सुरपाला॥

छंद

प्रभो नमामि ते पदं, प्रसन्न चित्त मो ददं।
असेष त्रास गजन, अनत सीस रंजनं ॥
शिव स्वयभुव हरिं, सशक्ति ध्यान मे धरिं।
कृपानिधे जगत अय, सदैव ते समाश्रयं ॥
तव प्रभावत: प्रभो, प्रकासतं त्रयं विभो।
तुमैक जक्त ब्यापित, कृपा करं न चापितं ॥
प्रणाश सभवं पर, स्रजादि विश्व त्व कर।
अनंत अड नायकं, अजादि देव गायकं ॥
सदा प्रधान ते परं, सनातन सुखाकरं।
तथापि भक्त कारण, सुधर्म विश्व धारणं ॥
स्वशक्ति मयुन प्रभो, निजेच्छया मयं विभो।
धृतावतार भूतल, बधे तमीचर दलं ॥
कृत चरित्रमद्भुत, मया अनद सयुतं।
पुराध्रुवंतु या हरे, सुमान रूप को धरे ॥
तहाँहि संग्द संहरे प्रभो श्रुतीनि उद्धरे।
त्वमक्षर परात्पर, अनादि ब्रह्म श्री वर ॥

दोहा

संभु स्वयं भू भारती, सेष गनेस सुरेस।
तव महिमा बर्नन विष, करि न सकं प्रवेस ॥
सो मैं मंद कृतायतन, केहि विधि करहुँ बखान।
तुम अनंत सब भाँति हरि, परब्रह्म भगवान ॥

सोरठा

अस कहि कीन्ह प्रनाम, तन पुलकित लोचन सजल।
तब बोले सुखधाम, श्री पुरुषोत्तम हरषि अति ॥८॥

चौपाई

नृप सत्तम तुव विनय रसाला।
सुनत भयेउ मोहि हर्ष बिसाला ॥

तुव मति प्रकृति, इहै सुखदाई।
जे नर पढ़िहैं मन हरषाई॥
तिन कहं देउ दरस निज भूपा।
भुक्ति मुक्ति प्रद परम अनूपा॥
अस सुनि बचन कृपा रससाने।
भूप वसन युत हृदय जुड़ाने॥
पुनि प्रसाद सब मिलि तहँ पावा।
भयेउ चतुर्भुज रूप सुहावा॥

दोहा

तब लगि रिपु सूदन सुनहु, आयेउ सुभग विमान।
लसहि जलज मनि जाल जुत, करहिं अपछरा गान॥९॥

चौपाई

सकल भोग सह राजहिं तेई।
पुनि श्रीपतिगन प्रमुदित सेई॥
तब प्रभु आयसु पाइ भुवाला।
चरन वंदि गुनि भागि विसाला॥
नारि सहित चढ़ि रुचिर विमाना।
श्रीनिवास - पुर कीन्हि पयाना॥
पुनि तेहि सचिव धर्म-धुरधारी।
चढ़ि विमान गा हृदय सुखारी॥
ता पाछे तापस हरषाई।
गयेउ चतुर्भुज रूपहि पाई॥
बहुरि ततुवाइक रघुराई।
गान करन मै निपुन बनाई॥
श्रीपुरुषोत्तम - दरस - प्रतापा।
चढ़ि विमान गा तजि त्रै - तापा॥
पांचौ एक संघ हरषाई।
चक्रादिक कर साजि बनाई॥

दोहा

दिव्य विभूषन वसन वर, सजि सब निज-निज अंग।
चलत भये वैकुंठ कहँ, मोहत विपुल अनंग॥

चौपाई

तब सुरगन पहुँचावन हेता।
आयेउ प्रमुदित भेंट समेता॥
अमित दुंदुभी हनि तेहि काला।
बरषें सुरतरु सुमन रसाला॥
रिपु सूदन तब नृप पुरवासी।
निरखें नभ महँ जान प्रकासी॥
पुनि निसान रव सुनहिं अपारा।
विस्मय होइ जय बचन उचारा॥
तिन महँ एक विप्र बड़भागी।
श्रीपति - चरण - कमल - अनुरागी॥
गगन विमान निरखि अकुलाई।
महा कष्ट करि दरसन पाई॥
पुनि धरि सुभग चतुर्भुज रूपा।
लही परम गति जेहि थल भूपा॥
पुरवासी अस अचिरिज देखी।
नृपहि प्रसंसहिं हृदय बिसेखी॥

दोहा

तब गंगासागर विषं, मज्जन करि हरषाइ।
पुरुषोत्तम गुन कहत सब, निज पुर पहुँचे जाइ॥११॥

चौपाई

धन्य भूप अतिसय बड़भागी।
हरि-पद-कमल सत्य अनुरागी॥

जो सदेह बैकुंठ सिधावा।
ब्रह्मादिक दुर्लभ स्तुति गावा॥
येहि विधि सब पुर में नर-नारी।
घर-घर नृप-कीरति बिस्तारी॥
सोइ पुरुषोत्तम सैल अनूपा।
महाराज यह सब सुख रूपा॥
येहि कर दरस करत यक बारा।
मिलिहि परम पद छुटि संसारा॥
जे येहि गिरि की कथा सुहाई।
सुनहि सुनावहि दृढ मन लाई॥
ते सब विधि जग मे बड़भागी।
लहहि अवसि पर गति तनु त्यागी॥
पुनि जो सुनि सुमिरहि मन माही।
घोर स्वप्न तेहि छन नसि जाही॥

दोहा

येहि गिरि पर जे बसहि प्रभु, पुरुषोत्तम जेहि नाम।
ते रघुकुल मणि बंधु तव, कृपा-सिंधु श्री राम॥१२॥

चौपाई

जो श्री जनकसुता जग-माता।
सो जानहु कमला जिय ताता॥
अस्वमेध प्रभु ने यह ठाना।
सो जग पावन हेत न आना॥
ब्रह्म वधादिक पाप अपारा।
नासहि नाम लेत एक बारा॥
तिनको लगै कवन विधि पापा।
जासु नाम अस प्रगट प्रतापा॥
महाराज तुम हू हरषाई।
करहु दरस गिरि चढ़ि मन लाई॥

करि प्रनाम पावन तन करहू।
अंत मुक्ति निस्चय उर धरहू॥
जासु प्रसाद पाइ बहु जीवा।
लही परम गति सब सुख सीवा॥
तिनकर दरस 'सकल भयहारी।
करहु अवसि होइ हृदय सुखारी॥

दोहा

येहि विधि वरनत सुमति मुनि, तव लगि मख कर बाज।
पवन बेग खूदत अवनि, गया निकट गिरि राज॥
तेहि पीछे रिपुदहन उर हरषित सचिव समेत।
गगासागर मज्जि पुनि, चढ़ेउ सल सुख हेत॥

सोरठा

पुनि मदिर महँ जाइ, दरसन लहि प्रमुदित भये।
करि प्रनाम हरषाइ, पूजन कीन्हेउ वेद-विधि॥
लीन्ह प्रसाद बहोरि, मानि कृतारथ आपु कहँ।
तब प्रभु सो कर जोरि, विविध भाति विनती करी॥१३॥

इति श्री पद्म पुराणे पाताल षडे शेप वात्सायन भवादे
नीलाचल गिरि वर्णनोनाम द्वाविशाऽध्याय: ॥२२॥

राज-पुत्र-विजय

दोहा

वात्सायन रघुराज पुनि, आयेउ कटक मझार।
तब लगि तृण चरि तुरंग वर, चला मरुत-गति हार॥

चौपाई

कनक-पत्र सिर सोह सुहावा।
चामर होत जाहि छवि छावा॥
चली वीर अवली तेहि पाछे।
नाना अस्त्र-सस्त्र जुत आछे॥
रिपु नासन लक्ष्मीनिधि बीरा।
पुष्कल उग्र बाहु रनधीरा॥
नृपति प्रताप अग्र समुदाई।
चले तुरंग हित साज बनाई॥
सग चमू चतुरंगिनि साजै।
जाहि पंथ जलनिधि कहँ लाजै॥
चक्रांकित नगरी मख बाजी।
इहि विधि जात भयो सुख साजी॥
नृपति सुबाहु ताहि प्रतिपाला।
कोटिन भट संग लिये कराला॥
दमन नाम तेहि सुत रनधीरा।
मृगया . हेत आवयुत भीरा॥

दोहा

तेहि देखा मख बाजि कहं, सब विधि चरचित अग।
अति रसाल पुनि भाल महँ, लिख्यौ पत्र बहुरंग॥१॥

चौपाई

तब निज भट बिलोकि सो बोला।
ल्यावहु तुरंग कवन कर डोला॥
कनक-पत्र चामर-युत सोहै।
अति सुंदर निरखत मन मोहै॥
सुनि पति वचन सुभट तहँ गयेऊ।
तुरंग पकरि ढिग लावत भयेऊ॥

तब नृप तनय महा अभिमानी।
बाँचहि पत्र बरनि छवि खानी॥
अवधपुरी पति अति बलधामा।
भूप सिरोमनि दसरथ नामा॥
तिनके सुत श्री राम उदारा।
सूर सिरोमनि बल आगारा॥
तिन सम सकल अवनि तन मा ही।
अस्त्र-सस्त्र-विद्या-वित नाही॥
अस्वमेघ हित तिन यह बाजी।
छाड़उ चरचि पत्र सिर ताजी॥

दोहा

सत्रु सघन वन अनल इव, रिपुसूदन रन धीर।
पठये पालन हेतु तेहि महित बिपुल बर बीर॥२॥

चौपाई

जे आपुहि छत्री अनुमानौ।
पुनि सब बिधि रन गति पहिचानो॥
आपु बिना जग सूर न कोई।
संतत अस जानें मन जोई॥
सो यह अवसि तुरग बर-जोरी।
पकरहु समुझि सजग सब ओरी॥
तिनकौ रिपुसूदन रन जीती।
लै हैं यह उबारि जुत नीती॥
नाहि त छाड़ि सकल अभिमाना।
परियो चरन त्यागि धनु बाना॥
इहि विधि पत्र बाँचि अभिमानी।
बोल्यौ गिरा कोप-रस-सानी॥

रामहि, सूर सकल जग माहीं।
हम कहु छत्री विधि-कृत नाहीं॥
देखौ मोर पिता संसारा।
विद्यमान बल उदधि अपारा॥

दोहा

तेहि पर कीन्हेउ गर्व तिन, निदरि हमैं गुनि बीर।
सो फल बिधिवत आजु मैं, देहौं करि रनधीर॥३॥

चौपाई

रिपुसूदन कहं हति सर नाना।
करि हौं तरु के पत्र समाना॥
पुनि तिन सैन माहि गज जेते।
हति सर दलौं निमिषि महं तेते॥
तुरंग सकल स्रोनित-सर माहीं।
देउ बहाइ आजु सक नाहीं॥
जोगिनि कर लै मनुज कपाला।
पीहैं रुधिर अघाइ बिसाला।
पुनि सृगाल खग संयुग माहीं।
मम सर-बलभट-आमिष खाहीं॥
तेहि देखत सब सैन-संहारा।
करौं आजु, नहिं लावौं बारा॥
दलि सर-निकर व्याल अनुमाना।
करौं बिहाल निपट पितु आना॥
अस कहि तुरंग नगर पहुँचावा।
पुनि सेनापति कौं समुझावा॥

दोहा

सहजु सैन चतुरंग मम, अमित महा बलवान।
पर-दल-भंजन सकल इक, सत्वर जाहु सुजान॥४॥

चौपाई

अस सुनि सेनापति पुर गयेऊ।
सकल चमू सजवावत भयेऊ॥
पुनि आवा महीप-सुत पासा।
प्रबल चमू जुत करत प्रकासा॥
तब करि दमन कोप अति भारी।
ठाढ़ भयो रन सैन सभारी॥
तब लगि हय अनुचर तहं नाना।
आइ गये सब भांति सुजाना॥
तुरंग राज तिन कतहुं न देखा।
विकल परस्पर कहैं विसेखा॥
रघुकुल-मणि-मख-तुरग सुहावा।
गयो कहाँ, अब दृष्टि न आवा॥
तब लगि आव सैन जुत बीरा।
भूप प्रताप अग्र मतिधीरा॥
प्रबल चमू तिन सन्मुख देखी।
सिघनाद भट करत विसेखी॥

दोहा

तब हय-अनुचर मलिन होइ, नृपहि सुनायो जाइ।
खोजें तुरंग न मिलै कहुँ, काहू लीन्ह चुराइ॥५॥

चौपाई

अस सुनि पुनि तेहि कटक निहारा।
तब मन लागे करन बिचारा॥
तुरंग लीन्ह यहि, ससय नाहीं।
कवन भांति ठहरै रन माहीं॥
अस बिचारि यक दूत सुजाना।
पठवा तेहि पुर दै सिख नाना॥

दमन समीप जाइ तेहि काला।
नीति-सहित कह बचन रसाला॥
महाराज रघुपति कर घोरा।
कह्यौ बेगि नृप गा केहि ओरा॥
केहि पकरा, केहि थल है सोई।
कै तुमही राखा तेहि गोई॥
धरे जानि अथवा बिनु जाना।
सो सब सत्वर करहु बखाना॥
जो मख-बाजि धरा बिनु जाने।
तजहु बेगि, हम दोष न माने॥

दोहा

अथवा ह्वै अभिमान-बस, तजहु न हय इहि काल।
तौ रिपुसूदन आदि दै, जीतहि तुमहि नृपाल॥६॥

चौपाई

जो पै बचन करहु नहि काना।
तौ जम कोपेउ गुनहु निदाना॥
अस सुनि-भूप-तनय बल-बीरा।
बोल्यो निदरि बचन गभीरा॥
जानि धरा मप-हय हम दूता।
तजउ, न करहु उपाय बहूता॥
जे तुव सूर बीर बलवाना।
लेहु उबारि सबन कह आना॥
मोहि बिना जीते रन माही।
सपनेउ हय पावै कोउ नाही॥
अस सुनि रोप विवस हसि दूता।
गयो कटक धरि धीर बहूता॥
बहुरि प्रताप अग्रसन जाई।
कहेउ सकल तेहि बचन बुराई॥

सो सुनि कोप कीन्ह उर भारी।
भये अरुन दृग निडर बिचारी॥

दोहा

चारि तुरंग-जुत कनकमय, रथ अनूप सजवाइ।
महाबली नृप चढेउ तब, अस्त्र-सस्त्र समुदाइ॥७॥

चौपाई

प्रबल चमू सजि, धनुष चढ़ाई।
चले दमन पर कोप बनाई॥
कर कोदंड केर टकारा।
स्रवत कोप बस जल दृग धारा॥
रे सिसु ठाढ़ होइ रन माही।
अब कह भाजि जाहि मोहि पाही॥
येहि विधि पुनि-पुनि बचन उचारा।
चले दमन पर गरजत भारा॥
पुनि पाछे कोटिन असवारा।
चले नग्र असि कर पर धारा॥
गजारूढ़ पदचर समुदाई।
अवर रथी बहु चले रिसाई॥
सकल सूर असि कला सुजाना।
समर छुधित चिर काल निदाना॥
उहाँ दमन दल आवत देखा।
गजत-तर्जत प्रबल बिसेखा॥

दोहा

तब करि कोप अपार उर, महावीर बलवान।
चढ़ि स्यदन सजि कवच तन, सन्मुख पहुचो आन॥८॥

चौपाई

धरे सरासन बान प्रचंडा।
पुनि सब सस्त्र मनहु यम-दंडा॥
तरुन गात अतिसय बलवाना।
लीला करि निज दल तहं आना॥
जिमि असंक हरि करिगन माहीं।
तिमि सुबाहु-सुत डरपत नाहीं॥
तेहि अवसर मुनिवर सब बीरा।
करि अति कोप भिरे रनधीरा॥
छिन्न-भिन्न अस बचन कराला।
कहैं उभै दिसि हति सर व्याला॥
पदचर सन पदचर रन करहीं।
गज आरूढ़ परस्पर भिरहीं॥
जे रथ अस्वन पर असवारा।
ते सम लखि भिरे कोप अपारा॥
तेहि औसर लागे सर चडा।
भये तुरंग गज अगिनित खडा॥

दोहा

पुनि अनेक नर सिरनि सों, मेदिनि गई छिपाइ।
विपुल रूंड बिचरहिं तहां, हर्तहिं सूर समुदाइ॥६॥

चौपाई

भूप प्रताप अग्र तब कोपा।
निरखि आपने दल कर लोपा॥
पुनि सुबाहु-सुत चमू संघारत।
निरख्यौ दल समेत तेहि आवत॥
तब मातुलहि प्रेरि तेहि काला।
गयो जहां भट दमन कराला॥

सूर सिरोमनि अति बलवाना।
रथ आरूढ़ सैन संघ नाना॥
येहि विधि सुभुज तनय कहं देखी।
धनुष बान धरि कोप विसेखी॥
रे नृप तनय भाजि कहं जाई।
मैं आवा तव काल बनाई॥
भूप सिरोमनि रघुकुल केतू।
तिनहि न जान मंद केहि हेतू॥
जग विजई रावन जिन मारा।
बिदित प्रताप सकल संसारा॥

दोहा

तासु यज्ञ-हय पकरि सठ, दीन्हो नगर पठाइ।
होहु सजग मैं काल इव, तो पर पहुंचो आइ॥१०॥

चौपाई

नाहित तुरंग छोड़ि घर जाहू।
खेलहु बाल वृंद, लहु लाहू॥
केहि कर तनय, रहो केहि ठाऊ।
पुनि सत्वर कह आपन नाऊं॥
जाहु भवन तजि तुरंग रसाला।
बाल देखि मै दया विसाला॥
अस सुनि बचन दमन भटमानी।
बोल्यो नृप कहं तृन सम जानी॥
मैं बांध्यौ तुरग बल अपने।
देंउ न जियत भूप सुनु सपने॥
करहु समर अस हृदय बिचारी।
भूप सिरोमनि तुम बल भारी॥

तुम जो कहा बाल घर जाहू।
खेलि सिसुन महँ लूटहु-लाहू॥
हम क्षत्री-बालक जग जाना।
सूर-तनय रन क्रीड़न ठाना॥

दोहा

सुनु मुनीस अस बचन कहि, पुनि चढ़ाइ कोदंड।
अमित कोप उर धारि कै छाड़े सत सर चड॥११॥

चौपाई

बहुरि सब्द-धुनि कीन्ह अपारा।
सुनि कादर उर जात दरारा॥
भूप प्रताप अग्र ते बाना।
आवत लखि उर ब्याल समाना॥
अति लाघव सर येक प्रचडा।
छाड़ि सकल इषु कीन्हेउ खंडा॥
निज सर सकल देखि रन भंगा।
सुभुज-तनय अति रिस रन रगा॥
तव सर-निकर छुरा सम धारा।
काक पच्छ युत कठिन अपारा॥
सगुन चाप करि तिनहि निवारा।
पुनि स्वनाम अंकित षर धारा॥
धरनि अकास माहि ते छाये।
जिमि नभ मेघ महा झरि लाये॥
ते सर भिरे परस्पर घोरा।
प्रगटो अमित अनल करि जोरा॥

दोहा

सुनु मुनीस नृप- सन तब, जरन लगी चहुं ओर।
भये विकल गज तुरग भट, प्रगट भयो अति सोर॥१२॥

चौपाई

भूप प्रताप अग्र बड़ जोधा।
निरखि कटक बोला करि क्रोधा॥
तिष्ठ-तिष्ठ, नृप-सुत अभिमानी।
अस कहि धनुष स्रवन लगि तानी॥
दस सर अति कराल तेहि काला।
हने, तदपि नृप-तनय न चाला॥
जिमि उन्मत्त वितुंड सरीरा।
हने गदा लघु बाल, न पीरा॥
बान-विँधा सिर सोहत कैसे।
जिमि दस तरु जुत गिरिवर जैसे॥
तब करि कोप दमन तेहि काला।
कीन्ह सगुन निज धनुष रसाला॥
पुनि सर तीनि बान अति घोरा।
हेम पच्छ छाड़े करि जोरा॥
ते सर प्रलय अनल अनुमाना।
भूप हृदय कहँ कीन्ह पयाना॥

दोहा

सुनहु सूत-उर बेधि करि, परे पार सब जाइ।
जिमि रघुपति-पद-विमुख नर, परें नरक पछिताइ॥१३॥

चौपाई

भूप प्रताप अग्र सहि बाना।
पुनि निज धनुष कीन्ह संधाना॥
तब सर सतनि सहस्त्रनि नाना।
छाड़े सकल व्याल अनुमाना॥
पुनि तेहि रथ के चारिउ घोरा।
हते चारि सर ते करि जोरा॥

उभय बान हति ध्वजा निपाता।
एक बान सारथि सिर घाता॥
बान कराल चारि उर मारे।
रथ ते दमन अवनि महँ डारे॥
भूप पराक्रम अमित निहारी।
उठा सम्हारि कोप उरधारी॥
धनुष चढाइ बान सधानी।
दूसर रथ बैठा अभिमानी॥
निपटहि निकट जाइ तब बीरा।
बोल्यौ कोप बचन गभीरा॥

दोहा

कीन्ह पराक्रम विपुल तुम, महावीर महिपाल।
अब देखहु मम धनुष कर, विक्रम परम कराल॥१४॥

चौपाई

अस कहि दस सर तजि अति जोरा।
हते चारि इषु चारिउ घोरा॥
बहुरि चारि सर हति रथ माही।
कीन्ह निमिष महँ तृन की नाही॥
एक बान सारथि सहारा।
बान एक नृप हृदय बिदारा॥
अस विक्रम करि गर्जि अपारा।
बहुरि सप धुनि कीन्हि उदारा॥
येहि विधि दमन बाहु बल देखी।
साधु कर्म नृप करेउ विसेखी॥
पुनि करि कोप अन्य रथ माहीं।
बंठि बचन बोलेउ तेहि पाहीं॥
अब नृप-तनय देखु बल मोरा।
अस कहि तजेउ बान बहु घोरा॥

तेहि दिसि विदिसि गगन महि माहीं।
पूरि रहे कछु दीसत नाहीं॥

दोहा

पुनि हय गज रथ भटन मह, पूरि रहे सर चंड।
पार ब्रह्म जिमि व्यापेउ, अखिल कोटि ब्रह्मंड॥१५॥

चौपाई

अस सर पंजर दमन निहारा।
बहुरि कटक लखि दुखित अपारा॥
तब करि अमित कोप तेहि काला।
तजे बान बहु परम कराला॥
भूप बान पजर सब काटा।
निज सर सों नभ भूतल पाटा॥
पुनि करि अरुन नयन रन धीरा।
बोल्यौ नृप सन गिरा गभीरा॥
अब प्रहार यक सहौ हमारा।
तुमहु कहावत बीर उदारा॥
जो येहि सर हति भूतल माहीं।
रथ ते डारि देउँ नृप नाहीं॥
करौं प्रतिज्ञा तौ येहि काला।
सुनहु सजग तुम गर्व विसाला॥
संतत वेद विदूर्षहि जेई।
पुनि प्रवीन निजु स्वारथ तेई॥

दोहा

सो अघ लागहु अवसि मोहि, बसहुँ नरक बहु काल।
अस कहि पुनि कोदंड महँ, धार्‌यो बान कराल॥१६॥

चौपाई

भूप हृदय करि लच्छ समाना।
छाड़ेउ बान काल अनुमाना॥
प्रगटत अनल-पुंज मग माहीं।
धायौ अति लाघव नृप पाहीं॥
नृपति प्रताप अग्र सो बाना।
आवत निरखि काल अनुमाना॥
अति लाघव तेहि काटन हेता।
तजे विसिषि बहु क्रोध समेता॥
तिनहि निपाति दमन सर घोरा।
लग्यौ भूप उर मै अति जोरा॥
छिन महं उर बिदारि भा पारा।
परे अवनि नृप खाइ पछारा॥
मुर्छित देखि सूत रथ डारी।
गे रिपुसूदन कटक मझारी॥
सुनु मुनीस तेहि औसर सैना।
भजी पुकारत आरत बैना॥

दोहा

महाराज रिपुदहन जहँ, कोटिन भट समुदाइ।
पहुँचे घायेल वीर तहँ, व्याकुल गात वनाइ॥

सोरठा

सुभुज-तनय तेहि काल, जीति नृपहि ठाढ़े तहाँ।
प्रभुदित हृदय बिसाल, रिपुसूदन मग हेरही॥१०॥

इति श्री पद्म पुराणे पाताल षंडे शेष वात्सायन संवादे
राजपुत्र विजयनो नाम त्रिंविशोऽध्याय:॥२३॥

पुष्कल-विजय

दोहा

सुनि मुनीस तब सत्रुहन, व्याकुल चमू निहारि।
रद सों रद मर्दत भये, क्रोध विपुल उर धारि॥

चौपाई

अधर जीह डसि बारहि बारा।
मीजहिं कर, नहिं देह सभांरा॥
पुनि घायल सूरन सन बानी।
बोलत भयेउ बीर रस सानी॥
केहि बाँध्यो मख-तुरग अनूपा।
हतेउ प्रताप अग्र केहि भूपा॥
बार-बार अस बचन उचारा।
अरुन नयन उर क्रोध अपारा॥
तब सेवक बोले तेहि काला।
बंदि चरन भयभीत विसाला॥
नृपति सुबाहु-तनय रनधीरा।
दमन नाम बल-निधि बर बीरा॥
भूप प्रताप अग्र तेहि जीता।
महा असंक तुरंग कह नीता॥
पुनि जेहि विधि भा समर कराला।
सो संछेप कह्यो तेहि काला॥

दोहा

अस सुनि चमू समेत तब, अति सत्वर मुनिराइ।
अमित कोप उर धारि कै लख्यौ समर-थल आइ॥१॥

चौपाई

घायल करि निरखें तहं कैसे।
भ्रवहिं नील गिरि गेरुहिं जैसे॥
अगिनित तुरंग सहित असवारा।
लखे मृतक बहि स्रोनित धारा॥
अपर सूरगन प्रानति हारे।
पुनि रथ विपुल खंड महि डारे॥
रुधिर मध्य करि देखिय कैसे।
जलधि माहिं पर्वतगन जैसे॥
येहि प्रकार लखि सैन संघारा।
उर मा बाढ़ेउ क्रोध अपारा॥
तब लखि सन्मुख दम नहिं देखा।
कटक-सहित उर निडर विसेखा॥
निज दल तृण समान अनुमाने।
अपर बीर कोउ मनहि न आने॥
तब क्रोधित ह्वै दृग करि लाला।
बोलेउ . रिपुसूदन तेहि काला॥

दोहा

सुनहु सकलभट सजग ह्वै, दमन महा रन धीर।
जो जीतं येहि समर मह, सो सजि आवहु बीर॥२॥

चौपाई

अस सुनि भरत-तनय बल-धामा।
सूर सिरोमनि पुष्कल नामा॥
दमन-दलन-हित आयुध नाना।
सजि सत्वर उर कोप निदाना॥
तब रिपुसूदन प्रति बर बानी।
बोलेउ महा मोद रस खानी॥

नाथ दमन-बध केतिक बाता।
कहा तुच्छ दल जीतहुं जाता॥
जब लगि मैं सजीव तव दासा।
तब लगि को आवहि हय पासा॥
महाराज रघुनाथ प्रभाऊ।
करउं सकल कारज मति भाऊ॥
जो न दमन कह जीतहुं ताता।
बिनु प्रयास अबही रन जाता॥
सुनहु प्रतिज्ञा तौ येहि काला।
तुम कहं दायक मोद विसाला॥

दोहा

रामचन्द्र-पद-विमुख हौइ, भजहि आन सुर जोइ।
जो न सुभुज-सुत जीतहूं, लगहु पाप महं सोइ॥३॥

चौपाई

पुनि जे जठर जननि गृह त्यागी।
भ्रमहि मोह बस तीरथ लागी॥
सो अघ लगहु अवसि प्रभु मोहीं।
जो न आजु रन जीतहूँ ओहीं॥
सत्य बचन सुनि रिपु-कुल-हारी।
भयो हृदय महं विपुल सुखारी॥
पुनि अनुसासन दे तेहि काला।
पठये पुष्कल सदल विसाला॥
प्रबल चमू जुत सुनि मुनिराई।
चले दमन पर कोपि बनाई॥
उहां सुबाहु-तनय दल देखी।
आवा पुष्कल निकट विसेखी॥

मिले परस्पर रन रथ माहीं।
सोभा विपुल बढ़ी मुनि ताहीं॥
पुनि रन-मंडल सोहहिं कैसे।
सुनासीर वृत्तासुर जैसे॥

दोहा

बोले पुष्कल बचन तब, सुनहु महीप कुमार।
मै आवा रन के विषै, करहु सुदल संहार॥४॥

चौपाई

मैं तुम्हरे जीतन-हित आजू।
कीन्हि प्रतिज्ञा सत्य समाजू॥
भरत-तनय मम पुष्कल नाऊं।
जीतहुं तुमहिं अवसि एहि ठाऊँ॥
मन बच कर्म राम कर दासा।
सत्रु संहारे बिनहिं प्रयासा॥
अब तुम सजग होउ सब काला।
सहौ बान मम परम कराला॥
सुनि सगर्व पुष्कल कै बानी।
बोले दमन महा अभिमानी॥
नृपति सुबाहु-तनय मम जानो।
नाम दमन परसिद्ध बखानो॥
जनक-भक्त मैं मन क्रम बानी।
पुनि पकर्‌यो तुव मष-हय जानी॥
तुम जो कहा कोप हम पाहीं।
करि हौ विजय आजु रन माहीं॥

दोहा

यह सुनि हमरे हृदय महं, सपनेउ संक न होइ।
करिहैं हरि जापर कृपा, जीतइ रन महं सोइ॥५॥

चौपाई

अस कहि तानि स्रवन लगि चापा।
छाड़ेउ बिपुल बान करि दापा॥
ते सर छाई रहे नभ माहीं।
छिप्यौ धाम, रवि दीसत नाहीं॥
पुनि गज निकर परे जुग खंडा।
लगे दमन के बान प्रचंडा॥
स्रवत रुधिर ते सोहत कैसे।
कज्जल गिरि बहि गेरुहि जैसे॥
बहुरि विपुल भट हय गज जाना।
भये भंग रन लागत बाना॥
कीन्ह बिहाल सकल कटकाई।
दमन अपर सर हित मुनिराई॥
तब पुष्कल विलोकि सर छाया।
पुनि निज दल लखि दुखित निकाया॥
तब सरोष होइ धनुष मझारी।
करि आचमन अनल सर धारी॥

छंद

करि आचमन विधिवत धनुष धरि, अनल बान भयंकरा।
पुनि स्रवन लगि संधानि छाड़, जो गगन सर पंजरा॥
सो उठी वह्नि प्रचंड मानहु, संभु दृग तीसर खुला।
मुनि सुनहु तब नृप तनय दल भा, दग्ध डोलहि व्याकुला॥

दोहा

जरे जराउ विपुल रथ, पुनि अभरण समुदाइ।
अति प्रचंड तेहि रन बिषै, बही हेम सरिजाइ॥

सोरठा

छत्र रतन मनि जाल, सुंदर मानिक आदि है।
त्यों जल जीव रसाल, असि सरिता प्रगटी तहाँ ॥६॥

चौपाई

पुनि हय केस दग्ध तह डोल।
जरत बीर बहु आरत बोल॥
विपुल नाग सिविकादिक जाना।
भये भस्म मुनि सुनहु निदाना॥
छिन महं कटक बान समुदाई।
कीन्ह दग्ध कछु बरनि न जाई॥
जिमि लंका जारी हनुमाना।
तिमि प्रगटी दल बह्नि निदाना॥
तेहि औसर लखि चमू बिहाला।
दमन कोप उर कीन्ह बिसाला॥
अनल–सांति-हित हृदय बिचारी।
वरुन-अस्त्र धरि धनुष मझारी॥
सत्वर स्त्रुति प्रजंत लगि ताना।
पुनि परित्याग कीन्ह सो बाना॥
उठे सनीर मेघ तेहि काला।
लागे बरसन गरजि विसाला॥

दोहा

अनल बुझाइ निमिष मैं, निज दल की, मुनिनाथ।
पुनि पुष्कल के कटक महं, बरषेउ अगनित पाथ॥७॥

चौपाई

निपट बिहाल कटक तब भयेऊ।
सब के उर ते धीरज गयेऊ॥

बही सरित जल उमगि अपारा।
महा भयानक देखिय धारा।।
बहे जाहिं रथ सहित तुरंगा।
पुनि वितुंड व्याकुल सब अंगा।।
बिपुल बीर बूड़त उछलाता।
बहे जाहि सब आकुल गाता।।
अमित सीस प्रगट्यौ तेहि काला।
थरथराहि सब कटक विहाला।।
उपल वृष्टि पुनि भई अपारा।
स्रवहिं सूर करते हथियारा।।
सूझि न परै पंथ रन माहीं।
सब विधि कटक विकल, सक नाहीं।।
तेहि अवसर पुष्कल बर बीरा।
निरख्यौ निज दल परम अधीरा।।

दोहा

उपजेउ क्रोध अपार उर, भये विलोचन लाल।
मरुत अस्त्र धरि धनुष तब, छाड़यौ परम कृपाल।।८।।

चौपाई

प्रगटेउ प्रबल पवन तेहि काला।
गये निमिष मैं उड़ि घन जाला।।
बहुरि सुबाहु तनय दल माहीं।
चल्यौ प्रचंड मरुत, मिति नाहीं।।
गज ऊपर गज उड़ि-उड़ि परहीं।
पुनि रथ गन महि ते उच्छरहीं।।
तुरंग समूह सहित असवारा।
भिरहिं परस्पर कौतुक भारा।।
छुटे केस भट विचरहिं कैसे।
भूत बेताल प्रेत गन जैसे।।

मरुत विवस अस कटक निहारी।
दमन कोप तब उर अति भारी॥
पुनि पर्वत सर चंड चलावा।
तेहि छन सैल वृंद झरि छावा॥
निज दल आस - पास गिरि कोटा।
रच्यौ, न आव मरुत जेहि ओटा॥

दोहा

पुष्कल कटक मझार तब, परबत परे अपार।
भये बिकल गज तुरंग भट, आरत बचन उचार॥६॥

चौपाई

तब पुष्कल सत्वर तेहि काला।
छाड़्यौ पवि सर परम कराला॥
प्रगट बज्र होइ गिरि समुदाई।
किये तबहि तिल सरिस बनाई॥
दमन हृदय जुत लागउ जाई।
पर्‌यो धरनि रथ तुरत बिहाई॥
अति व्याकुल नहि देह सँभारा।
हृदय बिध्यौ सर कठिन अपारा॥
तब मातुल सत्वर रथ घाली।
कोस मात्र गा आतुर चाली॥
निरखि दमन बध व्याकुल सैना।
भजी पुकारत आरत बैना॥
पहुंचे नगर वीर नृप देखे।
रूधिर स्रवत तन कंप विसेख॥
पुष्कल इहाँ जीति रन माही।
ठाढ़े हष, सोक उर नाहीं॥

दोहा

भजी जात निरखहिं चमू. अस्त्र चलावत नाहिं ।
श्री रघुवर के बचन बर, सुमिरन करि मन माहिं ।।
संख निसान अपार मुनि, बजत भये तेहि काल ।
साधु-साधु सब कटक महँ, बोलेउ बचन रसाल ।।

सोरठा

पुष्कल विजय निहारि, रिपुसूदन प्रमुदित भये ।
पुनि बर बीर बिचारि, बारंबार सराहेऊ ।।१०।।

इति श्री पद्म पुराणे, पाताल खंडे, शेषवात्सायन संवादे
पुष्कल विजयनोनाम चतुर्विशोऽध्यायः ।।२४।।

सुबाहु-सैन-समागम

दोहा

सुनु मुनि, उहाँ सुबाहु लखि, निज दल खंडित गात ।
महा विकल पुनि रूधिर के, औघ विपुल तन जात ।।

चौपाई

उर मैं सोच कीन्ह तब भारी ।
पुनि सुभटन सन गिरा उचारी ।।
कहौ दमन कर सकल प्रसगा ।
केहि विधि हर्यौ तुरंग चतुरंगा ।।
केतिक कटक रिपुन के साथा ।
कहौ बेगि सब कर को नाथा ।।
सूर सिरोमनि मम सुत बीरा ।
बध्यौ समर अस को रनधीरा ।।

जीतहुँ ताहि येक छन माहीं।
बरनहु बेगि सकल मो पाहीं॥
अस सुनि भूप - बचन जुत - क्रोधा।
बोले रुचिर बसन धरि जोधा॥
प्रथमहिं तब सुत दमन भुवाला।
मृगया हित गय विपुनि बिसाला॥
तहाँ तुरंग यक निरखि सुहावा।
कनक - पत्र - युत अति छवि छावा॥

दोहा

बाँचि पत्र करि कोप उर, नगर दीन्ह पहुंचाइ।
तृन सम गुनि रघुनाथ कह, ठाढ़ भये बनाइ॥१॥

चौपाई

तब लगि येक नृपति हय पाछे।
आवा कछुक सैन युत आछे॥
भयो समर तेहि सग अपारा।
अति कराल नहिं जाइ निहारा॥
दमन तासु उर हति सर नाना।
मुछित कीन्ह भूप बलवाना॥
विजय पाइ रन - मंडप माहीं।
ठाढ़ दमन हृदय हरषाहीं॥
तेहि अवसर रिपुसूदन राजा।
आयेउ हयहित सहित समाजा॥
अमित सैन सग, बरनि न जाई।
अस्त्र - सस्त्र सब सजे बनाई॥
पुष्कल नाम बीर बलवाना।
पठवा तिन करि कोप निदाना॥
तेहि सन भयो जुद्ध अति घोरा।
अगिनित बान चले द्वौ ओरा॥

दोहा

लड़हिं परस्पर विजय हित, जीति सकं नहिं कोइ ।
तदपि सुनहु महिपाल हम, पुष्कल अति बल जोइ ॥२॥

चौपाई

बान प्रचंड येक तेहि छडा ।
तब सुत चहै करौं मैं खंडा ॥
तब लगि आनि हृदय सो लागा ।
मूछित भये दमन रन त्यागा ॥
मातुल निरखि विकल अति भारो ।
भागि गयौ स्यदन लै डारी ॥
भजी सैन तब बिकल तुम्हारी ।
रही न काहुहि देह संभारी ॥
अस सुनि भूप थकित होउ गयेऊ ।
अमित क्रोध पुनि उर महँ भयेऊ ॥
जिमि राका ससि लखि मुनि नाथा ।
उमगहि अति समुद्र कर पाथा ॥
बढ़ी अनल जिमि आहुति पाई ।
तिमि सुबाहु उर रिस अधिकाई ॥
फरकन लगे अधर तेहि काला ।
चढ़ी भौंह भय लोचन लाला ॥

दोहा

मर्दि दसन सों दसन नृप, अधर चापि करि कोह ।
सेनापति सन बचन तब, बोलेउ करि सुत मोह ॥३॥

चौपाई

साजहु बेगि सकल कटकाई ।
देखहुं रामचन्द्र-दल जाई ॥

जेहि ने मम सुत मूर्छित कीन्हा ।
पुनि सब कटकहिं अति दुख दीन्हा ।।
आजु बधौ तेहि हति सर घोरा ।
जदपि होहि सिव ताकी ओरा ।।
चमू-नाथ सुनि भूपति-बचना ।
तुरतहि रची जाइ सोइ रचना ।।
सब विधि सैन साजि चतुरगा ।
पुनि सजि अस्त्र-सस्त्र निज अंगा ।
भूप समीप आइ हरषाई ।।
बोलेउ बचन चरन सिर नाई ।
महाराज सेना सजि आई ।
चतुरंगिनि सब भाँति सुहाई ।।
कोटिन सत्रु सघारनहारी ।
अति कराल कालहु पर भारो ।।

दोहा

सुनि सब बचन विलोकि दल, पुनि सुत सुरति सम्हारि ।
अस्त्र-सस्त्र सजि समर लगि, क्रोध अमित उर धारि ।।४।।

चौपाई

रथ अनूप चढ़ि सुनु मुनि राई ।
चले भूप जह अरि समुदाई ।।
अति उन्मत्त वितुंड बरूथा ।
चलत भये पाछे बहु जूथा ।।
पुनि तुरंग स्यंदन समुदाई ।
पदचर आयुध साजि बनाई ।।
रिपुसूदन-दल जीतन हेता ।
चले सकल उर क्रोध समेता ।।

थरथराइ धरनी तेहि काला।
नमित भयेउ अहिपति कर भाला ॥
उठीं रेनु कछु बरनि न जाई।
दिनकर रथ नहिं परं लखाई ॥
सिला सृंग हय टाप प्रहारी।
भये रेनु इव बाट मझारी ॥
निजु-निजु बल सब उच्चारत जाहीं।
समर लालसा अति मन माहीं ॥

दोहा

तेहि औसर चढ़ि रूचिर रथ, भूप-बधु बल-धाम।
अस्त्र-सस्त्र सजि कोपि उर, चल्यौ कोपि संग्राम ॥५॥

चौपाई

नाम सुकेत सकल जग जाना।
गदा युद्ध मैं निपुन निदाना ॥
भूप-तनय चित्रांग सुनामा।
महा प्रवीन सकल सग्रामा ॥
चढ़ि सुंदर रथ आयुध साजी।
कोपि विजय हित हांकेउ बाजी ॥
तासु अनुज विचित्र अस नामा।
सकल समर विद्या कर धामा ॥
नाना आयुध सजि निजु अंगा।
चढ़ि विचित्र रथ, लै दल संगा ॥
चल्यो युद्ध कहं कोपि बनाई।
उर मैं बंधु-सोक अधिकाई ॥
अवर अनेक बीर बलवाना।
समर मध्य सब भांति सुजाना ॥
सजि-सजि आयुध कोपि अपारा।
समर हेत सब ही पगु धारा ॥

दोहा

अमित जुझाऊ दुंदुभी, बीन प्रणव समुदाइ।
गोमुखादि बाजत भये, पर न कछू सुनाइ ॥६॥

चौपाई

येहि विधि पहुंचे समर नृपाला।
पर्‌यो दमन जहं निपट बिहाला ॥
सर पीड़ित निरखा तेहि काला।
पुनि सब बसन बिलोक्यो लाला ॥
त्यागि तुरत रथ जाइ समीपा।
बहु विधि करुना कीन्ह महीपा ॥
सर निकारि धरि सीस उछंगा।
पुनि-पुनि निरखहिं घायल अंगा ॥
निज दुकूल सन मारुत करई।
जल सौं बदन मज्जि स्रम हरई ॥
बार-बार तन परसहि भूपा।
करहि विलाप निरखि तेहि रूपा ॥
तेहि औसर सब बिथा बिहाई।
जाग्यौ दमन सुनहु मुनि राई ॥
बोल्यो बचन वीर रस साने।
निपट नजीक पितहिं बिनु जाने ॥

दोहा

रे मातुल कोदंड मम, कहौं कहाँ येहि काल।
भाजि गयो पुष्कल कहां, सहे न बान कराल ॥७॥

चौपाई

सुनि अस सुत के बचन सुहाये।
परम हर्ष जुत हृदय लगाये ॥

दमन निरखि निज पितु सकुचाई।
परे चरन उर भक्ति बढ़ाई॥
तब महीप बहु भांति सराही।
भुज गहि रथहि चढ़ायौ ताही॥
चमू नाथ मन पुनि बर बानी।
बोलत भये बीर रस सानी॥
कौंच व्यूह अब रचहु बनाई।
रिपुसूदन दल सकै न आई॥
सब विधि अगम रिपुन कहं जोई।
रचहु बेगि सनापति सोई॥
सुनु मुनीस अस आयेसु पाई।
रच्यौ व्यूह सनेस बनाई॥
सहसा रिपु गन सकहिं न आई।
अति दुर्गम सब विधि कठिनाई॥

छंद

अति कठिन दुर्गम व्यूह विरच्यौ, सुनहु सूत कथा भलो।
मुख महा सूर सुकेत थाप्यौ, पूच्छ भूप अतुल बलो॥
बलमंड दमन विचित्र अति, रनधोर पक्षन मे रच्यो।
चतुरग कटक अपार 'मधुसूदन' उदर भीतर सच्यौ॥

दोहा

येहि प्रकार रचि व्यूह वर, नृपहि सुनायो जाइ।
अति विचित्र रचना निरखि, हर्षउ हृदय बनाइ॥८॥

इति श्री पद्म पुराणे पाताल षडे शेष वात्सायन संवादे
सुबाहु सैन समागमनो नाम पंचविंशोऽध्यायः॥२५॥

लक्ष्मीनिधि-सुकेत-गदा-युद्ध

दोहा

महाराज श्री सत्रुहन, तेहि अवसर मुनिराइ।
अति प्रचड चतुरंग दल, सन्मुख लख्यौ बनाइ॥

चौपाई

तब सुमत सन बोलेउ बानी।
अति गंभीर नीति रस सानी॥
सन्मुख केहि महीप कर ग्रामा।
कहौ बुझाइ मोहि यह नामा॥
पुनि मष-तुरग कहाँ येहि काला।
सन्मुख केहि कर कटक विसाला॥
जलधि समान आव चतुरगा।
समर साजु साजिय सब अगा॥
कहहु बुझाइ सकल मोहि येहा।
मुनतहि नास होइ सदेहा॥
जो रिपु-दल यह आवत होई।
तौ उपाय मैं बिरचौं सोई॥
सत्वर निज दल देउ पठाई।
जीतहि बेगि सत्रु कटकाई॥
अस सुनि बचन सुमत सुजाना।
बोल्यो सारद बुद्धि निधाना॥

दोहा

सुनहु महा महिपाल मनि, चक्रांकित पुर येह।
येहि मैं बसि जे नारि नर, ते सब अंकित देह॥१॥

चौपाई

ताते चक्रांकितपुर नामा ।
अति पुनीत सुंदर सुखधामा ।।
जे येहि पुरबासी नर-नारो ।
अति पावन हरि पद अधिकारी ।।
नृपति सुबाहु सदा प्रतिपाला ।
वेद सुमृति पथ सोधि बिसाला ।।
तुव सन्सुख परिवार समेता ।
आवहिं लखहु समर के हेता ।।
सपनेउ परतिय हेरत नाहीं ।
निजु तट तिय गमनहि रितु माहीं ।।
सतत हरि जम सुनहि न आना ।
करहि कर्म जे वेद बखाना ।।
श्रीपति परिचर्या मनु लाई ।
करहि सदा सब काम बिहाई ।।
सष्ठम अस प्रजा सों लेई ।
अपर अन्न पर चित्त न देई ।।

दोहा

भजहि निरंतर प्रेम जुत, हरि भक्तन सब काल ।
पुनि श्रीपति-पद करहिं रति, जिमि अलि कमल सनाल ।।२।।

चौपाई

छत्रि-धम महं निपुन बनाई ।
अपर धर्म नहिं कबहुं सुहाई ।।
यह अपार दल जलधि समाना ।
याही कर जानहु नहिं आना ।।
सुत को मुर्छित सुनि सग्रामा ।
समर हेतु आवा बलधामा ।।

देखहु सैन साजि चतुरंगा।
रोष सोक व्यापित सब अंगा॥
आवा तुम कहँ जीतन हेता।
अनुज तनय परिवार समेता॥
महाराज तुम्हरेउ दल माहीं।
अगनित महा रथी हैं याहीं॥
तिनके नाम कहौं समुझाई।
पठवहु रिपु कहं जीतहिं जाई॥
प्रथमहि लक्ष्मीनिधि कह ताता।
पठवहु नृप कहँ जीतहिं जाता॥

दोहा

पुष्कल रिपु तापन नृपति, नोल रत्न वर वोर।
पुनि उग्रास महारथी, अरि मर्दन रणधीर॥३॥

चौपाई

ए सब क्रौंच-व्यूह सहारा।
विधिवत जानहु सुभट जुझारा॥
सुनि सुमंत की गिरा सुहाई।
रामानुज निज सुभट बोलाई॥
बोले बचन निरखि सब ओरा।
सुनहु सकल अव आयसु मोरा॥
क्रौंच व्यूह रचि सुभुज भुवाला।
ठाढ़ो रन मह कोप कराला॥
निज बल सों जो जीत याही।
विजय विभूति आजु अति ताही॥
सो सजि अस्त्र-सस्त्र बहु काला।
निपट निडर होइ हरख विसाला॥

मम कर मैं सुंदर यह बीरा।
लेइ आइ अस को रनधीरा॥
अस सुनि लक्ष्मीनिधि हरषाई।
व्यूह संघारन-हित मुनिराई॥

सोरठा

सजि आयुध तेहि काल, निकट जाइ पद वंदि पुनि।
बीरा लीन्ह रसाल, क्रौंच-व्यूह संहार हित॥४॥

चौपाई

प्रथमहिं परसराम पह जाई।
व्यूह-विभेदन-विद्या पाई॥
कटक संग लै कोप अपारा।
तुरतहि समर-हेत पगु धारा॥
तिन पाछे पुष्कल बर बीरा।
चले कोपि उर धरि धनु तीरा॥
पुनि रिपु ताप महीप रिसाई।
चला साजि निज कटक बनाई॥
नील रत्न उग्रास भुवाला।
बीर विमर्दन आदि नृपाला॥
रिपु सूदन अनुसासन पाई।
चले सकल सेना सजवाई॥
सब की रच्छा हेतु मुनीसा।
पाछे रामानुज अवनीसा॥
रथ अनूप चढ़ि कटक समेता।
चले कोपि उर संजुग हेता॥

दोहा

सुनहु सूत द्वउ कटक मह, चली करन संग्राम।
प्रलयकाल के जलधि जिमि, बोरत आवहिं धाम॥५॥

चौपाई

गोमुख भेरि निसान अपारा।
विपुल संख धुनि होइ उदारा॥
बाजहि बाजन अमित जुझाऊ।
उभय ओर कछु सुनहि न काऊ॥
हींसहि तुरंग सकल तेहि काला।
पुनि गज गर्जहि विपुल कराला॥
रथ समूह रव सुनि मुनिराई।
कहत न बन गिरा ललचाई॥
मारु काटु धरु दुहुँ दल माही।
सुभट पुकारहि गजहि ताहीं॥
अस कहि वीर भिरे करि कोपा।
मानहु अबहि करहि जग लोपा॥
क्रौंच-व्यूह मुख सुभट सुकेता।
ठाढ़े गर्जहि क्रोध समेता॥
तेहि सन लक्ष्मीनिधि बर बीरा।
बोले बचन परम गभीरा॥

दोहा

जनक-राज सुत गुनहु मोहि, लक्ष्मीनिधि अस नाम।
महा सुभट पुनि काल तुव, कुसल सकल सग्राम॥६॥

चौपाई

रावणादि निसिचर मद हारी।
रामचन्द्र रघुकुल सुखकारी॥
तिनकर तुरंग वेगि परिहरहू।
पुनि रिपुसूदन पद उर धरहू॥
नाहित तोहि आजु जम लोका।
पठवहुं तुव कुल करहुं ससोका॥

अस सुनि बचन क्रोध उर आनी।
पुनि सत्वर निज धनु संधानी।।
लक्ष्मीनिधि पर बान अपारा।
बरसे जथा मेघ की धारा।।
ते सर नभ भूतल दिसि माहीं।
छाये सकल बीर घबराहीं।।
लक्ष्मीनिधि लखि कटक बिहाला।
सगुन कीन्ह कोदंड कराला।।
तानि स्रवन लगि बहु इषु चंडा।
छाड़ि कीन्ह सर पंजर खडा।।

दोहा

पुनि छाड़्यौ करि कोप उर, सर कराल तेहि काल।
दलि सुकेत हिय बेगि तिन, कीन्हो परम बिसाल।।७।।

चौपाई

स्रोनित भरे बान ते जाई।
परे पार भूतल छबि पाई।।
सुभुज-बन्धु सहि बान कराला।
पुनि कीन्हेउ उर कोप बिसाला।।
अति सत्वर सर बीस प्रचंडा।
छाड़त भये खैंचि कोदडा।।
लक्ष्मीनिधि उर माहि समाने।
तब बहु कोप हृदय तिन आने।।
बान परस्पर छाड़हि दोऊ।
देखहिं उभय ओर सब कोऊ।।
खंड-खड होइ रहे सरीरा।
रूधिर स्रवहिं, कछु गनहिं न पीरा।।

रन-मंडल महं सोहहिं कैसे।
फूले दुइ पलास तरु जैसे॥
सूर सिरोमनि द्वै भट भारी।
छाड़हिं बान प्रचारि-प्रचारी॥

दोहा

कोपि बाण कोटिन तजैं, अति लाघव मुनिराइ।
परत भूमि भट देखिये, लेत न परै लखाइ॥८॥

चौपाई

कुंडल सरिस भये कोदंडा।
बरसहिं सर समूह अति चंडा॥
जिमि पावस के जलद अपारा।
बरषैं प्रथम अमित जल-धारा॥
सुभट सीस मेदिनि मह छाए।
कुंडल मुकुट सहित छवि पाए॥
धनुष वाण युत अगनित रूंडा।
परे अवनि तल देखिय खंडा॥
हय गज रथ अनेक चहुं ओरा।
भए खंड लागे सर घोरा॥
अस्त्र-सस्त्र करि कोप अपारा।
महावीर द्वौ करहिं प्रहारा॥
होइ समर सम बरनि न जाई।
सुर नर मुनि मन बिस्मैदाई॥
कोटिन सूर परे रन माही।
सर पंजर बिनु दीसहिं नाहीं॥

दोहा

सूर सिरोमणि जनक-सुत, धनु चढ़ाइ तेहि काल।
अति प्रचंड सर आठ तब, छाड़ परम कृपाल॥९॥

चौपाई

हते चारि सर चारिउ घोरा।
एक बान ध्वज दलि वर जोरा।।
पुनि इषु येक सारथी सीसा।
खंडन करि महि डारि मुनीसा।।
एक बान काटेउ कोदंडा।
हन्यो एक उर माहि प्रचंडा।।
सुभुज-बधु अस विक्रम देखी।
मन मह विस्मै भयो बिसेखी।।
पुनि धनु रथ सारथी तुरगा।
कटक सहित लखि सब कर भगा।।
फिरि रथ चढ़ा न मन खिसियाना।
महाबली करि कोप निदाना।।
तब लीन्ही कर गदा कराला।
गरुई सुंदर परम कराला।।
उहाँ जनक-सुत निरखि सुकेता।
धावत आवइ गदा समेता।।

दोहा

तुरत त्यागि रथ, बिरथ लखि, पुनि उर कोप अपार।
आये निकट सुकेत के, धरि कर गदा हथ्यार।।१०।।

चौपाई

सकल धातु बिरचित अति भारी।
बहु बिचित्र मणि हेम सम्हारी।।
तब सुकेत के हृदय मझारा।
मारी गदा बज्र अनुसारा।।
सो प्रहार लागत उर माहीं।
महाबली कछु कंपेउ नाहीं।।

जिमि उनमत्त बितुंड सरीरा।
हने बाल तिमि नहिं अंग पीरा॥
तब लक्ष्मीनिधि सन बर बानी।
बोल्यो सुभुज-बंधु भट मानी॥
सहौ प्रहार येक अब मोरा।
तुमहु कहावत भट बर जोरा॥
अस कहि गदा लिलाट मझारी।
कोपि हृदय अति सत्वर मारी॥
भयो मग्न सिर लगत प्रहारा।
बहेउ बिपुल स्रोनित कै धारा॥

दोहा

तब लक्ष्मीनिधि काल सम, हनी गदा सिर मध्यि।
सुभुजबधु पुनि कध में, मारत भयो प्रसिद्धि॥११॥

चौपाई

धर्म-समर दोऊ भट करहीं।
हनहिं परस्पर बल उच्चरहीं॥
निज-निज विजय-हेतु मुनिनाथा।
मारहिं गदा सीस उर हाथा॥
पुनि इत उत ताकत द्वौ बीरा।
घात पाइ हनि गदा गभीरा॥
हारि जीत मानत नहि दोऊ।
निरखहिं उभय कटक सब कोऊ॥
सिर ललाट उर भुज सब गाता।
रुधिर औघ बहु प्रगटत जाता॥
तब लक्ष्मीनिधि कोप अपारा।
हनी गदा तेहि हृदय मझारा॥

सहि प्रहार रिपु सन्मुख देखी।
सुभुज-बंधु करि क्रोध विसेखी॥
परम कराल गदा धरि हाथा।
आइ प्रहार कीन्ह तेहि माथा॥
लक्ष्मीनिधि सो गहि मुनिराई।
पुनि मारा रिपु हृदय भ्रमाई॥

दोहा

गदा रहित लखि आपु को, भूप-बंधु खिसिआइ।
बाहु युद्ध तप कोपि उर, भिर्‌यो महाभट जाइ॥१२॥

चौपाई

लक्ष्मीनिधि तब कुलिस समाना।
हन्यौ मुष्टि उर कोप निदाना॥
पुनि सुकेत मुष्टिक अति घोरा।
हन्यो जनक-सुत सिर करि जोरा॥
करहिं परस्पर मुष्टि प्रहारा।
पवि समान द्वौ वीर जुझारा॥
पुनि-पुनि ठोंकहिं ताल कराला।
झपटि लपटि करि कोप बिसाला॥
रद सों रद, कर सों कर मारे।
केस पकरि पुनि नखन बिदारे॥
येहि विधि रन-मंडल द्वौ जोधा।
लरहिं विजय-हित करि-करि क्रोधा॥
तुमल राम हरसन संग्रामा।
निरखहिं अमर गगन युत-भामा॥
तब सुकेतु भुज गहि मुनि राई।
लक्ष्मीनिधि कहं विपुल भ्रमाई॥

दोहा

पुनि पटकेउ भूतल विषै, महा क्रोध उर धारि।
अति लाघव उठि जनक-सुत, पकरी बाहु प्रचारि ॥१३॥

चौपाई

कोप सहित सत गुनो भ्रमावा।
पुनि गज ऊपर फेकि चलावा ॥
एक निमिष मूर्छा तेहि आई।
फिरि सचेत भा अति रिस छाई ॥
निकट जाइ सत्वर तेहि काला।
गहि लक्ष्मी-निधि बाहु बिसाला ॥
विपुल भ्रमाइ गगन लै गयेऊ।
मल्ल युद्ध तह ठानत भयेऊ ॥
पद मैं पद, कर मैं कर मेली।
उर सों उर, सिर सों सिर ठेली ॥
दसननि डसहि, मुष्टिका मारे।
केस पकरि हनि बहुरि प्रचारे ॥
येहि बिधि लरहि परस्पर दोऊ।
हारि जीत माने नहि कोऊ ॥
थकित अग होइ तव दोउ बीरा।
गिरे अवनि मूछित रनधीरा ॥

दोहा

उभय कटक के सुभट सब, लखि अस समर कराल।
धन्य-धन्य द्वौ वीर सन, बोले बचन रसाल ॥१४॥

इति श्री पद्म पुराणे, पाताल षडे शेष वात्सायन संवादे
लक्ष्मीनिधि सुकेतस्य गदा युद्ध वणनो नाम
षष्ठविंशोऽध्याय: ॥२६॥

चित्रांग-बध

दोहा

सुनहु सूत चित्रांग भट, क्रौंच कंठ जो सोह।
तेहि रिपु सूदन कटक सब, मथ्यौ हृदय करि कोह॥

चौपाई

जिमि हरि धरि बाराह सरीरा।
मथ्यौ समुद्र परम गंभीरा॥
तिमि चित्रांग सकल कटकाई।
मथत भयो पुनि-पुनि मुनिराई॥
सिंहनाद करि बारहि बारा।
धनुष चढ़ाइ कोप उर धारा॥
कोटिन सर तीछन अति घोरा।
बरसै कटक माहिं सब ओरा॥
खंड-खंड होइ बीर बरूथा।
अगनित स्यंदन हय गज जूथा॥
परे अवनि तल, लागहिं बाना।
पुनि भट-सीस परे तहं नाना॥
चापे अधर किरीट समेता।
रूधिर-औघ जुत अति छबि देता॥
अस संग्राम निरखि तेहि काला।
आयेउ पुष्कल कोपि कराला॥

दोहा

चामीकर मणिमय रुचिर, रिपु दल-दलन कठोर।
अस कोदंड चढ़ाइ कर, करत सिंहवत घोर॥१॥

चौपाई

सम स्वरूप सुंदर द्वौ बीरा।
धरे चाप सर कटि तूनीरा।।
रन-मडल द्वौ सोहहि कैसे।
प्रथम संभु-सुत तारक जैसे।।
अति लाघव करि धनु टंकोरा।
भरत-तनय छाड़े सर धारा।।
अवनि अकास दिसि माहीं।
बान विना कछु दीसहि नाहीं।।
लाघव खैंचत धरत चलावत।
उभय ओर को मम न पावत।।
कुंडलीक कोदंड प्रचंडा।
भये बीर पुनि देखिय खंडा।।
तब पुष्कल रिसाइ सत बाना।
छाड़े उर करि लच्छ समाना।।

दोहा

आवत देखि सुबाहु सुत, अति लाघव सर मारि।
एक निमिस मह अवनि तल, तिल समान करि डारि।।२।।

चौपाई

पुनि उर मध्य हते सर नाना।
परम कराल ब्याल अनुमाना।।
भरत-तनय तब कोप निदाना।
हन्यो तासु रथ भ्रामिक बाना।।
तुरग सूत जुत अवनि विहाई।
गयो गगन रथ भ्रमहि बनाई।।
उभय धरी अस अद्भुत लीला।
भई ब्योम सुर मोहन; सोला।।

बिपुल जतन करि अवनि उतारा।
होइ न थिर भा कौतुक भारा।।
सावधान होइ सन्मुख आई।
बोल्यो बचन हृदय रिस छाई।।
धन्य-धन्य पुष्कल बल-बीरा।
साधु कर्म तुम कृत मतिधीरा।।
सकल सूर रन-मडल माहीं।
तुव विक्रम लखि अतुल सिहाहीं।।

दोहा

तुरंग सारथी सहित रथ, दीन्हों गगन उड़ाइ।
देखहु विक्रम मोर अब, होहु सचेत बनाइ।।३।।

चौपाई

अब आकास मध्य तुम जाहू।
पूजहु अमर, लहौ मन लाहू।।
अस कहि पुनि चढ़ाइ कोदंडा।
छाड़्यौ भ्रामिक बान प्रचंडा।।
प्रेरित मंत्र लाग सो बाना।
तुरतहि स्यंदन गगन उड़ाना।।
सूत तुरंग सहित नभ माहीं।
भ्रमहि चंग इव थिरता नाहीं।।
बिपुल कष्ट करि थिर रथ कीन्हा।
तब चित्रांग अवर सर दीन्हा।।
पुनि पुष्कल रथ भ्रमौ अपारा।
थिर न होइ भा कौतुक भारा।।
अस अद्भुत तुव विक्रम देखी।
भूपति विस्मित भयेउ विसेखी।।

सुनु मुनि पुष्कल सुभट सुजाना।
करि बहु जतन अवनि रथ आना॥

सोरठा

पुनि सक्रोध कोदंड, तानि चलायो चंड सर।
कीन्हो रथ तेहि खंड, सहित सारथी तुरंग सब॥४॥

चौपाई

दूसर रथ बैठा सो जाई।
पुष्कल लाघव खंडि बनाई॥
पुनि तीसर स्यदन बलवाना।
चढ़न लाग उर कोप निदाना॥
भरत तनय हृति तीछन बाना।
कीन्हो छिन महं तिल अनुमाना॥
पुनि चौथे रथ होइ असवारा।
आवा सन्मुख गर्जि अपारा॥
तब लगि पुष्कल हृति सर चडा।
डारि दीन्ह भूतल करि खंडा॥
येहि बिधि दसरथ संयुग माहीं।
सुनु मुनि कीन्हेउ तिल की नाहीं॥
बैठि अपर रथ फिरि बल बीरा।
सन्मुख आइ गर्जि गम्भीरा॥
पाँच बान करि कोप अपारा।
दले भरत-सुत हृदय मझारा॥

छंद

तब भरत-सुत उर में दले, सर पाँच परम भयंकरा।
दारुण विथा प्रगटी हृदय, मुनि राज तब अति रिस भरा॥
कोदंड चंड सम्हारि दस सर, सुभुज-सुत के हिय हने।
तन बेधि भूतल मैं परे, खर धार श्रोनित सों सने॥

दोहा

हेम पच्छ सुंदर महा, परत अधो मुख जाइ।
जिमि मिथ्याबादी पितर, परहिं नरक पछिताँइ ॥५॥

चौपाई

तब सुबाहुं - सुत करि बहु दाया।
पाँच बान पुनि धारेउ चाया ॥
तानि स्रवन लगि हृदय मझारा।
हने बेगि लाघव भय पारा ॥
सुभट सिरोमनि पुष्कल जोधा।
सहि प्रहार करि दारुन क्रोधा ॥
अनल समान बान यक लीन्हा।
धनुष मध्य धरि पुनि रन कीन्हा ॥
अब महीप सुत सुनु प्रन मोरा।
बधौ तोहि येहि सायक घोरा ॥
यह सुनि सजग होहु सब ओरा।
तुमहु कहावत भट बर - जोरा ॥
विगत प्रान यहि सायक तोहीं।
करों न तौ सुनु दूषन मोही ॥
पावन पतिब्रता बर नारो।
संतत निज पति आयसुकारी ॥

दोहा

ता कहं दूषण - हार जं, लहैं अंत गति जोइ।
जो न हतौ येहि बाण अब, होहु लोक मोहि सोइ ॥६॥

चौपाई

अस सुनि सुभुज - तनय बर वीरा।
बोल्यो बिहसि बचन गम्भीरा ॥

सुभट सिरोमनि तुम बलवाना।
विक्रम अमित हृदय मैं जाना ॥
अवसि येक सर हतिहौ प्राना।
यह सुनि मैं कछु भय नहि आना ॥
सुर नर मुनि जड़ जंगम जीवा।
जहं लगि विधि विरचित जग-सीवा ॥
काल विवस सब दिवस विभेदा।
यह गुनि मम उर होइ न खेदा ॥
अवसि सत्य होइहै प्रन तोरा।
तदपि सचेत सुनहु प्रन मोरा ॥
जो यह सर अब ही रन माही।
खंडन करि डारौ महि नाही ॥
जो सप्रेम तीरथ हित लागो।
मगन बिचार करहि बड़ भागी ॥

दोहा

तिनको वरजन हार जो, लहहिं पाप जग जोइ।
पुनि येकादसि ते. परे, व्रत जाने अघ होइ ॥७॥

चौपाई

सो अघ अवसि लगहु येहि काला।
जो न बान तुव दलौ कराला ॥
येहि प्रकार कहि पुनि अरुगाना।
तब पुष्कल करि मन अनुमाना ॥
महाराज रघुकुल मणि रामा।
प्रणतपाल सोभा - सुख - धामा ॥
नील कज इव स्यामल अंगा।
रोम - रोम प्रति मोह अनगा ॥
सदा प्रणत - रुख राखन हारे।
कबहुं न जन दुख दोष निहारे ॥

तिनके पद - पंकज मन लाई।
जो मैं सयेउ कपट बिहाई॥
तौ रन - मडल मह प्रन मोरा।
होइहै सत्य अवसि सब्र ओरा॥
पुनि निज तिय बिनु सपनेउ माही।
भूलि बाम पर निरखी नाही॥

दोहा

होइहै प्रण तौ सत्य मम, असि प्रतीति उर आनि।
प्रलय काल कीं वह्नि सम, पुनि प्रचड सर तानि॥८॥

चौपाई

भरत तनय छाड्यो सर सोई।
नृप सुबाहु - सुत आवत जोई॥
अति लाघव कोदड मझारी।
प्रलय अनल सम सायक धारी॥
महा कोप करि तानि चलावा।
भिरे गगन द्वौ अचिरिज छावा॥
सुभुज - तनय सर परम प्रचंडा।
कीन्हो पुष्कल जुग इषु खंडा॥
हाहाकार सब्द तब घोरा।
भयो सत्रुसूदन दल ओरा॥
तब लगि अर्धं बान मुनिराई।
काल रूप अति लाघवताई॥
धर ते भिन्न सीस करि डारा।
पर्‍यो धरनि तल पाइ पछारा॥
जिमि प्रफुल्ल पंकज कर फूला।
गिरहि भूमि महं परिहरि मूला॥

दोहा

भजो सैन तेहि समय तब, मृतक देखि निज नाथ।
हाहाकार पुकार पुनि, सभय मीजि दोउ हाथ।।
कुंडल मुकुट समेत सिर, अति सुंदर रण माहिं।
सोहै भूतल के विष, चद्र बिम्ब की नाहि।।६।।

सोरठा

सुनहु सूत तेहि काल, भरत-तनय रिपु मृतक लखि।
करि उर कोप कराल, अवगाही सैना सकल।।

इति श्री पद्म पुराणे पाताल षडे शेष वात्सायन संवादे
चित्रांग-बधो नाम सप्तविशोऽध्यायः।।२७।।

शत्रुघ्न-विजय

दोहा

सुनि मुनीस तेहि समय नृप, सुतहि निरखि हत प्रान।
लाग्यो करन बिलाप तब, उर अति दुख अधिकान।।

चौपाई

पुनि-पुनि सीस धुनै द्वौ हाथा।
सुमिरि-सुमिरि सुंदर सुत-गाथा।।
थरथर कंपहिं सकल सरीरा।
स्रवहिं उभय दृग अगनित नीरा।।
ससि समान सुत सीस सुहावा।
कुंडल मुकुट सहित रज छावा।।
बिपुल माल स्रोनित लपटाना।
मोह-बिबस उठाइ उर आना।।

चढ़ी भौंह दृग भूपति देखी।
दसनन चापे अधर बिसेखी॥
अति अधीर होइ हृदय मझारा।
पुनि मुख चूमहि बारंबारा॥
महा मोह बस तब अकुलाई।
करहि बिलाप कलाप बनाई॥
हा सुत सूर सिरोमनि बीरा।
मम आयसु-पालक मति-धीरा॥

दोहा

केहि कारन येहि समय सुत, उठहु न धरि धनु बान।
कै संभ्रम-बस बचन मम, सुनहु नहीं धरि कान॥१॥

चौपाई

कै रिपु संका भै उर माहीं।
तेहि कारन मोहि हेरहु नाहीं॥
अब हंसि भेटु बेगि मोहि ताता।
धीर धरावहु कहि मृदु बाता॥
मै मतिमंद सकल दुख-खानी।
हतभागी अघ-ओघनि सानी॥
अस अनुमानि प्रथम की नाहीं।
बोलहु बचन अमिय मोहि पाहीं॥
तजहु नींद होइ सजग बनाई।
पकरहु रिपुसूदन यह राई॥
कनक-पत्र सिर चमर समेता।
बिबिध बसन मनि-युत छबि देता॥
सुत तोहि बिनु मैं सकौं न राखी।
ताँते जगहु बेगि मन माखी॥
देखहु तुव सन्मुख भटमानी।
ठाढ़ो पुष्कल अति अभिमानी॥

दोहा

चाप मध्य सायक धरे, गरजहि बारंबार।
हति प्रचड सर, जाहि सुत, जीतहु समर मझार ।।२।।

चौपाई

पुनि तुव सैन सकल येहि काला।
भजी जाइ रन निपट बिहाला ।।
तुम बिनु अवलंबन नहिं आना।
अस बिचारि जागहु बलवाना ।।
हे सुत तोहि बिना येहि काला।
केहि बिधि जितिहौ समर कराला ।।
जब रिपुसूदन कोपि अपारा।
करिहै मोपर बान - प्रहारा ।।
तब को रच्छा करहि हमारी।
कहहु तात जगि बेगि बिचारी ।।
हे सुत मोहि विलोकि अनाथा।
नीद बिहाइ धरहु धनु हाथा ।।
येहि विधि करहि बिलाप अपारा।
धुनहिं माथ उर बारहिंबारा ।।
सुत दुख दुसह बिबस महिपाला।
भयो दुखित अति निपट बिहाला ।।

दोहा

तब लगि दमन बिचित्र दोउ, बंधु महा बलवान।
पितहि दुखित सुनि हांकि रथ, आइ निकट बलखान ।।३।।

चौपाई

पुनि सिरु नाइ समर अनुहारी।
बोल्यो दमन गिरा संभारी ।।

महाराज मम जीवत आजू।
करहु दुक्ख उर महं केहि काजू॥
जो चित्रांग मोह उर करहू।
तौ सब विधि अनुचित अनुसरहू॥
जे उत्तम छत्री भटमानी।
ते जाचहिं रन बध सुभ जानी॥
धन्य सुभट चित्रांग नृपाला।
लही मृत्यु रन माहि रसाला॥
कुंडल मुकुट माल-जुत माथा।
चापै अधर सोह तुव हाथा॥
सुभट समाज माहिं जस जाका।
माचि रहेउ, येहि कीन्हेउ साका॥
अस अनुमानि मोह परिहरहू।
महाराज उर धीरज धरहू॥

दोहा

जेहि विधि जीतिय रिपु कटक, सो उर करहु विचार।
समय बिलोकि सचेत होइ, कीजिय रण महं मार॥४॥

चौपाई

पुनि मैं रिपुसूदन कटकाई।
करिहौं अवसि अनाथ बनाई॥
यह पुष्कल धनु - सायक - धारी।
सम्मुख गर्जहि अनुज प्रहारी॥
मुकुट समेत सोस येहि केरा।
डारौं रन मह करौं न देरा॥
तुम विषाद परिहरहू नृपाला।
करौ समर हित बुद्धि विसाला॥
पुनि मोहि आयसु कीजिय ताता।
जीतउं येहि औसर दल जाता॥

सुनि सुत-गिरा बीर-रस-सानी।
तज्यौ सोक हिरदय हरषानी॥
साजि समर लगि कोपि अपारा।
बहु निसान बजवाइ जुझारा॥
तब निज सुभट बोलि नृप लीन्हे।
रण-हित सब कहं आयसु दीन्हे॥

दोहा

अमित सुभट सजि कोपि उर, पहुँचे रण महं जाइ।
एक-एक सन भिरउ सब, धर्म युद्ध मुनिराइ॥५॥

चौपाई

नृप रिपुताप दमन द्वौ बीरा।
लागे करन युद्ध रन घोरा॥
नीलरत्न बिचित्र तेहि काला।
भिरे परस्पर कोपि कराला॥
कोटिन अस्त्र-सस्त्र द्वौ ओरा।
करहिं प्रहार सुभट अति घोरा॥
भूप सुबाहु कोपि तेहि काला।
चढ़ि विचित्र रथ रूचिर विसाला॥
धरि प्रचंड सायक कोदंडा।
रिपुसूदन सन्मुख बलवंडा॥
चला बजाइ निडर अभिमानी।
तृन समान सब कटकहिं जानी॥
जेहि थल कोटिन भटन समेता:
राजहिं सत्रु-समन रन-हेता॥
निदरि सबहिं सुत बैरु सम्हारी।
चल्यौ तहाँ कहं गरजत भारी॥

सोरठा

सुनहु सूत तेहि काल, उहाँ सत्रुहन रथ निकट।
अति बल बुद्धि बिसाल, मारूत सुत राजहिं तहाँ ॥६॥

चौपाई

तिन सुबाहु कह आवत देखो।
तब उर कीन्हेउ कोप विसेखी ॥
मेघनाद करि बारहिं बारा।
भये अरुण दृग, नख हथियारा ॥
कटकटाइ नृप सन्मुख आवा।
अति कराल वपु भय उपजावा ॥
बिकट लंगूर सीस पर राजै।
मनहुँ संभु सिर नाग बिराजै ॥
सुभुज कपीसहिं निकट निहारी।
हरि सरोष कै गिरा उचारी ॥
रे कपि प्रान देन कित आवा।
भागु बेगि जो चहहि बचावा ॥
पुनि कह मम सुत मारनहारा।
कहाँ गयो तजि समर - बिहारा ॥
मुकुट समेत सीस हति तासू।
खडन करि रन डारौं आसू ॥

दोहा

कहाँ सत्रुहन भूप तुव, कहाँ राम बलवान।
पुनि कहु तिनको भय कहा, रण कर भेंटहु आन ॥७॥

चौपाई

मैं आवा रन सब कर काला।
हतहुं अवसि सर मारि कराला ॥

अस सुनि मारुत सुत बर बीरा।
बोल्यौ नृप सन गिरा गंभीरा॥
रिपुसूदन लवनासुर-हारी।
विद्यमान ये संन मझारी॥
अखिल लोक-नायक श्रीरामा।
स्रुति विधि सिव गावहिं गुन ग्रामा॥
तासु प्रताप सकल जग जाना।
अब लगि तैं खल सुना न खाना॥
जब लगि मैं सेवक तिन केरा।
जीतौं तुमहि सदल येहि बेरा॥
तो केहि कारन वै रन माहीं।
आवहिं युद्ध करन तुम पाहीं॥
मोहि जीति नृप मन हरसाई।
करियो समर उनहि सो जाई॥

दोहा

सुनि कपि बचन सगर्व नृप, करि उर कोप कराल।
चड़ बाण दस, हृदय कह, लाघव, तजि तेहि काल॥८॥

चौपाई

पवन तनय ते आवत देखी।
पकरि कीन्ह तिल सरिस विसेखी॥
पुनि करि मेघ नाद अति घोरा।
कटकटाइ धावत बरजोरा॥
अति लाघव निज पूछ मझारी।
हय रथ सूत लपेटि सम्हारी॥
नृपहि अकास माहिं लै गयेऊ।
महा बली बड़ कौतुक भयेऊ॥
तब महोप सत्वर सर घोरा।
हने पूछ महं बहु करि जोरा॥

तब अकुलाइ कीस रथ त्यागा।
सर प्रहार अति दारुन लागा।।
गिरत भूप बहु बान प्रचंडा।
दलि कपीस तनु कीन्हेउ खडा।।
अंग-अंग प्रति स्रोनित धारा।
प्रगट देखि कपि कोप अपारा।।

दोहा

लाघव उतरि अकास ते, रथ हय सूत समेत।
मेलि बदन महं दसन सों, चूर कीन्ह जय हेत।।६।।

चौपाई

सुनहु सूत नृप लाघवताई।
निकरि अन्य रथ बैठेउ जाई।।
बहुरि कोप करि दंड चढ़ाई।
अति आतुर कपि सन्मुख आई।।
मुख उर पद भुज पूछ मझारा।
हने बान बहु तीछन धारा।।
तब अति कोपि हृदय हनुमाना।
दई लात उर बज्र समाना।।
रथ विहाइ नृप पाइ पछारा।
परे अवनि नहिं देह संभारा।।
स्रोनित तप्त अमित मुख द्वारा।
बमन करहिं, बिसरे हथियारा।।
तब कपीस करि कोपि निदाना।
गज रथ तुरंग चरन-चर नाना।।
खंड-खंड करि संयुग माहीं।
दले सकल अनाथ की नाहीं।।

दोहा

तब लगि लक्ष्मीनिधि नृपति, पुनि सुकेतु बर बीर।
तजि मुर्छा दारूण समर, करन लगे मति धीर ॥१०॥

चौपाई

इत सुबाहु कहं मूर्छित देखी।
भजी सैन सब बिकल बिसेखी ॥
तेहि पर पुष्कल हति सर जाला।
निपट कीन्ह सब कटक बिहाला ॥
तब लखि दमन भजी कटकाई।
बहु उपाय करि रोकेउ जाई ॥
तेहि औसर नृप मूर्छा माहीं।
अद्भुत स्वपन बिलोकेउ ताही ॥
निरखी अवधपुरी सुख - रासी।
जग पावन मणि हेम प्रकासी ॥
तेहि समीप सरजू तट माहीं।
नाना मणि मंडफ जु लखाहीं ॥
तासु मध्य मख कुंड समीपा।
राजत राम भानुकुल दीपा ॥
छवि समुद्र बपु सब सुखदाई।
निरखत कोटिन काम लजाई ॥

दोहा

अतसी सुमन समान तन, सोभा बरनि न जाइ।
सुंदर मुख आजान भुज, उर बिसाल सुखदाइ ॥११॥

चौपाई

उदर अनूप, जंघ मनुहारी।
पद पंकज निरखे सुखकारी ॥

रज-पराग महं मुनि - मन - भृंगा।
बसत रहैं संतत रस रंगा॥
बाम अंग कचन सिय राजै।
चहूँ ओर मुनि वृंद बिराजै॥
संभु विरंचि आदि सब देवा।
कर जोरे विनवहिं करि सेवा॥
येहि बिधि लोक - लोक के धाता।
संभु विस्नु वासव सुर ज्ञाता॥
कर जोरे पद सीस नवाये।
अस्तुति करहिं सकल मनु लाये॥
नारदादि मुनि वीणा बजावत।
वरनि सुजस सुचि प्रभुहि रिझावत॥
मूर्तिवत स्त्रुति सुभृत पुराना।
निरखे सकल करत सुर गाना॥

दोहा

सकल कलाजुत, कपट तजि, गान करहिं गंधव।
पुनि नाचहि वर अपसरा, मैनकादि तिय सर्व॥१२॥

चौपाई

सकल पदारथ दायक रामा।
विद्यमान येहि विधि युत बामा॥
सुभग नयन राजीव बखाना।
स्याम गात जन सुखद निधाना॥
पुनि मृग - शृंग धरे कर माहों।
अस स्वरूप नृप निरखेउ ताहो॥
येहि विधि स्वपन मनोहर देखा।
उठि सचेत पुनि अचिरिज लेखा॥
हर्ष समेत कहन अस लागे।
कहा दीख मैं पुनि अनुरागे॥

सुनु मुनि विप्र स्राप करि भूपा।
भूलि रहा पर ज्ञान अनूपा॥
सो कपीस पद लागत भागा।
तब रघुनाथ रूप अनुरागा॥
समर त्यागि बहु भट लै संगा।
करि मन प्रभु - पद - पंकज भृंगा॥

सोरठा

रिपुसूदन पद माहिं, अति आतुर निज स्वामि गुनि।
चले प्रणत की नाहिं, पुलकि गात करि दृग सजल॥१३॥

चौपाई

पुनि निज बंधु सुकेत बोलाये।
दमन बिचित्र आदि चलि आये॥
समर करत सब को निरवारा।
धर्म निपुन पुनि बचन उचारा॥
सुनहु बंधु, सुत भट समुदाई।
बैर भाव तजि मन हरषाई॥
परम तत्व मैं करउँ बखाना।
सकल ताप भंजन सुख दाना॥
रामचन्द्र - मख - तुरंग रसाला।
सादर लावहु सजि येहि काला॥
ये रघुकुल - मनि राम कृपाला।
संतत अखिल लोक परिपाला॥
पूरन ब्रह्म चराचर स्वामी।
सकल कलानिधि अंतरजामी॥
कारन कारज पर परमेसा।
गावहिं स्रुति सिव अज मुनि सेसा॥

दोहा

निज इच्छामय प्रणत हित, लीन्ह मनुज अवतार।
अस जानहु सब हृदय मह, पुनि सुनु बचन उदार ।।१४।।

चौपाई

परम ज्ञान यह स्वपन मझारा।
पाइ अबहिं मैं भयौ सुखारा ।।
मुनि असितांग प्रथम यक बारा।
दीन्ह स्राप मोहिं कोपि अपारा ।।
तब ते ज्ञान बिसरि मैं गयेऊ।
कपि प्रभाव अब प्रापति भयेऊ ।।
सो प्रसंग सब करउ बखाना।
सुनहु सकल प्रमुदित धरि काना ।।
मैं यक बार ज्ञान हित लागी।
तीरथ गमन कीन्ह ग्रह त्यागी ।।
तहं यक आश्रम भिन्न बिलोका।
चरहिं जीव सब मुदित असोका ।।
धर्म - निपुन विज्ञान - निधाना।
मुनि असितांग सो साधु सुजाना ।।
प्रमुदित बसहिं तहां सब काला।
उदासीन जग परम कृपाला ।।

दोहा

मैं तेहि आश्रम जाइ करि, वंदि चरण कर जोरि।
परम तत्व मुनि कहहु अब, अस मैं कहौ बहोरि ।।१५।।

चौपाई

सुनि कृपाल करि कृपा अपारा।
बोले मो सन परम उदारा ।।

अवधि-नाथ दसरथ - सुत रामा।
परब्रह्म ते प्रभु पर - धामा॥
तासु सक्ति श्री जनक - कुमारी।
अखिल लोक लय पालनकारी॥
तिन ते परे ईस नहि आना।
बेद सुमृति अस करहि बखाना॥
तिनही के पद - पकज माहीं।
मुनि मन बसहि भृग की नाहीं॥
जोगी जन करि जतन अनेका।
भजहि तिनहि उर सहित विवेका॥
सब प्रकार भव सिन्धु अपारा।
गोपद इव ते होहि उधारा॥
पुनि तिन कर जपि पावन नामा।
लहहि दुष्ट जन अविचल धामा॥

दोहा

पडित जन सतत मुदित, भजहि राम पद कज।
तासु चरण सेवहु. नृपति, प्रबल मोह दल भज॥१६॥

चौपाई

महा पाप भजन रघुवीरा।
होहु सरन, हरिहै भव - भीरा॥
तिन ते परे तत्व नहि आना।
गावहि सिव अज वेद पुराना॥
मोहि मोह-बस मुनि के बचना।
लागी उर मै कल्पित रचना॥
तब मै कीन्ह तहां उपहासा।
कवन तत्व यह करौ प्रकासा॥
केवल मनुज भूप सुत जोई।
तेहि सन परम तत्व कह सोई॥

हरष सोक बस जनक - कुमारी ।
सो तुम परम सक्ति निरधारी ।।
कहहु अजन्म अलख परमेसा ।
सो किमि होइ मनुज अवधेसा ।।
पुनि संतत जो कर्म विहीना ।
सोक करै जग चरित मलीना ।।

दोहा

अस बिचारि मुनि मोह तजि, कहहु विवेक सम्हारि ।
जन्म मरण दुख रहित जो, ताहि कहौ निरधारि ।।१७।।

चौपाई

अस मम बचन सुनत मुनिराई ।
दीन्ह स्राप करि कोप बनाई ।।
रे खल मूढ़ मंद मति वामी ।
राम - रूप नहि जानहिं कामी ।।
श्री रघुवर कहं मानुष जानी ।
हास्य कीन्ह खल निंदा ठानी ।।
ताते तत्व ज्ञान बिन होहू ।
मूढ़ राम कर कीन्हेसि द्रोहू ।।
केवल उदर भरन कर ज्ञाना ।
रहिहै तोहि, होइ नहिं आना ।।
तब मैं मुनि के चरन मझारी ।
पर्‌यौ दुखित कै कपट बिसारी ।।
हे मुनिवर मोहि खल अनुमानी ।
करहु कृपा प्रभु करुना - खानी ।।
अस सुनि बचन मुनीस कृपाला ।
बोले मो सन गिरा रसाला ।।

दोहा

श्री रघुवर हय-मेघ-मख, करिहै प्रथम नृपाल।
तासु तुरँग तुव नगर महं, अँहै सदल बिसाल ॥१८॥

चौपाई

पकरिहि तुरंग तनय नृप तोरा।
होइ है समर तबं अति घोरा ॥
राम भक्त बर पवन कुमारा।
करि है तव उर चरण प्रहारा ॥
सुद्ध तत्व - मय ज्ञान सुहावा।
तब होइहै अवस्य मन भावा ॥
पूरन ब्रह्म राम छवि - खानी।
दंहै तोहि दरस निजु जानो ॥
तब मख तुरंग हृदय हरषाई।
धन मनि बसन राज समुदाई ॥
सत्रु समन कहं भेंटेउ जाई।
आगे राखि सुधन बहुताई ॥
पुनि तिन सग अवधिपुर माहीं।
जाइ दरस करिहौ सक नाहीं ॥
होइहौं अवसि कृतारथ ताता।
निरखि मनोहर स्यामल गाता ॥

सोरठा

येहि प्रकार मुनिराइ, प्रथम कही समुझाइ जो।
सो यह परी लखाइ, ताते ल्यावहु तुरग अब ॥१९॥

इति श्री पद्म पुराणे पाताल षंडे शेष वात्सायन संवादे
शत्रुहन विजयनो नाम अष्टाविंशोऽध्यायः ॥२८॥

शत्रुघ्न-सुबाहु-संयोग

दोहा

वात्सायन सुनि जनक के, बचन राम पद लीन।
बोले समर बिहाइ तब, दमन बिचित्र प्रवीन॥

चौपाई

सुनहु तात हम निज उर माही।
तव पद बिनु कछु जानहि नाही॥
तुव आयसु हम सीस चढ़ाई।
चाहे कीन्ह विचार बिहाई॥
अवसि देहु मख तुरंग सुहावा।
चंदनादि चर्चित छबि छावा॥
रतन माल मणि बसन समेता।
विमल चमर युत मनु हरि लेता॥
राज कोष धन धाम बिसाला।
बिविधि बसन दीज येहि काला॥
चदनादि चर्चित बर घोरा।
दीजं सकल साजि सब ओरा॥
पुनि वितुंड उन्मत्त समूहा।
अगिनित कनक रथन के जूहा॥
नाना बरन विचित्र सुहाये।
दीजै महाराज मन भाये।

दोहा

अमित दास दासी सुखद, पुनि मनि भानु समान।
विविधि रत्न तोरण रुचिर, बहु गज मणि भरि जान॥

सोरठा

बिद्रुम बिसद अपार, अवर पदारथ सकल नृप।
प्रमुदित भरि बहु भार, करहु समर्पण राम हित ॥१॥

चौपाई

हमहि समेत सकल परिवारा।
करहु समर्पण भूप उदारा॥
केवल हम तुव आयसुकारी।
पूछहु कहा तात इहि बारी॥
सुनि अस पुत्र - बचन महिपाला।
रोम-रोम हरषेउ तेहि काला॥
पुनि बोले बर बचन सुहाये।
परम प्रीति निज आनंद छाये॥
जतन समेत राम मख बाजी।
आनहु बेगि साज सब साजी॥
फिरि निज तुरग नाग रथ जूथा।
सजि आनहु सब वस्तु बरूथा॥
सुनहु तात तुम आवहु जबहीं।
महाराज कहँ भेटेउ तबहीं॥
अस सुनि नृप के बचन विनीता।
दमन विचित्र सुकेतु सप्रीता॥

दोहा

नगर जाइ तिन मख तुरंग, निरख्यौ महा अनूप।
कनक पत्र सिर सोभित, चामर परम अनूप ॥२॥

चौपाई

दिव्य रत्न बर माल बिराजै।
मणि बिचित्र भूषण तन भ्राजै॥

पुनि वितुंड मणि जाल सुहाये।
लसँ दुहूँ दिसि अति छवि छाये ॥
अस अनूप मख बाजि निहारी।
भये मुदित दमनादिक भारी ॥
सकल सेवकन आयसु दीन्हे।
तिन सब कारज आतुर कीन्हे ॥
रथ गज़ बाजि सबै सजवाई।
सकल पदारथ जान भराई ॥
विपुल दास दासी संघ लीन्हे।
जे संतत सेवा पथ चीन्हे ॥
येहि विधि सबं साज सजवाई।
परिजन सहित हृदय हरषाई ॥
चतुर सेवकनि निकट बोलाई।
कहेउ राम हय चलहु लेवाई।

छंद

लै राम हय तुम चलहु सादर, सुनि सकल हरष हिये।
तब पाट डोरि अनूप गहि, दुहुं ओर सेवक चित दिये ॥
लै चले तेहि पाछे सुभट, कोटिन चले आयुध लिये।
गज बाजि नाना जाति के रथ, बिपुल युत रचना किये ॥
पुनि बाजि ऊपर छत्र सुन्दर फिरहिं, सोभा को कहै।
दुइ चमर विमल अनूप दुहुं दिसि, ढुरहिं अति छवि को लहै ॥
बहु धूप दीप सु आरती जन, करत जाहिं मुदित महा।
सब सूर वीर प्रसन्न चहुँ दिसि, लसैं अस अहिपति कहा ॥

दोहा

मारुत मन ते बेग पर, काम रूप छवि खान।
नृप सुबाहु निरख्यो तबं, निपट तुरंग नियरान ॥

सोरठा

तब उर हरषि अपार, भूप चिन्ह सब त्यागि नृप ।
कुटुम सहित पगु धारि, रिपुसूदन के मिलन हित ॥३॥

चौपाई

सकल पदारथ नस्वर जाना ।
प्रभु पद सरन सत्य उर आना ॥
तेहि अवसर मन में महिपाला ।
लहेउ सत्रुहन दरस रसाला ॥
स्वेत छत्र सिर फिरहि सुहावा ।
ढुरहि चमर बीजन छवि छावा ॥
अगिनित भूप सचिव समुदाई ।
ठाढ़े निरखहि भृगुटि सुहाई ॥
पुनि सुमंत सन रघुपति - गाथा ।
पूछत जाहि धरे धनु भाथा ॥
सब विधि अभय नरन कै बाधा ।
बीर रूप छवि उदधि अगाधा ॥
गौर सरीर कवच बर राजै ।
बिविधि बसन भूषन तजि भ्राजै ॥
कोटिन सुभट कुसल सग्रामा ।
ठाढ़े चहुं ओर बल - धामा ॥

दोहा

हनुमान सुग्रीव पुनि, अगदादि कपि जूथ ।
भाजहि सनमुख सदल सब, गनहि न सत्रु बरूथ ॥४॥

चौपाई

येहि विधि महाराज कहं देखी ।
भूपति करत प्रनाम विसेखी ॥

पुत्रन सहित आसु पद माही।
परे दीन सेवक की नाही॥
सब विधि धन्य आपु कहँ मानो।
प्रेम बिबस मुख आव न बानी॥
भूपहि करत प्रनाम निहारी।
उठे सभा जुत रिपु - मद - हारी॥
बरबम बाहु मेलि उर लाये।
सादर अति आनदहि छाये॥
तब सुबाहु नृप हरषि अपारा।
सजल नयन करि बचन उचारा॥
आजु धन्य मै भयौ बनाई।
गुन परिवार सदल रघुराई॥
कोटिन - नृप - वदित पद - कजा।
निरखि सकल अघ - दुख - गन भजा॥

दोहा

करुणानिधि मम तनय ने, बिनु जाने हय लीन्ह।
बाल समुझि अब छमहु प्रभु, जदपि महा अघ कीन्ह॥५॥

चौपाई

श्री रघुनाथ - प्रभाव न जाना।
ब्रह्मादिक प्रभु हरि भगवाना॥
जग पालन, सभव, सहारा।
करहि सदा लीला अनुसारा॥
ताते येहि अघ कीन्हेउ स्वामी।
करहु कृपा अब लखि अनुगामी॥
यह मम राजकोस धन धामा।
हय गज रथ मणि भूषण ग्रामा॥
नाना बसन सकल परिवारा।
अवर वस्तु सब भूप उदारा॥

श्री रघुपति कै केवल जानौ।
मो कह् निज अनुचर करि मानौ॥
करहु सुफल सब कृपा निधाना।
अभय देहु मोहि स्वामि सुजाना॥
श्री रघुपति - पद - पंकज - भृंगा।
हनूमान केहि थल सुचि अंगा॥

दोहा

जिनके छिन सत संग ते, राम दरस मै पाव।
पुनि पद परसत महा मुनि, श्राप कराल नसाव॥६॥

चौपाई

साधु समागम ते जग माहीं।
कवन पदारथ प्रापति नाहीं॥
जासु प्रसाद मंद मैं मूढ़ा।
राम - रूप जान्यौ अति गूढ़ा॥
अस सुनि पवन तनय सकुचाई।
मिले भूप कहं अति हरषाई॥
तब सुबाहु नृप पुलकि सरीरा।
बोलेउ बचन स्रवत दृग नीरा॥
सुनहु तात रघुनाथ विहीना।
भईं विपुल बरषें मम छीना॥
अव कहु कवन भांति कपिराई।
राम - रूप देखिहौं सुखदाई॥
जग पुनीत सरजू तट माहीं।
दिव्य हेम मणि मंडफ ताहीं॥
मुनि समाज मख करत रसाला।
स्याम गात दृग ललित विसाला॥

छंद

दृग ललित परम विसाल, स्यामल गात मुनि मन मोहई।
श्री-सहित पुंड विराज भाल, सुभृगुटि नासा सोहई॥
दोउ स्रवण सुंदरता भवन, सुकपोल कपि कब देखिहौं।
बर अधर बिंवा फल सरिस, रद विसद भाग्यनि लेखिहौं॥
पुनि चिबुक परम अनूप सुंदर, कठ उर सोभा मयं।
भुज - दड करि बर - तुंड सम, संतत सुखद भंजन भयं॥
जुग पानि जलज समान अभिमत दान, खल गंजन करं।
बर उदर त्रिवली ललित युत, कटि छीन हरि कटि छवि धरं।

दोहा

रुचिर जंघ जुग कदलि सम, चरन जलज सम तूल।
कहहु तात कब हेरिहौं, जहं-सिव-मन- अलि भूल॥

सोरठा

जिन्हहि परसि मुनि नारि, भई, उपल-तनु त्यागि सुचि।
कब मैं तिनहि निहारि, हौइहौं पावन कुटुम जुत॥७॥

चौपाई

पुनि सर परसि सक्र - सुत वामी।
काग - रूप औगुण - निधि कामी॥
ताहि पाप - छमि, निज अनुमानी।
दीन्ह साधु - पद सब सुख - खानी॥
गीध आदि निसिचर समुदाई।
कीन्ह मुक्त, करि कृपा बनाई॥
पुनि मुख कमल अनूप बिलोकी।
भये जीव बहु निपट असोकी॥
जे सादर रघुनायक नामा।
जपहि लहैं ते अविचल धामा॥

अहो धन्य जन अवध निवासी।
प्रभु - मुख - कमल - रूप - रस - रासी ॥
निज जुग पुट भरि-भरि सब काला।
पियै मुदित मन, रहहि निहाला ॥
येहि विधि नृपति कहै कपि पाही।
गह्वर कठ, स्रवत दृग जाही ॥

दोहा

महाराज रिपु-गण-दलन, सुनि अस बचन विनीत।
सादर सुंदर सुखद अति, बोले गिरा सप्रीत ॥८॥

चौपाई

अस बानी महीप किमि कहहू।
तुम तौ बृद्ध पूज्य मम अहहू ॥
राज कोस धन धाम समेता।
अपर पदारथ यह तुव जेता ॥
सकल राम कर ससय नाही।
अब यह करौ, कहौ तुम पाही ॥
नृपता तिलक दमन कर करहू।
मम आयेसु उर आनंद धरहू ॥
छत्रिन को सतत यह धर्मा।
रण महं कबहुं होइ नहि नर्मा ॥
तुम मम पूज्य यथा रघुनाथा।
मन बच कम सत्य यह गाथा ॥
राम - भक्ति विज्ञान - निधाना।
ताते केहि बिधि करहु बखाना ॥
अब आपुहु सजि मख हय हेता।
चलहु सघ सब कटक समेता ॥

दोहा

महाराज के बचन वर, सुनि सुबाहु हरषाइ।
नगर जाइ तब दमन को, दीन्हों राज बनाइ ॥६॥

चौपाई

पुनि समाज-जुत रण महँ आये।
लखि चित्रांग नगन जल छाये ॥
बिधिवत मृतक क्रिया सब कीन्हीं।
बहुरि सबन तिलअंजुलि दीन्हीं ॥
कीन्ह सोक छन एक नृपाला।
समुझि लोक अपवाद कराला ॥
ज्ञान-दृष्टि सब सोक नसावा।
श्री रघुनाथ चरण सिरु नावा ॥
पुनि अनूप रथ चढ़ि तेहि काला।
साजि कटक चतुरग विसाला ॥
महाराज रिपुसूदन पासा।
आइ वंदि पद, सहित हुलासा ॥
नृपहिं सन-युत सन्मुख देखी।
चलन हेत मन कीन्ह विसेखी ॥
तब मख तुरंग छुड़ावत भयेऊ।
बहुरि सबन अनुसासन दयेऊ ॥

दोहा

कटक बाम दै तुरंग बर, चल्यौ पवन गति धारि।
कोटिन भट गज बाजि रथ चले, न परहि संभारि ॥
चढ़ि बिचित्र रथ रिपु-दहन, बिपुल भूप समुदाइ।
सकल सैन सजवाइ करि, चले हृदय हरषाइ ॥

सोरठा

प्रबल प्रताप निहारि कोउ न पकरे यज्ञ-हय।
केवल सरण बिचारि, मिलहिं सकल भूपाल मग ॥

सोरठा

कोउ नृप अर्पहिं राज, बिविध बसन धन धाम को।
निज-निज सहित समाज, कौ यक भेटहि बचन करि ॥१०॥

इति श्री पद्म पुराणे पाताल षंडे शेष वात्सयान सवादे
श्री सत्रुहन सुबाहु सयोगोनाम एकोनत्रिसोऽध्याय: ॥२९॥

सत्यवान-आख्यान

दोहा

कनक-पत्र सोभित तुरंग, सुनु मुनीस मनु लाइ।
मरुत बेग इव तेजपुर, लाघव पहुंच्यौ जाइ ॥

चौपाई

सत्य बचन नृप धर्म समेता।
पालहि प्रजा सदा सुख देता ॥
तेहि पाछे रामानुज राजा।
आये पुर समीप सु-समाजा ॥
तिन तब नगर रम्य अवलोका।
सकल जीव जह बसहि अमोका ॥
चहुँ दिसि कोट रुचिर छबि देई।
चित्र-बिचित्रित मनहरि लेई ॥
रंग-रग के मुभग कगूरे।
तिन पर कलस धरे बहु पूरे ॥
देव भवन सहसनि चहुं पासा।
निरखे सुंदर करत प्रकासा ॥
सुनु मुनि विपुल जतिन के धामा।
अवलोके चित्रित बर कामा ॥
जलज चक्र तिलकादि समेता।
बसत जती जन आनंद देता ॥

दोहा

दिव्य बिबुध-तरु बिबिधि तहं, निरखे अभिमत-दानि।
पुनि नाना सरवर लखे, विपुल कंज, बर पानि ॥१॥

चौपाई

केकी कीर कोकिला भृंगा।
हंस परावत खग बहु रंगा ॥
प्रमुदित चरहि करहि कल गाना।
बहु मुनि बृंद बसहिं तट नाना ॥
पुनि ब्राह्मण संकेत अनेका।
निरखे सुभग एक ते एका ॥
अग्निहोत्र प्रति मन्दिर माहीं।
होहिं बेद मन्त्रनि जुत ताहीं ॥
तिनके प्रगटहिं धूम समूहा।
परसत हरहि पाप के जूहा ॥
अस अनूप पुर सोभा देखी।
मन मैं अचिरिज कीन्ह विसेखी ॥
हरष - सहित सुमन्त-सन बानी।
बोले अरिभंजन गुन-खानी ॥
कहो सचिव-बर मोहिं बुझाई।
कवन नगर यह छवि समुदाई ॥

दोहा

येहि के निरखत मम हृदय, भयेउ परम आनन्द।
कवन भूप पालन करै, कहहु मिटे भ्रम - फंद ॥२॥

चौपाई

इहि प्रकार सुनि सुमति सुजाना।
करन लगे सुचि कथा बखाना ॥

सुनहु स्वामि अब कथा सुहाई।
कहउ यथा मति सकल बुझाई॥
हरिजन चरित सदा सुखदाई।
सुनत विप्र - बध - पाप नसाई॥
जीवन-मुक्त परम बड़ भागी।
श्री रघुनाथ चरन अनुरागी॥
अस महीप येहि पुर प्रतिपाला।
सत्य बचन यह नाम रसाला॥
सकल यज्ञ अगन जुत जाने।
करहि सदा, अभिमान न माने॥
इहि कर पिता रितुम्भर राजा।
परम धर्मवित जग जस भ्राजा॥
धेनु - प्रसाद तनय यह पावा।
महाराज जो तुमहि सुनावा॥

दोहा

अस सुनि बोले रिपुदहन, कवन रितुंभर भूप।
केहि कारन तिन धेनु कर, पूजन कीन्ह अनूप॥३॥

चौपाई

पुनि श्रीहरि सेवक बड़भागी।
परम भागवत विषय बिरागी॥
अस सुत केहि प्रकार तिन्ह पावा।
अति दुर्लभ पुरान श्रुति गावा॥
सकल कथा यह बरनहु ताता।
हरिजन सुजसु महा सुखदाता॥
जेहि के स्रवन करत जग माहीं।
महा पाप कोटिन्ह नसि जाहीं॥

इहि बिधि सुनि अरिगजन बचना।
सुंदर महा अर्थ युत रचना॥
तब सुमत अतिसै हरषाई।
कहन लगे सब कथा सुहाई॥
प्रथम रितुंभर भूप उदारा।
भये प्रगट जानहि संसारा॥
विपुल नारि-युत पुत्र - बिहीना।
जदपि राज बड़, तदपि मलीना॥

दोहा

एक समय जाबालि मुनि, दैव योग तेहि गेह।
आवत भये, महीप लखि, पूजेउ सहित सनेह॥४॥

चौपाई

पुनि सिर नाइ उभय कर जोरी।
बोले भूपति बिनय बहोरी॥
जेहि बिधि पुत्र होइ मम नाथा।
उर बिचारि बरनहु सोइ गाथा॥
धर्म धुरंधर माधु सुजाना।
कहौ मोहिं लखि दुखित निदाना॥
तीरथ जज्ञ दान व्रत सेवा।
जप सजम अथवा कोउ देवा॥
जेहि ते तनय कृपानिधि होई।
निस्चय करि कहिये प्रभु सोई॥
सुनि नृप के अस बचन बिनीता।
बोले मुनि जाबालि सप्रीता॥
तनय होन के तीन उपाई।
सुनहु रितुंभर नृप मनु लाई॥
विष्णु, धेनु अथवा वृषकेतू।
इनकी कृपा बिना नहि हेतू॥

सोरठा

सब ते सुलभ उपाइ, केवल पूजहु धेनु तुम।
बेद सुमृति अस गाइ, सकल देवमय तासु तन ।।५।।

चौपाई

सो प्रसन्न होइ अभिमत दाना।
पूजहि, मृषा न करहुँ बखाना ।।
प्रमुदित जब आदिक नर जेई।
आलस तजि नित धेनुहि सेई ।।
तिनके देव पितर समुदाई।
तम रहे नित दुख न बिहाई ।।
पुनि जे नर नित नेम समेता।
प्रथम 'सु' अन्न धेनु कहं देता ।।
तेहि प्रभाव ते सुनहु भुवाला।
पूजहिं तासु काम सब काला ।।
जेहि के भवन तृषित गौ रहई।
रजस्वला कन्या पुनि अहई ।।
हरि बिनु अपर देव समुदाई।
निरमायल तिन कर जोखाई ।।
तिनके पुन्य पुराकृत नाना।
होहिं नास श्रुति विदित बखाना ।।

दोहा

जे निजु पर तृण चरति गौ, बरजहिं अति मति मंद।
तासु पितर सुरलोक मैं, कँपहिं समुझि जम फंद ।।६।।

चौपाई

सुनहु रितुंभर भूप प्रवोना।
जे नर ताड़हि बुद्धि मलीना ।।

ते खल धर्म राज - पुर माहीं।
कर - विहीन बहु दुःखित जाहीं॥
पुनि सप्रेम जे डाँस निबारे।
देहिं हरित तृण, मज्जहि झारे॥
सकल पितर जमपुर तिन्ह केरे।
हरषहि आपन समुझि निबेरे॥
अब इतिहास पुरातन भूपा।
बरनहुं तुम प्रति परम अनूपा॥
जेहि विधि जनक राइ जम लोका।
जाइ जीव बहु कीन्ह असोका॥
सो प्रसंग सब करहु बखाना।
सुनु महीप सादर धरि काना॥
एक बार नृप जनक विदेहा।
जोग छार करि त्यागेउ देहा॥

दोहा

तब लगि रुचिर विमान यक, किंकिन जाल समेत।
आवा निकट बिलोकि नृप, चढ़े परम पद हेत॥७॥

चौपाई

तब सेवकन चलावा जाना।
धर्मराज - पुर ऊपर आना॥
तहाँ जीव कोटिन्ह अघकारी।
परे नरक महं व्याकुल भारी॥
जनक सरीर मरुत तिन अगा।
परस्यौ जाइ, मिटा दुख सगा॥
दारुन दाह बिथा त्रिनु भयेऊ।
बिपुल मोद सब के निरमयेऊ॥
चकित सबन तब गगन निहारा।
लख्यौ विमान जात दुतिकारा॥

समुझि नरक दुख कठिन अपारा।
सबन दीन होइ बचन उचारा॥
हे सुकृती - जन दया - निधाना।
दुखित देखि मति जाहु सुजाना॥
तुम सरीर - मारुत हम पाई।
भये सुखित बड़ दुखनि बिहाई॥

दोहा

परम धर्म रत जनक नृप. अस सुनि दुखित निहारि।
लागे करन बिचार मन, अमित दया उर हारि॥८॥

चौपाई

रहे हमारे सकल सुखारी।
पुनि ताड़न दुख होइ न भारी॥
तौ सुर बास सरिस मोहिं येहा।
रहिहौं इहाँ विगत सन्देहा॥
अस अनुमानि विमान समेता।
बैठे नरक द्वार तिन्ह हेता॥
धर्मराज तेहि अवसर आये।
दण्ड देन सबको रिस छाये॥
नरक द्वार तिन जनकहि देखा।
सहित जान उर दया विसेखा॥
तब हँसि धर्मराज बर बानी।
बोले चक्रित नीति रस सानी॥
परम धरम धुर धारन हारे।
महाराज कित प्रानि पधारे।
सतत पापिन कर यह बासा।
तुम्ह सम पुरुष न करहिं प्रकासा॥

दोहा

जे पर–द्रोही मद-मति, पर-धन पर-तिय चोर।
पर-अपवादी आदि खल, आवहि इहि थल घोर ॥९॥

चौपाई

पुनि जे धर्म - निपुन निजु नारी।
सेवा रत आयसु अनुसारी ॥
ताहि पाप दै त्यागहिं मदा।
ते आवहि इहि थल अघ कदा ॥
पुनि निजु लोभ बिबस तजि नीता।
हरहि मित्र धन, परहि सुप्रीता ॥
तिन कहँ मम भट इहि थल लाई।
करहि ताड़ना विविधि बनाई ॥
सकल ताप - गजन श्रीरामा।
अति कृपाल सुदर सुखधामा ॥
मन बच कर्म तिनहिं मन माही।
सुमिरन करहि जीव जे नाही ॥
दभ बैर उपहास प्रमादा।
गिरत परत धावत पुनि बादा ॥
कबहु न भाँतिन सुमिरहि जेई।
भोगहि सकल नरक खल तेई ॥

दोहा

तब लगि जीवन कै विषै, बरसहि पाप समुदाइ।
जब लगि रसना राम कर, नाउ न लेइ सुभाइ ॥१०॥

चौपाई

धर्म - बिमुख अघ - कर्म - प्रवीना।
तिनहिं पकरि मम भट तन पीना ॥

नाना ताड़न करि बहु भाँती।
भोगहिं आइ नरक कै पाँती॥
महाराज तुम सम जे जीवा।
संतत धर्म नीति की सीवा॥
तिनहिं सुभट मम देखि न सकहीं।
श्रीपति आयसु गुनि अति डरहीं॥
अस बिचारि महिपाल सुजाना।
जाहु देव पुर सहित बिमाना॥
भोगहुँ सुंदर सुकृत अपारा।
तजहु दर्प, जनि करहु बिचारा॥
ये पापी जन पाप भडारा।
बिनु भोगे नाहिन निस्तारा॥
अस सुनि धर्मराज सन बानी।
बोले जनक दया - रस - सानी॥

दोहा

सुनहु नाथ नहि जाउं मै, दुखित जीव परित्यागि।
अचल दया मो उर बसी, चलन-सक्ति गइ भागि॥११॥

चौपाई

पुनि मम - अंग - मरुत इन्ह पाई।
भये सुखी सब ताप बिहाई॥
जो इन्ह सबनि तजौ येहि काला।
तौ हम जाहि प्रसन्न बिसाला॥
इहि विधि भानु-तनय सुनि बानी।
जनकराज कहं हठ - बस जानी॥
भिन्न - भिन्न तब सब के पापा।
बरनन लगे नरक संतापा॥
प्रथम बिलोकहु जाहि नृपाला।
कीन्ह पाप इहि परम कराला॥

सुहृद मित्र अरु आपनि नारी।
करि बिस्वासघात खल मारी॥
तेहि कारन हम ताड़हि भारी।
अनल समान नरक महु डारी॥
अयुत वर्ष भरि भोग करावहिं।
पुनि सूकर कै जोनि दिवावहिं॥

दोहा

बहुरि मनुज अवतार यह, लहै नीच कुल जाइ।
अग-भंग रोगादि युत, अल्प आरबल पाइ॥१२॥

चौपाई

अब देखहु येहि अति अघ कीन्हा।
बरबस पर-तिय कहु रति दीन्हा॥
तेहि ते दिव्य बरस पचासा।
रौरव माहिं बसहि सहि त्रासा॥
इह तीसर खल कुमति-निधाना।
निज तन पोपक नरकनि साना॥
परिजन पुरजन सबनि बिहाई।
मधुर अन्न छिपि करि नित खाई॥
ताते बिविधि भांति दे दडा।
बरबस पुनि जुग कर करि खडा॥
स्रोणितादि के कुंड कराला।
तिन्ह बिच पचवावहिं बहु काला॥
अवर बिलोकहु यह अघ-मूला।
कीन्ह बेद-मारग-प्रतिकूला॥
संध्या समय अतिथि इहि पासा।
आवा परम छूधित अति प्यासा॥

दोहा

तेहि को असन न दीन्ह इहि, अति कठोर मतिमंद ।
पुनि बिलोकि दृग कुटिल करि, कहे बचन दुख कंद ॥१३॥

चौपाई

तेहि अपराध जाहि बहु काला ।
ता तमिस्र अति नरक कराला ॥
घोर तिमिर - युत बिपति-निकेता ।
प्रबल भ्रमर जह डसि दुख देता ॥
अधो बदन करि मम भट घोरा ।
बहु बिधि ताड़ि - ताड़ि बर जोरा ॥
अपर निहारहु भूप सुजाना ।
पर - निदा इहि कीन्ह निदाना ॥
पुनि यह दूसर मुनि धरि काना ।
बार - बार हमि फरि बखाना ॥
तेहि अघ अध - कूप मह देई ।
बसहि लहै दुख, निजु कृत जेई ॥
देखहु ´अवर पाप कै खानी ।
परम मित्र - द्रोही अभिमानी ॥
रौरव नरक बर्साहि बहु काला ।
नाना बिधि सहिहै दुख जाला ॥

दोहा

येहि विधि अगिनित जीव गन, देखरायो तेहि काल ।
नाना नरक बताइ पुनि, कहि सब कर्म कराल ॥

सोरठा

निज कृत भोगि बनाइ, तब छटहि ये जीव सब ।
अस सुनि सोच बिहाइ, जाहु देव पुर लहौ सुख ॥१४॥

चौपाई

सुनु मुनीस अस मुनि यम बानी।
राम - भक्त वर नृप विज्ञानी ॥
अमित दया उपजी मन माही।
हृदय कप, दृग ते जल जाही ॥
धर्मराज तुम नीति निधाना।
निस्चय करि अब करहु बखाना ॥
जेहि विधि होइ सकल उद्धारा।
तजि दुख जाल आसु येहि बारा ॥
धर्मराज अस सुनि बर बानी।
बोले बहुरि नीति रस सानी ॥
जनक राज तुम चतुर अपारा।
केहि विधि इन्हकर होइ उधारा ॥
सकल ताप - भजन रघुनाथा।
परम कृपाल विदित श्रुति गाथा ॥
तिनके पद - पकज मनु लाई।
कबहु न भजे मनुज तनु पाई ॥

दोहा

पुनि तिन्ह की पावन कथा, मुनी नही धरि कान।
कहौ कौन बिधि छुटहि हिय, पाप पहार समान ॥१५॥

चौपाई

जदपि छुटावन चाहौ भूपा।
तौ मै कहौ उपाइ अनूपा ॥
एक बार तुम उठेउ प्रभाता।
शुद्ध भाव युत पुलकित गाता ॥
राम राम जय राम उदारा।
येहि प्रकार तुम नाम उचारा ॥

जो वह पुन्य देहु हरषाई।
छूटहि अबहिं जीव समुदाई॥
अस सुनि जनक राइ हरषाई।
बोले आतुर गिरा सुहाई॥
जो हम जाग - जोग जप कीन्हा।
जन्म प्रजंत पुन्य सब दीन्हा॥
इहि बिधि जबहि कहेउ महिपाला।
सकल जीव उधरे तेहि काला॥
भये दिव्य तन परम अनूपा।
सुनु मुनि बरनि न जाइ स्वरूपा॥

दोहा

पुनि बोले श्री जनक सन, बचन सकल कर जोरि।
अमित दुःख तजि, परम पद, लहे कृपा इक तोरि॥
येहि बिधि सुनि निरखे सबै, दिनकर सरिस प्रकास।
बहु प्रकार तोषे जबै, प्रमुदित सबै हुलास॥

सोरठा

तेहि अवसर बहु जान, आये निरखि चढ़ सबे।
करत जनक गुन गान, अति प्रसन्न सुर पुर चले॥१६॥

इति श्री पद्म पुराणे पाताल षंडे शेष वात्सायन सवादे
सत्यवान आख्यानो नाम त्रिसोध्यायः॥३०॥

सत्यवान आख्यान

दोहा

मुनि नायक सुनु, जनक तब, निरखि सबन नभ जात ।
धर्मराज सन बचन बर, बोले पुलकित गात ।।

चौपाई

अहो नाथ तुम नीति - निधाना ।
मृषा बचन नहि करहु बखाना ।।
तुम जो प्रथम कहा हम पाहीं ।
पापवंत आर्वाह येहि माहीं ।।
मैं केहि अघ बल तुव पुर आवा ।
कहहु बुझाइ मोह उर छावा ।।
येहि बिधि सुनि बिदेह कै बानी ।
बोले दिनकर - सुत सुधि आनी ।।
महाभाग तुम भूप सुजाना ।
नीति - धर्म - रत सुकृत - निधाना ।।
श्री रघुपति - पद - पकज - भृंगा ।
विजय बिरस, पुनि प्रिय सतसंगा ।।
तुव कीरति जग पावन कारी ।
कीन्हें कोटिन दुष्ट सुखारी ।।
जेहि के सुनत परम आनंदा ।
होइ हृदय, नासहिं भ्रम फंदा ।।

दोहा

तद्दपि अघ लवलेस तें, सुनहु महा महिपाल ।
मम पुर आवा जान तुव, कहौं सकल इहि काल ।।१।।

चौपाई

येक बार तुव तुरंग - निकेता।
चरहिं धेनु तृण छुधा समेता॥
केवल मन करि ताहि निवारा।
तेहि अघ दीख नरक कर द्वारा॥
महाराज सो अघ केहि ओरा।
रज समान मन कृत फल थोरा॥
सुकृत - सिंधु तुम दया निधाना।
अब प्रमुदित भोगहुं सुख नाना॥
तुम्हरी कृपा सकल ये जीवा।
गये देव पुर तजि दुख - सीवा॥
मैं केहि बिधि करि करौ बड़ाई।
तुव उर सदा बसहिं रघुराई॥
जो तुम चरन इहाँ नहि धरते।
मंद जीव ये केहि विधि तरते॥
परम दयानिधि साधु सुजाना।
केहि प्रंकार मैं करहुं बखाना॥

सोरठा

येहि बिधि सुनि जसु कान, बदि चरन पुनि हरषि हिय।
चढ़ि करि दिव्य बिमान, जात भये हरिलोक कहं॥२॥

चौपाई

ताते सुनु महिपाल प्रवीना।
पूजिय धेनुहि इरिपा हीना॥
जो पै करइ द्रोह खल जेई।
तजि श्रुति - मारग कुमतिहि सेई॥
पावहिं घोर नरक मैं बासा।
जब लगि चौदह इन्द्र प्रकासा॥

तेहि ते सुनहु रितुभर भूपा।
पूजहि धनु बेद अनुरूपा।।
सो प्रसन्न होइ तुव मन भावा।
हरिजन सुत देहै गुन छावा।।
रामानुज अस सुनि महिपाला।
बोलेउ मुनि सन बचन रसाला।।
मुनिनायक मोहि आपन जानो।
गौ - पूजन - विधि कहौ बखानी।।
सुनि जाबालि हृदय हरषाई।
कहन लगे सब विधि सुखदाई।।

दोहा

प्रथम सोधि सुदर दिवस, आराम कपट बिहाइ।
धरहु नेम उर वरष लगि, निस्चय प्रीति बढाइ।।३।।

चौपाई

प्रथमहि करहु धनु के पूजा।
इष्ट देव जानहु जनि दूजा।।
आपुहि बिपिन चरावन जाहू।
निज सेवा सौपहु जनि काहू।।
दिन प्रति जब तृण हरित चरावहु।
पुनि थल तेहि सम बिमल रखावहु।।
मत्सरादि निरवारण करहू।
पुनि तुम जब भोजन अनुसरहू।।
जब गौ चरहि करहि जलपाना।
तबहि बारि तुम लेहु न आना।।
धेनु धाम ऊँचे जनि रहहू।
यह आयसु सचेत नित करहू।।
इहि प्रकार व्रत करहु नृपाला।
होइहै सुत हरि भक्त रसाला।।

जब - संचय राखहु दिन - राती ।
जेहि ते ब्रत निबही भलि - भाँती ॥

दोहा

सुनहु भूप-मनि, सत्रुघन नृप सुनि इमि मुनि बैन ।
तनय हेत ब्रत यथा विधि, धारन कीन्ह सुखेन ॥४॥

चौपाई

प्रथम कीन्ह पूजन मनु लाई ।
पुनि जब तृण तेहि असन कराई ॥
दिन प्रति डांस निवारन करहीं ।
आपुन जब भोजन अनुसरहो ॥
येहि प्रकार बीते षट मासा ।
विधिवत सेवहि सहित हुलासा ॥
येक बार गौ विपिन मझारी ।
चरहि भूप - बल अभय सुखारी ॥
इहि 'बिधि गई दूरि गिरि पाछे ।
चरहि हरित तृण प्रमुदित आछे ॥
रहा दूरि पाछे नरनाहाँ ।
सुरभी दृष्टि परो नहि ताहाँ ॥
तेहि अवसर पचानन घोरा ।
आइ धेनु पकरी बर जोरा ॥
व्याकुल रंभै बारबारा ।
लाघव तेहि खल कीन्ह प्रहारा ॥

दोहा

तब लगि खोजत आव नृप, निरखि धेनु संहार ।
अति अधीर ह्वै विविधि विधि रोदन कीन्ह अपार ॥५॥

चौपाई

पुनि जाबालि निकट चलि आये।
दारुन सोक हृदय महं छाये ।।
बार - बार पद बदि निहोरी।
बोले बचन उभय कर जोरी ।।
सुनहु स्वामि मुनिनाथ उदारा।
तुव आइसु - बल मै व्रत धारा ।।
सतत करेहुं धनु सेवकाई।
जेहि प्रकार तुम बरनि सुनाई ।।
आजु बिपिनि मै गयेउ चरावन।
जाने बिनु वध किय पंचानन ।।
सा अघ जेहि बिधि नासहि स्वामो ।
कहौ बेगि लखि जनु अनुगामी ।।
पुनि मम व्रत जिमि पूरन होई।
प्रणतपाल बरनहु अब सोई ।।
इहि विधि दीन गिरा सुनि काना।
बोले मुनिवर दयानिधाना ।।

दोहा

सुनु नृप यह अघ निपट लघु, बिनु कोन्हे तुम मानि ।
छुटहि बेगि परिहरहु दुख, बेद उपाइ बखानि ।।६।।

चौपाई

जिनके किये महा अघ जूहा।
नासहि जिमि रवि तिमिर समूहा ।।
सुरा - पान द्विज - बध कृत घाता।
मित्र - द्रोह आदिक अघ-पाता ।।
इनके भंजन हेत उपाई।
बरने श्रुति, ते कहहुं बनाई ।।

नेम दान संजम समुदाई।
चंद्रायन मख पुनि सेवकाई॥
इन्हके एक सुनहु महिपाला।
नासहिं महा पाप के ज्वाला॥
अति प्रचंड अघ दुइ जग माहीं।
कवनहुँ भाँति जाहिं ते नाहीं॥
गो - बध पुनि श्रीपति कै निंदा।
करहिं जानि जे अति मतिमंदा॥
तिन्ह कर फल मैं करहुं बखाना।
भिन्न - भिन्न करि भूप सुजाना॥

दोहा

धेनु - विरोधी जीव जड़, बसहि नरक मह जाइ।
जब लगि चौदह इन्द्र दिव, भोगहि राज अघाइ॥७॥

चौपाई

रमानाथ कहँ निंदत जेई।
सकल कुटुंब सहित खल तेई॥
बसहिं घोर नरक मैं जाई।
बिस्व अवधि लघु सुनु भुवराई॥
अस बिचारि जे परम सयाने।
सपनेउ हरि गौ देख न आने॥
बिन जाने तुम कर बध लागा।
सुनहु उपाइ होइ जिमि त्यागा॥
नृप रितुपर्ण महा बड़भागी।
सियाराम - पद अति अनुरागी॥
धर्म - निरत पुनि वुद्धि - निधाना।
सत्रु - मित्र सम गत अभिमाना॥

सो तुम सन सादर मनुलाई ।
बरनहिं गौ बध - दहन - उपाई ।।
पुनि तेहि निज भुजबल करि लीन्हा ।
प्रथमहिं तासु देस तुम्ह कीन्हा ।।

दोहा

तजि विरोध अभिमान सब, जाहु तुरत तेहि गेह ।
जो कछु नृप बरनन करौ, सोइ कीजै जुत नेह ।।८।।

चौपाई

अवसि धेनु बध अघ संहारा ।
होइ है तब, यह बचन हमारा ।।
रिपुसूदन, इहि बिधि सुनि भूपा ।
बार - बार पद बदि अनूपा ।।
पुनि रितुपर्ण भवन चलि गयेऊ ।
तजि अभिमान चरन सिर नयेऊ ।।
तब तेहि भूप रितुंभर, देखा ।
सादर भेंटि मित्र सम लेखा ।।
बार - बार पूछी कुसलाता ।
उर जाना कछु व्याकुल गाता ।।
जोरि पानि तब बचन विनीता ।
कहा रितुंभर अघ भयभीता ।।
सुनहु भूप रितुपर्ण सुजाना ।
राम भक्त विज्ञान निधाना ।।
मुनि जाबालि मोहि पठवावा ।
कहि तुम्हार गुन - गान सुहावा ।।

दोहा

धेनु घात अघ लाग मोहि, बिनु जाने नरनाथ ।
जेहि विधि नासहि कृपा करि, कहौ बेगि सोइ गाथ ।।९।।

चौपाई

येहि बिधि सुनि रितुपर्ण भुवाला।
बोला हंसि मृदु बचन रसाला॥
सुनहु स्वामि मैं अवगुन खानी।
दुराचार - रत अति अभिमानी॥
सतत निरत बुद्धि संसारा।
मुनि जाबालि दया आगारा॥
देव सुमृति इतिहास पुराना।
सब विधि जानहिं परम सुजाना॥
तिन्हहिं त्यागि आयेउ मम पासा।
भयेउ आजु यह बड़ उपहासा॥
तद्दपि तुम सन करहुं बखाना।
छिमहु पाप निज मति अनुमाना॥
सादर सुनहु बिगत - सदेहा।
तत्व बेद सुमृतिन्ह कर येहा॥
मन बच कर्म राम - पद - कंजा।
सुमिरहु गो-बध होइहै भजा॥

दोहा

पुनि दयाल होइ राम प्रभु, करिहैं पूरन काम।
अखिल कोटि अघ पुंज कहं, भंजहि तिन्ह कर नाम॥१०॥

चौपाई

अस बिचारि निस्चय उर आनी।
सुमिरि सिया रघुवर धनु पानी॥
पुनि येक धेनु कनक समुदाई।
देहु बिप्र कहं मन हरषाई॥
गौ बधादि अघ औघ अपारा।
नसिहै यह श्रुति बिदित उचारा॥

अस सुनि आव भूप निजु धामा।
पुनि उर सुमिरि सिया श्रीरामा॥
पावन होइ दीन्हेउ गौ दाना।
फिरि सुत हेतु प्रथम व्रत आना॥
दिन प्रति धेनु चरावन जाई।
सुमिरहि प्रेम महित रघुराई॥
कछुक काल बीते मुनिराई।
होइ प्रसन्न बोली सो गाई॥
माँगु – माँगु वर भूप सुजाना।
जो कछु तुम निज उर रुचि माना॥

दोहा

अस सुनि बोले. हरषि नृप, तनय देहु मोहि माइ।
राम–भक्त निज धर्म-रत, कुल-पालक सुखदाइ॥११॥

चौपाई

बोली कामधेनु तेहि काला।
अैसो होहु अवसि महिपाला॥
अस कहि भई अगोचर सोई।
बहुरि रितु भर कितहुं न जोई॥
कछुक काल बीते सुत पावा।
सत्यवान अस नाम सुहावा॥
मन बच कम राम पद भृंगा।
निरत धर्म - पथ प्रिय सतसगा॥
पितु सेवक सुंदर शुभ सीला।
करहि महा सुखदायक लीला॥
इहि प्रकार बीते कछु काला।
तनय समर्थ जानि महिपाला॥

भूप रितुभर तब हरषाई।
सकल राज तेहि सौपि बनाई।।
पुनि आपन प्रमुदित तजि गेहा।
गये विपिनि तप हित युत नेहा।।

दोहा

तहाँ राम पद कमल भजि, प्रेम सहित गत-काम।
'मधुसूदन' पुनि त्यागि तनु, पायौ अविचल धाम।।१२।।

इति श्री पद्म पुराणे पाताल षड शेषवात्सायन सवादे
सत्यवान आख्यानोनाम येकत्रिसोऽध्याय: ।।३१।।

सत्यवान समागम

दोहा

रिपुसूदन सोइ भूप सुत, सत्यवान अस नाम।
करहि राज्य येहि नगर अब, परम साधु गुन ग्राम ।।

चौपाई

निज सुधर्म करि तोषेउ रामा।
अखिल लोकपति पूरन - कामा ।।
होइ प्रसन्न रघुवीर कृपाला।
दीन्ह भक्ति निज अचल रसाला ।।
कोटिन मख जप जोग प्रभावा।
सपनेउ विषै न कोउ तेहि पावा ।।

पुनि श्री रघुनायक - गुन - ग्रामा ।
सुनहि सप्रेम सदा हत कामा ॥
सकल प्रजा कहं पावन करहीं ।
कृपा सहित दीनन दुख हरही ॥
जे रघुनाथ भजन सेवकाई ।
करहिं न पुर बसि कपट बिहाई ॥
तिनहि बिबिध बिधि ताड़न देई ।
काल रूप होइ दया न लेई ॥
पुनि येहि नगर सकल नर नारी ।
प्रथमहि सवत अष्ठ बिसारी ॥

दोहा

करहि सदा एकादसी, बिधिवत सोधि बनाइ ।
रघुपति पद सेवन करे, नित नव प्रीति बढ़ाइ ॥१॥

चौपाई

महाराज यह नृप बड़भागी ।
सतत हरि - विमुखन कर त्यागी ॥
श्रीपति पद तुलसिका सुहाई ।
मुख माथे ते कबहुन जाई ॥
भूषण बसन गध असनादी ।
सतत धारन कर प्रसादी ॥
श्री रघुनायक भजन प्रतापा ।
मन बच कर्म सदा हत पापा ॥
सुर मुनि नाग पितृ समुदाई ।
पूजनीय यह बसनि बनाई ॥
अपर मनुज केहि लेखे माहीं ।
प्रभु प्रभाव जे जानत नाहीं ॥

सुनि रघुनाथ तुरग पुर आवा।
हरषवंत होइ साजि बनावा ॥
मिलिहै बेगि आपु कहं आई।
आगे राखि राज समुदाई ॥

दोहा

महाराज जो पूछेउ, सो मैं कहा बुझाइ।
कवन रजायसु होइ अब, करहुं सो सीस चढ़ाइ ॥२॥

चौपाई

सुनु मुनीस तब लगि मख-बाजी।
पहुंचा नगर मरुत-गति लाजी ॥
निरखि ताहि नृप-जन हरषाई।
पुनि महीप सन आतुर जाई ॥
बोले बचन चरन सिरु नाई।
महाराज सुनिये मनु लाई ॥
तुरग एक काहू कर आवा।
सुरसरि सम तन दुति मन भावा ॥
हेम-पत्र साहै तेहि भाला।
जटित वसन मणि-गन मनि-माला ॥
येहि प्रकार सुनि बचन सुहाये।
भूप सोधि हित जन पठवाये ॥
ते जन सब विधि सोध लगाई।
आतुर आइ कहा सिरु नाई ॥
महाराज कौसलपति रामा।
तिन्ह कर यह मख हय छबि धामा ॥

सोरठा

तासु अनुज बल धाम, लिये संग चतुरग दल।
विदित सत्रुघन नाम, आये पालन हेतु हय ॥३॥

चौपाई

सुनहु सूत नृप सुनि प्रभु नामा।
उभय बरन सुदर सुखधामा ॥
भयउ हरष बस पुलक सरीरा।
आव न बचन, बहे दृग नीरा ॥
पुनि धीरज धरि गद-गद बानी।
बोलेउ परम प्रेम रस सानी ॥
सब विधि धन्य भयौ मै आजू।
महत भाग पूजेउ मम काजू ॥
सतत मै निज हृदय मझारा।
भजहु अवध-पति राम उदारा ॥
सहित सत्रुहन तिन्ह कर बाजी।
आयेउ मम पुर सब सुख साजी ॥
परम भागवत श्री हनुमाना।
होइहैं अवसि सग मै जाना ॥
अपर राम सेवक बड़ भागी।
कटक साथ होइहैं हय लागी ॥

दोहा

विद्यमान जह सत्रुहन, सहित पवन-सुत बीर।
जाइ दरस लहिहौ तहाँ, पद रज धारि सरीर ॥४॥

चौपाई

सचिव सुनहु मम गिरा सुहाई।
राजकोस सब साजहि जाई ॥
अवर पदारथ सकल सजाई।
पुनि आतुर आवहु हरषाई ॥
मै रघुपति हय पालन हेता।
जाउं अबहि सब सन समेता ॥

इहि विधि सो मुनि आतुर गयेऊ।
सकल साज सजवावत भयेऊ।।
बहुरि आइ नृप पद सिरु नावा।
क्रम करि सकल वस्तु दरसावा।।
सकल सैन जुत सब हरषाई।
चलसि मिलन हित सुनु मुनिराई।।
आनद उदधि मगन महिपाला।
करत मनोरथ जाहि रसाला।।
तब लगि श्री रिपुसूदन राजा।
पुर प्रवेस किय सहित समाजा।।

दोहा

गरजत आवै प्रबल भट, पुनि स्यदन रव घोर।
कोटिन्ह हय गज तजही, कोलाहल चहु ओर।।५।।

चौपाई

सख वीणा दु दुभी अपारा।
बाजहि चहुँ दिसि जय उच्चारा।।
सत्यवान येहि अवसर आवा।
सहित समाज हरष उर छावा।।
रिपुसूदन - पद - पकज माही।
परेउ पुलकि प्रणत की नाही।।
सकल राज धन धाम समेता।
कीन्ह समर्पन रघुपति हेता।।
राम बधु तब हरपि अपारा।
भेटेउ भुज भरि बारहि बारा।।
श्री रघुपति सेवक जिय जाना।
कुसल बूझि बहु बिधि सनमाना।।
पुनि नृप तनय रुक्म अस नामा।
निकट बोलि लखि सुभ गुन धामा।।

सकल राज अधिपति तेहि कीन्हा।
राम - भक्ति - गुन सिखवन दीन्हा ।।

दोहा

तब महीप हनुमान कहं, मिले ललकि तेहि काल।
पुनि सुबाहु नृप कह मिले, गुनि हरिभक्त बिसाल ।।
अपर राम सेवक जिते, तिनहि भेटि हरपाइ।
मानि कृतारथ आपु कहं, समुझि भाग अधिकाइ ।।
तब लगि जग्य तुरग मुनि, बहु सेवक समुदाइ।
गयौ दूरि अति बेगि धरि, मनु मारुतहि लजाइ ।।

सोरठा

रामअनुज तेहि देखि, सत्यवान - युत बैठि रथ।
मातुल प्रेरि विसेखि, चले सकल सेना सहित ।।६।।

इति श्री पद्म पुराणे पाताल षडे शेप वात्मायन सवादे
सत्यवान समागमोनाम द्वित्रिसौऽध्याय: ।।३२।।

वीर-प्रतिज्ञा

दोहा

कोटिन रथी महारथी, चढ़ि-चढि रथन मझारि।
रिपुभंजन कौ आदि दै, चले कटक सम्हारि ।।

चौपाई

मुनि नायक सुनु, पंथ मझारा।
प्रगट भयो यक अचरज भारा ।।
अकसमात तिमिर अति घोरा।
पूरि गयेउ छिन महं चहुं ओरा ।।

निज पराव कछु परै न जाना।
मोह विवस सब कटक भुलाना॥
रेणु अपार गगन मह छाई।
अति प्रचड दामिनि घहराई॥
घन घमंड करि गर्जि अपारा।
बरषै आमिष स्रोणित धारा॥
अति कराल भय कटक मझारी।
प्रगट भई, नहिं होइ सम्हारी॥
सकल बीर व्याकुल घबराहीं।
बोलहिं अति अधीर सब ताहीं॥
कहा भयेउ केहि थल हम आये।
येहि बिधि भाषहि उर दुख छाये॥

दोहा

अति प्रचंड तम मुनहु मुनि, व्यापि गयेउ सब लोक।
सुर मुनि किन्नर नाग नर, सब हिय भयो ससोक॥१॥

चौपाई

अस माया मग महं बिस्तारी।
विद्युन्मालि नाम तमचारी॥
रावन सुहृद महा बल-रासी।
मायावी पाताल निवासी॥
प्रबल तमीचर सैन समेता।
चढ़्यौ विमान मध्य भय देता॥
भेद रहित सो इच्छाचारी।
अस्त्र-सस्त्र जुत अति भयचारी॥
तेहि खल मख-तुरग हरि लीन्हा।
माया बस काहू नहिं चीन्हा॥

उभय घरी लगि तम नभ छावा।
पुनि प्रगटेउ रवि गगन सुहावा॥
तब रिपुसूदन आइ नृपाला।
कहेउ कहाँ मख-तुरंग रसाला॥
उंहा सकल सेवक समुदाई।
खोजन लगे बिकल हय-राई॥

दोहा

कितहुँ न दीख तुरंग तब, कीन्हेउ हाहाकार।
कहाँ गयौ, केहि खल हरयो इमि सब बचन उचार॥२॥

चौपाई

चढ़े बाजि गज रथन्ह मझारा।
जहं-तंह भट सब करहिं बिचारा॥
तब लगि व्योम माहिं तिन्ह देखा।
चंचल जानि बिचित्र विसेखा॥
कटक समेत निसाचर-राजा।
अति असंक निरखा तहं भ्राजा॥
नाना बरन बिविधि हथिआरा।
धरे तमीचर बिकट अपारा॥
लम्ब दंत दुर्मुख बिकराला।
दीर्घ केस भयानक जनु काला॥
येहि विधि लखि रजनीचर नाना।
तुरंग-चोर सब ही अनुमाना॥
पुनि आयेउ रिपुसूदन पासा।
बंदि चरन तब बचन प्रकासा॥
मख-तुरंग काहू हरि लीन्हा।
तिमिर बिबस कछु हमहिं न चीन्हा॥

दोहा

महाराज यह व्योम मै, प्रगट बिमान लखाइ।
यज्ञ-अस्व इहि दुष्ट ने, लीन्हेउ अवसि चोराइ ॥३॥

चौपाई

राम अनुज इहि विधि सुनि बानी।
बोले गिरा महा रिसि सानी॥
कहाँ तमीचर यह बल थोरा।
जेहि मख-तुरग लीन्ह हरि मोरा॥
इहि अवसर हनि बान प्रचडा।
अवनिहि डार्यौ करि सिर खडा॥
सहित बिमान सकल कटकाई।
करिहौ अवसि बिहाल बनाई॥
सुनहु सकल महिपाल बरूथा।
सजग होहु जुत नित निज जूथा॥
सजि-सजि अस्त्र-सस्त्र समुदाई।
चलहु असुर सन्मुख हरषाई॥
श्री रघुनाथ यज्ञ-हय हेता।
करहु समर सब भाँति सचेता॥
इहि प्रकार सब कह समुझाई।
लोचन अरुन भयेउ छबि पाई॥

सोरठा

पुनि नृप नीति बिचारि, सुमति सचिव तन हेरि करि।
महा रोष उर धारि, बोलेउ गिरा गभीर अति ॥४॥

चौपाई

कहौ सचिव मोहि बेगि बुझाई।
निसिचर वध कब होइ बनाई॥

कवन सूर रन कर्म प्रवीना।
कटक सहित जो रिपु-सिर छीना॥
यथा जोग अब करहु बखाना।
सो उपाइ मैं रचौं निदाना॥
अस सुनि सुमति यथारथ बानी।
बोले श्री रामहि उर आनी॥
महाराज मैं करहु बखाना।
सावधान सुनिये धरि काना॥
प्रथमहिं भरत-तनय कहं ताता।
करहु निदेस जाहिं हरषाता॥
सकल सस्त्र विद्या विधि नाना।
जानहिं परम सूर बलवाना॥
करिहै विजय अवसि अरि जीती।
तुव आयसु प्रतिपालि सप्रीती॥

दोहा

पुनि लक्ष्मीनिधि भूप कहं, पठवहु मन हरषाइ।
निस्चय असुर विमान कर, करिहैं भग्न बनाइ॥५॥

चौपाई

बहुरि पठावहु पवन - कुमारा।
बिधिवत जानहि असुर संघारा॥
महावीर बल-बुद्धि निधाना।
इनते परे सूर नहिं आना॥
दसन सैल तरु नखन प्रहारा।
करिहैं असुर सैन संहारा॥
अपर सकल मरकट कटकाई।
करहु बिदा करि जीतहु जाई॥
सुमद सुबाहु आदि नृप जेते।

सजि - सजि कटक जाहि रन तेते ।।
पुनि सजि सकल चमू चतुरगा ।
चलहु आपु धरि आयुध संगा ।।
रथ आरोहन हिय हरषाई ।
करहु विजय हति अरि समुदाई ।।
भूप सिरोमनि यह मत मोरा ।
अवसि खलहि जीतहु बरजोरा ।।

दोहा

येहि विधि सकल समाज महँ, सुमति कहा समुझाइ ।
सुनि बोले श्री सत्रुहन, गिरा गभीर सुहाइ ।।६।।

चौपाई

सुनहु सुभट पुष्कल समुदाई ।
धनु विद्या मह निपुन बनाई ।।
यह असुराधिप सैन समेता ।
सन्मुख चढ़यौ जान रन हेता ।।
येहिं के बध लगि मन हरषाई ।
साजि सकल बिधि सजग बनाई ।।
निज-निज प्रण बरनहु येहि काला ।
सत्य पराक्रम सहित रसाला ।।
सुनि अस महाराज कं बानी ।
बोले निज-निज प्रण भट मानी ।।
प्रथमहि पुष्कल पद सिरु नाई ।
करन लगे प्रण मन हरषाई ।।
सुनहु तात प्रण सत्य हमारा ।
सुखद महा अद्भुत ससारा ।।
हति निज सायक प्रेम प्रचडा ।
करहु न येहि विमान के खडा ।।

दोहा

करि विहाल, बिथुराइ कच, मूर्छित करि भुव माहिं ।
सब के देखत असुर कह, जो येहि डारहु नाहिं ।।७।।

चौपाई

सुता-द्रव्य भोगे अघ जोई ।
पुनि सुर दूखे पातक होई ।।
सो अघ लगहु मोहि येहि बारा ।
जो मैं मृषा बचन उच्चारा ।।
बहुरि सैन सब करौ न खंडा ।
हति नाना सायक अति चंडा ।।
तौ मम प्रण दूसर सुनि लेहू ।
महाराज फिरि आयसु देहू ।।
जो अघ हरि गुर संत मझारा ।
भेद किये प्रगट ससारा ।।
सो पातक लागहु मोहि नाथा ।
मृषा होइ जो मम यह गाथा ।।
जो मम बचन, राम मम ईसा ।
तौ फुरु होहु मोहि बागीसा ।।
येहि बिधि सुनि पुष्कल कै बानी ।
बोले लक्ष्मीनिधि भटमानी ।।

दोहा

श्रुति निंदहि जे मंद मति, सुनि बरजहि नहिं जोइ ।
पुनि द्विज तन धरि लक्ष-गौ-रस बेचे अघ होइ ।।८।।

चौपाई

ब्रहुरि बिप्र होइ कृपा बिहाई ।
सकल कर्म निजु करि मन लाई ।।

जमन कूप जल करि जे पाना।
प्रायश्चित करहि नहिं आना॥
सकल पाप लागहु येहि काला।
जो सन्मुख ते चलहुं नृपाला॥
जनक - तनय बानी सुनि काना।
बोलेउ महाबीर हनुमाना॥
राम चन्द्र - पद - कंज पुनीता।
सुमिरन करि उर माहिं सप्रीता॥
पुनि रिपुसूदन पद सिरुनाई।
गिरा उचार कीन्ह हरषाई॥
मम स्वामी रघुनाथ कृपाला।
तिनहि भजहिं मुनि जन सब काला॥
पुनि जोगी जन हृदय मझारा।
भजहिं निरंतर मुदित अपारा॥

दोहा

देव असुर नर नाग सब, प्रेम सहित सब काल।
जिनके पद-पाथोज कहं, नवहिं मुकुट-युत भाल॥६॥

चौपाई

अस रघुपतिहिं सुमिरि मैं नाथा।
भाख्यौ होइ सत्य सब गाथा॥
यह खल असुर महा बल रंका।
चढ़यौ जात जुत सैन असंका॥
जौ निदेस तुम करहु कृपाज्ञा।
जीतहुं मैं अकेल येहि काला॥
कहहु सकल - सुर - सहित - सुमेरा।
पूंछ - अग्र तोलहुँ इहि बेरा॥

पुनि समस्त जल निधि कर नीरा।
प्रलय अनल सह सुनु मति धीरा।।
जनक सुता रघुवीर सुभाऊ।
करहुँ पान, भाषहुँ सति - भाऊ।।
कवन काज अस भूतल मांहीं।
जाहि नाथ मैं करि सक नाहीं।।
जो यह बचन मृषा मम होई।
सुनहु प्रतिज्ञा तौ प्रभु सोई।।

दोहा

श्री रघुवर-पद - कमल ते, विमुख होहुं तेहि काल।
पुनि द्विज होइ मद पान रत, मो अघ लगहु कराल।।१०।।

चौपाई

बहुरि सुद्र होइ कपिला गाई।
पालहि पय - हित नीति - बिहाई।।
सो पातक मोहि लगहु निदाना।
कीन्ह होइ जो मृषा बखाना।।
पति जीवत जग मैं जो नारी।
पूजहि देव असुर कुविचारी।।
बहुरि सुद्र तनु धरि मतिमंदा।
विप्र नारि गमनहि अघ - कंदा।।
ए सब अघ अपि लगहु बनाई।
रौरव बसहु कल्प सत जाई।।
होइ अनित्य जो गिरा हमारी।
कहौं सत्य, पुनि साखि खरारी।।
अस कहि पवन - तनय वर बीरा।
सुमिरि राम भा चुप मति धीरा।।
सुनि अस अपर सुभट समुदाई।
निज - निज प्रण कीन्हे हरषाई।।

दोहा

सुनि येहि विधि प्रण सबन के, रामानुज हरषाइ ।
बोले बचन प्रसंसि बहु, धन्य - धन्य मुनि राइ ॥१४॥

चौपाई

पुनि बध मैं संसय अनुमानी ।
लगे करन प्रण उर रिस आनी ॥
अब सब सुभट सुनहु प्रण मोरा ।
यह खल तुव सन्मुख हय – चोरा ॥
सिर–खंडन करि भूतल माही ।
जो बिमान ते डारहुँ नाही ॥
मृषा साखि कीन्हे अघ जोई ।
पुनि कंचन चोरे तेहि होई ॥
श्रुति – दूषन आदिक अघ जेते ।
लागहु अवसि मोहि कहँ तेते ॥
अस सुनि रिपुभंजन कै बानी ।
बोलेउ सकल बीर भटमानी ॥
महाराज तुम सम जग माही ।
देव मनुज नागन मै नाहीं ॥
राम - बंधु तुम धन्य अपारा ।
कीरति बिसद बिदित संसारा ॥

दोहा

लवनासुर अतुलित बलो, देव दनुज दुख दान ।
बिनु प्रयास भूपाल मनि, ताहि कीन्ह हत प्रान ॥
यह निसिचर खल अधम अति, बल बिहीन अति दीन ।
जीतहु निस्चय निमिषि महं, केहि कारण प्रण कीन ॥

सोरठा

येहि बिधि कहि सब भूप, अस्त्र-सस्त्र सजि संन जुत ।
चढ़ि निज रथन अनूप, चले सुमिरि प्रण समर लगि ॥१८॥

इति श्री पद्म पुराणे पाताल षडे शेष वात्सायन संवादे
बीराणां प्रतिज्ञा वणनोनाम त्रयत्रिसौऽध्याय: ॥३३॥

शत्रुघ्न-विजय

दोहा

सूत सुनहु येहि भाँति नृप, चढि-चढ़ि रथन मझारि ।
अधम दनुज सन्मुख गये, सकलायुध बपु धारि ॥

चौपाई

सकल कटक लखि सन्मुख आवा ।
बोला असुर महा रिस छावा ॥
प्रलय जलद इव गर्जि कठोरा ।
भये प्रगट पुनि गर्जत घोरा ॥
रे भट सकल जाहु निज गेहा ।
इहाँ आइ किमि त्यागहु देहा ॥
करहु समर तुम कोटि प्रकारा ।
तजहुँ न हय, प्रण सत्य हमारा ॥
पुनि विद्युन्मालो नाम नामा ।
जग विख्यात अतुल बलधामा ॥
परम मित्र दसकधर केरा ।
तासु बंर लेहों येहि बेरा ॥

कहौ कहाँ वह राम नरेसा।
जेहि जीत्यौ छल करि लकेसा॥
पुनि तेहि बधु सत्रुघन नाऊँ।
सूर सिरोमनि सो केहि ठाऊँ॥

दोहा

आजु तासु सिर खडि अपि, पुनि श्रोणित करि पान।
तब मै दस मुख-सखा सुनु, होइहौ उरिन निदान॥१॥

चौपाई

सुनि अस अधम-बचन बर बीरा।
बोलेउ पुष्कल गिरा गभीरा॥
सुनु रे अधम तमीचर राजा।
जलपत तोहि आव नहि लाजा॥
जे जग सुभट कहावहि भारी।
देखरावहि बल, देहि न गारी॥
बिन प्रयास रावन जिन मारा।
सहित सैन पुनि सब परिवारा॥
तिन्ह कर हय चुराइ मति-मदा।
जैहै कहाॅ भागि अघ-कंदा॥
भूप सत्रुहन हति इषु चडा।
अवसि डारि है करि सिर खडा॥
तब सृगाल गिद्धादि अपारा।
करिहै तुव आमिष आहारा॥
मति गर्जहि खल बारहिबारा।
निरखु मोहि निज जोतनहारा॥

दोहा

मैं सेवक रघुनाथ कर, पुनि निस्चय तब काल।
अस बिचारि करि समर सठ, परिहरि गर्ज कराल॥२॥

चौपाई

सुभट सुजान कहावत जेई।
जीति समर रिपु गर्जहि तेई॥
इहि बिधि नीति सहित वर बानी।
कहत जात पुष्कल भटमानी॥
तब लगि कोपि असुर तेहि काला।
तजी सक्ति यक परम कराला॥
भरत-तनय तेहि आवत देखी।
दारुण मणिमय दीर्घ विसेखी॥
हति लाघव निज सायक चंडा।
अवनि निपात करो त्रै खंडा॥
परी भूमि तल राजहि कैसे।
श्री हरि त्रिगुण प्रकृति लखि जैसे॥
सक्ति-खंड लखि असुर रिसाई।
लीन्ह त्रिसूल प्रचंड बनाई॥
छूटहि अनल कन तीछन भारी।
काल-रुप नहि जाइं निहारी॥

दोहा

तज्यौ त्रिसूल प्रचारि खल, पुष्कल आवत देखि।
तुरत निपातौ बाण हति, करि तिल सरिस मविसेखि॥३॥

चौपाई

पुनि कोदंड मध्य सर धारे।
महा कोप करि बिपुल पवारे॥
ते सायक मन वेग लजाई।
लाघव रिपु उर गयौ समाई॥
जेहि प्रकार श्री पति गुन-गाथा।
संतन-हृदय लाग मुनिनाथा॥

स्रोनित बिपुल स्रवत उर माहीं।
तदपि हारि खल मानत नाहीं॥
दारुन बिथा समुझि खिसिआई।
काल रूप मुग्दर लिय जाई॥
पुष्कल हृदय माझ खल मारा।
जिमि बासव गिरि कुलिस प्रहारा॥
लगत प्रहार भरत-सुत बीरा।
बिकल भयेउ भय कंपि सरीरा॥
तुरत त्यागि रथ अवनि मझारा।
परेउ सिथिल होइ खाइ पछारा॥

छंद

होइ सिथिल, खाइ पछार, व्याकुल, भरत-सुत भूतल परेउ।
तेहि समय लक्ष्मीनिधि सुभट, अरु उग्रदंत असुर लरेउ॥
बहुभाँति छाड़हि अस्त्र-सस्त्र, प्रचंड लाघव रिस भरे।
सुनु सूत लगत प्रहार दारुन, बिपुल खल रन मह परे॥

सोरठा

तब लगि पुष्कल बीर, सज्ञा कौ प्रापति भये।
उठ कोपि रन धोर, बोल्ले विद्युन्मालि सन॥४॥

चौपाई

धन्य-धन्य असुराधिप बीरा।
बिपुल पराक्रम कृत रणधीरा॥
अब मम विक्रम देखु कराला।
सजग सैन जुत रहु येहि काला॥
कीन्ह प्रतिज्ञा मैं तुव हेता।
सुनत सकल बीरन सुख देता॥
हति नाराच निसित अति घोरा।
डारहुँ तोहि धरहि बर जोरा॥

अस कहि कीन्ह सगुन कोदंडा।
पुनि छाड़े नाराच प्रचडा ॥
अनल समान तेज तिन्ह केरे।
धाए काल मनहुँ रिस प्र ॥
आवत देखि असुर तेहि बाना।
काटन लगि उपाइ उर आना ॥
तब लगि सर प्रचड मुनिराई।
खल उर बेधि परे महि जाई ॥

दोहा

निपट बिकल होइ जान मह, कच बिथुरे बहु घूमि।
सुधि बिसारि खल कपि अनि, पर्यौ निमिषि मह भूमि ॥५॥

चौपाई

निज भ्रातहि मूर्छित अवलोकी।
उग्रदत ढिग आव ससोकी ॥
तुरत उठाइ जान ल गयऊ।
भय विषाद अति उर निमग्नेऊ ॥
पुनि खल महा कोप करि आवा।
गजत तजत भय उपजावा ॥
रे नृप-तनय मद सुनु बाता।
करि छल त मम बधु निपाता ॥
अब भजि जाहि कहाँ इहि काला।
ठाढ होहु रन सजग बिसाला ॥
जब लगि मै गर्जउं रन माही।
बिजय आस तब लगि करु नाही ॥
इहि विधि जलपत बचन कठोरा।
धावत आव असुर बर जोरा ॥

तब लगि पुष्कल दस सर चंडा।
उर महं दले तानि कोदंडा॥

दोहा

रुधिर श्रवत खल कोपि तब, दसन पोसि चिक्कारि।
धाइ कुलिस इव मुष्टिका, मारी हृदय मझारि॥६॥

चौपाई

अस प्रहार लागत उर माहीं।
भरत-तनय कछु कपेउ नाहीं॥
तब अनेक सर तीछन धारे।
लाघव रिपु तन माहि प्रहारे॥
उग्रदंत अतिव्याकुल भयेऊ।
पुनि त्रिसूल दारुन कर लयेऊ॥
तीनि विसिख ज्वाजल्प अपारा।
पावक कन छुटि तासु मझारा॥
पुष्कल हृदय कोपि सोइ मारा।
परे अवनि नहिं देह संभारा॥
परम बिथा व्यापी तन माही।
समर भूमि सोभित किय ताही॥
तेहि अवसर मारुत-सुत बीरा।
लखि पुष्कल कहं बिकल सरीरा॥
महा कोप जुत गर्जि अपारा।
सन्मुख आइ बचन उच्चारा॥

सोरठा

रे सठ, मख-हय चोर, ठाढ़ होहु रण जाइ कित।
जीतहु तोहि बर जोर, केवल चरन प्रहार करि॥७॥

चौपाई

अस कहि महा सूर हनुमाना।
चढ़ेउ कूदि करि तुरत विमाना॥
लाघव करि पुनि बहु अस्थाना।
खडन कीन्हेउ कोपि निदाना॥
पुनि खल बहुतक पूंछ भ्रमाई।
दले तहा कछु बरनि न जाई॥
बहुतक पद प्रहार करि मारे।
बिपुल बाहु बल हति महि डारे॥
नखन दसन बहुतक सहारे।
पुनि बहुतक तन मर्दि निवारे॥
बिगत प्रान खल वहुतक भयेऊ।
बहुतक मूर्छित होइ तह गयेऊ॥
पुनि बहुतक लखि समर कराला।
भजे जाहि व्याकुल तेहि काला॥
येहि विधि कपि अगिनित खल मारे।
अग-भग बहु करि महि डारे॥

दोहा

पुनि कपि तासु विमान के, गृह ध्वज वदन राइ।
विपुल कगूरा कोट सह, भडेउ निमिष मझाइ॥८॥

चौपाई

हाहाकार करहि खल बीरा।
भये बिकल अति धरहि न धीरा॥
सुभट सिरोमनि पवन-कुमारा।
छिन भूतल छिन गगन मझारा॥
जह जह जाइ विमान उड़ाई।
तहं तहं निरखि परे कपिराई॥

काम रूप धारेउ हनुमाना।
विकल कीन्ह इमि कटक निदाना॥
लखि बिहाल निजु कटक अपारा।
उग्रदत तब बचन उचारा॥
रे कपि कीन्ह पराक्रम भारा।
निमिस महि मम कटक सघारा॥
छिन यक ठाढ होहु रन माही।
करि हौ प्रान रहित सक नाही॥
अस कहि खल त्रिसूल अति घोरा।
छाड़त भयौ कोपि कर जोरा॥

छंद

कर जोरि कोपि निदान छाडेउ सूल निसित भयकरा।
लखि अनल सम आवत मरुत सुत पकरि मुख भजन करा॥
पुनि नखन दमननि पद चपेटन हति रिपुहि व्याकुल कियो।
तेहि दीख हृदय बिचारि कपि मम प्राण अपि चाहत लियो॥६॥

भुजंग प्रयात

येहि भाँति मन अनुमानि।
जग दुखद माया ठानि॥
तम प्रगट भा चहु ओर।
अति प्रबल दारुन घोर॥
निज पर न परै लखाइ।
भा कटक दुखित बनाइ॥
गिरि शृंग उपल अपार।
बरषहि सुभट चिक्कार॥
पुनि कीन्ह खल पाखड।
प्रगटे जन्मद गण चड॥

गर्जहि प्रवल इव घोर ।
चपला चमकि चहु ओर ।।
बहु पूय श्रोणित हाड़ ।
बरषे भरी महि गाउ ।।
पुनि ब्योम ते बहु रुड ।
भूतल परहि जुत मुंड ।।
कुंडल किरीट समेत ।
निरखे महाभय देत ।।
बिनु बमन रूप कराल ।
फहरात केस बिसाल ।।
पुनि असुर विकट अपार ।
भय प्रगट कटक मझार ।।
कर धरे कठिन कृपान ।
करि सबै स्रोणित पान ।।
तेहि काल भट समुदाइ ।
भये बिकल निपट अघाइ ।।
तजि बिजय आस बनाइ ।
भजि चले सुनु मुनिराइ ।।

दोहा

तुरंग नाग भट मृतक गुनि, पुनि लखि कटक परात्र ।
तब रथ चढ़ि श्री सत्रुघन, रिपु सनमुख कह आव ।।

सोरठा

सुमिरि बधु - पद कंज, पुनि मोहन सर चाप धरि ।
तज्यौ तुरत तम-भज, बिन प्रयास मुनिवर तबै ।।१०।।

चौपाई

मोहन सर प्रताप छिन माहीं ।
दिसा प्रकास भई तम नाहीं ।।

घन समूह जह तहं उड़ि गयेऊ।
दामिनि रहित ब्योम सुचि भयेऊ॥
प्रगटेउ भानु, सबनि सुख पावा।
खल कृत कपट दृष्टि नहि आवा॥
असुर समूह सहित तब जाना।
सबहि लख्यौ सन्मुख - सुखदाना॥
मारु काटु धरु बचन कठोरा।
बोलहिं असुर चढ़े बल थोरा॥
तब रिपुसूदन कोपि अपारा।
हते बान बहु जान मझारा॥
पच्छ सुंदर कनक खर धारा।
खंड - खंड भा लगत प्रहारा॥

दोहा

पुनि हति अवर प्रचड सर, करि विमान तब खड।
अवनि निपात्यौ हति अवर, राम अनुज बलवंड॥११॥

चौपाई

तेहि अवसर बिमान लखि खंडा।
विद्युन्माली कोपि प्रचंडा॥
पुनि धनु मह धरि बान कराला।
राम-बंधु उर दलि तेहि काला॥
रुधिर - औघ - जुत तनु रन सोहा।
जिमि पलास फूलित मन मोहा॥
सूत सत्रुधन नृप बर बीरा।
रज कन सम मन गनी न पीरा॥
मरुत अस्त्र धरि धनुष मझारा।
तानि स्रवन लगि कीन्ह प्रहारा॥

तेहि छिन पवन अमित अति घोरा।
प्रगट्यौ ब्योम माहि चहुँ ओरा॥
भये असुर व्याकुल बहु भाँती।
आइत बदहि हतहि निज छाती॥
टूटी चग समान विमाना।
भ्रमहि व्योम मै भगन निदाना॥

दोहा

सिखा केस बिथुराइ खल, बिगन बसन अति दीन।
गिरत जान तजि व्योम ते, मरुत बिवस बल हीन॥१२॥

चौपाई

रन मडल बिचरहि ते कैसे।
भूत बेताल प्रेतगन जैसे॥
रामानुज कर अस बल देखी।
तब असुराधिप कोपि बिसेखी॥
सभु अस्त्र छाड़्यौ ततकाला।
अति दारुन जग बिदित कराला॥
भूत प्रेत निसिचर बैताला।
प्रगटे अमित परम विकराला॥
लिये एक कर मनुज - कपाला।
उभय हाथ करतरी कराला॥
तुरत भटन के सीस निपाती।
स्रोणित पियहि जुड़ावहि छाती॥
जहा तहां भट करहि पुकारा।
त्राहि - त्राहि सब कटक मझारा॥
अस विक्रम रिपु केर निहारा।
रिपु सूदन उर कोपि अपारा॥

दोहा

पुनि नारायण अस्त्र धरि, धनुष मध्य तेहि काल।
तानि कान लगि छाड़्यौ, प्रगटेउ तेज बिसाल ॥१३॥

चौपाई

रुद्र अस्त्र तेहि छिन मुनिराई।
नास भयो निज बल समुदाई ॥
निज बिक्रम बिलोकि संहारा।
दसमुख जननि पिता तेहि बारा ॥
राम अनुज पर कोपि अखंडा।
लीन्हेउ मुद्गर सूल प्रचंडा ॥
उभय बाहु गहि धावत आवा।
मनहु काल निज वपु दरसावा ॥
तब रिपुभंजन लाघवताई।
अर्धं चंद्र सर धनुष चढ़ाई ॥
एक निमिषि मैं दोउ भुजदंडा।
डारि दीन्ह भूतल करि खंडा ॥
भुज बिहीन लखि आपन गाता।
पुनि स्रोनित बिलोकी तन जाता ॥
तब खल दसन मर्दि चिक्कारी।
उग्र बिलोकनि कोपि निहारी ॥

दोहा

सीस अग्र करि धाव खल, बोलेउ बचन कठोर।
रिपुसूदन मैं बधंउ तोहि, भाजि जाइ केहि ओर ॥१४॥

चौपाई

कवन बचावहि तोहि येहि काला।
येहि बिधि भागत आव कराला ॥

तब लगि रामानुज हति आना।
भंजेउ सीस कीन्ह गत - प्राना॥
धरनि परा जिमि भूधर भारी।
भजी सन सब निपट दुखारी॥
तब लखि बंधु - सीस भू माही।
उग्रदंत खल कोपेउ ताही॥
प्रवल मुष्ठिका हृदय मझारी।
लाघव मारेउ अग्र प्रचारी॥
सो प्रहार सहि रघुपति भ्राता।
लीन्ह बान दारुन बिख्याता॥
लाघव तज्यौ तानि कोदडा।
गिरेउ धरनि तल ह्वै सिर खडा॥
तेहि अवसर कोटिन भट धाये।
सकल तमीचर मारि गिराये॥

दोहा

जे रिपुसूदन सरन खन, आयेउ तजि अभिमान।
'मधुसूदन' प्रभु कृपा निधि, राखेउ तिनके प्रान॥

सोरठा

बोणा संख निसान, गोमुखादि बाजेउ तबं।
हरषे सूर निदान, जय जय धुनि चहुं दिसि करै॥१५॥

इति श्री पद्म पुराणे पाताल षंड शेप वात्सायन संवादे
सत्रुहन विजयनोनाम चतु:त्रिंशोऽध्याय: ॥३४॥

अरण्य स्थान

दोहा

वात्सायन सुनु सत्रुहन, प्रापति ह्वै मख बाज।
हरषेउ पुष्कल सहित अति, जीति के रिपुहि समाज ।।

चौपाई

तेहि अवसर लक्ष्मीनिधि राजा।
अपर भूप सब सहित समाजा ।।
हरषवंत रन महं सब सोहैं।
स्रोनित कन समान मन मोहैं ।।
रिपुसूदन समीप सब आई।
बोले रन उत्साह बढ़ाई ।।
महाराज तुम सबके त्राना।
राम-बंधु बल बुद्धि निदाना ।।
बिद्युन्माली असुर प्रचडा।
सहित सहाइ कीन्ह तुम खंडा ।।
आजु सकल बृंदारक वृंदा।
त्यागि दुसह दुख भयेउ अनंदा ।।
सरित सरोवर निर्मल भयेऊ।
आजु विमल प्रकास रवि लयेऊ ।।
त्रिविधि समीर महा सुखदाई।
चली आजु तुव बल अधिकाई ।।

दोहा

सुर-संतापी बिदित जग, असुराधिप बलवान।
आजु दीख हम तासु बध, तुव बल कृपानिधान ।।१।।

चौपाई

पुनि रघुनाथ - जज्ञ - हय पावा ।
सो बिलोकि उर आनद छावा ।।
अब जेहि भाँति सकल महि माही ।
करिहौ बिजय नाथ सक नाही ।।
सो अब हम निरखहि तुव सगा ।
तब निस्चै होइहै भव - भंगा ।।
अब मख-तुरंग तजहु नृपराई ।
होइ विलव अवधि नियराई ।।
इहि विधि सुनि भूपन क बानी ।
ममय जोग सुंदर सुख-खानी ।।
तब अरिभजन गिरा मुहाई ।
बोलेउ सबनि प्रससि बनाई ।।
धन्य-धन्य तुम नृप समुदाई ।
कस न कहौ इहि समय बुझाई ।।
अस कहि हय छोड़ेउ तेहि काला ।
उर बढ़ाइ आनंद बिमाला ।।

दोहा

छुटत अस्व उत्तर दिसा, चलत भयेउ तेहि काल ।
अगिनित भट मग सजग अति, रच्छा करत बिसाल ।।२।।

चौपाई

तेहि पीछे सजि द : चतुरगा ।
चलेउ राम भ्राता लै सगा ।।
जंह-जह तुरंग सिरोमनि जाई ।
तंह-तंह गमनहि सब कटकाई ।।

रिपुभंजन-प्रताप सुनि काना।
धरि न सकै कोउ तुरग निदाना॥
अब मुनीस सुनु कथा सुहाई।
भंजन महा पाप समुदाई॥
इहि बिधि सब रेवा तट माहीं।
आयेउ निकट हृदय हरषाहीं॥
परम पुनीत सरित सुखदाई।
केहि प्रकार मैं कहौ बुझाई॥
मुनि समूह राजहिं तेहि तीरा।
मन वच कर्म भजहि रघुबीरा॥
निरखत नीर मिटहि उर दाहू।
मनहु नीलमनि केर प्रभाहू॥

दोहा

तेहि अवसर श्री सत्रुहन, नृप मंडली समेत।
सरित तीर आवहि चले, हय पाछे सुख देत॥३॥

चौपाई

सकल मुनिन कह करत प्रनामा।
नृपन समेत अतुल बल धामा॥
आस्रम येक दीख तेहि काला।
सरित समीप पुरान विसाला॥
रचित पलास पत्र सुखदाई।
अति पावन दरसत अघ जाई॥
सरित लहरि कन पवन प्रसगा।
पुनि - पुनि परसहिं लखि दुख भंगा॥
राम बंधु अस आस्रम देखी।
उर अनंद अधिकान विसेखी॥

बदि सुमति पद पुनि वर वानी।
बोले परम धर्ममय सानी॥
कहौ स्वामि मोहि सकल बुझाई।
केहि मुनि कर यह थल सुखदाई॥
चतुर सिरोमनि तुम विज्ञानी।
सादर बरनहु जन अनुमानी॥

दोहा

सुनु मुनीस इहि भाँति सुनि, सुमति सचिव हरषाइ।
ज्ञान दृष्टि अवलोकि उर, बोलेउ गिरा सुहाइ॥४॥

चौपाई

यह आस्रम पुनीत अति ताता।
महा पाप - भजन सुख - दाता॥
मुनि कुल तिलक इहाँ आसीना।
बेद सास्त्र महँ परम प्रवीना॥
चलि समीप पूछहु प्रभु गाथा।
कहिहै अति कृपाल मुनि नाथा॥
पुनि अनूप आरन्यक नामा।
जग बिख्यात अतुल तप धामा॥
रामचन्द्र पद - कंज - परागा।
परम रसिक अलि कबहुं न त्यागा॥
इन्ह समान रघुनाथ उपासी।
कतहु न दीख सुनहु बल रासी॥
सुनि अस बचन धर्म रस साने।
राम बंधु उर अति हरषाने॥
पुनि मुनीस आस्रम पगु धारा।
कछुक समाज सहित तिहिं बारा॥

दोहा

हनूमान पुष्कल सुमति, पुनि नृप सुमद सुबाहु।
भूप प्रताप सु अग्र युत, जनक तनय स उछाहु ॥५॥

चौपाई

इनहि संग लै रिपुमदहारी।
प्रमुदित पहुंच्यौ कुटी मझारी ॥
सबन सहित मुनिवर छवि देखी।
पुलकि दडवत कोन्ह बिसेखी ॥
जोरि पानि आगे भय ठाढ़े।
सोस नवाये आनद बाढ़े ॥
रिपुसूदन आदिक बर बीरा।
निरखि सबनि मुनिवर मति-धीरा ॥
अतिथि बिचारि हृदय हरषाई।
अर्घपाघ दीन्हेउ मनु लाई ॥
पुनि सादर फल फूल सुहाये।
दिये सबन कहं सम मन भाये ॥
येहि प्रकार सब कहं सनमानी।
फिरि बोलेहु सुंदर मृदु बानी ॥
कहहु नाम निन, केहि थल ग्रेहा।
आयेउ कवन हेत जुत नेहा ॥

दोहा

सकल कहो बिरतांत निजु, प्रमुदित सकुच - बिहाइ।
अस सुनि बोलेउ सुमति तब, सादर गिरा सुहाइ ॥६॥

चौपाई

सुनहु महा मुनि कृपा-निधाना।
छिमहु पाप, मैं करहुं बखाना ॥

अवध पुरी मैं रघुकुल भूपा।
अस्व मेघ मख करहिं अनूपा।।
तिन कर मख - हय पालन आयेउ।
तुव दरसन लगि दृग सुख पायेउ।।
अस सुनि हंसेउ महा मुनिराई।
भयेउ प्रकास दरस - समुदाई।।
सो प्रकास किमि कहौ बुझाई।
महा अज्ञ तम - दहन बनाई।।
सुनहु सकल मम गिरा सोहाई।
श्रुति पुरान इतिहासन गाई।।
बिबिध यज्ञ कीन्हे कह होई।
विधिवत करहु मोह बस कोई।।
स्वल्प पुन्यदायक श्रुति गावा।
छीन लोक प्रद कपट लखावा।।

दोहा

देखहु जग की मूढ़ता, तजि रघुपति - पद – मूल।
भजहि अपर सुर, करहि मख, जे दायक भव सूल।।७।।

चौपाई

काम धेनु सुरतरु मुनि त्यागी।
खरी बबूर काँच अनुरागी।।
देखहु अभय लोकप्रद रामा।
श्रीपति परब्रह्म पर धामा।।
जिन कर नाम लेत छिन माही।
महा पाप परबत नसि जाही।।
तिनहिं त्यागि मति - मंद अभागे।
जज्ञ जोग ब्रत महं अनुरागे।।

करहि कष्ट केवल जग माहीं।
निज स्वरूप उर निरखत नाहीं॥
बंचक बुद्धि सकल संसारा।
सुलभ राम गुनि, हृदय न धारा॥
बिगत काम अथवा युत कामा।
भजहि, देहिं जे अविचल धामा॥
अस रघुपति सरनागति त्यागी।
अपर कलेस करहिं हत - भागी॥

दोहा

सुनहु सुभग इतिहास अब, सब मन कहहु बुझाइ।
अति पुनीत अपवर्गदा, सुनत महा सुखदाइ॥८॥

चौपाई

एक समय मम हृदय मझारा।
परम तत्व पर प्रीति अपारा॥
बिपुल तीर्थ कीन्हेउं संसारा।
तेहि कर दाता अपन निहारा॥
बिकल फिरेहुं कछु मन नहिं भावे।
केहि विधि परम तत्व उर आवे॥
एक बार मम भाग प्रभाऊ।
मिलेउ पथ लोमस मुनिराऊ॥
तीरथ करन स्वर्ग ते आये।
जोगी जन पद वंदि सुहाये॥
अमित आपु विज्ञान निधाना।
अति कृपाल किमि करहुं बखाना॥
तब मैं निकट जाइ तिन्ह पाहीं।
करि प्रनाम मुनि बोलेऊ ताहीं॥

सुनहु स्वामि मैं दास तुम्हारा।
कृपा करहु लखि दुखित अपारा॥

दोहा

मनुज देह दुर्लभ महा, सो मैं पायेउ नाथ।
अब जेहि विधि भव निधि तरौं, बेगि कहहु सोइ गाथ॥९॥

चौपाई

परम तत्व कहि स्त्रुति जेहि गावैं।
अज शिवादि जा कहं सिरु नावैं॥
मुनि जन भजहिं जाहि मन लाई।
उर विचारि सोइ कहौ बुझाई॥
कै मख दान जाप व्रत देपा।
संजम जोग आदि कोउ सेवा॥
जेहि प्रकार भव तरहुं कृपाला।
कीजिय सोइ उपदेश दयाला॥
तुम सर्वज्ञ सकल मुनि स्वामी।
वेद सुमृति के अंतर जामी॥
आरत सरनागत अनुमानी।
बरनहु आसु नीति परिचानी॥
मुनि लोमस अस सुनि मम बानी।
बोलेउ दुखित बिप्र पहिचानी॥
बिप्र सचेत सुनहु येहि काला।
परम प्रीति युत, तजि भ्रम जाला॥

दोहा

जोग जस व्रत दान सुर, दम, तीरथ व्रत नेम।
ब्रह्मादिक पद देहिं सब, होइ पूरन मन छेम॥१०॥

चौपाई

सुनु अब परम गुप्त मत मोरा।
प्रगट्यौ महा भाग द्विज तोरा॥
भव भय भंजन गंजन पापा।
हरि-पद-दायक प्रगट प्रतापा॥
सदा धरहु उर प्रेम समेता।
सुनहु नीति अब तात सचेता॥
जे बानी पुनि प्रेम-बिहीना।
निदक सठ हरि विमुख मलोना॥
नास्तिकादि जे कुमति निधाना।
तिन्ह सन भूलि न करहुं बखाना॥
जे जन राम भक्ति लव लीना।
सांत काम-क्रोहादि विहीना॥
सादर तिन्ह सन करहु बखाना।
लोकलाज तजि मुदित निदाना॥
जोग जज्ञ व्रत सुर गन जेते।
श्री रघुबंर ते परे न तेते॥

दोहा

अस बिचारि बिस्वास धरि, ससय सोक बिहाइ।
सादर सुनहु जपहु नित, सेवहु श्री रघुराइ॥११॥

चौपाई

इन कर नाम जपत यक बारा।
सुखहि पाप पयोधि अपारा॥
पुनि नाना सुख करि ससारा।
लहहिं अंत जन मुक्ति उदारा॥
सकल काम प्रद रघुपति नामा।
प्रणत कल्पतरु सब सुख धामा॥

बिप्र सरन तिन कै तुम होहू।
दैहै राम भक्ति करि छोहू।।
भव-निधि ते होइहौ उद्धारा।
सत्य बेद यह बचन उचारा।।
सुपचहु सरन करै मनु लाई।
होइ मुक्ति ध्रुव, नरक बिहाई।।
जे जन बेद सास्त्र अधिकारी।
सदा सुधर्म निरत सुविचारी।।
प्रभु पद सरन करहिं, तजि माना।
तिन सन बड़ भागी नहिं आना।।

दोहा

बिप्र, हृदय अनुमानि अस, तजि संसय मद मोहु।
अति कृपाल रघुनाथ पद, सरनागत तुम होहु।।१२।।

चौपाई

सुद्ध देव यक राम कृपाला।
मंत्र येक तेहि नाम रसाला।।
एक सुद्ध व्रत पूजन तासू;
सास्त्र सोइ प्रभु चरित प्रकासू।।
रघुपति बिमुख कर्म जग जेते।
भव बंधन दायक गुनि तेते।।
अस अनुमानि सकल छल त्यागी।
होहु विप्र, प्रभु-पद अनुरागी।।
गोपद इव भव सागर पारा।
होइहौ तब, नहिं मृषा उचारा।।
सकल वेद कर सार बतावा।
करहु बेगि अब जो उर भावा।।

इहि विधि लोमस कीन्ह बखाना।
तब मम उर भा हरष निदाना॥
पुनि मुनि पद-पंकज सिर नाई।
बोलेउ मैं करि विनय बड़ाई॥

दोहा

केहि बिधि सुमिरहुँ राम पद, सेवहुँ कवन प्रकार।
कहहु नाथ बिस्तार जुत, होहुँ बेगि भव पार॥१३॥

चौपाई

मुनि वर सुनि इमि बिधि मम बचना।
बरनन लगे ध्यान की रचना॥
सुनहु बिप्र, निज प्रस्न अनूपा।
जेहि ते द्रवहि राम सुख-रूपा॥
अवधपुरी सुंदर सुख रासी।
अति पावनि मनि हेम प्रकासी॥
सुभग बितान सकल दिसि राजै।
ध्वज पताक तोरन बहु भ्राजै॥
अति उतंग मंदिर छवि छाई।
दिव्य कनक मणि रचित बनाई॥
सदा नित्य जन कर हित बासा।
स्वयं तेजमय करत प्रकासा॥
सब बिधि सकल अलौकिक सोभा।
उत्तर दिसि सरजू चित छोभा॥
नित्य धाम रघुनायक केरा।
दरस करत भव ते निरबेरा॥

दोहा

अस कौसल पुर मध्य मैं, राजहि एक निकेत।
अखिल लोक सोभा धरे, निरखत मन हरि लेत॥१४॥

चौपाई

अति बिचित्र मडप सुखदाई।
तेहि ऊपर जगमगहि बनाई॥
तेहि तरु कल्प-बृच्छ छबि मूला।
सुमिरहु उर समेत फल फूला॥
दिव्य सिंघासन तेहि तर राजै।
मरकत मणि कचनमय भ्राजै॥
नील रतन अगनित छबि छाई।
अपर रंग मणि रची बनाई॥
परम प्रकास बरनि नहिं जाई।
प्रबल तिमिरि नासन सुखदाई॥
सकल बिस्व चित मोहनहारा।
जगमगात अति छबि आगारा॥
तेहि पर विद्यमान श्रीरामा।
परम उदार अतुल बल-धामा॥
दुर्बा दल तन स्याम सुहावा।
कोटि मदन मोहन स्रुति गावा॥

चौपाई

कोटि सरद-ससि-दुति-हरन, मुख-पंकज मन मोह।
तेहि पर राजहि पुंड वर, श्री समेत अति सोह॥१५॥

चौपाई

अलख अनूप सकल छबि रासी।
लसहिं बदन करि अलि गन हासी॥
दिव्य रतन मणि हेम बनावा।
लसहिं किरीट सीस छवि छावा॥
कुटिल भौंह वर नयन बिसाला।
सुक मुख घ्राण कपोल रसाला॥

मकराकृत कुंडल दुतिकारी।
राजहिं स्रवण मध्य अनुहारी॥
विद्रुम सरिस अधर अरुनारे।
मुनि मनु हरन महा सुख कारे॥
तिन्ह बिच दसन महा छबि देहीं।
कुंद इंदु की दुति हरि लेहीं॥
चारु जीह तिन परे विराजै।
जपा सुमन-छबि कहं अति लाजै॥
बेद सास्त्र इतिहास पुराना।
बसहि सदा तेहि मध्य सुजाना॥

दोहा

कंबु सरिस त्रैलेख वर, राजहिं ग्रीव रसाल।
सिंह कंध ये जानभुज, करि कर सम सुविसाल॥१६॥

चौपाई

सुभग अरुन मंजुल दोउ हाथा।
प्रणत अभय प्रद श्रुति कहि गाथा॥
मणिन जटित मुद्रिका सुहाई।
करज माहिं राजहि छबि छाई॥
पहुँची अंगद वलया चारू।
दिव्य अमोल बाहु संसारू॥
उर बिसाल सोभा समुदाई।
श्री निवास सतन सुखदाई॥
कौस्तुभ मणि भृगु लता बिराजै।
जगदंबिका चिन्ह अति भ्राजै॥
गज मणि रतन सुमन वर माला।
राजहि सोभा बड़ी बिसाला॥

त्रिबली उदर माहि छबि देई।
नाभि बिलोकत मनु हरि लेई॥
पंचानन कटि सम कटि सोहै।
तेहि पर पीत बसन मन मोहै॥

दोहा

कनक तंतु मणि गण जटित, दिव्य सुभगता भौन।
अस कांची कटि महँ लसै, सकै बरनि कवि कौन॥१७॥

चौपाई

रूचिर जंघ जुग जानु मुहाये।
पद पंकज अनंत छबि छाये॥
सुभग पदज नख अवलि अनूपा।
वर प्रकास ससि कर अनुरूपा॥
घोर अज्ञ तम - भंजन - हारे।
सदा प्रणत जन उर दुति कारे॥
जब, अंकुस, पवि, पंकज, रेखा।
उभय चरन महं लहहिं बिसेखा॥
इहि विधि राजहिं श्री रघुवीरा।
सेवहिं पद जोगी जन धीरा॥
सिव अज इन्द्र आदि सुर वृंदा।
चितवत सकल समेत अनंदा॥
इहि बिधि द्विज सुमिरहु मन माहीं।
तरिहौ भव निधि संसय नाहीं॥
तुलसी चंदन सलिल समेता।
सेवहु संतत रघुकुल केता॥

दोहा

जो तुम पूछहु विप्र मोहि, परम तत्व सुख रासि।
सो मै सब विस्तार युत, तुम सन कहेउ प्रकासि॥

सोरठा

जो संतत इहि ध्यान, मगन रहै सब काल तजि ।
तिन्ह सम धन्य न आन, 'मधुसूदन' सब बिस्व मह ।।१ ।।

इति श्री पद्म पुराणे पाताल षंडे शेष वासायन सवादे
आरन्य अस्थान नाम पचतृंसोऽध्याय: ।।३५।।

राम-चरित-कथन

दोहा

मुनि लोमस के बचन सुनि, आरण्यक तेहि काल ।
बंदि चरन अति हर्ष युत, बोलेउ गिरा रसाल ।।

चौपाई

मुनिनायक सर्वज्ञ सुजाना ।
स्वजन जांनि प्रभु करहु बखाना ।।
जे कृपाल प्रभु गुरु जग माहीं ।
सेवक सन कछु राखहि नाही ।।
राम कवन अस कृपा-निधाना ।
जिन्ह कर सदा करहु तुम ध्याना ।।
कवन चरित तिन्ह कृत जग माहीं ।
मुनि वर सकल कहौ मोहिं पाहीं ।।
परब्रह्म तुम तिनहिं ऊचारा ।
केहि कारन मानुस तनु धारा ।।
सकल प्रसंग कहौ समुझाई ।
जेहि बिधि संसय नसइ बनाई ।।

वात्सायन मुनि सुनहु सचेता ।
राम चरित बरनहिं मुनि केता ॥
सुनहु विप्र वर कथा रसाला ।
जेहि गावहिं मुनि स्रुति सब काला ॥

दोहा

प्रथमहिं श्री वैकुंठ पति, श्री हरि कृपा-निधान ।
अमित जीव नरकन विषै, निरखेउ दुखित निदान ॥१॥

चौपाई

तब निज मन प्रभु येहि प्रण ठाना ।
करिहौं मुक्त गंजि दुख नाना ॥
श्री समेत भुव - मंडल - माहीं ।
धरिहौं मनुज देह कस नाहीं ।
इहि प्रकार प्रभु हृदय मझारा ।
प्रथम कीन्ह सुनु बिप्र बिचारा ॥
अंस कला सब सहित कृपाला ।
चारि रूप निज धारि रसाला ॥
प्रगटे प्रभु त्रेता युग माहीं ।
अति पावन दिनकर कुल ताहीं ॥
नृप दसरथ कौसिल्या रानी ।
अवर उभय महिषी जग जानी ॥
तिनके उदर आइ मुनिराई ।
प्रगटे हरि निज जन सुखदाई ॥
राम लषन पुनि भरत सुनामा ।
अपर सत्रुसूदन बल-धामा ॥

दोहा

अखिल लोक की जननी श्री, सुंदर गुण सुख ग्राम ।
सो प्रगटी अवनी विषै, नृप विदेह के धाम ॥२॥

चौपाई

अब श्री राम चरित सुखदाई।
सुनहु बिप्र मन धरि हरषाई॥
रूप सील गुण सम सब भ्राता।
करहिं बाल-लीला सुख-दाता॥
निरखि जनक जननी हरषाहीं।
निसि दिन जात जान कछु नाहीं॥
विस्वामित्र मुनीस उदारा।
कछुक काल बीते नृप द्वारा॥
आयेउ मख मिस जाचन भूपा।
अनुरागी अति राम स्वरूपा॥
नृप मुनिवर आगम सुनि काना।
आनि कीन्ह पूजा बिधि नाना॥
मुनि जाचेउ तब लछिमन रामा।
सकल लोक सोभा सुख धामा॥
भूप बिलखि उर तुरत बोलाई।
दिये सौंपि करि विनय बड़ाई॥

सोरठा

राम लखन छबि देखि, भये विकल मुनिवर तबै।
जन्म सुफल करि लेखि, चलेउ नृपहि जय जीव कहि॥३॥

चौपाई

मुनिवर संग चले रघुनाथा।
धरे धनुष सर करि, कटि भाथा॥
सीस मुकुट, जलजात सुलोचन।
पीत बसन दामिनि दुति मोचन॥
मुनि मन आनंद देत कृपाला।
जाहिं पंथ बन सघन कराला॥

मख विध्वंस हेतु तेहि काला।
नाम ताडुका अति बिकराला॥
धावत आव कहत कटु बानी।
हती राम ऋषि - आयसु मानी॥
दीन जानि सुरलोक पठाई।
सुनु नृप अति कृपाल रघुराई॥
कछुक दूरि चलि गौतम-नारी।
कीन्ह सनाथ जदपि अघकारी॥
पुनि पहुंचे गुरु जज्ञ मझारा।
बंधु सहित उर हर्ष अपारा॥

दोहा

मख रखवारी कीन्ह तहं, बधि सुबाहु मारीच।
पुनि कृपाल खल कटक सब, कीन्ह निपटि बस मीच॥४॥

चौपाई

लखि मुनीस तब राम प्रभाऊ।
दीन्ह धनुर्विद्या सत भाऊ॥
भूप जनक पुर पुनि प्रभुताई।
किये सुखित नर नारि बनाई॥
भँजि संभु-धनु सिया बिबाही।
जनक सोक नृप मदता दाही॥
परसराम मद खंडन कीन्हा।
पुर बासिन्ह नाना सुख दीन्हा॥
पुनि बिदेह दसरथहिं बोलावा।
बिधिवत राम विवाह करावा॥
दाइज दीन्ह अमित सकुचाई।
हय रथ गज मणि गन समुदाई॥

चारिहु बंधुन केर बिबाहू।
कीन्ह भूप सब सहित उछाहू॥
छबि समुद्र लखि चारिउ भ्राता।
जनक हृदय नहिं प्रेम समाता॥

दोहा

राम पच दस वर्ष के, सिया वर्ष षट जानि।
अति अनूप जोरी निरखि, जन्म सुफल सब मानि॥५॥

चौपाई

श्री रघुपतिहिं पाइ बरु सीता।
गुनी आपु कृतकृत्य सप्रीता॥
पुनि दसरथ नृप सहित समाजा।
आयेउ अवध बजावत बाजा॥
कोसल पुर बासी नर-नारी।
सिया राम छबि उदधि निहारी॥
घर-घर मगल उत्सव करहीं।
राम सिया छबि उर महँ धरहीं॥
सकल जननि सुत-बधुन-समेतू।
निरखि-निरखि हरषें करि हेतू॥
सो सुख बरनहुं कवन प्रकारा।
जननि न उर आनंद अपारा॥
द्वादस संवत् अवध मझारा।
कीन्ह सिया सह राम बिहारा॥
बिस्व मातु-पितु सिय रघुनाथा।
अस गुनि नहिं बरनौं यह गाथा॥

दोहा

सुनहु बिप्र इमि राम प्रभु, भये सताइस वर्ष।
तब भुवाल जुबराज पद, देन लगे युत हर्ष॥६॥

चौपाई

यह सुनि कुटिल केकई रानी।
नीच संग-बस माया ठानी॥
दुइ बर जाचेउ भूपति पाहीं।
भरत राज, रघुपति बन जाहीं॥
लखन सिया सह श्री रघुबीरा।
सीस जटा परिधन मुनि चीरा॥
अवसि बसहि कानन इहि वेषा।
वर्ष चतुर्दस लागि बिसेखा॥
कंद मूल फल करहिं अहारा।
अस कराल वर येक उचारा॥
दूसर भरत लहहिं जुवराजू।
रहै सुबस सब राज समाजू॥
येहि बिधि कुमति माँगि बरदाना।
पवि ते उर कठोर जग जाना॥
यह सुनि सकल नगर बिलखाना।
भूप सोक नहिं जाइ बखाना॥

दोहा

यह सुधि पाय कृपायतन, वंदि मातु पितु पाइ।
चलेउ लखन सिय सहित बन, सकल अवध बिलखाइ॥७॥

चौपाई

दिवस तीनि कीन्हेउ जलपाना।
चौथे दिन फल असन निदाना॥
सुनहु विप्र रघुनाथ उदारा।
केवल कुल समेत किय पारा॥
अगनित खग मृग करत सनाथा।
जाहिं पंथ, लसि धनु सर हाथा॥

मग बासी लखि रूप बिसाला।
हर्ष सोक बस सब तेहि काला ॥
सब विधि कीन्ह सनाथ निसादा।
बिस्व बिदित, जो दीन्ह प्रसादा ॥
बहु मुनि जन वंदित मग माहीं।
सिया लखन जुत जहं-जहं जाहीं ॥
इहि बिधि चित्रकूट रघुराई।
पहुंचे पाँच दिवस महं जाई ॥
परन कुटी तहं सुभग बनाई।
किय निवास मुनि आयसु पाई ॥

दोहा

इत सुमत बिलखाइ निसि, कीन्हेउ अवध प्रवेस।
राम लखन सिय गमन सुनि, त्यागो देह नरेस ॥८॥

चौपाई

महा सोक भा भवन-मझारा।
विविधि भाँति बिलखहि परिवारा ॥
सकल अवध बासी नर-नारी।
उभय सोक बस निपट दुखारी ॥
केहि प्रकार मैं कहउं बुझाई।
खग पसु मनुजन के विकलाई ॥
तब वसिष्ठ मुनि जन पठवाये।
भरतहिं बोलि अवध लै आये ॥
निरखि मातु करतब बिलखाने।
सब प्रकार उर मैं अकुलाने ॥
पुनि पितु क्रिया कीन्ह श्रुति-रीती।
सिर धरि मुनि वसिष्ठ कै रीती ॥
बहुरि साजि सब राज समाजा।
परिजन पुरजन जुत प्रभु काजा ॥

चित्रकूट महं पहुँचे जाई।
बंधु निषाद सहित मुनिराई॥

दोहा

उंहा राम लखि भरत कहं आवत, दुखित अपार।
उठि सप्रम युत बधु जुत, बरषे द्दग जल धार॥९॥

चौपाई

मिलेउ सबनि पुनि श्री रघुबीरा।
भूप मरन सुनि भयेउ अधीरा॥
तब वसिष्ठ कहि कथा पुराना।
देत भये रघुपति कहं ज्ञाना॥
भरत राम - पद पकरि बहोरी।
तिलक हेत करि विनय न थोरी॥
तब रघुपति भरतहि समुझावा।
चरन - पीठ दै पुर पठवावा॥
भरत सप्रेम नेम समुदाई।
लागे करन सुनहु द्विजराई॥
परिजन पुरजन अवध अधारा।
बसहिं अवधि महं दुखित अपारा॥
अब सिय रघुवर चरित सुहावा।
सुनहु महा सुख श्रुतिन जु गावा॥
द्वादस बरस बास गिरि कीन्हा।
खग मृग मुनिन अमित सुख दीन्हा॥

दोहा

वर्ष त्रयोदस माहि प्रभु, पचवटी कृत वास।
रावन भगनी केरि तहं, नाक कान किय नास॥१०॥

चौपाई

चौदह सहस तमीचर धारा।
सजि आयेउ खल तासु पुकारा॥
रघुपति बिन प्रयास सहारे।
भये देव मुनि सकल सुखारे॥
लखन सिया जुत राजिव नैना।
बसहि विपिनि मह निपट सुखैना॥
उंहा दसानन - भगिनि निहारी।
कथा श्रवण सुनि सोचेउ भारी॥
पुनि मारिचहि ल संग मूढ़ा।
आयेउ बिपिनि धारि बपु गूढ़ा॥
सीता कुरग कनकमय देखो।
तब प्रभु सन किय विनय विसेखी॥
जाइ विपिनि प्रभु मृग सहारा।
लखन गये पुनि तासु पुकारा॥
राम रहित आस्रमहि निहारी।
आवा तब सिय पह कुविचारी॥

दोहा

करि छल वल खल बिविधि बिधि, हर सिया जग जान।
माघ मास सित पछ महं, अष्टमि दिन मध्यान॥११॥

चौपाई

चन्द्र मास करि रघुपति लीला।
बरनहुं मैं सुनु द्विज सुभ सीला॥
तासु मास कर भेद बनाई।
तोसन कहौं सकल समुझाई॥
प्रथमहि सुक्ल पक्ष पहिचानो।
कृस्न पक्ष पुनि मन अनुमानो॥

जिमि पत्रामहं गनक प्रवीना।
प्रथम मास विधि लिखे नवीना।।
तिमि बरनहुं रघुपति गुन गाथा।
सावधान होइ सुनु मुनि नाथा।।
छल बिलोकि रोदति बैदही।
सुमिरि - सुमिरि रघुनाथ सनेही।।
हे रघुकुल मनि राम उदारा।
राखहु मोहि दुष्ट यह भारा।।
तुम कृपाल मै दुखित अपारा।
अहोनाथ कीन्ही कित बारा।।

दोहा

इहि विधि रोदति जात सिय, कुरच सरिस नभ माहि।
हे रघुवर, हे प्रान पति, केहि अघ राखहु नाहि।।१२।।

चौपाई

जिमि बटेर कहुँ छुधित सचाना।
झपटि लेइ, उर दया न आना।।
तिमि श्री जनक सुता कहं मंदा।
लिये जाइ नभ - पथ अघ - कंदा।।
गृद्धराज लखि बिकल जानकी।
प्राण प्रिया करुणानिधान की।।
कीन्हेउ समर आइ तेहि भारी।
मन बच कर्म स्वामि हितकारी।।
दस कंधर खल ताहि संहारी।
गयौ सियहि लै लंक मझारी।।
इहाँ राम सानुज मृग मारी।
पंचबटी लखि भयेउ दुखारी।।

प्रिया वियोग बिबस बन माहीं।
खोजत फिरहिं महा बिलखाहीं॥
इमि सच्चिदानन्द भगवाना।
मनुज चरित कीन्हेउ विधि नाना॥

दोहा

पुनि जटायु की क्रिया करि, सबरी कीन्ह सनाथ।
पंपा सर फिरि गयेउ प्रभु, सानुज धनु सर हाथ॥१३॥

चौपाई

रिष्य मूक गिरि गयेउ बहोरी।
मिलेउ सुकंठ प्रीति अति जोरी॥
बधि बालिहि तब दीन्हेउ राजू।
अंगद कहं सौपेउ जुवराजू॥
चारि मास कीन्हेउ तहं बासा।
लखन सहित श्री रमा निवासा॥
पुनि कपि-पतिहि समीप बोलाई।
भालु .कीस चहुं दिसा पठाई॥
हनुमदादि कपि बिवर मझाई।
जलधि तीर पुनि पहुंचेउ जाई॥
तहाँ मिला सपाति मुनीसा।
डरपे सकल भालु अरु कीसा॥
अंगद केर बचन सुनि काना।
सब कौं धीरज दीन्ह निधाना॥
बंधु-क्रिया करि जल निधि तीरा।
बहुरि समीप बोलि कपि बीरा॥

दोहा

कहि निज कथा, दिखाइ सिय, प्रभु जस कीन्ह प्रकास।
अगहन सुदि नौमी द्विवस, जानहु दसवें मास॥१४॥

चौपाई

एकादसि कहं पवन कुमारा।
चढ़ि महेन्द्र गिरि पर भट मारा॥
सत जोजन समुद्र के पारा।
फाँदि गयेउ पुनि लंक मझारा॥
खोजि नगर तह निसि अवसेषा।
जाइ विपिन मह सीतहि देखा॥
पुनि द्वादसी माहं हनुमाना।
सिसिप तरु मह रहेउ लुकाना॥
तेहि निसि मह मुद्रिका सुहाई।
डारि दीन्ह लखि विकल बनाई॥
फिरि बिस्वास दीन्ह बहु भाँती।
बरनि-बरनि रघुपति गुन-पाँती॥
अच्छय कुमार आदि भट मारे।
बिपिनि भजि तेरसि महं मारे॥
बिन प्रयास पुनि लंक जराई।
बल समूह किय बिकल बनाई॥

दोहा

सियहि प्रबोधि अनेक बिधि, तरि समुद्र कपि वीर।
राका तिथि मह मिलेउ सब, प्रमुदित पुलक सरोर॥१५॥

चौपाई

अगहन बदि परिवा तिथि माही।
चले भालु कपि रघुपति पाँही॥
पांच दिवस मग मांह गवाये।
छठ में मधुबन के फल खाये॥
सिय प्रसंग सप्तमि मैं भयेऊ।
बन उजारि पुनि जिमि पुर दहेऊ॥

प्रिया बिकल सुनि राजिवनैना।
प्रेम - बिवस मुख आव न बैना।।
विजय हेत अष्टमी मझारा।
परस्थान किय राम उदारा।।
उत्तर फाल्गुण पा वर रिक्ष्या।
मध्य दिवस कीन्ही प्रभु इक्ष्या।।
चलत समय रघुनाथ उदारा।
कीन्ह प्रतिज्ञा हृदय मझारा।।
अवसि जलधि तरि रिपुहि संघारौं।
प्रति पालाहिं शिव अज अपि मारौं।।

दोहा

अस प्रनु करि रघुबंस मनि, पुनि संग लै सुग्रीव।
अमित भालु कपि कटक महं, चले अतुल बल सीव।।१६।।

चौपाई

नवये दिवस जलधि के तीरा।
पहुचे सैन सहित दोउ बीरा।।
एक मास जानौ द्विज येहा।
अवर चरित सुनु सहित सनेहा।।
पौष शुक्ल तृतीया लगि ताता।
उत्रयौ जहं-तह दल हरषाता।।
चौथे दिवस विभीषन आवा।
दीन देखि प्रभु सरन रखावा।।
जलधि तरनि हित पंचमि माहीं।
कीन्हेउ मंत्र सबनि मिलि ताहीं।।
दिवस तीनि पुनि कृपा-निधाना।
पंथ हेतु आपुन प्रण ठाना।।

चौथे दिन लखि बान प्रभाऊ।
दीन्हेउ बरु जलनिधि सति भाऊ।।
सो सुनि प्रभु दसमी तिथि माहीं।
सेतु अरंभ कीन्ह थल ताहीं।।

दोहा

त्रयोदसी मह कीन्हेउ, पूरन विरचि बनाइ।
गयौ पार चौदसि विषे, सानुज श्री रघुराइ।।१७।।

चौपाई

राका ते दुतिया लगि सैना।
भई पार सब भांति सुखेना।।
गिरि सुबेल पर सब कटकाई।
घटाटोप होइ परी बनाई।।
सखा सुकंठ बंधु जुत रामा।
कटक मध्य राजहिं छबि-धामा।।
दिवस आठ महं पुनि पुर नाके।
जतन सहित बाँधेउ अति बाँके।।
सुक सारण एकादसि माही।
जात भयेउ तब रावन पाँही।।
पौष कृस्न द्वादसी मझारा।
दिख रावन कपि कटक अपारा।।
बहुरि कुहू लगु खल दस भाला।
समर हेत दस सज्यौ कराला।।
दूसर मास कहेउ समुझाई।
सुनहु सचिव अब कथा सुहाई।।

सोरठा

बालि तनय रनधीर, माघ सुकुल परिवा विषे।
सुमिरि हृदय रघुवीर, गयेउ सभा खलभल मथेउ।।१८।।

चौपाई

तेहि दिन मा यक सिर प्रभु केरा।
सियहिं देखायउ कुमति घनेरा॥
पुनि दिन सात अष्टमी ताही।
भिरेउ कीस निसिचर रन माहीं॥
सो रन बरनहुं कवन प्रकारा।
लरहिं बिविधि बिधि सुभट जुझारा॥
मेघनाद नौमी तिथि माही।
दारुन समर कीन्ह खल ताही॥
सानुज रामहिं करि निजु माया।
नाग फांस मैं किय मुनिराया॥
सुनि संसय कीजै जनि ताता।
करहिं मनुज-लीला जन-त्राता॥
प्रभु-बंधन लखि सब कटकाई।
तज्यो समर उत्साह बनाई॥
वैनतेय दसमी मैं आये।
भयेउ सुतंत्र राम सुख पाये॥

दोहा

येकादसि द्वादसि विषै, रघुपति समर मझार।
धूम्राक्ष वध कीन्हेउ, बिदित, सकल संसार॥१६॥

चौपाई

पुनि तेरसि महं कम्पन मारा।
कटक सहित हति सर खर धारा॥
दिवस तीनि परिवा लगि ताता।
ललि बध्यौ प्रहस्त बिख्याता॥
बहुरि माघ बदि चौथि प्रजंता।
भिरेउ राम रावन बलवंता॥

तुमुल युद्ध भा बरनि न जाई।
रघुपति खल कहं दीन्ह भगाई॥
तब खिसिआइ मंद मन माही।
सोवत कुम्भकरन, गा ताहीं॥
पंचमि मैं करि जतन अपारा।
दीन्ह जगाइ छुधित सो भारा॥
दिवस चारि लगि भोजन कीन्हा।
पुनि दसमुख कह व्याकुल चीन्हा॥
बंधु बचन सुनि कोपि प्रचंडा।
रन - मंडल आवा बलवंडा॥

दोहा

कीन्ह समर षट दिवस खल, चौदसि लगु अति घोर।
बध्यो राम हति चंड मर, रन मंडल बरजोर॥२०॥

चौपाई

कुहू माहि भा सोक अपारा।
परी खरभरी लंक मझारा॥
फागुन प्रथम चारि दिन ताही।
बधे पांच निसिचर रन माही॥
मघवाजित आदिक पहिचानौ।
कपट उदधि दुर्मद अनुमानौ॥
पंचमि ते सप्तमि लगि ताता।
बधेउ समर अतिकाय कुजाता॥
पुनि अष्टमि ते द्वादसि ताही।
सुनु मुनि इन पांचौ दिन माही॥
कुंभ निकुंभ उर्द्ध ते पापी।
परेउ अवनि तल सुर संतापी॥

बहुरि तीनि दिन महं संग्रामा।
खल मकराच्छ हन्यौ बल धामा॥
पुनि फाल्गुण बदि द्वैज मझारा।
मेघनाद आवा खल भारा॥

दोहा

छल बल करि श्री लखन कहं, मूर्छित किय संग्राम।
बहुरि दुष्ट सो हरषि उर, जात भयो निज धाम॥२१॥

चौपाई

पुनि दिन पांच माही हनुमाना।
द्रोणाचल लछिमन हित आना।
उठे लखन सजीवन पाई।
केवल मनुज – चरित, मुनिराई॥
दिवस भेद सुनु सूत सुजाना।
उर संसय जनि करहु निदाना॥
कल्प - कल्प प्रति चरित अनूपा।
भिन्न - भिन्न करि रघुकुल भूपा॥
पुनि दिन पांच त्रयोदसि ताही।
लखन इंद्रजित बधि रन माहीं॥
सो सब कथा बिदित संसारा।
बिन प्रयास जीत्यौ खल भारा॥
चतुर्दसी में दसमुख मंदा।
लाग्यौ करन जज्ञ अघ कदा॥
बहुरि वुहूँ निसि मैं खल आई।
दारुन जुद्ध कीन्ह मुनिराई॥

सोरठा

फाल्गुण मास बुझाइ, तुम सन बरन्यो विप्र मैं।
अब सुनु कथा सुहाइ, जेहि प्रकार भा चैत्र महं॥२२॥

चौपाई

चैत्र सुकुल पंचमि तिथि ताही।
दसमुख कीन्ह समर रण माहीं।।
हते चंड सर श्री रघुराई।
परेउ अमित खल प्रान बिहाई।।
महापार्स्व निसिचर अति घोरा।
बध्यो सदल षष्ठमि बर जोरा।।
नौमी तिथि मैं मुनहु मुनीसा।
संजुग माहि कोपि दससीसा।।
सक्ति प्रचंड लषन उर मारी।
परेउ धरनि लीला अनुसारी।।
तब रघुनाथ कोपि उर भारी।
रन ते दीन्ह भजाइ सुरारी।।
पुनि कपीस द्रोणाचल आना।
उठि बैठे लछिमन बल माना।।
तीनि निसाचर दसमि मझारा।
खंड - खंड होइ गिरेउ जुझारा।।

दोहा

रिपु सनमुख रघुनाथ कहं, विरथ देखि सुरराज।
एकादसि मैं पठइ पुनि, निज स्यदन छबि साज।।२३।।

चौपाई

द्वादसि ते सुनि विप्र सुजाना।
कृष्ण चतुर्दसि लागि प्रमाना।।
दिवस अठारह समर मझारा।
रावन श्री अरु राम उदारा।।
दुंद युद्ध कीन्हेउ अति घोरा।
बध्यौ खलहि पुनि प्रभु वर जोरा।।

सकल दिवस अब कहौ बुझाई।
बिप्र सुजान सुनहु मन लाई॥
माघ सुकुल दुतिया ते जानौ।
चैत्र कृस्न चौदसि अनुमानौ॥
दिवस सताइस लेहु लगाई।
पन्द्रह दिन पुनि देहु बिहाई॥
दिवस बहत्तरि लगि रन भयेऊ।
सूत सेष मुनिवर सन कहेऊ॥
रावन मृतक क्रिया द्विज राई।
भई अमावस माहि बनाई॥

दोहा

चैत्र मास करि चरित नृप, इमि मुनि कहेउ बुझाइ।
अब माधव की कथा सुभ, सुनहु सकल मनु लाइ॥२४॥

चौपाई

परिवा तिथि मै राम उदारा।
विजय पाइ बसि समर मझारा॥
बहुरि द्वैज मै बोलि विभीषन।
दीन्ह राज रघुबस - बिभूषन॥
माधव सुकुल तीज तिथि माही।
आई जनक सुता प्रभु पाही॥
सत्य अमर बानी सुनी रामा।
अगीकार कीन्ह निजु बामा॥
दुखित जानि कीन्हो अति दाया।
सुनु द्विज, कृपा - सिधु रघुराया॥
परम प्रीति जुग ढिग बैठाई।
तेहि अवसर अति छबि अधिकाई॥

चौथि माहि चढ़ि पुष्पक जाना।
चले अवधि पुर कृपानिधाना॥
लषन, सिया, कपि-जुथ्थ समेता।
आयेउ भरद्वाज निकेता॥

दोहा

माधव सुदि पंचमी तिथौ, भरद्वाज के धाम।
वर्ष चारिदस विपिनि की, पूरन कीन्ही राम॥२५॥

चौपाई

पुनि पष्ठमि मै नदिग्रामा।
भरत श्रवन सुनि आयेउ रामा॥
सहित समाज प्रेम समुदाई।
मिलेउ आइ प्रभु को दोउ भाई॥
सप्तमि माहि अवधिपुर जाई।
सौंपी भरत सकल ठकुराई॥
धर्म सहित करिहैं प्रभु राजू।
कहेउ मोहि लोमस तप साजू॥
दस सहस्त्र संबत पर रामा।
त्यागी जनक सुतां निज बामा॥
रजक बचन सुनि रिपु घर बासा।
कीन्ह त्यागि निज कीरति त्रासा॥
जाय सिया तब राम विहीना।
बालमीक आस्रम बसि दीना॥
लषन राम प्रेरित पुनि जाई।
ल्यावहिंगे पुर सियहि बुलाई॥

दोहा

ब्यालिस वर्ष बिहीन प्रभु, कौसिलपुरी मझार।
संवत ग्यारह सहस सब, करिहैं राम उदार॥२६॥

चौपाई

श्री जानकी प्राणपति संगा।
करिहै भोग सुखित सब अगा॥
संवतसर तेतीस बिहाई।
एकादस सहस्र द्विजराई॥
भरत लषन रिपुदहन समेतू।
करिहैं नृपता रबि कुल केतू॥
कुल गुरु श्री वसिष्ठ मुनिराई।
तिनकी सेव निपुन सब भाई॥
मुनि कुल तिलक अगस्ति उदारा।
आवहिंगे प्रभु - सभा - मझारा॥
तिन्ह कर आयसु सीस चढ़ाई।
अस्वमेध करिहैं सुखदाई॥
रघुपति अनुज सत्रुघन नामा।
सहित कटक अतुलित बलधामा॥
आवहिंगे तब आश्रम माहीं।
सत्य कहौं द्विज, संसय नाहीं॥

छंद

संसय नहीं द्विज, सत्य, तुम्हरे आश्रमहिं ते आइहैं।
तब राम चरित अनूप सुनि, तुव बदन ते सुख पाइहैं॥
फिरि तिनहि तुम पहिचानि पुनि-पुनि, भेटि परमानंद सौं।
जैहौ अवधि, लखि राम-छबि, छुटिहौ अवसि भव फंद सौं॥

दोहा

इहि विधि लोमस कहेउ मोहि, राम चरित समुझाइ।
तब मैं तिनके चरन बिच, परो महा हरषाइ॥२७॥

चौपाई

पुनि बोलेउं मैं गिरा सुहाई।
जोरि उभय कर पद सिरु नाई॥
तुम्हरी कृपा मुनीस उदारा।
राम चरित पावा स्रुति सारा॥
तुव प्रसाद रघुनाथ स्वरूपा।
समुझि परा उर माहिं अनूपा॥
श्री रघुपति - पद - कमल सुहाये।
मिलिहैं अवसि मोहिं मन भाये॥
तरिहौं भव - निधि संसय नाहीं।
कृपा अगाध कीन्ह मो पाहीं॥
अस कहि पुनि मैं कीन्ह प्रनामा।
गयेउ तब मुनि करुणाधामा॥
संतत सेवौं उर रघुराऊ।
लोमस मुनि की कृपा प्रभाऊ॥
सुमिरौं सदा तिनहिं कर नामा।
गान करौं संतत गुन ग्रामा॥

सोरठा

निसि-दिन प्रभु-पद-कंज, धरौ ध्यान तिहि दिवस ते।
कबहु यहै भव भंज, निरखि राम-छबि अवध में॥२८॥

चौपाई

इहि विधि पावन करौं सरीरा।
सुमिरि - सुमिरि भंजन भव भीरा॥
मुनि के बचनन करि नित ध्याना।
करौं इहां सुनु भूप सुजाना॥
राम अनुज जब कटक समेता।
आवेंगे इहि थल हय हेता॥

अवधिपुरी महं तब मैं जाई।
होइहौ मुक्त दरस प्रभु पाई॥
आजु धन्य मैं जक्त मझारा।
बड़ भागी कृतकृत्य अपारा॥
रामचंद्र पद कंज अनूपा।
हृदय भयो सुमिरन सुनु भूपा॥
पूरन ब्रह्म राम भगवाना।
पूजन जोग न तिन सम आना॥
भव-निधि तरन चहौ जो भाई।
सो सेवहि संतत रघुराई॥

दोहा

अस बिचारि रघुनाथ पद, भजौ भूप मन लाइ।
जोग जज्ञ व्रत दान सब, स्वल्प पुन्य के दाइ॥
कहौ नाम, निज धाम कित, तजि संकोच इहि काल।
सुमिरि राम-पद-कंज पुनि, हय रच्छहु सब काल॥

सोरठा

सुनि रघुपति जस कान, सब के मन बिस्मय भयौ।
दोषहु हम अज्ञान, प्रभु प्रभाव नहि जानियौ॥२६॥

इति श्री पद्म पुराणे पाताल षंडे शेष वात्सयान संवादे
मधु सूदन दास कृते राम चरित कथनोनाम षटत्रिंशोऽध्याय:॥३६॥

आरण्यक मुनि सायुज्य-मुक्ति-कार्य

दोहा

मुनि-मुख सुनि रघुपति चरित, सकल कृतारथ मानि।
पुनि बोले सादर सबै, जोरि-जोरि निजु पानि॥

चौपाई

आजु नाथ तुव दरसन पाई।
भये महा सुचि कुल समुदाई॥
रघुनायक जसु परम उदारा।
कहेउ हमहि करि कृपा अपारा॥
अब जो तुम पूछी मुनिनाथा।
बरनै हम समस्त सोइ गाथा॥
कुंभज आयसु सीस चढ़ाई।
अवधिपुरी मैं श्री रघुराई॥
अस्वमेध मख कर सुहावा।
विधिवत जेहि प्रकार तुम गावा॥
तिन कर हय हम पालन हेता।
आये तुव आश्रम मुनिकेता॥
हम सब श्री रघुपति के दासा।
पाइ दरस पूजी मन आसा॥
सरस मनोहर सुनि अस बानी।
रोम-रोम पुलके मुनि ज्ञानी॥

दोहा

हर्ष बिबस लोचन स्रवहिं, आवै बदन न बैन।
धरि धीरज मुनि बोलेउ, राम भक्ति तप अैन॥१॥

चौपाई

मोर मनोरथ तरवर आजू।
भयो सफल तिहि भा मन काजू॥
कंटक रहित सकल जुग राजू।
अमित कोस जुत पायौ आजू॥
वेद पुरान दीन बहु काला।
पावा सो फल आजु रसाला॥
अग्निहोत्र जप तप बहु कीन्हे।
फलीभूत सब आजुहि चीन्हे॥
श्री रघुपति समाज मैं देखा।
को कवि करै भाग्य कर लेखा॥
जाइ आजु पुनि अवधि मझारा।
देखिहौ प्रभु-पद-कंज उदारा॥
सदा करौं जिन कर उर ध्याना।
आजु देखिहौं तिनहिं निदाना॥

दोहा

प्रभु सेवा मैं निपुन अति, बड़भागी हनुमान।
आजु जाइ तिहि भेटिहौं, मो सम धन्य न आन॥२॥

चौपाई

पुनि-पुनि कुसल सनेह समेता।
पूछहिंगे मुनि कपि-कुल-केता॥
निरखि राम पद भाँति हमारी।
होइहै निज उर परम सुखारी॥
सुनि अस पवन-तनय तेहि काला।
परे चरन उर हृप बिसाला॥
पुनि बोले कपि बचन रसाला।
सुनहु स्वामि अति दीनदयाला॥

तुव सेवक मैं कपि हनुमाना।
कृपा करौ प्रभु लखि अज्ञाना॥
श्री रघुपति दासन पद रेनू।
अस जानौ मुहिं मुनि - तप अयनू॥
मैं जानी निस्चय मन माहीं।
तुम सम राम भक्त कोउ नाहीं॥
आरण्यक मुनि सुनि अस बानी।
भये तुरत आनंद की खानी॥

दोहा

हृदय लाइ भेटेउ कपिहिं, मोहि सत्तम तिहिं काल।
परम प्रेम बस मगन दोउ, प्रभु पद सुमिरि रसाल॥३॥

चौपाई

लोचन स्रवहिं बचन नहिं आवै।
भये सिथिल अति किमि सुख पावै॥
मनहु चित्र लखि काढ़ेउ दोऊ।
निरखि - निरखि पुलके सब कोऊ॥
प्रेम - पीयूष - उदधि मुनिराइ।
मथैं मनौ दुइ गिरि सुखदाई॥
सूत कहौं किमि तन कर हेतू।
अविरल भक्ति केर दोउ सेतू॥
धरि धीरज तब पवन-कुमारा।
परम प्रीति जुत बचन उचारा॥
रघुनायक पद पंकज ध्याना।
मगन मुनीस न कछु संधाना॥
मन आकर्षन मृदुल गु बानी।
उच्च कंठ बोले कपि ज्ञानी॥
सुनौ स्वामि रघुकुल मनि हीरा।
श्री रघुनाथ बंधु अति धीरा॥

दोहा

नाम सत्रुहन बिदित जग, तुव पद करै प्रनाम।
प्रथम बध्यौ खल बन इनहि, जाइ मधुपरी ग्राम ॥४॥

चौपाई

अभय कियो माथुर-समुदाई।
कीरति भुवन चारि दस छाई॥
अब निरखौ मुनि कृपा - निधाना।
प्रणवै पुष्कल पद - सुख - दाना॥
भरत - तनय यह सूर सुजाना।
इन जीते रन सुर बलवाना॥
राम सचिव अब करै प्रनामा।
परम धरम - पथ निपुन निदाना॥
रामहि प्रान समेत पियारा।
सर्ब गम्य सद्गुन आगारा॥
यह सुबाहु नृप पुलकित अंगा।
तुव पद जलज माहिं भा भगा॥
रिपु समूह बन अनल समाना।
राम - चरन - रत सूर सुजाना॥
इहि कर सुजस अवनि तल छादा।
करुनाकर हेरहु, सिर नावा॥

दोहा

सुनौ स्वामि अब सुमद नृप, पुलकि दंडवत कीन्ह।
प्रथमहिं कामद हर्षि उर, राम-भक्ति वर दीन्ह ॥५॥

चौपाई

भव - निधि - तरन उपाइ सुहावा।
जन बिचारि तिहि इनहि बतावा॥

अब यह सत्यवान महिपाला।
वंदहि पद जुत नेह विसाला॥
गो प्रसाद यह भा बड़ भागो।
सत विमुख जीव कर त्यागी॥
राम अस्त्र सुनि निज पुर आवा।
निरभय प्रेम माहि मन छावा॥
सकल राज - परिवार - समेता।
अर्पित डरि प्रभु जनहि समेता॥
हनूमान इमि कीन्ह बखाना।
सुनि मुनि किय मन बाहिर ध्याना॥
सादर सबन मिले हरषाई।
बार - बार पूछा कुसलाई॥

दोहा

कंद मूल फल अंबु पुनि, स्वागत करि मुनि दीन्ह।
तिहि दिन सब प्रमुदित हृदय, वास आश्रमहि कीन्ह॥६॥

चौपाई

प्रातः काल उठि करि प्रभु ध्याना।
वदेउ मुनि - पद पुलकि निदाना॥
पुनि रेवा - तट करि अस्नाना।
प्रात क्रिया करि वेद विधाना॥
राम अनुज तब मुनि पहँ गयेऊ।
नाना विनय सुनावत भयेऊ॥
सिविका सुभग बहोरि मँगाई।
निरखि अमर - मन लेइ चुराई॥
आरन्यक मुनि तासु मझारा।
चढ़े जान उर हर्ष अपारा॥

बहु सेवक संग रिपुहन दीन्हे।
चले लिवाइ अवध-पथ चीन्हे॥
राम ध्यान लवलोन मुनीसा।
जाहि पथ इमि कहेउ अलीसा॥
दूरि जाइ कोसल पुर देखा।
रवि बसिन कर धाम विसेखा॥

दोहा

तुरत त्यागि मुनि पालकी, प्रमुदित कीन्ह प्रनाम।
चढ़ी लालसा अतुल अति, लागि दरस सिय राम॥७॥

चौपाई

आतुर धरै चरन मग माही।
प्रेम विबस तन चलि सक नाही॥
मनौ प्रेम सुख उदधि अपारा।
जाहि थहावत गा बहि पारा॥
करत, मनोरथ मन मैं नाना।
पहुचे अवधि समीप निदाना॥
निरखी सकल अलौकिक सोभा।
बरनि सकै अस कवि जग को भा॥
सहज बिलोकै मुनि थल जोई।
अवसि चुराइ लेइ मन सोई॥
कनक पक पुनि मनि बहुरगा।
रचित भवन सुदर सब अंगा॥
सकल पदारथ अमित निहारे।
जन-समूह लखि भये सुखारे॥
वन उपवन बाटिका तड़ागा।
निरखे सुंदर अमित विभागा॥

दोहा

विविधि रंग के जलज गन कुसमित भे तिन माहिं।
सुदल अष्ट षोडस अपर, सत सहस्त्र लखि ताहिं ॥८॥

चौपाई

मत्त भ्रमर गन बिपुल मराला।
बिहरत तिन पर मुदित बिसाला॥
कोकिल कीर कपोत कलापी।
मैनादिक चहुं ओर अलापी॥
चक चकई पुनि मृग समुदाई।
बिचरत अभय लखे मुनिराई॥
मूर्तिवंत रितु नायक आपू।
बसै सदा रघुनाथ प्रतापू॥
कछुक दूरि चलि नगर समीपा।
निरखी सरित अज्ञ-तम-दीपा॥
सरजू नाम सकल अघहारी।
जग बिख्यात परम सुखकारी॥
जासु नीर कन परसत अंगा।
होइ अवस्य अंत भव भंगा॥
अहि पावन किमि करौं बखाना।
रघुपति नित मज्जहिं जग नाना॥

सोरठा

तिहि तट सुभग अपार, मनिमय मंडफ हेरेउ।
मुनि मंडली मझार, तासु मध्य रामहिं लखेउ ॥९॥

चौपाई

दूर्वादल सम स्याम सरीरा।
अति अनूप धारे मुनि-चीरा॥

ललित लिलाट पुंड छवि देई।
भृकुटी मदन चाप दुति लेई॥
जलज नयन नासिका सुहाई।
सुभग स्रवन निरखेउ मुनिराई॥
बिसद कपोल अलक मन मोहै।
मनौ कंज पर अलि गन सोहैं॥
अधर अरुन छवि बरनि न जाई।
दसन कांति ससि – किरनि लजाई॥
चारु चिबुक, कंबु सम ग्रीवा।
बृषभ कध, जुग भुज छवि सीवा॥
ललित पानि जुग, करज अनूपा।
नख प्रकास मनि गन अनुरूपा॥
उर विसाल श्री - सहित सुहावा।
भृगु - पद निरखि ललित मन भावा॥

दोहा

बोले पुलकित गात तब, आरन्यक मुनिराज।
भयो धन्य मैं आजु अब, लखि पद प्रभु सुख साज॥१०॥

चौपाई

वेद स्मृति सद सास्त्र पुराना।
पढ़ैं सुनें वहु काल निदाना॥
सब कर फल पावा मै आजू।
आइ अवनि निरखे रघुराजू॥
जोगेस्वर जिनके उर माहीं।
भजै निरंतर पावत नाहीं॥
अज शिव सनकादिक जिहि ध्यावें।
कबहुक रूप छटा लखि पावें॥
ते रघुपति छवि - उदधि अपारा।
भरत लखन सिय सहित उदारा॥

निकट आजु मुनि वृंद मझारा।
निरखे परम दया आगारा॥
सब विधि धन्य भयो मैं आजू।
लखि पद प्रभु पकंज मुख साजू॥
निज आनन सों बचन रसाला।
बूझहिंगे जन गुनि येहि काला॥

दोहा

इहि बिधि बदत मुनीस वर निरखि राम पद कंज।
सिथिल गात भये प्रेम बस, श्रवत अंबु दृग मंज॥११॥

चौपाई

उहां रामवर मुनि कहं देखी।
जनु तप मूरति धरे विसेखी॥
उठि आतुर मख-काज बिहाई।
पुलकित चले मिलन रघुराई॥
मुनि के पद-पंकजन मझारा।
परे आइ भंजन-भव-भारा॥
श्री ब्रह्मन्य देव रघुबीरा।
जानि परम पावन गत पीरा॥
तब मुनि निरखि प्रभुहि पद माहीं।
भूतल परे दंड की नाहीं॥
सुर नर असुर भजै पद जासू।
हर्षि चरन पकरे मुनि तासू॥
तब आतुर रघुनाथ उदारा।
गहि भुज भेटेउ हर्षि अपारा॥
पुनि मनि रचित सिंघासन आना।
दिव्य बिसाल उच्च सुख दाना॥

दोहा

बरबस प्रभु मुनिराज कहं, तासु मध्य बैठारि।
पुनि सुचि जल लै चरन जुग, मंजेउ कंचन थारि ॥१२॥

चौपाई

सोइ पादोदक सीस चढ़ाई।
सजन सबस भवन सिंचवाई ॥
बोले बहुरि भानुकुलकेता।
भयो परम सुचि कुटुम समेता ॥
बदनादि पद चर्चित कीन्हें।
सब प्रकार पूजे वित दीन्हे ॥
पुनि पय-खानि धेनु समुदाई।
दीन्ह सकल शृंगार कराई ॥
जलज - पानि - जुग जोरि कृपाला।
पद सिर धरि कहि गिरा रसाला ॥
सुनौ स्वामि यह मख हम ठाना।
अति पुनीत भा मैं जिय जाना ॥
तुव पद कज परसि अपि आजू।
भये परम पूरन सब काजू ॥
आजु बिप्र - बध - पाप नसावा।
मुनिनायक तुव चरन प्रभावा ॥

सोरठा

इहि बिधि सुनि प्रभु बैन, हसि बोले मुनि राज तब।
सुनौ स्वामि छबि ऐन, बात सत्य गुन उदधि तुम ॥१३॥

चौपाई

तुम हमार बहु पूजन कीन्हा।
यह ब्रह्मण्य देव पद चीन्हा ॥

बेद - धर्म - पालन रघुनाथा।
प्रगट होहु जग बिदित सुगाथा ॥
पूजहु विप्रन कौ जुत नेहा।
सिच्छा करहु विस्व कहं येहा ॥
तुम जो यह प्रभु कीन्ह बखाना।
द्विज - बध - दहन - हेत मख ठाना ॥
यह सुनि प्रगट होइ अति हासी।
जदपि कृपा करि आपु प्रकासी ॥
सुमिरि तुम्हार नाम यक बारा।
होइ मूढ़ तन अघ निधि पारा ॥
परम - धरम श्रुति गावहि जोई।
बिनु प्रयास पावं अपि सोई ॥
श्रुति पुरान आगम इतिहासा।
सकल सत्य करि करहि प्रकासा ॥

दोहा

पाप सघन – वन कह प्रबल, अनल सरिस तुव नाम।
परम हास - प्रद बचन तुव, प्रथम कह्यौ सुख धाम ॥१४॥

चौपाई

ब्रह्म - दोष - पावस - समुदाई।
तब लगि गर्जहि पाप - बिहाई ॥
जब लगि रसना नाम तुम्हारा।
प्रेम सहित नहि करहि उचारा ॥
महा कलुष - कुंजर - सम - तूला।
नाथ नाम हरि इहि प्रद सूला ॥
तिहि ते ब्रह्म - बधादिक पापा।
लागहि तुमहि न प्रगट प्रतापा ॥

परम पुन्य पद दरस तुम्हारा।
अखिल अड कहं पावन कारा ॥
प्रथम नाथ मैं कृत - जुग माहीं।
सुरसरि तट मुनि - वृंदन पाहीं ॥
जो कछु सुनेउ कहौं इहि काला।
सुनौ जलज - दृग दीन दयाला ॥
तब लगि बसै जीव उर पापा।
जब लगि जीभ नाम नहिं जापा ॥

दोहा

जोग न, जज्ञ न, दानव्रत, तुम्हरे नाम समान।
इहिं विधि सुनेउ कृपायतन, तुम अभिमत फल दान ॥१५॥

चौपाई

लोमस मुनि मोहिं प्रथम सुनावा।
सो फल सत्य आजु मैं पावा ॥
तातें मैं रघुनाथ कृपाला।
अवसि धन्य अब भा इहि काला ॥
दरस नाम तुव बेद बखाना।
जग दुलभ सब भाँति प्रमाना ॥
सो मैं पायउं बिनहिं प्रयासा।
मिटी विषय भव-निधि को आसा ॥
सकल मुनीस रहे तेहि काला।
बोले बचन विनीत रसाला ॥
साधु - साधु पुनि साधु मुनीसा।
बरनी परम सत्य बागीसा ॥
वात्सायन सुनु अचिरज भारी।
भयो प्रगट तिहि सभा मझारी ॥

छंद

भयो प्रगट सभा मझार अविरज तिहि समय मुनि नायकं।
रिषिराज छबि उर वारि हर्षे, विपुल मन वच कायकं॥
पुनि सकल मुनिन बुझाइ, बाँह उठाइ जुग वानी कहो।
मो सम न भा कोउ प्रथम, अब, अरु अंत यह साँचो सही॥
सिय - नाथ निजु कर कंज सों, बहु भाँति मम सुमिरन कियो।
जिहि चरन श्रुति रज खोज, तिन मो पाद जल सिर धरि पियो॥
गृह सींचि पावन मानि आपुहि, कवन विधि बरनन करो।
इहि भाँति 'मधुसूदन' बदत, ब्रह्मांड फटि सुध उद्धरो॥

दोहा

लही मुक्ति सायुज्य मुनि, दुर्लभ जोगिन मान।
तिहि अवसर नभ मैं बजे, संख भेरि निसान॥
सुर अचरज निरखै गगन, बरष तन पर फूल।
धन्य - धन्य धुनि उच्चरैं, प्रमुदित अति अनुकूल॥

सोरठा

मुनिगण विस्मै देखि, भाँति अनेक प्रससि किय।
बोले हर्षि विसेखि, भये मुक्त रिषि धन्य मय॥१६॥

इति श्री पद्म पुराणे पाताल षड शेष वात्सायन सवादे
मधुसूदन दास कृते आरन्य मुनि साजोज्य मुक्ति वणनोनाम
सप्तत्रिसौऽध्याय: ॥३७॥

जल-मध्य-हय-प्राप्ति

दोहा

सुनो सूत यह चरित अब, वात्सायन धीमान।
परम हर्ष जुत सेषसन, बोलि जोरि जुग पान॥

चौपाई

तुव मुख - कंज अमी - सम गाथा।
त्रिप्त न होहुं सुनौ अहिनाथा॥
राम – सुजस भक्तन - भय - हारी।
तुम भलि भाँति कहौ बिस्तारी॥
धनि मुनीस आरन्यक नामा।
श्रुति-पथ परम निपुन तप-धामा॥
राम - सरूप धारि उर माहीं।
तजी देह नस्वर दुख नाहीं॥
अब अहिनाथ कहौ समुझाई।
तजि आश्रम कित गा हय - राई॥
किहि महीप पकरा बर जोरा।
तिन कर समर, भयो अति घोरा॥
तहाँ राम - जस किहि विधि भयेऊ।
पुनि मख तुरग कवन बिधि लयेऊ॥
तुम सर्वज्ञ कहौ समुझाई।
अहिपति रूप धरे रघुराई॥

दोहा

वात्सायन के बचन सुनि, इहि प्रकार अहिनाथ।
हृदय हर्षि बरनन लगे, श्री रघुवर गुन गाथ॥१॥

चौपाई

साधु प्रस्न कीन्हे मुनिराई।
जानेउ प्रभु गुन रसिक बनाई॥
मख - हय मुनि आश्रमहि बिहाई।
चलो सरित - तट मरुत लजाई॥
मुनि - गन बसहिं तासु तट माहीं।
निरखि - निरखि ते उर हर्षाहीं॥

कटक अपार चल्यो तिहि पाछे।
सकलायुध तन सोभित आछे॥
जहं - जहं बाजि - सिरोमनि जाई।
तहं - तहं लखति जाइ कटकाई॥
रेवा जल अगाध तेहि काला।
गयो समाइ तुरंग बिसाला॥
बिस्मय भयो बीर समुदाई।
उछरत पुनि न दीख हय – राई॥
कहैं परस्पर व्याकुल गाता।
किमि आवं हय मख-फल-दाता॥

दोहा

कवन बीर अस कटक मह, जो जल बेधि अगाध।
ल्यावें हय रघुनाथ कर, एहि अवसर बिनु बाध॥२॥

चौपाई

येहि प्रकार सब करें बिचारा।
थकित अंग उर दुखित अपारा॥
तब लगि कोटिन सुभट समेता।
आये तहाँ भानु - कुल - केता॥
तब सेवकन दंडवत कीन्हा।
व्याकुल गात सबन प्रभु चीन्हा॥
मेघ समान गिरा गंभीरा।
बोले राम - बंधु अति धीरा॥
केहि कारन ठाढ़े सब जोधा।
लखि न परै हय, गा किहि क्रोधा॥
कै इहि सरि महं कीन्ह प्रवेसा।
कै पकर्‌यो केहु कुटिल नरेसा॥

कवन हेत तुव व्याकुल गाता।
कहौ बुझाइ मोहिं सब बाता॥
इहि प्रकार सुनि सब कटकाई।
बोलेउ बचन चरन सिरु नाई॥

दोहा

सुनौ स्वामि भये दंड द्वै, हय जल कीन्ह प्रवेस।
हम न जान कछु, धरेउ किहि, कीजिय कवन निदेस॥३॥

चौपाई

जो तुम प्रथम चलौ जल स्वामी।
तौ हम सकल आपु अनुगामी॥
इहि बिधि सुनि सुभटन-मुख-बानी।
रिपुभंजन निज उर दुख मानी॥
तब सुमंत सन गिरा उचारी।
बेगि सचिव बर कहौ बिचारी॥
कवन उपाय करिय इहि काला।
जिहि ते आवं तुरग रसाला॥
पुनि अस सुभट कवन दल माहीं।
जल अगाध भेदै सक नाहीं॥
सुनि सुमंत बोले वर बानी।
अवसर - जोग नीति - रस - सानी॥
सुनौ स्वामि तुव विक्रम भारी।
अति अद्भुत बीरन सुखकारी॥
नभ भूतल पुनि जल पाताला।
सर्व गम्य तुव सुनौ नृपाला॥

दोहा

अवर सुनौ पुष्कल सुभट, पुनि मारुत-सुत-बीर।
अतुल सक्ति सरवत्र गम, बल-समुद्र दोउ बीर॥४॥

चौपाई

सुमिरि राम-पद तीनौं बीरा।
हर्षि प्रवेस करौ इहि नीरा॥
अवसि जानि हौ जज्ञ-तुरंगा।
करि हौ सब कर संसय-भंगा॥
सुनु मुनि सुमति कहा इहि भाँती।
हर्षे सुनत लवन-आराती॥
भरत-तनय हनुमान समेता।
प्रविसे सरित अगाध सचेता॥
तासु मध्य यक नगर निहारा।
जगमगात सुंदर दुतिकारा॥
वन उपवन सर कूप विभागा।
सुमन वाटिका लखि मन लागा॥
अगिनि तरंग विहगम देखे।
हंस कोर कल कंठ विसेखे॥
पुर रचना सब भाँति बनाई।
बोथी भवन सकल सुखदाई॥

सोरठा

तह इक भवन मझार, मनि-हाटक-मय-खंभ सन।
मख हय बंधो निहार, कनक पत्र बर लसत सिर॥५॥

चौपाई

मनि बिरचित परजंक मझारा।
लखी नारि तहं छवि आगारा॥
अति कमनीय सु नसन सुरंगा।
भूषन विद्यमान सब अगा॥
परम प्रसन्न परी छवि रासी।
मनौ तड़ित धरि रूप प्रकासी॥

अवर सहसन वाम अनूपा।
करैं सेव तिहि मन अनुरूपा॥
बिजन चमर छत्र कर लीन्हे।
कोउ यक मुकुर लिये चष चीन्हे॥
तीनौ जन तहं आवत देखी।
स्वामिनि सन कहि बचन बिसेखी॥
आवैं मनुज तीनि तुव धामा।
परम पुष्ठ तन छवि जिमि कामा॥
सुभग पुष्प फल रस निधि मानो।
तिमि इन कर श्रोनित जियजाना॥

दोहा

विपुल स्वादप्रद गुनौ मन, रूधिर मास इन केर।
बिगत आयु आये इहाँ, काल-बली के प्रर॥६॥

चौपाई

सुनि अस, बचन सूत सो बाला।
मृदु मुसक्यान अधर अति लाला॥
इंदु बदन पुनि भृकुटि रचाई।
चितवन लगी सुनौ मुनिराई॥
तब लगि तीनौ सुभट सुजाना।
आये त्रियन समीप निदाना॥
सिरस्त्रान सन्नाह सुहाये।
अस्त्र-सस्त्र जुत अति छवि छाये॥
तिय समूह लखि सुभग अपारा।
प्रगटेउ विस्मय हृदय मझारा॥
चितै परस्पर बोले बचना।
कहं निरखे अचिरजप्रद रचना॥

पुनि परजंक परी सो वामा।
कीन्हेउ ता कहं जाइ प्रनामा।।
पुंडादिक सुचिन्ह पहिचानी।
सियाराम रासी जिय जानी।।

दोहा

तिनहिं निरखि देवांगना, तिय-मनि दामिनि-गात।
तिहि अवसर बोलति भई, मुख-पंकज तैं बात।।७।।

चौपाई

धरि आयुध आये मम धामा।
को तुम, कहौ वेगि तुम नामा।।
परम बिमोहन लोक हमारा।
देवन कौ दुर्लभ संसारा।।
जे जन आवैं इहि थल माहीं।
पुनि ते जाइ सकैं अपि नाहीं।।
कवन महीप केर इहि बाजो।
छत्र चमर बीजन किमि साजी।।
कनक-पत्र बाँधो किहि हेता।
बरनौ सकल स्वगाथ सचेता।।
सुनि अस वचन मनोहर काना।
बोले हंसि, गत - भय, हनुमाना।।
देव - सिरोमनि प्रभु भुवनेसा।
श्री रघुपति उदार अवधेसा।।
मन बच क्रम तिन कर हम दासा।
संतत तिन बिनु अपर न आसा।।

दोहा

करैं जज्ञ ते राम प्रभु, जानो हय तिन केर।
किमि बाँध्यो, आतुर तजौ, भूलि करौ जनि बेर।।८।।

चौपाई

अस्त्र-सस्त्र हम कुसल बनाई ।
रण - अजीत पुनि बल - समुदाई ।।
राम प्रताप न संक हमारे ।
तजौ अस्व अब, बिनहि बिचारे ।।
जौपि न तजहु, तौपि रन माहीं ।
लैहैं जीति तुरंग सक नाहीं ।।
इहि विधि निडर वचन सुनि काना ।
हंसि बोली तिय परम सुजाना ।।
हम बाँधा तुम्हार हय येहा ।
तजौं न कबहुँ बिगत - संदेहा ।।
अयुत वष भरि समरहि मंडौ ।
कोटिन बान बिविधि विधि छंडौ ।।
तदपि न जीति सकौ संग्रामा ।
सत्य कहैं, जद्दपि हम वामा ।।
अब मम वचन सुनौ चित लाई ।
निज बल सकल कहौं समुझाई ।।

दोहा

सर्व-भूप-सिर-मुकुट-मनि, अति उदार सिय राम ।
मन-बच-क्रम तिन पदन मैं, दासी हम सब वाम ।।६।।

चौपाई

अस बिचारि हम देहिं तुरगा ।
को करि सकै स्वामि मख भगा ।।
विनय मोरि रघुपति सन जाई ।
बहु प्रकार करिऔ मन लाई ।।
भक्त बछल प्रभु दीनदयाला ।
जिमि यह छमि अपराध कराला ।।

सब प्रकार कहियेउ तुम सोई।
संतन बिनु यह गुन नहिं होई।।
तुम सियराम चरन अनुरागी।
परम भागवत अति बड़ भागी।।
पाइ कष्ट आए मम धामा।
छमौ पाप हम करें प्रनामा।।
तजि संकोच अब सुनौ सुजाना।
माँगौ मन - भावत वरदाना।।
पवन तनय इहि विधि सुनि काना।
बचन विनीत सरल सुखदाना।।

दोहा

बोले हृदय बिचारि तब, सुनौ बचन बर वाम।
श्री रघुनाथ प्रताप तैं, हम परिपूरन काम।।१०।।

चौपाई

तदपि एक जाचौं बरदाना।
सो प्रसन्न हुइ देहु निदाना।।
जब-जब देह धरौं संसारा।
मिलहिं राम तहं स्वामि उदारा।।
तिनके पद - पाथोज - परागू।
होइ तहाँ नित नव अनुरागू।।
अस सुनि बोलो तिय तिहि काला।
हंसति सराहत बचन रसाला।।
दुर्लभ देवन कौ वर येहा।
जाँचेउ तुम सुनु सुभ - मति - गेहा।।
तद्दपि श्री रघुनाथ प्रभाऊ।
होइहै सत्ति, कहौं सति भाऊ।।

जन्म - जन्म प्रति राम उदारा।
मिलै तुम्है प्रभु जगत मझारा॥
प्रभु हित एक अपर बरदाना।
देहु लेहु उर हर्षि निदाना॥

दोहा

तुमहि अग्र नृप वीर मनि, मिलिहै बल - समुदाइ।
सकल गनन जुत उमापति रच्छहि ताहि बनाइ॥११॥

चौपाई

सो तुम्हार धरिहै मख - बाजी।
बल समेत अगनित दल साजी॥
तिहि जीतन हित बान कराला।
देहुं तुमहि प्रद तेज बिसाला॥
जब रिपुसूदन भूपति ओही।
दुरथ जुद्ध ठानै करि कोही॥
तव मम अस्त्र तजौ तिहि काला।
अवसि पाइहौ बिजै बिसाला॥
भूप बीरं मनि बान - प्रतापा।
हरिहै परम जुद्ध तजि दापा॥
राम स्वरूप जानि उर माही।
तुरग समप सस नाही॥
करि है तुव पद आनि प्रनामा।
सकल समपन करि हत - कामा॥
तिहि ते सत्रु समूह सघारी।
धरौ अस्त्र मम हृदय सुखारी॥

दोहा

अस सुनि रिपु भजन हरषि, युद्ध आचमन कीन्ह।
उत्तर दिसि करि बदन निजु, जोगिनि-सर तव लीन्ह॥१२॥

चौपाई

तिहि अवसर सुनु सूत सुजाना।
बढ़ौ तेज किमि करौं बखाना ॥
सन्मुख चितै सकं नहिं कोई।
निरखत रिपु मद भंजन होई ॥
दुराधर्ष तन तेज बिराजा।
बृहत भानु जनु तनु धरि भ्राजा ॥
पुनि मख तुरंग छोरि तिहि दीन्हा।
विनय समेत दंडवत कीन्हा ॥
राम - अनुज पुनि पद सिरूनाई।
भरथ - तनय जुत औ कपिराई ॥
हय समेत पुनि जल विलगाई।
रेवा तीर पहुचेउ आई ॥
मकल कटक लखि सहित तुरंगा।
बोलेउ गिरा हर्षि सब अंगा ॥
धन्य - धन्य पुनि धन्य नृपाला।
किमि पावा हय बाजि रसाला ॥

दोहा

तब मारुत सुत हर्षि उर, बरन्यौ सकल प्रसंग।
जिहि विधि बर प्रापति भयो, पुनि जिमि लहेउ तुरग ॥१३॥

इति श्री पद्म पुराणे, पाताल षडं शेष वात्सायन संवादे
मधुसूदन दास कृते जल मध्य हय प्राप्ति नाम अष्टत्रिंसोऽध्यायः ॥३८।

हय-ग्रहण

दोहा

बीन संख गोमुख प्रनव, दुंदुभि भेरि मृदंग।
वात्सायन सुनु, हनेउ तब, सुभटन हर्षित अग ।।

चौपाई

लषन - अनुज तब तुरंग छुड़ावा।
चल्यौ मरुत गति निदरि सुहावा ।।
पहुँच्यौ भूप बीरमनि ग्रामा।
देवन रचित देवपुर नामा ।।
परम रम्य निरखत मन मोहै।
कोट फटिक मनि बिंचित सोहै ।।
धवल बिसाल उतंग निकेता।
रचना विविधि भाँति छबि देता ।।
विध्याचलहि लजावन हारे।
सकल भवन अति लसि दुतिकारे ।।
राजत रजत गृहन कै पाँती।
सहित बिबिधि मनि मानिक जाती ।।
अति उतग तहं गो पुर भ्राजै।
मनौ संभु - गिरि - शृंग विराजै ।।
पुनि मुनि सब के गृहन मझारी।
राजै यक - यक पद्मिनि नारी ।।

दोहा

ललित रूप कमनीय अति, मन्मथ तिय अनुहारि।
चित्त चोरावैं पतिन के, मन बच कर्म बिचारि ।।१।।

चौपाई

पद्मराग मनि गृहपति सोहैं।
अजिर विबिधि मनि बिरचित मोहैं॥
भवन उतंगन पर मुनिराई।
चित्र सारिका लसै सुहाई॥
बिसद नील-मनि रचित बिसाला।
मनहु सजल सोहै घन - माला॥
निरखि मयूर कहुक हर्षाई।
नचें पुच्छ के मुकुट बनाई॥
हंस फटिक - मनि - रचित विमोहै।
जनु मानस तजि गृहप्रति सोहै॥
नगर समीप सभु अस्थाना।
अति रमनीय न जाइ बखाना॥
सहित समाज बाल-ससि-धारी।
बसैं सदा तहं हृदय सुखारी॥
तिहि पुर ससि प्रभाव मुनिराई।
कृस्न पच्छ नहिं परै लखाई॥

सोरठा

भूप बीरमनि नाम, राज करै तहं धर्म जुत।
परम सैव बल-धाम, संतत भोगै भोगवत॥२॥

चौपाई

तासु तनय रुकुमांगद नामा।
परम सूर सुंदर बलधामा॥
तिय समाज सब भाँति सजाई।
वन बिहार लगि हर्षि बनाई॥
जिहि बन ससि सेखर कर वासा।
गयेउ तहाँ उर काम प्रकासा॥

नूपुर कंकन किंकिन सारा।
छाइ रहो मन्मथ चित चोरा॥
तिहि बन बसैं छवौ रितु रूरो।
पिक अलि कोकिलादि धुनि पूरी॥
बहु चपक प्रसून समुदाई।
थल-थल निरखि परैं छबि छाई॥
तिन बिच कुरौ प्रफुल्लित राजै।
सकल सबौर अंबु बहु भ्राजै॥
सोभित दाड़िम सुमन सुरंगा।
निरखि होइ कामिनि मन भगा॥

दोहा

लसै सुतक पुन्नाग पुनि, नाग सु साल तमाल।
कदम कदलि श्रीखंड बहु, सोभित अपर सु ताल॥३॥

चौपाई

फूलि रही मल्लिका सुहाई।
केतकि सोमजुही छवि छाई॥
उभय प्रकार कर्णिका राजै।
अपर सुमन तरु सकल विराजै॥
तिहि वन मध्य सकल ते बाला।
भूप सुतहिं रिझाव तिहि काला॥
मन्मथ-बिबस बिगत-भय-लाजा।
पुनि-पुनि मिलै मोद के काजा॥
सकल-कला-जुत नाचै कोऊ।
करै गान कोउ भुज धरि दोऊ॥
कोउ कहि बचन मृदुल मुसिक्याई।
चितवहिं कोउ इक चखन चलाई॥

बिरचि सुमन आभूषन कोई।
पुनि नृप सुत जुत साजं सोई।।
निजु-निजु कला सहित सब बाला।
इहि बिधि करें बिहार रसाला।।

दोहा

तिहिं अवसर प्रभु-मख-तुरग, ता वन पहुंचे आनि।
हेम-पत्र सिर सोभिजै, तन चर्चित छबि खानि।।४।।

चौपाई

परम विचित्र अस्व अस देखी।
बिस्मै मानो तियन विसेखी।।
चितै चपल चख पुनि मुसकाई।
बोली पति सन गिरा सुहाई।।
सुनौ कांत यह तुरंग सुहावा।
लसै लिलाट - पत्र छवि - छावा।।
गंगा इमि तन की दुति सोहै।
धरौ सबल सत्वर मन मोहै।।
सुनि तिय बचन मुनीस सुजाना।
रुक्मांगद निज ज्ञान भुलाना।।
मन्मथ - बिबस तियन - मुख हेरो।
पकरि लीन्ह हय कीन्ह न देरो।।
कनक-पत्र पुनि बाँचि बनाई।
त्रियन मध्य बोल्यौ मुसकाई।।
निरखो यह जग अचिरिज भारा।
किहि प्रकार मैं करौं बिचारा।।

दोहा

मम पितु सम कोउ अवनि तल, बल वैभव जुत नाहिं।
तासु अछित नृप राम हय, तजो, निडर मन माँहि।।५।।

चौपाई

करि है अस्वमेध पितु मोरा।
कवन छुटाइ सकै यह घोरा॥
सदा पिनाक धनुष कर धारी।
करै सभु जेहि की रखवारी॥
आजु देव दानव समुदाई।
नवहि मुकुट जुत पितु पर आई॥
तिन बिनु जज्ञ करै को आन।।
आजु बना सजोग निदाना॥
सुनौ सजग मम भट हर्षाई।
बाँधो हयसाला हरि जाई॥
सकल वाम इहि बिधि सुनि बानी।
मन मह नृप कह अति भट मानी॥
पुनि तुरंग औ त्रियन समेता।
चल्यौ भूप-सुत नगर सचेता॥
बजत विपुल गहगहे निमाना।
वदी करत जात गुण नाना॥

दोहा

अति उत्साह बढ़ाइ उर, प्रविसो जनक निकेत।
निकट जाइ पद वदि पुनि, बोल्यो हर्ष समेत॥६॥

चौपाई

सुनो तात इक राम नृपाला।
बाजि-मेघ मख करै बिसाला॥
निजु इच्छा सो हय वन आवा।
तुम मख-हेत पकरि मै लावा॥

भूप सत्रुहन बहु दल लीन्ही।
आवत सजग अस्व पथ चीन्ही॥
सुनि सुत-बचन महीप सुजाना।
भयो दुखित, नहिं हृदय सिहाना॥
दृग तरेर करि गिरा उचारी।
कवन काज कीन्हेउ कुबिचारी॥
चोरि चोर अब तुरंग परावा।
रे कातर फिरि घर भजि आवा॥
निज गुन बरनत आव न लाजा।
इहि बिधि बार-बार कहि राजा॥
पुनि जिहि वन जामात महेसू।
गयेउ बेगि तहं विकल नरेसू॥

दोहा

लसं बाल-बिधु भाल-महँ, भूति-विभूषित-अंग।
वाम-भाग गिरिवर सुता, पुनि तंह सोह भुजंग॥७॥

चौपाई

निकट जाइ पद बंदि भुवाला।
कहेउ संभु, केहि हेत विहाला॥
तब सब सुत कृत कर्म कराला।
ब्याकुल बरनत भा तिहि काला॥
संभु स्रवन सुनि आरत बानी।
बोले तब सेवक अनुमानी॥
सुनौ बीरमनि भूप सुजाना।
कीन्ह कर्म सुत कठिन निदाना॥

रामचंद्र मम स्वामि उदारा।
छवि - निधान बल-बुद्धि-अगारा ।।
लीलहि सों जिन रावन मारा।
बल बैभव जानैं ससारा ।।
तासु जज्ञ - हय जानौ येहा।
अति कराल संजुग कर गेहा ।।
देव दनुज मोहन सग्रामा।
होइहै इहां कठिन भा कामा ।।

दोहा

महाराज श्री सत्रुघन, कोटिन भूप समेत।
हय मग जोवत आवहीं, लखि रिपु होइ अचेत ।।८।।

चौपाई

तिन कर जेष्ठ बधु श्री रामा।
मम प्रभु पारब्रह्म छबि - धामा ।।
सदा करौ मै तिन कर ध्याना।
जपौ नाम पुनि हृदय निदाना ।।
तासु जज्ञ - हय तनय तुम्हारा।
हरि ल्यावा अघ कीन्हेउ भारा ।।
तदपि सुनौ नृप इहि रन माही।
परम लाभ हुइहै सक नाही ।।
निजु पद कज परम पद दाई।
दरसंहै कृपाल रघुराई ।।
तब मैं तुम समेत महिपाला।
नाइ स्वामि - पद - पंकज भाला ।।
सकल पाप तब छिमा कराई।
देहौं तुरत तजौ विकलाई ।।
करौ सजग अब हय रखवारी।
जिहि बिधि सत्रु न सकै निहारी ।।

सोरठा

सुनु मुनीस धरि कान, इमि महेस बरनन करयो ।
सुनि महिपाल सुजान, जोरि पानि बोल्यो बचन ॥९॥

चौपाई

प्रभु छत्रिन कर धर्म कठोरा ।
अति कराल दुर्गम सब ओरा ॥
किहि बिधि धरा जज्ञ - हय येहा ।
हृदय होत दारुन संदेहा ॥
देखहु उन कर बल अधिकाई ।
सुनि प्रताप रिपु जाहिं पराई ॥
सोवत अहि मम तनय जगावा ।
अब उपाइ कछु मनें न आवा ॥
कोपहिंगे जब राम नरेसू ।
तब अवलंबन तुमहिं महेसू ॥
भय बस परौं चरन जो जाई ।
करें हास्य तौ रिपु समुदाई ॥
कातर अधम कहै संसारा ।
कवन भाँति सहिहौं अपचारा ॥
अस बिचारि निजु सेवक जानी ।
करौ जुद्ध तुम मो संग आनी ॥

दोहा

सुनु मुनीस नृप बचन सुनि, उमानाथ तिहि काल ।
हेरि हेतु हंसि बोलेउ, गिरा गभीर रसाल ॥१०॥

चौपाई

तजौ भूप उर तैं बिकलाई ।
पकरि अस्व अब करौ लराई ॥

सब बिधि रच्छा करौं तुम्हारी।
समर भूमि दारुन वपु धारी॥
जदपि सत्रुहन स्वामि हमारे।
सब बिधि पूजनोय बल भारे॥
अनुचित निपट, तदपि तुम हेता।
करिहौं जुद्ध घोर इहि खेता॥
अपर बीर रिपु दहन बिहीना।
त्रिन समान हत बस अति दीना॥
प्रथमहि करौ समर तुम जाई।
निजु रच्छक मुहि जानु बनाई॥

दोहा

जब लगि श्री रघुबंस मनि, दे दरस न आइ।
करें जुद्ध त्रैलोक चढ़ि, तब लगि अस्त्र न पाइ॥

सोरठा

सुनि संकर के बैन, तिहि अवसर नृप बीर मनि।
भय तजि भयो सुखेन, समर हेत उत्साह किय॥११॥

इति श्री पद्म पुराणे पाताल षंडे शेष वात्सायन संवादे
मधु सूदन दास कृते हय ग्रहणो नाम नवत्रिंसोऽध्याय: ॥३८॥

युद्ध-निश्चय

दोहा

वात्सायन, उत प्रभु सुभट, खोज्यौ पथ मझार।
कहै परस्पर हय कहाँ, परै न नयन निहार ।।

चौपाई

को अस खल जिहि लीन चुराई।
किहि दिसि गा नहि परै लखाई ।।
जमपुर चलन साज किहि साजा।
सो लघु मति तजि प्राण अकाजा ।।
इहि बिधि कहैं परस्पर बाता।
निरखि चहूँ दिसि ब्यालहि गाता ।।
तब लगि लिये अमित दल साथा।
आये तिन समीप रघुनाथा ।।
बिकल सकल सेवकन निहारी।
सजल मेघ इमि गिरा उचारी ।।
सोभित स्वण - पत्र मख - घोरा।
लखि न परै अब गा किहि ओरा ।।
सुनि बोले अनुचर तिहि काला।
गयो अस्व इहि बिपुल नृपाला ।।
बन तैं कढ़त न हम हय देखा।
अवगाहे सब पथ विसेषा ।।

दोहा

महाराज अब साधि उर, कीजिय बेगि उपाइ।
बिनु प्रयास जिहि बिधि मिलै, रघुनायक हय राइ ।।१।।

चौपाई

भूप – मौलि – मनि रिपुमद हारी।
सुनि सुमंत संग गिरा उचारी॥
सचिव सुजान कहौ मो पाहीं।
कवन भूप बसि इहि थल माहीं॥
कितना कटक रहै इहि संगा।
किहि उपाय पुनि आव तुरंगा॥
सुमति स्रवन सुनि इहि विधि बानी।
गिरा रसाल बोलि रस सानी॥
महाराज सुनियै धरि काना।
नगर देवपुर यह जग जाना॥
वृंदारक बिरचित सु बिसाला।
रजत सैल सम अगम कराला॥
सुभट सुजान प्रताप - निधाना।
नाम बीरमनि यह बलवाना॥
राज्य करैं श्रुति - पथ - अनुहारी।
सतत रच्छैं आपु पुरारी॥

दोहा

महा रुद्र, जग प्रलय कर, अजित परम विकराल।
भक्ति बिबस ह्वै नृपति की, रच्छा कर सब काल॥२॥

चौपाई

जौपि धरा इहि तुरंग तुम्हारा।
तौ होइहै रण घोर अपारा॥
रण मंडल परिहैं भट भूरी।
होहु सजग, संसै करि दूरो॥
बुधि बल सहित कटक रखवारी।
करौ स्वामि, रचि कूह बिचारी॥

सुनि अस बिरचि व्यूह रघुराजू।
ठाढ़ भये तहं सहित समाजू॥
नारद मुनि तेहि अवसर आये।
रन कौतिक लगि आनंद छाये॥
आवत मुनिहि सत्रुघन देखा।
जनु तप तन धरि आव विसेखा॥
आतुर चलि आगे तिहि काला।
पद-पंकज नायौ निजु भाला॥
अर्घपाद्य करि आसन दीन्हा।
बेद विहित सब स्वागत कीन्हा॥

दोहा

मुनिहि प्रसन्न बिलोकि पुनि, वंदि चरन कर जोरि।
अति विनीत सुंदर सरल, बोले बचन निहोरि॥३॥

चौपाई

कहौ मुनीस कहाँ हय मोरा।
किहि पकरा, पुनि गा किहि ओरा॥
निपुन-पंथ-गति अनुचर एहा।
लखौं न हय तिन, बड़ संदेहा॥
मख-तुरग जिमि प्रापति होई।
बरनौ मुनि उपाय अब सोई॥
नारद इहि प्रकार सुनि बैना।
गावत जात राम गुन ऐना॥
रण-कौतुक उर चाहै देखा।
बोले प्रभु सन बचन विसेखा॥
सन्मुख ग्राम देवपुर येहा।
नाम बीरमनि नृप बल गेहा॥

तासु पुत्र इहि विपिन मझारी।
क्रीड़ा हेत आव सह नारी॥
तिहि तुम्हार पकरा मख-बाजी।
अब आवत पितु-जुत दल साजी॥

दोहा

घोर समर होइहैं इहाँ, सुनौ महा महिपाल।
कोटिन भट तजि प्रान निजु, परि हैं अवनि बिहाल॥४॥

चौपाई

तिहि तें जतन सोधि उर भारी।
ठाढ़ होहु सब सैन सम्हारी॥
अगम व्यूह बिरचौ रघुराजू।
सहसा रिपु घसि सकै न आजू॥
ससय रहित जीत तुव होई।
बड़े कष्ट रिपु अति बल सोई॥
को अस तीनि लोक मैं घीरा।
जो रंण जीति सकै रघुबीरा॥
अस कहि अंतरहित मुनि भयेऊ।
दुरि जाइ नभ थिरता लहेऊ॥
दारुन युद्ध बिलोकन हेतू।
बीन बजाव तहाँ मुनिकेतू॥
देव-असुर-संग्राम-समाना।
जानि समर ठाढ़े तप-धामा॥
इहाँ बीरमनि नृप भट मानी।
आवा गृह सिव-पद उर आनी॥

दोहा

करि बिचार सैनेस निजु, सादर निकट बुलाइ।
अति उन्मद रिपु, बार तिहि, नाम प्रबल ढिग आइ॥५॥

चौपाई

जलद समान गिरा गभीरा।
बाल्यो तिहि अवसर नृप धीरा॥
सुनु सैनेस सजग धरि काना।
हनहु जाइ पुर प्रनव निदाना॥
जासु घोर सुनि मय कटकहि।
सजि-सजि चले जहाँ रघुरहि॥
यह सुनि गज ऊपर धरि ढोला।
चढ़ि सेवक हनि इक पुनि बोला॥
बीथी भवन बजारव माहीं।
सो सुधि व्यापि गई जहँ ताही॥
सुनौ सकल छत्री समुदाई।
भूप निदेस अभंग बनाई॥
जे पुर बसे बीर भटमानी।
ते सब सजहु सजग सचु आनी॥
सजो चमू चतुरंग अनंता।
आवै नृप रिपु हन बलवंता॥

दोहा

तिन ऊपर नृप वीरमनि, चढ़े कोपि इहि काल।
रण-हित रिपु-सन्मुख चलो, अस सुनि हर्ष विसाल॥६॥

चौपाई

नृप आइसु माने नहिं जोई।
तनय बधु अथवा भट कोई॥
तासु काल रिपु वारन आपू।
पुनि मन गुनहु भूप कर दापू॥
अस बिचारि तजि कातरताई।
लरौ सत्रु सन्मुख हरषाई॥

ठोकि ढोल इहि भाँति पुकारी।
गयो भूप के भवन मझारी॥
सुभट सकल इहि विधि सुनि काना।
हर्षित अस्त्र - सस्त्र सजि नाना॥
सीस त्रान संनाह सुहाये।
सजे बीर उर आनद छाये॥
सुभग कनक मंनिमय रथ साजे।
जुग - जुग बाजि सहित छवि छाजे॥
मत्त नाग पुनि तुरग बरूथा।
सजे बिबिधि बिधि पदचर जूथा॥

दोहा

सत करोर भट कवच धरि, चढि चढ़ि रथन मझार।
भूप द्वार प्रमुदित हृदय, चले एक ही बार॥७॥

चौपाई

अपर बाजि गज है असवारा।
आये सकल महीपति द्वारा॥
तिहि अवसर रुकुमांगद जोधा।
समर हेत साजे करि क्रोधा॥
कनक कवच, सिर त्रान सुहावा।
आयुध सहित साजि छवि छावा॥
मरुत बेग सम सुरथ मगावा।
आरोहन होइ बाहेर आवा॥
तिहि कर अनुज सुमंगद नामा।
महा सूर सुंदर बल - धामा॥
कवच टोप सस्त्रादिक साजी।
बाहेर अब हांकी रथ बाजी॥

बीर सिंघ लघु बंधु भूप कर।
बल निधि अस्त्र - सस्त्र विद्यावर ॥
साजि समर लगि सकल प्रकारा।
रथ चढ़ि आव भूप दरबारा ॥

दोहा

बीर सिंघ सुत सुनौ मुनि, बल निधान बर बीर।
नाम तासु बल मित्र गुनि, अति जुझार रणधीर ॥८॥

चौपाई

सजि सन्नाह, टोप निजु माला।
अस्त्र - सस्त्र निजु धारि कराला ॥
रथारूढ़ ह्वै नृप गृह आवा।
देखि सुभट सब के मन भावा ॥
सैना नृप बहु बार बहोरी।
सजी सैन चतुरंग न थोरी ॥
गज तुरंग रथ पदचर नाना।
चारि अंग सम बिरचि निदाना ॥
पुनि रिपु बार भूप पहं जाई।
कहेउ सकल साजी कटकाई ॥
यह सुनि हर्ष बीरमनि राजा।
अस्त्र - सस्त्र सब अंगनि साजा ॥
पुनि विसाल रथ भा असवारा।
कहेउ हनहु बाजने जुझारा ॥
गोमुख बीना संख निसाना।
हने बाजने सुभटन नाना ॥

दोहा

सुभट जुझाऊ सब्द सुनि, आनंद हृदय बढ़ाइ।
सुनि - सुनि कातर संक बस, धीरज देहिं बिहाइ ॥९॥

चौपाई

हर्षि भूप तब कीन्ह पयाना।
चले संग दल सिंधु - समाना॥
सकल सुभट तन भूषन साजैं।
अस्त्र - सस्त्र परिपूरन भाजैं॥
बंदी सतन सहस्रन नाना।
आगे करत जाइं रन गाना॥
गर्जैं रथ बरूथ चहुँ ओरा।
हय हींसैं प्रगट्यो अति सोरा॥
रथ समूह रव बरनि न जाई।
गर्जंत जात सुभट समुदाई॥
अमित बाजने बजे जुझाऊ।
सुनि प्रगटे भट रन - लगि चाऊ॥
सो रव पूरि गयो नभ माहीं।
रण लगि बोल मनौ सजु ताही॥
रेनु गगन दिसि विदिसन छाई।
भानु न निरखि परै मुनि राई॥

दोहा

रण उत्साह समेत नृप, कटक साजि नृप आव।
प्रलय तोयनिधि कोपि जनु, उमगत जगै बुड़ाव॥१०॥

चौपाई

इहाँ सत्रुघन रिपु कटकाई।
सन्मुख आवत लखी बनाई॥
बोले तब सुमंत सन बानी।
धीरज धर्म नीति रस सानी॥
नृपति बीरमनि सजि दल आवा।
जेहि हमार मख - बाजि बंधावा॥

हुइहै समर इहां बिकराला।
देखिय दल चतुरग बिसाला॥
कवन भाँति कीजै संग्रामा।
बरनौ मम सुभटन को नामा॥
विनु प्रयास रिपु जीतहिं जेई।
मो सन कहहु सजावहु तेई॥
पुनि मोहिं कहौ, करौं मैं सोई।
जथा जोग बरनौ तुम जोई॥
सुनि बोले सुमंत तिहि काला।
सुनौ स्वामि तुम धीर नृपाला॥

दोहा

लिए अमित दल संग यह, भूप वीरमनि आव।
महा सूर मन गुनौ इहि, रन लखि कीन्ह बनाव॥११॥

चौपाई

पुष्कल परम सूर बलवाना।
कर जुद्ध चलि प्रथम सुजाना॥
अवर पठावौ सकल भुवाला।
करै रिपुन प्रति जुद्ध कराला॥
तुम शिव - सन मंडहु संग्रामा।
कै महीप प्रति सुनु बलधामा॥
दंदु युद्ध कीजै हरषाई।
जै तुम्हार होइहै रघुराई॥
सकल सैन अब देहु चलाई।
जथा जोग रण मंडै जाई॥
करौ जुद्ध अब होइहै जीती।
पुनि जो रचै करौ सो प्रीती॥

वात्सायन मुनि सुनि अस काना।
बोले गिरा गभीर निदाना ॥
करौ समर सब भूप बिचारी।
जेहि प्रकार होइ जीति हमारो ॥

दोहा

सकल सुभट इहि भाति सुनि, उर आनद बढाइ।
मधुसूदन सब भाति सजि, चले निसान बजाइ ॥१२॥

इति श्री पद्म पुराणे पाताल षडे सेष वासायन सवादे
मधुसूदन दास कृते, जुद्ध निश्चयानाम चत्वारिसोध्याय ॥४०॥

पुष्कल-विजय

दोहा

सूत सुनौ रिपु दहन भट, कोटिन प्रबल प्रचड।
प्रविसि वीरमनि कटक मे, छाडे बान अखड ॥

चौपाई

धरे धनुष सर करन मझारा।
बिरचे रन भट जूह जुझारा ॥
भए भग गज बाजि बरूथा।
पुनि भजे मनिमय रथ जूथा ॥
तजि-तजि प्रान सुभट समुदाई।
परे धरनि भुज सीस बिहाई ॥

त्राहि - त्राहि भट करहि पुकारा।
चले भाजि सब विकल अपारा॥
यह सुधि रुकमांगद सुनि काना।
दारून कोप हृदं महँ आना॥
चढ़ि बिसाल मनिमय रथ माहीं।
आतुर आव तहाँ भय नाहीं॥
धरे सरासन महं सरचंडा।
अति बाँकुरो सुभट बलवंडा॥
अक्षय तून धरे दोउ ओरा।
भए अरुन दृग कोपिन घोरा॥

दोहा

तानि सरासन श्रवण लगि, तजे अमित सर चंड।
त्राहि-त्राहि करि भजे सब, परे बिपुल ह्वै खंड॥१॥

चौपाई

कटक भजाइ महीप कुमारा।
गर्जे ठाढ़ तहाँ भइ भारा॥
कहहि कहाँ रिपु दहन महीपा।
कित पुष्कल नहि आव समीपा॥
यह सुनि आये भरत - कुमारा।
निरखि भूप - सुत बचन उचारा॥
भलै आव पुष्कल भटमानी।
बल बिक्रम निधि मैं जिय जानी॥
मंडौ रण मो तन हरषाई।
अपर कटक किमि दलौ रिसाई॥
मम जीते बिनु बिजय न होई।
रण मंडौ निज उर अस जोई॥

कहत जात अस भूप - कुमारा ।
बिहसि बली पुष्कल तिहि बारा ।।
लाघव तानि धनुक मुनिराई ।
हृदय हन्यौ बर इषु समुदाई ।।

छंद

उर मारि बान प्रचंड । बल हीन भा बलवड ।।
पुनि तानि निज कोदड । दस घोर सायक छड ।।
अति बेग पुष्कल हीय । लगि आन बिथा न दीय ।।
जय हेत दोऊ कोप । करि युद्ध, को कहि - ओप ।।
जिमि दैत्य तापरसग । रण ठानि पट मुख भंग ।।
तिमि बार - बार प्रचारि । दलि बान हृदय मझारि ।।

दोहा

भरत - तनय करि कोप तब तजे बान दस घोर ।
रुकुमांगद हत विरथ किय, छिन मै निज भुज जोर ।।२।।

चौपाई

चारि बान हय चारि सघारे ।
हति सर द्वै रथ चक्र निवारे ।।
पुनि इषु एक कीन्ह ध्वज खड़ा ।
हने सूत उर द्वै भुज चडा ।।
बान एक नृप - सुत उर लागा ।
रण - मडल इहि विधि रथ त्यागा ।।
द्वौ दिसि सुभट प्रसंसि विसेखी ।
अस बिक्रम पुष्कल कृत देखी ।।
रथ हय सूत ध्वजा लखि भगा ।
रुकुमांगद कोप्यो सब अगा ।।
चढ़ि रथ आन चाप सधानी ।
पुष्कल सों बोला भटमानी ।।

पुष्कल तुम विक्रम किय भारा।
जाहु कहाँ अब करौ संभारा॥
निरखि मोर विक्रम विकराला।
व्योम जाहु रथ - जुत इहि काला॥

दोहा

इहि प्रकार कहि, मंत्र पढ़ि, भ्रामक सर धनु धारि।
खेंचि स्रवण लगि कोप - जुत, कीन्ह प्रचारि प्रहारि॥३॥

चौपाई

पुष्कल रथ लाग्यौ सोइ बाना।
तुरंग सूत - जुत गगन उड़ाना॥
जोजन एक प्रजंत डरावा।
बड़े कष्ट मातुल महि लावा॥
सावधान होइ सन्मुख आई।
बोले अति उर कोप बढ़ाई॥
भूप - तनय तुम सुर - पुर जाहू।
होहु अमर पूजित, लहु लाहू॥
तुम सुकृती, नहिं भूतल जोगू।
अस बिचारि तहं भोगौ भोगू॥
बेद पुरान कहे अस गाथा।
सत - मख कीय होइ सुर – नाथा॥
सो पद बिनु श्रम सहित सरीरा।
तुम्हें देहु मैं सुनु रणधीरा॥
अस कहि भ्रामक बान प्रचंडा।
करि प्रयोग धारे कोदंडा॥

छंद

सर चंड धरि कोदंड। करि कोप ता कहं छंड ॥
हथ मध्य लागो जाइ। नभ पंथ चल्यौ उड़ाइ ॥
सह सूत रथी तुरंग। त्रिण के समान सुखंग ॥
अज संभु वासव लोक। सब भांति भ्रमो ससोक ॥
पुनि भानु - मंडल आव। नहिं तेज सकौ सहाव ॥
रथ सूत बाजि समेत। भयो भस्म पर्म अचेत ॥

दोहा

सीस त्राण सन्नाह तपि, भयो दग्ध वपु तासु।
सुमिरि संभु व्याकुल महा परयो अवनि-तल आसु ॥४॥

चौपाई

सुनु मुनीस नृप तनय प्रतापी।
मुर्छित भयो बिथा बहु ब्यापी ॥
निरखि ताहि व्याकुल सब सैना।
भजो पुकारत आरत बैना ॥
पाछे चितै सकै नहिं कोई।
हाहाकार दीन रव होई ॥
परम विजय पुष्कल रण पाई।
हर्षी रामचन्द्र कटकाई ॥
उहाँ बीरमनि - तनय निहारा।
दग्ध गात मुर्छित दुख भारा ॥
हृदय कोप कीन्हो बिकराला।
पुष्कल ऊपर चलि तिहि काला ॥
मनो सिंधु उमग्यो इक बारा।
सुभटन उर भा हर्ष अपारा ॥
कंपन लगी अवनि तिहिं काला।
बन पर्वत पुनि सिंधु बिहाला ॥

भय बस कातर धरै न धीरा।
गिरत जाहि महि सिथिल सरीरा॥

दोहा

भूप सकोप प्रचंड सर, धरै सरासन माँह।
कहै कहा नृप सत्रुघन, पुनि पुष्कल रिपु काह॥५॥

इति श्री पद्म पुराणे पाताल खंडे सेष वात्सायन संवादे
मधुसूदन दास कृते पुष्कल विजयनोनामयेक
चत्वारिंसोऽध्याय: ॥४१॥

पुष्कल विजय

सोरठा

सुनि मुनि सिंधु समान, पुष्कल पर जब चढ़ो दल।
निरखि तबै हनुमान, कोपि बीरमनि पै चल्यौ॥

चौपाई

पूछ बिसाल सीस पर राजै।
मनौ कटक धन हरि जन भ्राजै॥
कुधर समान सरीर बिसाला।
गर्जहिं सिंघ इमि रण बिकराला॥
देखिय बाजु स⁻स भुजदंडा।
अरुण नयन, उर कोप प्रचंडा॥
सब्द कटकटा करि अति घोरा।
धावत जाइ बीरमनि ओरा॥

पुष्कल देखि कपीसहि आवा।
अरि महीप ऊपर रिस छावा॥
बोले सजल मेघ इमि बानी।
सुनौ कपीस महा भट मानी॥
तुम रण युद्ध करण कित आये।
यह लघु सैन काल नियराये॥
बल बिहीन पुनि यह महिपाला।
तुम देखत जीतौं इहि काला॥

दोहा

तुव ऊपर जो पै चढ़े, तीन लोक इक बार।
निजु लीला करि तदपि तुम, जीतहु निमिष मझार॥१॥

चौपाई

इहि महीप की केतिक बाता।
स्वल्प सैन सन्मुख निरखाता॥
सुनौ तात तुम आगम भारी।
जाहु सत्रुघन निकट सुखारी॥
राम प्रताप एक छिन माहीं।
तरिहौं रण - समुद्र, सक नाहीं॥
प्रथम तुमहु प्रभु - कृपा कपीसा।
तरेउ निसाचर रन-बारीसा॥
अस बिचारि त्यागहु संदेहू।
प्रभुहिं सुमिरि जीतहुँ नृप येहू॥
रन जपि राम नाम यक बारा।
होहिं अगम भव - सागर पारा॥
यह लघु समर अल्प कटकाई।
जीतहुं बिनु प्रयास कपिराई॥

तात समीप जाहु अब ताता।
मम संका तजि उर हरषाता॥

दोहा

धीर परम गंभीर पुनि, निडर बचन सुनि कान।
हनूमान बोलो तबै, सुनु सुत सुभट सुजान॥२॥

चौपाई

तात सुनहु यह नृप बलवाना।
बड़ गुन इहि उर एकु निदाना॥
जे जन इहि सरनागत जाई।
तिनहिं राखि प्रानन की नाई॥
तिहि तै तुम बिवसाइ न करहू।
इहि नृप संग जुद्ध परिहरहू॥
तुम बालक सुकुमार नवीना।
पुनि यह भूप प्रबल कालीना॥
जानहिं अस्त्र - सस्त्र बहु भाँती।
जीती बिपुल रिपुन की पाँती॥
पुनि शिव करहिं आपु रखवारी।
सहित सकल गन अतिभयकारी॥
बसहिं सदा इहि के पुर पासा।
भक्ति बिबस ह्वै सहित हुलासा॥
सुनि पुष्कल बोलेउ हरषाई।।
कहौ तात मैं छिमहि ढिठाई॥

सोरठा

पुर समीप सिव बास, भक्ति बिबस, तुम कहेउ मोहि।
नाहिन हृदय प्रकास, तिहि तैं अबल महीप यह॥३॥

चौपाई

मम उर बसैं सदा रघुनाथा।
धरे चाप सर कर, कटि भाथा॥
अखिल बिस्व जिनके उर माहीं।
अज सिवादि तिन तैं पर नाहीं॥
जहाँ राम तहं सब संसारा।
बसै जासु उर राम उदारा॥
बीर सिंह सन तुम रन मंडौ।
मम चिंता प्रभु सब विधि दंडौ॥
सुनि अस बचन कोपि कपिराई।
भूप - बंधु पर पहुंचेउ जाई॥
पुनि लछिमोनिधि कोपि प्रचंडा।
भिरेउ सुमांगद सन बलमंडा॥
दुरथ जुद्ध मंड्यो अति घोरा।
चलहि विबिधि आयुध दोउ ओरा॥
होइ समर अति घोर अपारा।
को कवि बरनि तासु सर मारा॥

दोहा

इत आवत लखि संभु कहं, राम - अनुज बलधाम।
पद तल जानन प्रेरि रथ, चले करन संग्राम॥४॥

चौपाई

सुमद समर पथ परम सुजाना।
लागे करन जुद्ध बिधि नाना॥
भरत - तनय इत नृपहि निहारा।
आव कोप - जुत रथ असवारा॥
भस्म त्रिपुंड दिये निजु भाला।
अक्ष - माल उर, लोचन लाला॥

धरे चाप बिच बान कराला।
महा कोप - जुत भूषित व्याला॥
डमरू त्रिसूल त्रिपुंड बहोरी।
खचित ध्वजा उतंग रथ जोरी॥
मरुत लजावत आवहिं बाजी।
अति अनूप तन भूषन साजी॥
सुभट - मौलि मनि भरत-कुमारा।
आतुर रथ चलाव तिहि बारा॥
पहुँच सन्मुख सहित हुलासा।
निरखि भूप तब बचन प्रकासा॥

दोहा

रे बालक किमि आव रन, अति प्रचंड मम कोप।
बेगि भाजु प्रतिपाल तन, नाहित होइहै लोप॥५॥

चौपाई

जौ मैं जुद्ध करौं तुव संगा।
बेगि होइ जग कीरति - भंगा॥
होइ दया उर बालक देखी।
रन बाहिर भजि जाहु बिसेखी॥
जब लगि मैं देखा तुहि नाहीं।
तब लगि कोप रहा मन माहीं॥
जदपि तनय मम मूर्छित कीन्हा।
तदपि सकल अघ मैं छमि दीन्हा॥
तजि रन, नैन ओट अब होहू।
नाहित प्रगट होहि उर कोहू॥
इहि प्रकार सुनि निर्भय बानी।
बोले भरत - तनय बल खानी॥

तुम जो नृप यह कीन्ह बखाना।
तुम बालक, हम बृद्ध निदाना।।
छत्रिन के नाहीं यह रीती।
अन्त्यज सूद्र वंस की नीती।।

दोहा

रन कोविद सब भाँति जे, भूप बृद्ध तेइ मान।
कीन्ह बड़ाई आपु मुख, सो केवल अज्ञान।।६।।

चौपाई

मै तुम्हार सुत मूर्छित कीन्हा।
अघ बिलोकि बिधिवत फल दीन्हा।।
अब प्रचंड सर हति इहि काला।
डारहुं अवनि तुमहि महिपाला।।
जतन सोधि, अस हृदय बिचारी।
लरहु सजग सब सैन हमारी।।
मै श्री रामचद्र कर दासा।
वासवादि सुर की नहि आसा।।
सुनि सगर्व पुष्कल की बानी।
हस्यो बाल लखि नृप भटमानी।।
पुनि उर कीन्ह महा रिस भारो।
बिकट बान सधान प्रचारो।।
नृपहि सरोष निरखि तिहि काला।
पुष्कल तानि चाप बिकराला।।
बान बीस जाज्वल्य अपारा।
अति लाघव उर कीन्ह प्रहारा।।

छंद

निरखे नृप आवत बान जबै, निज सायक सौ किय खंड तबै।
तब पुष्कल कोपि महा मन मै, इसु तीनि प्रचंड तजे रन मैं।।

अति लाघव भूप लिलाट लगे, जिमि ब्याल डसे उड़ि रोस पगे।
नृप संजुग में इहि भाँति लसे, जनु सैल त्रिकूट की सोभ हंसे॥

दोहा

भूप हृदय दारुन बिथा, प्रगट भई तिहि काल।
पुनि सम्हारि धरि धनुष बिच, तब सर तजे कराल॥७॥

चौपाई

वत्स दंत इष तीछन घोरा।
सनमुख चले करत अति सोरा॥
मनहुँ सरोष ब्याल फुंकारी।
लहलहात धाये जब भारी॥
लागेउ भरत - तनय - उर जाई।
प्रगट भयो श्रोनित समुदाई॥
तब पुष्कल करि कोप अपारा।
निसित बान सत कीन्ह् प्रहारा॥
लाघव सीस त्रान संनाहा।
पुनि किरीट जुत खंडेउ ताहा॥
हय रथ सूत सहित कोदंडा।
लागि निपातेउ करि बहु खंडा॥
नृप तन छिन्न - भिन्न करि डारा।
स्रवहि तप्त श्रोनित की धारा॥
बिथा प्रचंड भई उर माहीं।
तदपि नेक मन मोरेउ नाहीं॥

छंद

मनु तदपि मोरेउ नाहिं पुनि, चढ़ि आन रथ कोप्यौ महा।
कोदंड चंड चढ़ाइ, सायक धारि पुष्कल सन कहा॥
तुम धन्य सुभट सुजान रघुपति, चरन पंकन मधुकरा।
मोहि बिरथ कीन्हो आजु बिक्रम, प्रगट जानी बल भरा॥

दोहा

अब सचेत संग्राम करु, राखु बाल निज प्रानु।
काल रूप अनु मोहि को, राखैं तिहि तस आनु ॥८॥

चौपाई

अस कहि बान अखंड चलावा।
ते दिसि - बिदिसि व्योम महं छावा ॥
सरमय सूझि परै संसारा।
लगे कटन बहु बीर जुझारा ॥
मत्त नाग सहसनि तिहि काला।
खंड - खंड महि परे बिहाला ॥
कटे समूह सहित असवारा।
गिरे प्रान तजि खाइ पछारा ॥
पुनि स्यंदन बरूथ सह सूता।
खड - खंड होइ परे बहूता ॥
अति अगाध स्रोनित - सरि भारी।
भई ·प्रगट मुनि समर मझारी ॥
मृतक मतंग लसै तहं कैसे।
सैल - शृंग बहु सोहैं जैसे ॥
सुभट केस करि सरिता छाई।
मानौ सोइ सिवारु अरु काई ॥

छंद

रन मुंड के क्षयमान, वहु बाहु व्याल समान।
पुनि सूर मांस अपार, तट पंक के अनुहार ॥
अति चंड देखिय धार, बहु भौंर परहि मझार।
भट भूरि मृतक बहाइ, खग मांस भक्षत जाइ ॥
जल जान जानहु सोइ, पुनि जंतु के बट जोइ।
तजि प्रान जूझहिं बीर, जनु टूटहिं तरु के तीर ॥

सोरठा

अस सरिता बिकराल, बही जाइ संजुग विषं।
कातर भयेउ बिहाल, निरखि त्रिकट सुनि घोर रव ॥६॥

चौपाई

तेहि अवसर जोगिनी अपारा।
प्रगटीं पुष्कल कटक मझारा॥
मनुज कपाल लिये कर माहीं।
पीयहिं रुधिर नहिं हृदै अघाहीं॥
भखहिं सदा आमिष हरषाहीं।
नाना कौतुक करैं बनाहीं॥
गावहिं गान अनेक प्रकारा।
करहिं नित्य प्रमुदित भयकारा॥
बहु पिसाच प्रगटे तिहि काला।
पिअहिं रुधिर दलि मनुज कपाला॥
मृतक मतग सीस मंजीरा।
हंसत बजावत गत भय पीरा॥
गीध सृगाल काग खग नाना।
भक्षहिं आमिष हर्ष निदाना॥
कातर लखि अस रन बिकराला।
दुरे मृतक गज उदर बिहाला॥

दोहा

सुनहु सूत तहं जोगिनी, धरै करतरी पानि।
काटि जठर तैं भजि सिर, पियहिं रुधिर सुखमानि ॥१०॥

चौपाई

इत पुष्कल निज कटक निहारा।
कोपि भूप अति कीन्ह सघांरा॥

महा रोष उर धरि तिहि काला ।
छाड़े सर अनेक ब्रिकराला ॥
भट अपार निजु सीस बिहाई ।
परे धरनि महं सुनु मुनिराई ॥
भये भंग तजि कुंभ अपारा ।
बिथुरे झरि मुक्ताहल तारा ॥
बिछे समर सोहैं कित भाँती ।
मनहुं भरत - सुत कीरति - पाँती ॥
स्रोनित सरित बही तिहि काला ।
प्रगटति सोर धार बिकराला ॥
जनु रन - कौतुक देखन हेतू ।
आई ताम्र - पर्नि सरि - केतू ॥
लागत पुष्कल के सर चडा ।
भये अमित सुभटन के खडा ॥

दोहा

सुनु मुनीस नृप कटक मैं, बिनु सर बच्यौ न कोइ ।
भये खड तन सबनि के, श्रोनित पूरित जोइ ॥११॥

चौपाई

किंसुक तरु समान भट भयेऊ ।
रन इच्छा सब ही तजि दयेऊ ॥
पुष्कल तिहि अवसर दस बाना ।
हने भूप - उर कोपि निदाना ॥
भंजि कवच ते गात समानेउ ।
बिपुल विथा तब नृप उर मानेउ ॥
जानेउ महा बली बल देखी ।
पुनि कीन्हौ हिय कंपि विसेखी ॥
सर कोटिन छाड़े तिहि काला ।
अति तीछन सरोष जनु ब्याला ॥

सघन बान पंजर नृप कीन्हा।
भरत - तनय - रथ परै न चीन्हा॥
तासु मध्य पुष्कल बर बीरा।
भये बिकल, व्यापी तन पीरा॥
भरत - तनय निज मन अनुमाना।
सुमिरन लगे राम कै ध्याना॥

दोहा

धनुष बान धरि सकेउ नहिं, तिहि अवसर मुनि राइ।
सुमिरि राम - पद - कंज पुनि कर कोदंड चढ़ाइ॥१२॥

चौपाई

अरि - समूह - गंजन सर छंडा।
तजे कियो सर पिंजर खंडा॥
कीन्ह सख - धुनि पुनि बर बीरा।
सुनत रिपुन उर व्यापी पीरा॥
रन उत्साह बढ़ावनहारी।
गिरा गभीर निसंक उचारी॥
महत कर्म तुम कीन्ह नृपाला।
ढाँप्यौ हमहि महा सर जाला॥
तुम अति बृद्ध सकल गुग धामा।
पूजनीय मो कह संग्रामा॥
देखु मोर बिक्रम अब घोरा।
तुमहु कहावत नृप बर जोरा॥
हनि सर तीनि महा बिकराला।
जौ न करौं मूर्छित इहि काला॥
तौपि प्रतिज्ञा सुनहु हमारी।
कहौं सत्य सुभटन सिर भारी॥

दोहा

अति पुनीत सुर - सरित जग, दहन पाप सुखदानि ।
निकट जाइ नहिं मज्जहीं, पुनि निद्रादिक ठानि ॥१३॥

चौपाई

सो अघ लगहु अवसि अब मोही ।
जौ न करहुं रन मूर्छित तोही ॥
अस बिचारि नृप होहु सचेता ।
करहु युद्ध निज बिक्रम जेता ॥
अस सुनि ह्वै सरोष महिपाला ।
तजे बान अति बहु बिकराला ॥
पुष्कल उर बिदारि सर तेई ।
भयेउ पार गिरि भूतल सेई ॥
जिमि हरि - बिमुख अधोमुख जाई ।
परं नरक जिमि सर छबि पाई ॥
सुभट - मौलि - मनि भरत-कुमारा ।
हुइ सरोष यक बान प्रहारा ॥
सो सायक नृप आवत देखा ।
पावक हूतें तेज बिसेखा ॥
तानि चाप सत्वर सर छडा ।
सो इषु पर्‍यौ धरनि हुइ खंडा ॥

छंद

ह्वै खंड सो इषु परो धरनिहि, लखि भरत-सुत रिस भरा ।
पुनि जननि सेवा फल सहित, सर दूसरो धनु बिच धरा ॥
छाड़ो जबहि नृप देखि आवत, खंडि भूतल महं परेउ ।
सो निरखि भा उर सोचु, रघुपति, सुमिरि तीसर परिछेउ ॥

दोहा

सो सायक दारुण महा, लग्यौ आसु उर जाइ।
होइ मूर्छित नृप बीरमनि, धरनि परे मुरछाइ॥

सोरठा

नृपहि बिकल अवलोकि, हाहाकार पुकारि भट।
भाज्यो कटक ससोक, भरत तनय पाई विजय॥१४॥

इति श्री पद्म पुराणे पाताल षडे, सेष वात्सायन संवादे,
मधुसूदन दास कृते, पुष्कल विजयनोनाम
द्विचत्वारिंसोऽध्याय: ॥४२॥

शत्रुघ्न विमोहन

दोहा

सुनु मुनि पुंगव तिहि समय, मारुत - सुत बर बीर।
बीर सिंघ सौं जाइ करि, बोल्यौ बचन गभीर॥

चौपाई

रे नृप बंधु बीर भट मानी।
होहु सचेत मोहि रिपु जानी॥
रहु अब ठाढ़ भाजि कित जाई।
जीतहुँ अबहि सहित कटकाई॥
इमि सुनु पवन तनय की बानी।
वीर सिंघ उर अति रिस आनी॥
सगुन चाप करि कीन्ह टंकोरा।
गर्जे मनहु जलद करि घोरा॥

सर - समूह पुनि छाड़ेउ चंडा।
जिमि अषाढ़ घन बरषि अखंडा॥
ते सायक लागेउ कपि - अंगा।
मानहु डसे सरोष भुजगा॥
तब कपीस उर कोपि अपारा।
मन बिचार किय करहुं संघारा॥
कटकटाइ लाघव तिहि काला।
हन्यौ मुष्टिका अति बिकराला॥

दोहा

पवि समान सो लगत उर, व्यापी बिथा अपार।
घूमि - घूमि श्रोनित श्रवत, परो धरनि, न सभार॥१॥

चौपाई

जनक - बंधु कह मूर्छित देखा।
समर सुमंगद कोपि बिसेखा॥
ताही समय सुनहु मुनि धीरा।
जाग्यौ रुकुमांगद बलबीरा॥
दोऊ बंधु कोपि इक बारा।
गुन चढ़ाइ कोदड सहं मारा॥
घन इव वर्षि बान - समुदाई।
भंजि बहुरि रिपुहन कटकाई॥
पुनि रथ हाँकि मरुत - सुत ओरा।
चले कोपि सायक धरि घोरा॥
आवत देखि तिनहिं हनुमाना।
सनमुख चला सरोष निदाना॥
लाघव निज लंगूर मझारा।
रथ लपेटि दोउ अवनि पछारा॥

सुनु मुनि तिहि अवसर दोउ भ्राता।
मुर्छित भये रुधिर बहु जाता।।

दोहा

तब लगि सुमद नरेसनै, करि बहु जुद्ध कराल।
मूर्छित किय बल मित्र कहं, हति सायक बिकराल।।२।।

चौपाई

अपर सैन पुष्कल संघारी।
परी अवनि तल निमिष मझारी।।
सुनु मुनि तिहि अवसर प्रभु - सैना।
विजय पाइ रन ठाढ़ि सुखैना।।
बजहिं बोन संखादि निसाना।
सुनि उर हरसहि सुभट निदाना।।
भूप सिरोमनि श्री रघुराजू।
ठाढ़े समर जीति सु समाजू।।
उंहा संभु सुनि भूपहि हारा।
तुरत चले रथ होइ असवारा।।
दिव्य पिनाक धनुप कर धारा।
अति बिकराल जानि ससारा।।
अक्षय तूण सजैं दोउ ओरा।
पुनि त्रिसूल धारो अति घोरा।।
भए कोप बस लोचन लाला।
देखिय घोर रूप जनु काला।।

दोहा

जटा जूट सिर, भाल बिधु, पुनि कटि इभ-अरि-छाल।
नर सिर स्रग, उर भस्म तन, भूषित ब्याल बिसाल।।३।।

चौपाई

षडमुख बीरभद्र, नंदी गन।
चले संग भैख आदिक जन॥
गनप प्रचंड चड भृंगी गुनि।
अवर सकल गन चले सूत सुनि॥
कोटिन भूत पिसाच निसाचर।
विकट रूप नाना आयुध धर॥
नाना बाहन होइ असवारा।
चले जुद्ध लखि हर्षि अपारा॥
भूप बीरमनि रच्छन हेतू।
यहि बिधि सजे कोटि वृषकेतू॥
कंपन लगी धर्रनि तिहि काला।
सहित सिधु गिरि बिपिनि बिहाला॥
पथ जात सिव सौहैं कसे।
प्रथमहि चढ़े त्रिपुर पर जैसे॥
भूत प्रेत गनि अति बिकराला।
करत कुलाहल जाहि बिसाला॥

दोहा

इत आवत लखि संभु कह, रामानुज बलधाम।
मरूत लजावन प्रेरि रथ, चले करन सग्राम॥४॥

चोपाई

धरे बान कोदंड मझारा।
अरुन नैन उर रोष अपारा॥
सिव लखि रिपुसूदन कहं आवा।
सर प्रचंड निज चाप चढ़ावा॥

बहुरि कोप करि बचन उचारा।
पुष्कल कहो कहाँ इहि बारा॥
महत कर्म कीन्हेउ तहं आजू।
मम सेवक जीत्यौ स-समाजू॥
मैं जानी निजु हृदय भंडारा।
सो सिय रघुपति किंकर भारा॥
तिहिं सम सुभट सकल जग माहीं।
हृदं सोधि देखेउँ कोउ नाहीं॥
आजु ताहि रन माझ संघारी।
हुइहौं निज उर तबहि सुखारी॥
भूप परम प्रिय सेवक मोरा।
देखहुं ताहि बध्यौ बर जोरा॥

दोहा

अस कहि संभु मुनीस सुनु, बीर भद्र तन देखि।
कहेउ करहु रन जाइ तुम, पुष्कल सग विसेखि॥५॥

चौपाई

नंदीगनहि बहुरि पठवावा।
मारुत-सुत ऊपर रिस छावा॥
पुनि प्रचंड सन कहेउ बुझाई।
जीतहु लक्ष्मीनिधि कहँ जाई॥
भृंगी गनहि बहोरि बुझाई।
लरहु सुभुन नृप सन हरषाई॥
चंड नाम गन बहुरि बुलावा।
कोपि सुमद पर ताहि पठावा॥
इहि विधि सिव निज गन समुदाई।
जथा जोग लखि दिये पठाई॥

संभु निदेस पाइ सब बीरा।
जहं - तहं भिरेउ महा बल वीरा॥
इत लखि बीरभद्र कहं आवा।
कोपि भरत - सुत आतुर धावा॥
लघु वामन उत्साह बढ़ाई।
उर इषु चाप हनै मुनिराई।

दोहा

ते सायक दारुण महा, हिय बिच गए समाइ।
भिन्न - भिन्न उर भयेउ बहु, श्रोनित बिपुल बहाइ॥६॥

चौपाई

बीरभद्र तब कोपि अपारा।
लै त्रिसूल धावा तिहि बारा॥
पुष्कल हति साइक सो खंडा।
पुनि गजंउ रन बिच बलबंडा॥
निरखि त्रिसूल खंड संग्रामा।
कोपे बीरभद्र बलधामा॥
षड्ग प्रचंड भरत - सुत - सीसा।
हनेउ धाइ करि सुनहु मुनीसा॥
निमिष एक लगि मुर्छित भयेऊ।
उठे बहोरि कोपि निर्भयेऊ॥
पुनि सत्वर सर तजे प्रचंडा।
कीन्ह खड्ग के अगनित खंडा॥
निरखि समर बिच भंग कृपाना।
बीरभद्र हिय कोप निदाना॥
तुरत धाइ रथ कीन्ह निपाता।
तुरंग सूत जुत कोपित गाता॥

छंद

तब पुष्कल जोधा, करि उर क्रोधा, रिपु की कोधा धाइ चले।
पुनि धनुष न लीन्हौ, रथ तजि दीन्हौ, धर्मंहि चीन्हौ, ताल दले ।।
आनंद समेता, सुनु मुनि केता, धर्म सचेता, जाइ लरे।
पुष्कल तिहि बारा, मुष्ठ प्रहारा, हृदय मझारा, रोष भरे ।।
पुनि सिव गन बोरा, अति रनधीरा, गर्जि गभीरा, तिनहि हन्यौ।
करि भरथ-कुमारा, कोप अपारा, मुष्टिक मारा, बज्र मन्यौ ।।
दोनौ रन माहीं, संकत नाहीं, सुर लखि तेही, चित्त ठगे।
भुज में भुज मेलै बल करि पेलै जघन में लै रोष पगे ।।
छुटि ताल बजावै, विजय न पावै, इत उत धावै, बहुरि भिरैं।
पुनि नखन प्रहारैं, गात बिदारै, श्रोनित धारैं, अवनि गिरैं ।।
इहि बिधि दिन चारी, निसि न बिचारी, समर मझारी, बीति गये।
दोऊ भट भारी, भिरहिं प्रचारी, मानि न हारी कोप छये ।।

सोरठा

पंचम दिवस मझार वीरभद्र दारुन महा।
उर करि कोप अपार गहि पुष्कल भुज उड़ेउ नभ ।।७।।

चौपाई

अमर असुर मोहन संग्रामा।
करत भयेउ तहं दोउ बलधामा ।।
करहि बिबिधि बिधि मुष्ठि प्रहारा।
पुनि पद दलहिं प्रचारि प्रचारा ।।
कबहुँकि उर भुज सीस मिलाई।
करहिं जुद्ध कछु बरनि न जाई ।।
दसन डसहिं पुनि नखन बिदारै।
चरन मुष्ठिका हनहिं प्रचारै ।।
कबहुँक छुटहिं कबहुं लिपटाहीं।
दोनौ वोर जुद्ध नभ माहीं ।।

सुनु मुनीस तब पुष्कल जोधा।
हृदं माहिं कीन्हेउ अति क्रोधा॥
बरबस पकरि कठ तिहि काला।
पटकेउ भूतल गर्जि बिसाला॥
व्यापी बेदनि बिपुल सरीरा।
धरि न सक्यौ तिहि अवसर धीरा॥

दोहा

बीरभद्र करि कष्ट पुनि उठो कोपि सभारि।
लाघव पुष्कल चरन धरि बहु भ्रमाइ महि मारि॥८॥

चौपाई

सुनु मुनि जब लगि भरत-कुमारा।
उठन लगे सग्राम मझारा॥
तब लगि आतुर धाइ रिसाई।
हति त्रिसूल उर दलेउ बनाई॥
कुंडल मांल किरीट समेता।
ससि इव परो धरनि छवि देता॥
पुष्कल - बध्र बिलोकि तिहि काला।
गरजे बीरभद्र बिकराला॥
सो सुनि सूर सकल समुदाई।
कपि उठे उर धीर बिहाई॥
बिगत - प्रान पुष्कल कहं देखा।
भजी सैन सब विकल विसेखा॥
हाहाकार पुकारत जाही।
महा मोह बस उर बिलखाहीं॥
रामानुज जहं करहि लराई।
भजे बीर पहुंचे तह जाई॥

दोहा

बोले व्याकुल गात सब सुनउ महा महिपाल।
पुष्कल को रन मे बध्यौ बीरभद्र इहि काल ॥९॥

चौपाई

सुनत कुलिस सन बचन कराला।
महाराज उर धीरज चाला॥
थर-थर कंपन लाग सरीरा।
बिकल भयेउ बहि लोचन नीरा॥
बंधु - तनय - गुन - चरित - उदारा।
सुमिरि - सुमिरि रोदन करि भारा॥
कवनेउ भाँति न धीरज होई।
सो दुख कहि न सकै कवि कोई॥
बिकल बिलोकि संभु तिहि काला।
बोले बचन सुनहु महिपाला॥
सोचन जोग न पुष्कल बीरा।
सनमुख रन जिहि तजो सरीरा॥
तुम केहि हेत सोक उर धरहू।
नीति बिचारि धीर अब करहू॥
धन्य सुभट पुष्कल बलवाना।
मम गन सन इहि बैर न ठाना॥

दोहा

मैं जिहि को निजु अंग करि, करहुं जगत संघार।
तिहि सन मंडेउ समर तिन, को अस भट संसार ॥१०॥

चौपाई

महाराज पुनि कहहुँ बुझाई।
बीरभद्र कहं बल अधिकाई॥

दक्ष प्रजापति मम अघ कीन्हा।
छिन मैं तासु गर्व जिहि छीना॥
बहुरि त्रिपुर कर कटक अपारा।
निमिष माहिं तिहिं कीन्ह संघारा॥
तिहि सन घोर समर जिन मंडा।
को पुष्कल सम भट बलवंडा॥
भूप - सिरोमनि अस जिय जानो।
तजहु सोक किमि करहु गिलानी॥
अब उर जतन बिचारि बनाई।
करहु जुद्ध मो सन हरषाई॥
लखन - अनुज येहि बिधि सुनि काना।
तजि विषद उर कोपि निदाना॥
अति प्रचंड कोदड चढ़ाई।
तजे बान अति लाघवताई॥

दोहा

अति प्रचंड नाराच ते, सकल संभु वपु भेद।
छिन्न-भिन्न तनु देखियै, श्रवहिं रुधिर धार, भा खेद॥११॥

चौपाई

अपर बान रामानुज त्यागे।
मनु सपच्छ अहि गन रिस पागे॥
आवत तिनहि उमापति देखा।
मनमह बिसमय कीन्ह विसेखा॥
पुन उर कोपि तानि कोदडा।
तजेउ अनेक बान अति चडा॥
सुनु मुनि रिपुसूदन शिव बाना।
भिरेउ गगन मह जाइ निदाना॥
तिन तं प्रगटी अनल अपारा।
जिमि बड़वा जल - नाथ मझारा॥

नभ भूतल दिसि बिदिसन माहीं।
साइक बिनु कछु सूझहि नाहीं॥
विस्व बिलोकि बान बिकराला।
महा प्रलय मानेउ तिहि काला॥
गगन देवगन चढ़े विमाना।
कहैं परस्पर विस्मै माना॥

दोहा

होतु महा बिकराल रन, हम अस सुनेउ न देख।
देखिय अब संजुग विष, को जय लहै विसेख॥१२॥

चौपाई

इत रघुनाथ - बंधु बल - रासी।
लोक बेद बिच सुजस प्रकासी॥
उत सिव आपु प्रलय - संचारी।
करहि जद्ध ए दोउ भट भारी॥
अहो ईस होइहैं कह आजू।
को पावै जै सहित समाजू॥
किहि की समर पराभव होई।
समुझि न परं बुद्धि भ्रम गोई॥
सकल देखि इमि कहैं अकासा।
नारदादि मुनि लखैं तमासा॥
नाना अस्त्र सस्त्र अति घोरा।
महा रोष जुत चलि दोउ ओरा॥
भट अनंत दोनौ दल माहीं।
गिरे धरनि तल रुधिर बहाहीं॥
गिरि वन सरित सिंधु - जुत धरनी।
कंपहि चढ़त गज जिमि लघु तरनी॥

खग मृग दिसि कुंजर दगपाला।
कंपत सब उर निपट बिहाला॥
कच्छप सेष सहैं नहिं भारा।
इहि बिधि सबही प्रलय बिचारा॥

दोहा

भयेउ समर इमि दिवस निसि, एकादस दिन लाग।
प्रगटो श्रोनित नद तबै, निरखत धीरज भाग॥१३॥

चौपाई

दिवस द्वादसै सुनु मुनि धीरा।
कोपि समर रामानुज बीरा॥
ब्रह्म अस्त्र जा जुल्प अपारा।
संभु-बधन हित सपद प्रहारा॥
पितु-सर आवत लखि त्रिपुरारी।
बिहंसि बदन पी गए सुखारी॥
घोर पराक्रम अस रन देखी।
अति बिस्मय रामानुज लेखी॥
तब लागेउ मन करन बिचारा।
अब कीजै कस समर मझारा॥
इहि बिधि करत जात अनुमाना।
तब लगि संभु तज्यौ यक बाना॥
अति कराल सो बरनि न जाई।
मनहुं घोर पावक समुदाई॥
लागेउ रिपुसूदन उर आई।
काल रूप होइ लाघवताई॥

छंद

ह्वै काल रूप कराल सर, सो हृदय लाघव लागेऊ।
तिहि समय प्रभु संग्राम बिच, रथ परे सुधि तन त्यागेऊ॥

सेना तबै अवलोकि मूर्छित, त्राहि - त्राहि पुकारि कै।
भाजन लगी चहुँ ओर भय बस, बिकल धीरज हारि कै।।
तब लागि सुमद, सुबाहु लछिमीनिधि, अपर जोधा जिते।
सिवगननि समर मझार नाना कष्ट करि जीते जिते।।
तिहि काल पवन-कुमार निज प्रभु-कटक हार्यो देखि कै।
पुष्कलहि रथ पौढ़ाइ बहु, भट राखि सौंपि विसेषि कै।।

दोहा

पुनि करि कोप अपार उर कटकटाइ बलवंत।
कनक भूधराकार तन, सनमुख धाव तुरंत।।
सुमिर राम - पद - कंज उर, निज बीरन सुख देत।
पूँछ कंपावत धारि सिर, गयेउ जहाँ बृषकेत।।१४।।

इति श्री पद्म पुराणे, पाताल षंडे सेस वात्सायन संवादे,
मधुसूदन दास कृते, सत्रुघन विमोहनोनाम त्रिचत्वा
रिंसोऽध्यायः।।४३।।

देव-युद्ध

सोरठा

सुनु मुनि समर-मझार सिव सनमुख होइ मरुत सुत।
निडर बचन उच्चार, परम धर्ममय - हर्ष - जुत।।

चौपाई

रे महेस श्रुति - पंथ - विरोधी।
निज - प्रभु-बिमुख, अज्ञ, अति-क्रोधी।।

परम भागवत भरत कुमारा।
श्री रामहि सो प्रान पियारा॥
तिनहि बधेउ अब समर मझारा।
सकल धर्म निज कीन्ह सघारा॥
कह पुष्कल सुकुमार सु-साधू।
कहाँ तोर गन प्रबल अगाधू॥
अति अधर्म तुम जुद्ध करावा।
सब प्रकार प्रभु बिमुख कहावा॥
मैं अब तोहि सिखावन करहूँ।
सकल गर्व इहि अवसर हरहूँ॥
जस रघुनाथ-बिमुख गति होई।
आजु समर दरसावहुं सोई॥
प्रथम सुनेउ मै बेदन माही।
पुनि बहु भाँति रिषिन मुख पाही॥

दोहा

श्री रधुपति पद कमल नित, भजहि रुद्र मन माहि।
सो बानी श्रुति मुनिन की, भई मृषा सक नाहि॥१॥

चौपाई

सब बिधि पूजनीय प्रभु-भ्राता।
तिन्हहि कीन्ह तुम ब्याकुल गाता॥
पुनि पुष्कलहि समर बंधवावा।
सिया-बंधु कह मारि हरावा॥
धर्म, ज्ञान, वुधि इष्ट-त्रिचारा।
सकल गयेउ इहि समर तुम्हारा॥
जतन बिचारि ठाढ़ अब होहू।
बरबस धरनि निपातहुँ तोहू॥

रघुपति - बिमुख आजु मैं जाना ।
बार - बार इमि कहि हनुमाना ।।
अस सुनि सभु सनहु मुनिराई ।
बोलेउ बचन हृदय सकुचाई ।।
धन्य - धन्य कपि सुभट सुजाना ।
सत्य गिरा तुम कीन्ह बखाना ।।
सत्य स्वामि मम राम कृपाला ।
देव दनुज जिहि नावहि भाला ।।

दोहा

अस्वमेध प्रभु करहि मख, अवध पुरी मै जान ।
तिन के हय हित आयेउ, रिपु भजन बलवान ।।२।।

चौपाई

भूप तनय सोइ बाँधउ बाजी ।
पुनि पितु सहित चढ़ेउ दल साजी ।।
मूर्छित कीन्ह ताहि रन माही ।
तुम्हरे भटनि कटक जुत याही ।।
सोई भूप बीरमनि बीरा ।
मम सेवक मन बचन सरीरा ।।
सब बिधि मोहि सुबस करि राखा ।
सुनु कपि मैं यह मृषा न भाषा ।।
इहि कारन हम रन चढ़ि आयेउ ।
दारुन भक्त छोभ चित छायेउ ।।
अनुचित जुद्ध कीन्ह गब ओरा ।
इहि अघ परे पाप नहि घोरा ।।
निजु प्रभु इष्ट देव रघुबीरा ।
संतत जिनहि भजै मुनि धीरा ।।

तिनके अनुजहिं मुछित कीन्हा।
पुनि पुष्कल कर सिर रन छीन्हा।।

दोहा

बिस्व बिदित श्री जानकिहि, मम माता जग जान।
तासु बंधु श्री रमा निधि, मूछित कीन्ह निदान।।३।।

चौपाई

येहि ते परे पाप नहिं आना।
तुमहूँ मृषा न कीन्ह बखाना।।
मैं महीप सेवा-बस भयेऊ।
तिहिं ते कछु न ग्यान उर रहेऊ।।
निज भक्तहि लखि व्याकुल भारी।
तब हम समर माहि किय रारी।।
अति कृपाल श्री राम उदारा।
कबहुं न जन अघ नैन निहारा।।
संतत कृपा करहिं निरहेतू।
वात्सल्य गुण निधि श्रुति सेतू।।
जदपि पाप हम कीन्हेउ भारी।
छमिहैं तदपि कृपालु खरारी।।
सुजन बिचारि करहि प्रभु दाया।
निज दिसि निरखि भजि मद माया।।
प्रभु जन दोष भोग करि माना।
बेद सुमृति इतिहास पुराना।।

दोहा

सुनु मुनीस अस कहेउ शिव, सुनि कोपेउ हनुमान।
लाघव सिला बिसाल लै, रथ पर तजी निदान।।४।।

चौपाई

ध्वज पताक हय सूत समेतू।
तिल समान भा स्यंदन जेतू॥
सुर गन कपि-बिक्रम नभ देखी।
लगे प्रसंसन हरष विसेखी॥
धन्य कपीस महा-बल-खानी।
महत कम किय बिस्मय-दानी॥
सिवहिं बिरथ तिहि समय निहारी।
नदी गन उर दुख भा भारी॥
अति आतुर समीप तब जाई।
बोले बचन सुसीस नवाई॥
हे महेस, मम स्वामि उदारा।
बेगि होहु मो पर असवारा॥
सुनि सकर आरोहन भयेऊ।
निरखि कपीस कोप निभयेऊ॥
अति बिसाल यक सिला उखारी।
सत्वर सिव उर माहि प्रहारी॥

दोहा

बज्र सरिस सो लाग उर कोपेउ तब बृषकेत।
अति विकराल त्रिसूल कर, धरेउ सघारन हेत॥५॥

चौपाई

सिखा तीनि जाज्वुल्प अपारा।
तीछन अनिल ज्वाल अनुहारा॥
लाघव तज्यौ ताहि त्रिपुरारी।
आवत मारुत तनय निहारी॥
कपि लीला करि आतुर धाई।
पकरि लीन्ह कर सों मुनिराई॥

छिन मंह तिल समान करि डारा।
निरखि भग, सिव कोप अपारा॥
सक्ति एक लीन्ही अति चंडा।
अति कराल मानहु जम-दडा॥
सर्व धातु विरचित, सो त्यागी।
बेगवत होइ कपि उर लागी॥
निमिष एक लगि मूर्छित भयेऊ।
उठा बहोरि रोष निभयेऊ॥
वृच्छ बिसाल एक कपि भारी।
धावा धरि कर सिवहि प्रचारी॥

छंद

कर धारि सिवहि प्रचारि धावा, समर बिच अतुलित बली।
तिहि समय कपि उठे सकल गन, पुनि धरनि थरथर कर हली॥
उर हनेउ पादप सोइ साखा, कध सहित सभारि कं।
कौतुक भयौ तिहि काल सुनहु, मुनीस निज मन धारि कं॥

दोहा

सकल गात के ब्याल सब, सकल सरीर बिहाइ।
भजि-भजिगे पाताल कह सिव भय नगन बनाइ॥६॥

चौपाई

आपुहि नगन बिलोकि पुरारी।
प्रगटी हृदय महा रिस भारी॥
लीन्है दुदु मुसल बिकराला।
पुनि कपि सन बोले तेहि काला॥
रे कपि अधम चाह जौ प्राना।
त्यागि समर, भजु बेगि निदाना॥
ए जुग मुसल जानि बिकराला।
हरहुं प्रान तुव, हति ततकाला॥

अस कहि कीन्हेउ सबल प्रहारा।
छुटत निरखि इत पवन - कुमारा ।।
सुमिरि राम - पद हृदय - मझारा।
लाघव कूदि गएउ तिहिं बारा ।।
धरनि बेधि ते मुसल मुनीसा।
गये रसातल बचि गा कीसा ।।
पुनि अति गर्जि कोपि बिकराला।
तज्यौ संभु उर सैल बिसाला ।।

दोहा

तिहि के खंडन हेत लगि, सिव जब कीन्ह बिचार।
तब लगि कपि यक सिला द्रुम, आतुर हन्यौ प्रचारि ।।७।।

चौपाई

जब लौं चाहै सैल निवारा।
तब लौं सिला हृदै बिच मारा ।।
सो प्रहार सहि, कह मन माहीं।
किहि बिधि जुद्ध करै कपि पाहीं ।।
इहि प्रकार हिय खोजि उपाई।
तब लगि अति आतुर कपि धाई ।।
सिला शृंग पवत तरु नाना।
वरषेउ सिव पर कोपि निदाना ।।
छिन - छिन करहि प्रहार प्रचडा।
जिमि वर्षै नभ मेघ अखंडा ।।
बिकल भए सिव सकल प्रकारा।
निरखि धाव तब पवन कुमारा ।।
आतुर निज लंगूर मझारी।
स-गन लपेटेउ सिवहिं सम्हारी ।।

पुनि भूतल महं विपुल भ्रमाई।
ताड़न कीन्ह महा रिस छाई॥

छंद

तरु सिला समूहा, पर्वत जूहा, अगिनित बहुरि प्रहारै।
गजं बिधि नाना, समन समाना, दसननि गात बिदारे॥
छिन - छिन रन माही, संकत नाहीं, करं प्रहार अपारा।
अति लाघवताई, पूंछ भ्रमाई, कबहुंक उर बिच मारा॥
कबहू गिरि खंडा, परम प्रचंडा, तजै गात पर आनी।
पुनि कबहु रिसाई, आतुरताई, दलै वृक्ष भट मानी॥
इहि बिधि संग्रामा, कपि बल धामा, कीन्ह जुद्ध अति भारी।
संकर तिहि काला, भये बिहाला, रन की आस बिसारी॥
नंदीगन भागा, भय रस पागा, अतुल व्यथा तन छाई।
अति दीन पुकारा, समर मझारा, धीरज गर्व बिहाई॥
पुनि सिव सिर चंदा, आनंद कंदा, रुधिर पंक लिपटाना।
अहि जूथ पराने, उर अकुलाने, बिथुरे जटा निदाना॥

दोहा

छिन-छिन करै प्रहार कपि, गिरि द्रुम सिला अपार।
अतिं विह्वल संकर भये, सुनु मुनि समर मझार॥८॥

चौपाई

तिहि अवसर मारुत सुत पाहीं।
उमानाथ बोले रनमाही॥
धन्य कपीस महा बलवाना।
तुम सम राम भक्त नहिं आना॥
महद पराक्रम कीन्हेउ आजू।
अति प्रसन्न मोहिं किय कपि राजू॥
दान जज्ञ तप ब्रत दम सेवा।
अब लगि हमहि मनुज मुनि देवा॥

अति संतुष्ट कीन्ह नहिं काऊ।
जस भा तुम्हरे जुद्ध प्रभाऊ॥
अब बरदान माँगु मन भावा।
बैर भाव मैं सकल नसावा॥
इहि बिधि संभु गिरा सुनि काना।
बोले बिहँसि निडर हनुमाना॥
संतत हम रघुनाथ प्रभाऊ।
पूरन काम कहौं सति भाऊ॥

दोहा

तदपि एकु बर माँगहू जो रन भयेउ कृपाल।
तौ तुम भरत - कुमार बपु, रच्छु सजग इहि काल॥६॥

चौपाई

पुनि संग्राम माहि प्रभु - भ्राता।
देखहु ए रथ मूर्छित गाता॥
लक्ष्मीनिधि आदिक सब राजा।
मूर्छित मृतक परे स-समाजा॥
रच्छहु सबनि सजग वृषकेतू।
सब प्रकार करि गननि समेतू॥
तुम्हरे भूत प्रेत बेताला।
पुनि पिसाच खग ब्याल सृगाला॥
अवर सकल खल आमिष - भक्षी।
त्रिजगादिक समेत सब पक्षी॥
अंग – भंग कोउ करन न पावै।
कवनहु त्रास प्रगट नहिं आवै॥
जब लगि मैं संग्राम पछारा।
सदल इन्द्र मद करि संघारा॥

आनहुँ द्रोनाचलहि उठाई।
कै केवल भैषज समुदाई॥

दोहा

पुनि मैं सबहिं जिवावहुँ, श्री रघुनाथ - प्रभाव।
तब लगि रच्छा करहु सिव, कटक सहित सत भाव॥१०॥

चौपाई

अस सुनि कपि के बचन पुरारी।
हर्षवंत होइ गिरा उचारी॥
जाहु बेगि आनहु गिरि सोई।
रच्छहु सबनि त्रास नहिं होई॥
सुनि अस हृदय हर्षि हनुमाना।
सैल हेत धावा बलवाना॥
मनु मारुत लगि निदरत जाई।
हृदय माहि सुमिरत रघुराई॥
नाघि दीप सब लाघवताई।
छीर - सिंधु - तट पहुंचे जाई॥
इहाँ कटक रच्छहिं बृषकेतू।
सकल गननि जुत परम सचेतू॥
उत द्रोनाचल गिरि कपि देखा।
महा उतंग बिसाल बिसेखा॥
जहाँ सजीवन भैषज बृंदा।
अवर वृच्छ बहु आनंद कंदा॥

सोरठा

प्रभु पद सुमिरि उदार, निज लंगूर बढ़ाइ कपि।
द्रोनाचल गिरि भार, कंदुक इव सो धरि लियौ॥११॥

चौपाई

तिहिं अवसर कंपेउ गिरि भारी।
चलन लाग कपि समर मझारी॥
तिहि के रच्छक सुर समुदाई।
महा त्रास सब भयेउ बनाई॥
हाहाकार करन सब लागे।
कहै परसपर भय रस पागे॥
कवन हेत गिरि कंपहि भाई।
थिर न होइ, विपरीत बनाई॥
को अस महा पराक्रमवंता।
जिहिं यह सैल उठाव तुरंता॥
अस कहि करि सब हृदय बिचारा।
गएउ तहाँ जहं पवन-कुमारा॥
निरखि कपिहि बोले सुर-वृन्दा।
बेगि छाड़ु गिरि मरकट मंदा॥
अस कहि कोपि एक ही बारा।
कोटिन आयुध कीन्ह प्रहारा॥

दोहा

अस्त्र-सस्त्र अगिनित तर्जहिं, सुर-समूह तिहि काल।
निरखि प्रहार मरुत सुत, कोप्यौ अति बिकराल॥१२॥

चौपाई

सुरन संघारन लाग निदाना।
बिनु प्रयास सुन सूत सुजाना॥
जिमि पुरुहूत असुर-समुदाई।
भंजहिं बज्र-प्रहार बनाई॥

तिमि कपीस बृंदारक-वृंदा ।
बिनु प्रयास दलि सहित अनंदा ।।
बहुतक मारेउ चरन-प्रहारा ।
पुनि बहु करनि मर्दि महि डारा ।।
बिपुल अमर लंगूर भ्रमाई ।
करि सहार अवनि तल छाई ।।
इहिं प्रकार यक निमिष मझारा ।
अगिनित सुर कीन्हे संहारा ।।
रुधिर - औघ - जुत निपट बिहाला ।
परे कराहैं, धीरज चाला ।।
कोउक सुर भयभीत बनाई ।
भजि महेन्द्र पहं पहुंचेउ जाई ।।

दोहा

छिन्न-भिन्न श्रोनित श्रवहिं, लखि पुनि निपट बिहाल ।
अति संदेह बढ़ाइ उर, बोले तब सुरपाल ।।१३।।

चौपाई

कवन हेत तुम व्याकुल गाता ।
पुनि किमि रुधिर औघ बहु जाता ।।
को अस दनुज निसाचर घोरा ।
तिहिं खल तुमहिं बध्यौ बरजोरा ।।
सकल जथारथ कहौ बुझाई ।
हतहुँ बेगि तुव रिपुन बनाई ।।
इन्द्र - गिरा इहि बिधि सुनि काना ।
बंदि चरन सुर करहिं बखाना ।।
सुनहु नाथ हम मरमु न पावा ।
धरि कपि रूप बली कोउ आवा ।।

तिहि द्रोनाचल सैल बिसाला।
धरि लगूर महि सो पुनि चाला॥
तब लगि हम सब पहुंचेउ जाई।
निरखि ताहि उर रिस अधिकाई॥
बरजि दीख सो बिबिध प्रकारा।
मान न कीस गर्व उर भारा॥

छंद

मानै न कीस अतुल बली, उर गर्व भारी जानिजै।
तब अस्त्र-सस्त्र अनेक वर्ष, सुरनि घन इव मानिजै॥
पुनि कोपि कपि सग्राम बिच, छिन एक मैं जीते सबै।
भूतल परे सर सकल श्रानित, श्रवत अति ब्याकुल तबै॥

दोहा

हमहू पुन्य प्रभाव ते, तिहि अवसर रन माह।
रुधिर स्रवत पीड़ित महा, बचि उबरे सुरनाह॥१४॥

चौपाई

सुनि सुरेस अस आतुर बानी।
सोच साक रिस उर अति आनी॥
पुनि निजु सकल कटक बुलवावा।
कहेउ करहु रन हेत बनावा॥
द्रोनाचल कह करहु पयाना।
तहाँ आव यक कपि बलवाना॥
बिपुल देव तिहि कीन्ह संघारा।
ल्यावहु बाँधि जाति भट भारा॥
सुनि अस सुनासीर कै बैना।
चली जुद्ध लगि अतुलित सैना॥

सैल निकट कपि ठाढ़े पाई।
तब ही सुरन प्रचारेउ जाई॥
नाना आयुध कीन्ह प्रहारा।
तब कोप्यौ अति पवन कुमारा॥

दोहा

कटकटाइ धावा बिपुल, तिहि अवसर बलवान।
रदनि नखनि मुष्टिक चरन, हति सुर दले निदान॥१५॥

चौपाई

सिला सृंग तरु पूंछ प्रहारा।
निमिष माहिं सब कहं महि डारा॥
खंड-खंड तन भयेउ बनाई।
ब्याकुल स्रवहिं रुधिर समुदाई॥
कछुक प्रान लै समर बिहाई।
भजि बासव पहं पहुंचे जाई॥
सकल कथा तिन कही बुझाई।
सुनासीर कपि कोपि बनाई॥
खोजि-खोजि अगनित बर बीरा।
पठए जहाँ कीस रनधीरा॥
चले करन सब दारुन रारी।
अगिनित बीर तेज बल भारी॥
इहाँ निरखि आवत हनुमाना।
बोले तिन प्रति निडर निदाना॥
किमि आवहु रन सुर-समुदाई।
बृथा तजहु निज प्राननि आई॥

छंद

जनि तजहु निज प्रानन बृथा, किमि आइ सब संग्राम मैं।
दलिहौं सुभुज-बल निमिष मैं, सुनि जाहु निजु-निजु धाम मैं॥

इहि भाँति सुनि कपि की गिरा, कोपे समर सुर-गन जिते।
पुनि धाइ-धाइ प्रचारि अगिनित, अस्त्र-सस्त्र तजे तिते॥
कोउ सूल हनहि प्रचंड, कोऊ परस दारुन छंडही।
कोउ एक तजि बहुबान, कोऊ खड्ग हति रन मंडही॥
कोउ करहिं मुसल प्रहार, कोउ दलि सक्ति कोउ तोमर हनें।
पुनि तजहि कोउ कहं लैगदा, कोउ परिघ, कोउ कुंतल भनें॥

दोहा

सुनु मुनीस इमि सकल सुर, तजि आयुध यक बार।
सब विधि निरखि अधर्म-रन, कोप्यौ पवन कुमार॥१६॥

चौपाई

प्रलय मेघ इव गर्जि अपारा।
अमित सिला पुनि कीन्ह प्रहारा॥
अगनित सृंग वृच्छ वर्षाये।
मानहु प्रलय जलद झर लाये॥
परे सकल सुर रन अकुलाई।
कछुक गए भजि जहं सुरराई॥
कपि बल - वैभव सकल बखाना।
सुनि सुरेस भय बस अकुलाना॥
पुनि बिचार करि कपित देहा।
गए उतावल सुर - गुरु - गेहा॥
करि दंडवत जोरि जुग हाथा।
मलिन चित्त बोले सुरनाथा॥
कहौ स्वामि वह कवन कपीसा।
बधे अमर जिहि, अति बल दीसा॥
पुनि सुनि इन्द्र बचन तिहिं काला।
बोले सुर - गुरु बुद्धि - बिसाला॥

दोहा

सुनहु सक्रु जिन बधेउ रन, कुंभ करन दस सीस।
अवर विपुल तुव रिपु हने, तिन कर सेवक कीस ॥१७॥

चौपाई

पुनि जिन निमिष माहि सुरराई।
गिरि त्रिकूट पर लक जराई॥
बिनु प्रयास रन अछय - कुमारा।
कीन्ह निपात बिदित संसारा॥
तासु नाम जानहु हनुमाना।
सुभट - मौलि - मनि अति ब वाना॥
तिहि तुम्हरे भट कीन्ह संघारा।
समर माझ लीला अनुसारा॥
वृद्धश्रवा सुनु अवध मझारा।
अस्वमेध करि राम उदारा॥
तिहिं मख तुरग बीरमनि भूपा।
पकरा, सो सिव - भक्त अनूपा॥
भयौ समर तह अति बिकराला।
पर्यौ राम दल निपट बिहाला॥
तिनहिं जियावन हेत कपीसा।
आवा लेन सो द्रोन गिरीसा॥

दोहा

करहु जुद्ध तुम वर्ष सत कपिसन सकहु न जीति।
अस बिचारि चलि परहु पद, तजि अभिमान अनीति॥

सोरठा

बहुरि सजीवनि देहु, हृदय बढ़ाइ अनंद अति।
जन्म सुफल करि लेहु, श्री रघुपति कर काज गुनि ॥१८॥

इति श्री पद्म पुराणे पाताल षंडे सेष वात्सायन संवादे मधुसूदन दास कृते, देव जुद्ध वणनोनाम चतुः चत्वारिंसोऽध्यायः ॥४४॥

राम-आगमन

दोहा

वात्सायन गुरु बचन सुनि, तेहि अवसर पुरहूत।
जानी मन प्रभु काज लगि, आये मारुत पूत ।।

चौपाई

उर तें दारून त्रास बिसारी।
मुदित चित्त पुनि गिरा उचारी ।।
सुनहु स्वामि जब पवन - कुमारा।
लै जैहै गिरि समर मझारा ।।
तब किहि भाँति अमर समुदाई।
राखें प्रान कहौ समुझाई ।।
जिहि बिधि जोतहि पवन-कुमारा।
करहिं कृपा, सोइ करहु बिचारा ।।
रघुपति काज होइ जिहि रीती।
पुनि रहि सकल सुरन की प्रीती ।।
अस संजोग सोधि मन माहीं।
कीजिय, अमर सरन तुम पाहीं ।।
सुनि सुर गुर इमि बचन रसाला।
प्रगटी करुना हृदै बिसाला ।।
पुनि वृन्दारक - बृन्द समेतू।
इन्द्रहि करि आगे मुनि - केतू ।।

दोहा

हृदै प्रमोद बढ़ाइ अति, चलत भये तिहिं काल।
जहं कपीस गर्जहिं निडर, धरे रूप बिकराल ।।१।।

चौपाई

सुर - पति जबहिं मरुत - सुत देखा।
गुरहि अग्र करि लिये विसेखा॥
बिबुधन सहित उतावल जाई।
कीन्ह दंडवत उर हरषाई॥
सुनासीर प्रेरित तेहि काला।
सुर - गुर अस्तुति करहि रसाला॥
सुनहु हरीस अतुल बलखानी।
कीन्है सुरन पाप बिनु जानी॥
तुव बल बिक्रम सुना न काना।
पुनि रजमय उर सुद्ध न ग्याना॥
तुम रघुपति सेवक अनुरागी।
परम भागवत अति बड़भागी॥
कारन कवन इहाँ पगु धारा।
कहौं करहि हम सब इहि बारा॥
अब तजि रोष कृपा करि ताता।
निरखहु इन्द्रहि व्याकुल गाता॥

दोहा

तुम उदार बल बुद्धि निधि, खल दल बिपुल कृसान।
निज दिसि निरखि विलोकिये, सुर सब दुखित निदान॥२॥

चौपाई

इहि बिधि सुनि सुर-गुर-मुख-बानी।
बोले हनूमान भटमानी॥
सुनहु देव - गुरु गिरा हमारी।
अस्वमेध मख करहिं खरारी॥

तिन हय तजो सहित कटकाई।
जीते अगनित देस मझाई॥
पुनि हय गयौ बीरमनि देसा।
संतत तिहि पुर बसहिं महेसा॥
तिहि नृप-तनय अस्व हरि लीन्हा।
बहुरि आइ भूपति रन कीन्हा॥
सो पुष्कल ने बिनहि प्रयासा।
जीत्यौ समर माझ दै त्रासा॥
तासु पराभव सुनि सिव काना।
चढ़ेउ जुद्ध लगि कोपि निदाना॥
अति अपार कीन्ही तिन रारी।
पर्‌यौ राम दल समर मझारी॥

दोहा

कटक जिआवन हेत मैं, इहि थल पहुँच्यौ आइ।
अब द्रोनाचल सैल यह, लै जैहौ सत-भाइ॥३॥

चौपाई

कै केवल संजीवन देहू।
जियहिं सकल जिमि बिनु संदेहू॥
सुनि अस कपि की गिरा सुहाई।
कीन्ह प्रनाम सुरन सिर नाई॥
पुनि अस्तुति करि विविधि प्रकारा।
गए द्रोन गिरि सब तिहि बारा॥
आतुर संजीवनि समुदाई।
आनि दीन्ह कपि कहं सिरु नाई॥
सकल त्रास तजि उर हरषाई।
पुनि निजु लोक गए सिर राई॥

इत कपीस संजीवनि पाई।
छिन महं निजु दल पहुंचे आई॥
भेषज महित निरखि रन आवा।
संभु गनन जुत विस्मय पावा॥
कीन्ह प्रसंसा बहुरि बिसाला।
धन्य-धन्य कपि साधु सुचाला॥

दोहा

अति अद्भुत बिक्रम कियो, तुम सन सुभट न आन।
कस न करहु तुम, उर बसै सतत कृपा-निधान॥४॥

चौपाई

प्रथम गए कपि, सुनि मुनि तहंवा।
बिगत-प्रान पुष्कल पुनि जहवा॥
सुमिरत प्रभु पद हृदय मझारी।
दीप्तवंत मुख हृदय सुखारी॥
रच्छा करत तहाँ त्रिपुरारी।
प्रमुदित हिय निजु बास मझारी॥
सचिव-मौलि-मनि बुद्धि निधाना।
सुमतिहि निकट बोलि हनुमाना॥
बोले बचन महा सुखदाई।
निरखहु प्रभु प्रताप अधिकाई॥
सकल मृतक भट अबहि जिआवौ।
तुम निरखत पुनि देर न लावौ॥
अस कहि सचिवहि आनद दीन्हा।
हृदै राम-पद-सुमिरन कीन्हा॥
पुनि पुष्कल उर भेषज धारी।
जोरि सीस पुनि गिरा उचारी॥

छंद

तब जोरि बपु पर सीस सुंदर, गिरा हरषित उच्चरी।
तन मन बचन जो जानि रामहिं स्वामि, हम सेवा करी॥
तौ जियहु भरत-कुमार, कहि इहिं समय बिथा बिसारि कं।
रघुनाथ भक्ति अनन्य कपि, दरसाव सिवहिं निहारि कं॥

दोहा

इहि विधि समर मझार कपि, कहत जात बर बंन।
तब लगि उठि ठाढ़े भये, भरत - तनय बल ऐन॥५॥

चौपाई

लोचन अरुन रोस - रस पागे।
मनहुं अबहिं सोवत तं जागे॥
रद सौं रद मर्दहिं तिहि काला।
पुनि - पुनि फरकहिं अधर रसाला॥
चाप सगुन करि धरि सर चडा।
बचन गंभीर बोलि बलमडा॥
बीरभद्र भजि गा किहि ओरा।
अबहि निपातौं मैं बर जोरा॥
मूछित करि मोहि समर मझारा।
चाहै अब निजु प्रान उबारा॥
सुनि इव भरत-तनय-मुख-बानी।
बोले पवन - पुत्र बल - खानी॥
धन्य - धन्य पुष्कल बर बोरा।
तुम सम अवर न कोउ रनधोरा॥
तुम बिनु कवन कहै इमि ताता।
बीरभद्र रन तुमहि निपाता॥

दोहा

सिय रघुबीर प्रसाद ते, लहे प्रान इहि काल।
सजग होहु, प्रभु-पद सुमिरि, रन मडहु बिकराल ।।६।।

चौपाई

तात सत्रुघन कहं अब देखौ।
मूर्छित भये जाम एक लेखौ ।।
पुनि - पुनि व्याकुल लेहि उसासा।
समर - भूमि सब भये प्रकासा ।।
अस कहि तुरत गये हनुमाना।
जिहि थल रिपुभजन बलवाना ।।
धरि सजीवनी हृदय मझारी।
पुनि कपि सत्य गिरा उच्चारी ।।
उठहु सत्रुघन स्वामि उदारा।
तजहु चरित्र मनुज अनुहारा ।।
तुम अपार बल विक्रम धामा।
राभ .बधु रिपुभजन नामा ।।
भजहि अजादि देव सब काला।
गुन अनत भगवन्त कृपाला ।।
सिवहि सोभ दीन्ही रन माही।
नाथ अवर कारन कछु नाही ।।

दोहा

अब मै विनती करहु प्रभु, सोकरि अगीकार।
उठिहौ तौ जग जानिहै, मो पर कृपा अपार ।।७।।

चौपाई

कहत जात कपि इहि विधि बैना।
तब लगि जगे महा बल अंना ।।

फरकत अधर बिलोचन लाला।
लसहि बदन पर तेज बिसाला॥
मनहुं बीर रस तन धरि सोहा।
किधौ सरोस सिंधु करि जोहा॥
बार-बार अस कहि प्रभु भ्राता।
किहिं दिसि गा सिव करहुँ निपाता॥
जो मै मन बच कर्म निदाना।
ब्रह्मचर्य पन अब लगि ठाना॥
तौ इहि काल त्यागि विकलाई।
उठहि सत्रुसूदन हरषाई॥
रन बिहात उर लाज न आई।
सुनि कपि किय प्रनाम हरषाई॥
पुनि लछिमीनिधि आदि नृपाला।
सबहिं जियावत भय तिहि काला॥
एक निमिष मह सब कटकाई।
कीन्हि सजीव सुनहु मुनिराई॥
तब निज-निज रथ होइ असवारा।
सजि-सजि आयुध कोपि अपारा॥
घाइल तन, मन चौगुन चाऊ।
चले जुद्ध लगि गनहिं न काऊ॥
रिपुभजन पुष्कल सब भूपा।
भए समर हित काल सरूपा॥

सोरठा

उत सिव समर मझार, आवत देख्यौ राम दल।
करि उर कोप अपार, निज गन सकल पठाएऊ॥८॥

चौपाई

पुष्कल बीर भद्र दोउ बीरा।
प्रथमहिं भिरे महा बल धीरा॥

पुनि बिदेह - सुत अतुलित जोधा।
मंडि चंड सन रन अति क्रोधा॥
नंदीगन अरु पवन कुमारा।
जुद्ध विरुद्ध रच्यौ अति भारा॥
इहि विधि सकल सुभट दोउ ओरा।
एक - एक सन रचि रन घोरा॥
राम बंधु अतुलित बलधामा।
सिवहिं बिलोकि ठाढ़ संग्रामा॥
आतुर गुन चढ़ाइ कोदंडा।
पुनि नराच धरि परम प्रचंडा॥
प्रेरि सूत रथ हाथि उतावल।
चले सकोपि धरनि वन गिरि हल॥
तिष्ठ - तिष्ठ संकर संग्रामा।
इहि विधि कहत जाइ बलधामा॥

दोहा

उत सिव नें नृप बीरमनि, किय दल सहित सजीव।
आवत लखि रिपुदहन कौं, कोप्यौ भूप अतीव॥६॥

चौपाई

चढ़ि बिसाल रथ सन्मुख आवा।
अति आतुर करि जुद्ध बनावा॥
सुनु मुनि राम - बंधु अरु राजा।
मंडो रन लखि जुगल समाजा॥
मुनि विस्मय प्रद करहिं प्रहारा।
निरखहिं सुर गन गगन मझारा॥
तिहिं अवसर नृप लाघवताई।
भजेउ स्यंदन सुतन बनाई॥

तिल इव तिनहि निरखि रघुबीरा।
व्यापौ कोप अपार सरीरा ।।
दारुन आनि अस्त्र धरि चापा।
तज्यौ तानि जग प्रगट प्रतापा ।।
कीन्हीं दग्ध सकल कटकाई।
नाग बाजि रथ भट समुदाई ।।
हेम रजतमय साज अपारा।
द्रवि - द्रवि बहै सरित अनुहारा ।।

छंद

पावक अति घोरा, लखि चहुं ओरा, निजु दल मह महिपाला।
कोप्यौ अति भारी, समर मझारी, तजे जाल सर बिकराला ।।
प्रगटे घन जाला, सजल बिसाला, प्रलयकाल अनुहारी।
ते वर्षि अपारा, मूसल धारा, तड़िता चमकहिं भारी ।।
निजु सैन बचाई, वह्नि बुझाई, सकल त्रास निर्वारी।
पुनि प्रभु कटकाई, घन वरषाई, छिनमहं किये दुखारी ।।
प्रगट्यौ अति सीता, भये सभीता, परेउ उपल झरि लाई।
उमग्यौ जल घोरा, भट चहुं ओरा, बहें बिकल मुनिराई ।।

दोहा

इहि प्रकार लखि दल बिकल, रिपुभंजन तिहि काल।
कोपि उतावल मरुत सर, तज्यौ तानि बिकराल ।।१०।।

चौपाई

सुनहु सूत जबही सर छंडा।
प्रगट्यो तिहि छिन पवन प्रचंडा ।।
निमिष माहि घन जात परानै।
दामिनि उपल समेत नसानै ।।
प्रगटे रवि, भा बिमल अकासा।
सुर गन निरखन लगे तमासा ।।

पुनि महीप के कटक मझारा।
चल्यौ प्रलय इव मरुत अपारा॥
गज ऊपर गज उड़ि-उड़ि परई।
हय समेत स्यदन उच्छरई॥
पुनि पदचर असवार समेता।
गिरहि धरनि उड़ि अस्त्र सचेता॥
सकल भए इहि भाँति दुखारी।
सब प्रकार रन आस बिसारी॥
भूप बोरमनि निरखि बिहाला।
सैल अस्त्र छाड़ो तिहि काला॥

दोहा

वर्षि कुधर अगिनित तबै, बिरचि लीन्ह नृप कोट।
प्रबिस सकै नहि कटक मह, मारुत तिहि की ओट॥११॥

चौपाई

रघुनायक. दल महं गिरि भारे।
वरषन लगे महा भयकारे॥
ब्याकुल भये सुभट समुदाई।
निरखि तिनहि कोपेउ रघुराई॥
स्रवन प्रजत तानि कोदडा।
तजे बज्र सर परम प्रचडा॥
सकल सैल इक निमिष मझारा।
बिनु प्रयास किय रज अनुहारा॥
सूर बीर नृप दल मह जेते।
खंड-खंड तन देखिय तेते॥
स्रवत रुधिर बहु सोहैं कैसे।
किसुक बिपिनि प्रफुल्लित जैसे॥

कुंजर बाजि अमित रन माहीं।
बिपुल खंड भे स्रोनित जाहीं॥
प्रगटो तहाँ रुधिर रन भारी।
अति प्रचंड धारा भयकारी॥

दोहा

इहि विधि लखि निजु दल बदन, कोप्यौ भूप अपार।
अति प्रचड ब्रह्मास्त्र तब, छाड़ो समर मझार॥१२॥

चौपाई

दारुन भय प्रगटत सोइ धावा।
लखन - बंधु लखि ता कहं आवा॥
लाघव निज सभाँरि कोदंडा।
तज्यौ जोगिनी अस्त्र प्रचडा॥
छिन मह ब्रह्म बान किय खडा।
लगा भूप उर जनु जम - दंडा॥
महा बिकल होइ स्यदन त्यागी।
परा धरनि जिमि बोलि दवागी॥
पुनि तिहि सर तें सुनु मुनिराई।
प्रगटत भए बान समुदाई॥
बीरभद्र आदिक गन जेते।
अवर भूप दल सुभट समेते॥
छिन महं तिन करि दिये अचेता।
विगत प्रान इव तजि जय हेता॥
सोइ पुनि जोगिनि सर बिकराला।
पर्‌यौ जाइ सिव पद तिहि काला॥

छंद

तब जाइ सिव पद महं पर्‌यौ, तिहि काल सोइ सायक महा।
मम इव परहु प्रभु चरन, मनहु सिखाव लरि करि हौ कहा॥

सुनु सूत निज दल मृतक सम लखि, संभु तब कोपित भए।
चढ़ि रथ चलेउ, रन करन दारुन, अस्त्र-सस्त्र सकल लए॥

दोहा

इत महेस आवत लखे, राम - बंधु बल सीव।
प्रेरि सूत धाए तबै, करि उर कोप अतीव॥१३॥

चौपाई

सुनु मुनीस उत सिव भयकारी।
इत रघुनाथ अनुज बलभारी॥
रन - मंडल दोऊ करि कोपा।
भिरे मनहुँ होइहै जग लोपा॥
विविधायुध तहं होई प्रचारी।
अति जाजुल्य काल अनुहारी॥
व्योम भूमि दिसि बिदिसि मझारी।
दारुन सायक परहिं निहारी॥
परम प्रकास पूरि चहुं ओरा।
मनहुँ प्रलय पावक अति घोरा॥
चलहिं अस्त्र पर अस्त्र प्रचंडा।
लगि - लगि होंइ गात के खंडा॥
कुंडलीक देखिय कोदंडा।
लखि न परै छोड़त सर चंडा॥
अतुल पराक्रम निधि दोउ बीरा।
खंड - खंड भय सकल सरीरा॥

दोहा

देव दैत्य संग्राम जिमि, प्रथम भयौ बिकराल।
ताते रन भा अधिक अति, सुनु मुनीस तिहिं काल॥१४॥

चौपाई

रिपुभंजन तब किय अनुमाना।
सिव संजुग यह कठिन निदाना।।
बिपुल वर्ष जो होइ लराई।
तदपि न सकै पार कोउ पाई।।
पुनि प्रभु जज्ञ अवधि नियराई।
पूरन किहि बिधि होइ बनाई।।
अस बिचारि मन महं अकुलाई।
सुमिरन लगे राम रघुराई।।
हे करुनानिधि राम उदारा।
इहि रन भा असमंजस भारा।।
संभु प्रलयकारी बलवाना।
बध न होइ किय जुद्ध निदाना।।
जिमि तुमार मख पूरन होई।
उर बिचारि कीजै प्रभु सोई।।
इहि प्रकार मन करत बिचारा।
रघुनायक गुन चरित उदारा।।

छंद

तब लगि तिहि काला, परम कृपाला, प्रगट भए श्री रामा।
सोभा सुख ऐना, राजिव नैना, सुंदर तन घन स्यामा।।
आनन छवि रासी, परम प्रकासी, सरद चंद्र दुतिहारी।
कोटिन रतिनाहा, लखि वपु छाँहा, सकुचहिं निज उर भारी।।
भ्राजहिं वर माला, पुंड रसाला, भृकुटी कुटिल बिराजै।
श्रुति परम सुहाए, मुनि मन भाए, नासा सुक मुख लाजै।।
गंडस्थल रूरे, बहु छवि पूरे, रद पट अरुन रसाला।
रद ससि कर हारी, अति दुतिकारी, चिबुक अनूप बिसाला।।

दर सरिस सुग्रीवा, छवि की सीवा, अंस उच्च मन मोहै।
भुज - भुजग निदाना, सुंड समाना, पानि अरुन अति सोहै॥
हिय परम बिसाला, चिह्न रसाला, द्विज पद श्री महि छाजै।
पुनि उदर उदारा, छबि आगारा, त्रिवली बिसद बिराजै॥
सुनु मुनि मति धीरा, नाभि गभीरा, जमुन भ्रमर करि हासी।
कटि परम सुहाई, अति छवि छाई, सिघ लंक लघु भासी॥
जुग जंघ अनूपा, कदलि सरूपा, जानु अतुल दुतिकारी।
नव पकज चरना, भव-भय-हरना, मृदु मंजुल मनुहारी॥

दोहा

धरै सुभग मृग शृङ्ग कटि, मंद - मद मुसक्यात।
जग्य साज साजे सकल, मख दीछित वर गात॥
रन मडन इहि भेष प्रभु, प्रगट भए तिहि काल।
सत्य कीन्ह निजु जन बचन, को अस दीनदयाल॥

सोरठा

तिहि अवसर मुनिराइ, रामहि निरख्यौ सत्रुघन।
अति विस्मय उर पाइ, मधुसूदन हरषित भए॥१५॥

इतिश्री पद्म पुराणे, पाताल षंडे, सेष वात्सायन सवादे, मधुसूदन दास कृते, राम आगमनोनाम पचचत्वारिसोऽध्याय: ॥४५॥

हय-पयान

दोहा

प्रणतारनि भजन सुखद, रघुनायक कह देखि ।
कीन्ह दडवत सत्रुघन, सुनु मुनि पुलकि विसेषि ।।

चौपाई

अनि दारुन मन सभव त्रासा ।
भई बिगत हिय परम हुलासा ।।
तब लगि ममर समीर - कुमारा ।
निरख प्रभु सोभा - आगारा ।।
अति अचरज अनद समेता ।
गहे जुगुल पद गोभ – निकेता ।।
पुष्कलादि जे नृप समुदाई ।
रहे हरष - जुत चरननि आई ।।
पुनि कर जोरि विगत - अभिमाना ।
बोले मृदुल बचन हनुमाना ।।
सुनहु स्वामि तुम प्रथम बखाना ।
जन रच्छा हठि करहु निदाना ।।
सो पन आजु सत्य दरसावा ।
प्रगटि समर सब दुक्ख नसावा ।।
नाथ भयो मै धन्य बनाई ।
तुम पद निरखि अभय पद पाई ।।
अब जीतहु सिव कह छिन माही ।
तुम्हरे बल प्रताप, सक नाही ।।
मारुत - सुत इहि विधि कहि बानी ।
सकल सैन्य आनद मै जानी ।।

दोहा

इहि बिधि प्रभु प्रति बचन मृदु, कहत जात हनुमान ।
तब लगि उत श्री संभु नै निरखे कृपा निधान ॥१॥

चौपाई

कोटि मदन छवि डारिय बारी ।
जोगोस्वर नहिं सक निहारी ॥
अस सरूप भरि लोचन देखी ।
गहे धाइ पद हरषि विसेखी ॥
पुनि मृदु सरल पुनीत सुबानी ।
बोले संभु जोरि जुग पानी ॥
तुम प्रभु परम पुरुष अबिनासी ।
परम ब्रह्म पूरन स्वप्रकासी ॥
प्राकृत गुन अवगुन समुदाई ।
सदा रहित श्रुति कीरति गाई ॥
सकल कला - निधि परम उदारा ।
संतत मनु गो त्रिधु मैं पारा ॥
निजु भक्तन वाछित फलदाई ।
सदा सुतंत्र अखिल जगराई ॥
तुम करि अंस - कला बिस्तारा ।
रचहु हरहु पालहु संसारा ॥

छंद

जय राम उदार नमामि पदं ।
सुनिये मम सत्य गिरा सुखदं ॥
तुम नाम चरित्र अनंत प्रभो ।
किहिं अंग बखानहुँ पर्म विभो ॥
जिमि बेद निरतर गान करें ।
करुनाकर त्यों हम चित्त धरें ॥

छमिए अपराध कृपाल सबै।
बिनवौं अब मै तुव पाद अबै॥
तुम पूरन ब्रह्म प्रधान परं।
प्रनतारत मोचन सर्व वरं॥
जब्र हीं जब संभव हेत धरैं।
तब हीं विधि कौ निरमान करैं॥
प्रतिपालहु श्रीपति रूप स्वयं।
विरच्यो जग नासन हेत मयं॥
यह जग्त समस्त चरित्र त्वयं।
प्रनवौं अब मैं तुव पाद द्वयं॥
तुम पर्म पवित्र कृपाल हरे।
सत सुद्ध मयं तन, ग्यान भरे॥
तुव नाम महा - अघ - पुंज - दलं।
इमि वेद पुरान कहै सकलं॥
यह जग्य करौ करूनायतन।
प्रण ठानि दसानन दोष हनं॥
जग मध्य बिडवन कीन्ह महा।
तुम पर्म पुनीत श्रुतीन कहा॥

दोहा

तुव पद पंकज सोत तें, प्रगटी ग्यान पुनीत।
प्रभु सो मैं निज सीस धरि, भंजहु दंभ अनीत॥३॥

चौपाई

किहिं विधि लगहिं तुमहिं द्विज-दोषा।
नाम एकु अघ - अंबुधि सोखा॥
मख करि जगहिं दीन्ह उपदेसा।
सपनेउ तुमहि न अघ लवलेसा॥

प्रभु मैं कीन्ह घोर अपराधा।
तुम्हरे दलहि दीन्ह अति बाधा॥
सो अघ छिमहु प्रनत - भय हारी।
अस्तुति किहि विधि करौ तुम्हारी॥
मैं तुम्हार किंकर भगवाना।
करहु कृपा तुम कृपानिधाना॥
प्रगटे निजु भक्तन हित लागी।
सो प्रभाव जाना जनु रागी॥
किय अपराध जदपि मैं जानी।
तदपि छिमहु निज प्रन पहिचानी॥
प्रभु महीप मोहि निज बस कीन्हा।
तिहि तें उर विवेक नहिं चीन्हा॥

दोहा

प्रथमहिं इहि महिपालनें पुर उज्जेनि मझार।
काली को मंदिर जहाँ, राजहि अति दुतिकार॥४॥

चौपाई

सिप्रा सरि मज्जहि हरपाई।
कान्ह विपुल तप उग्र बनाई॥
तब मै ह्व प्रसन्न रघुराई।
बोल्यो वचन भूप प्रति जाई॥
माँगु - माँगु वरु जो मन भावा।
नृप जाँच्यो तब राज सुहावा॥
इहि प्रकार सुनि मैं तिहि काला।
बोल्यौ प्रमुदित बचन रसाला॥
नृपता देवनगर पुर केरी।
करहुं जाइ लै सैन घनेरी॥

जब लगि आव न रघुपति - बाजी।
तब लगि कौ ब्रमि हौं पुर राजो॥
करि हौं रच्छा सकल प्रकारा।
इहि विधि मैं पूरब बर हारा॥
अब अपराध छिमहु रघुराई।
तुम कृपाल प्रनतन सुखदाई॥

दोहा

अब यह नृपति कृपाल तन, सुत पसु स्वजन समेत।
तुरग समपंहि बिगत-मद, कृपा करहु निरहेत॥५॥

चौपाई

इहि बिधि मुनि सकर मुख बैना।
भए मुदित अति राजिवनैना॥
कृपा - दृष्टि करि निरखि कृपाला।
बोले गिरा गभीर रसाला॥
साधु - साधु तुम संभु सुजाना।
परम भक्त मम बुद्धि निधाना॥
कहैं वेद बुधि मुनि समुदाई।
रच्छहि सरनागतहि बनाई॥
तुम निज भक्त भूप प्रतिपाला।
भलो कीन्ह, यह धर्म बिसाला॥
सभु सुनौ मै कहौ बुझाई।
परम गोप्य मत जिमि श्रुति गाई॥
मम सेवक जो मन क्रम बानी।
उर अनन्य, नहि पर गति जानी॥
मो सम पूजनीय जे ताता।
बिगत मान मद कवनेउ जाता॥

दोहा

भक्त सिरोमनि संभु तुम, मोहि प्रिय प्रान समान ।
मम उर मैं तुव बसहु नित, मैं तुम हृदय निदान ।।६।।

चौपाई

जिन यह बोध हृदय नहिं धारा ।
बृथा विरोध करहिं संसारा ।।
ते खल कलप महस्र प्रजंता ।
बसहिं नरक लहि दुक्ख अनंता ।।
अस बिचारि मम भक्त सुजाना ।
पुनि तुम सेवक चतुर निदाना ।।
उर तै बैर - भाव बिसराई ।
करहिं परस्पर परम मिताई ।।
रघुनायक के बचन रसाला ।
सुनि महेस हरषे तेहि काला ।।
मूर्छित पर्यौ बीरमनि भारी ।
परसि सीस पर बृथा निवारी ।।
कीन्ह सजोव ठाढ़ नृप भयेऊ ।
सिव प्रसाद तन सुंदर लएऊ ।।
पुनि निजु गन अरु सब कटकाई ।
किय सजीव छिन मह, मुनि राई ।।

दोहा

सिव प्रेरित तब वीरमनि, सकल कुटुंब समेत ।
बिगत - काम श्री राम - पद, गहे संभु सकेत ।।७।।

चौपाई

धन्य महीप बीरमनि सोई ।
भरि लोचन रघुपति छवि जोई ।।

अति दुर्लभ प्रभु दरस सुहावा ।
बड़े कष्ट जोगी जन पावा ॥
सो लहि आपुहि मानि क्रितारथ ।
बड़भागी जाना परमारथ ॥
ब्रह्मादिक पूजित भा भूपा ।
प्रभु सरनागत पाइ अनूपा ॥
को कवि बरनि सकै नृप भागू ।
निरखहि रुप सहित अनुरागू ।।
भूप सत्रुघन पुष्कल बीरा ।
हनुमतादि जे भट रन धीरा ॥
सबनि प्रेम जुत मिलेउ भुवाला ।
त्याग्यौ बैर - भाव बिकराला ॥
कीन्ह समर्पन प्रभु मख बाजी ।
राजकोस - सर्वस निज साजी ॥

दोहा

अति कृपाल रघुबंस मनि, सकल वस्तु अपनाइ ।
पुनि महीप कहू सौंपि दिय, बहु प्रसंसि हरषाइ ॥८॥

चौपाई

सब बिधि सबहि तोषि भगवाना ।
भए बिलोकित अंतरध्याना ॥
सुनहु सूत दोउ राज समाजा ।
बोले अति विस्मित मुनि राजा ॥
हम रघुपतिहि मनुज करि जाना ।
बरनहिं किहि बिधि निज अग्याना ॥
राम अखिल लोकनि के राऊ ।
आज दीख हम सत्य प्रभाऊ ॥

जल थल जड़ जंगम मैं रामा।
जानी परब्रह्म पर धामा॥
इहि बिधि कहैं परस्पर बचना।
निरखि स्वामि कृत अद्भुत रचना॥
बीरमनिहि सिव करि प्रभु सरना।
अंतरहित पुनि भे दुख हरना॥
गननि समेत गए कैलासा।
सुमिरि राम पद सहित हुलासा॥

दोहा

इहाँ सत्रुघन हरषि उर, लखि रघुबीर प्रभाव।
कीन्ह महोत्सव विजय लहि, कटक सहित सत भाव॥६॥

चौपाई

मिलहिं परस्पर भट समुदाई।
परम प्रीति जुत बैर बिहाई॥
बजे बाजने बिबिधि प्रकारा।
संख भेरि दुंदुभी अपारा॥
राम - बंधु प्रमुदित तिहि काला।
बोलि समीप सकल महिपाला॥
मनिमय स्यंदन होइ असवारा।
चलन हेत तब कीन्ह बिचारा॥
भूप वीरमनि उर हरषाई।
चढ़ि रथ साजि सकल कटकाई॥
जाइ सत्रुघन पद सिरु नावा।
निरखि राम सेवक मनभावा॥
सुनु मुनि भूप परम बड़ भागी।
तन मन बचन प्रेम मति पागी॥

अति अनन्यता हिय मैं धारी।
चित्रक मीन कंज अनुहारी॥

दोहा

तिहिं अवसर रिपु दहन कर, अनुसासन भट पाइ।
मख तुरंग त्यागत भए, उर उत्साह बढ़ाइ॥
अस्त्र-सस्त्र सजि विविधि विधि, सजग सुभट समुदाइ।
निरखत चले तुरंग कहं, विस्मय जुत हरषाइ॥

सोरठा

यह रघुनाथ चरित्र जस, प्रेम सहित सुनि है मनुज।
करि तन परम विचित्र, भवरुज अवसि न व्यापिहै॥१०॥

इति श्री पद्म पुराणे पाताल षंडे सेष वात्सायन संवादे
मधुसूदन दास कृते हय पयान नाम षष्ठचत्वारिंसोऽध्याय: ॥४६॥

श्राप-मोचन

दोहा

भरत खंड के अंत मह, हिमगिरि परम उतंग।
कोटिन भट जुत सुनहु मुनि, पहुंच्यो तहाँ तुरंग॥

चौपाई

जोजन अयुत उतंग समाना।
शृंग रजत हाटकमय नाना॥
तिहिं समीप उद्यान बिसाला।
बिबिध वृच्छ फल सुमन रसाला॥
साल तमाल ताल बहु सोहैं।
कोविदार पुन्नाग विमोहैं॥

सुभग कर्णिका नाग कदंबा।
सोभित सफल अनेकनि अंबा।।
देवदार तहं ताल पनस तर।
चंदनादि मंदार सुखाकर।।
श्रीफल दाड़िम बेल सुहाए।
अपर अनेक वृच्छ छबि छाए।।
चंपक बकुल मदन मन मोहैं।
माधव दच्छ वृच्छ बहु सोहैं।।
सोनजुही केतकी सुहाई।
बेल जुही मालति छबि छाई।।

दोहा

अपर सुमन द्रुम सकल तहं, सोहत विविधि प्रकार।
लहि सुगंध, ह्वै मत्त अलि, तिन पर करि गुंजार।।१।।

चौपाई

चक चकई चकोर पिक स्रेनी।
कोकिलादिं मुनि मन हरि लेनी।।
केकी कीर कपोत मराला।
बोलहिं बिबिधि बिहंग रसाला।।
मख – तुरंग मन - गति अनुहारी।
किय प्रवेस तिहिं बिपिनि मझारी।।
हेम - पत्र सिर सोह सुहावा।
जाइ पंथ उर आनंद छावा।।
तिहिं पाछे आवैं रघुनाथा।
दल चतुरंग उदधि इव हाथा।।
वात्सायन मुनि सुनु मनु धारी।
तिहि अवसर भा अचरज भारी।।

आकसमाद तुरग वन माहीं।
भयौ थकित मग चलि सक नाहीं॥
हिमि गिरि भा अति अचल बनाई।
मन मारुत इव गतिहि बिहाई॥

दोहा

अचल अस्व तिहि समय लखि, रच्छक बिस्मय पाइ।
ताड़न कीन्हे कास बहु, सक्यो न गात डुलाइ॥२॥

चौपाई

तब अकुलाइ सकल रखवारे।
जाइ सत्रुघन निकट पुकारे॥
स्वामि सुनहु हम मर्म न जाना।
अचिरिज भा नहि जाइ बखाना॥
मग्व तुरग इहि विपिनि मझारा।
चले जात मन गति अनुहारा॥
आकसमाद पंथ ग्रसि गयेऊ।
हने कास बहु तदपि न चलेऊ॥
अब जस प्रभु उर परै बिचारा।
करौ सोइ जिमि होइ निवारा॥
रिपुसूदन इहि बिधि सुनि काना।
कटक सहित बिस्मय अति माना॥
सकल सैन जुत गए पुनि तहवा।
ग्रसित गात हय बन मह जहवा॥
तेहि अवसर श्री भरत - कुमारा।
पकरि अस्व - पद बाहु मझारा॥

दोहा

बल सम्हारि मुनि सुनहु अब, पद उठाइ तिहि काल।
अचल चला भा मेरु इव, तिल समान नहि चाल॥३॥

चौपाई

अवर सकल भट बल करि हारे।
रिक्षादिक अगद कपि भारे॥
तिल भरि हय पद सर्कहि न टारी।
बिविधि भाँति बल कीन्ह सम्हारी॥
अस कौतुक बिलोकि हनुमाना।
गे समीप पुनि हष निदाना॥
हय लपेटि लगूर मझारा।
पुनि उठाइ बल सकल सम्हारा॥
अनुसमान हय चरन न चाला।
कपि विस्मय तब मानि बिसाला॥
बोले बचन महा अकुलाई।
सुनहु सत्रुघन भट समुदाई।
मै बिन स्रम लगूर मझारी।
कदुक इव द्रोनाचल भारी।
बार अनेकन लीन्ह उठाई।
अवर सैल बहु द्रुम समुदाई॥

दोहा

नदीगन जुत सभु कह, लीलहि लीन्ह उठाइ।
कहा बपुरो बाजी यह, तिल सम तन न चलाइ॥४॥

चौपाई

अति अचिरिज मै इहि थल पावा।
यह चरित्र नहि परै लखावा॥
अवर सूर सब रहेउ उठाई।
कवन हेत नहि धरनि बिहाई॥
कपि बानी इहि विधि सुनि काना।
राम-बधु अति अचिरिज माना॥

बोलि सुमंत सचिव सन बानी।
तात सकल मो कहौ बखानी॥
कवन हेत महि ग्रसो तुरंगा।
पुनि किमि चलय होइ दुख-भंगा॥
अस सुनि सुमति बोलि तिहि काला।
सुनहु स्वामि तुम बुद्धि बिसाला॥
त्रिकालग्य कोउ मुनि तप धामा।
खोजहु तिनहि त्यागि सब कामा॥
करिहै ते तुम संशय दूरी।
तात मुनिन की मति अति रूरी॥

सोरठा

जग प्रसिद्ध जो ग्यान, के केवल निज देस कर।
सो हम करहि बखान, नाथ न जानहुं अपर मै॥५॥

चौपाई

सुमति गिरा मुनि परम सुहाई।
सुभट सकल अनुमासन पाई॥
खोजन लगे चहूँ दिसि जाई।
सकल बीर ज बल समुदाई॥
पुनि आपन प्रभु सहित समाजा।
बिचरत फिरहिं मुनिन के काजा॥
कितहु न निरखि परे मुनि कोई।
बिपिन सरित गिरि कदर जोई॥
सुनु मुनि अनुचर एक सुजाना।
जहं - तहं खोजत फिरहिं निदाना॥
तजि दल जोजन एक प्रमाना।
प्राची दिसि गा बुद्धि निधाना॥

फिरत - फिरत गा सुरसरि तीरा ।
अति पुनीत निर्मल गभीरा ।।
अति पुनीत आस्रम तहं देखा ।
बिचरहिं खग मृग मुदित विसेखा ।।

दोहा

निकट बहै सुर सरित तहं, अति पुनीत बिख्यात ।
दरस परस सुमिरन किये, महा पाप नसि जात ।।६।।

चौपाई

बिगत बैर बिचरहिं सब जीवा ।
आस्रम परम धरम की सीवा ।।
सुरसरि मज्जन केर प्रतापा ।
तन मन बचन सकल निज पापा ।।
छूटि रही तरु लता अनूपा ।
सूखि जाहि निरखत दुख कूपा ।।
तिन बिच राजहिं मुनि तप रासी ।
करहिं बिविध तप धर्म प्रकासी ।।
अगिनिहोत्र कोउ करहि सुहाये ।
कोउक ध्यान महि लोचन लाये ।।
धूमपान कोउ करहि अधोमुख ।
कोऊ भाषइ बात अपने सुख ।।
करहि बिविधि तप इमि मुनि वदा ।
बिगतमान मद सहित अनदा ।।
अनल होत्र कर धूम पुनीता ।
परसत छुटहि घोर अघ भीता ।।

दोहा

सौनक मुनि आसीन तहँ, अति उदार तप रासि ।
मगन राम सिय ध्यान महं, वेद रूप आभासि ।।७।।

चौपाई

रघुनायक - सेवक मुनिराई।
बूझि नाम उर मोद बढ़ाई॥
निकट आइ रिपुसूदन पाहीं।
कीन्ह निवेदन, विस्मित ताहीं॥
सकल समाज सहित रघुराई।
हरषित भए अपार बनाई॥
कछुक भीर लीन्ही निज संगा।
जे श्रुति पथ कोविद सब अंगा॥
सुमति भरत - सुत पवन - कुमारा'
जनक - तनय - जुत हर्षि अपारा॥
सुर-सरि निकट सु आस्रम जहवाँ।
जाइ दीख मुनिवर कहं तहवाँ॥
होम हुतासन मद्धि सु करहीं।
बिधिवत बेद मत्र उच्चरहीं॥
मनहुँ ज्ञान धरि रूप सुहावा।
सहित समाज सोभ अति पावा॥

दोहा

निकट जाइ तब सत्रुघन, मुनि पद कीन्ह प्रनाम।
प्रमुदित सब उर, जनन जुत, प्रथमहिं किय निजु नाम॥८॥

चौपाई

सौनक मुनि लखि अतिथि सुहाए।
स्वागत करि आसन बैठाए॥
पुनि बर बचन मुनीस उचारे।
कारन कवन भूप पग धारे॥
तुम परिजटन नगर जग माहीं।
सहसा नृप जन बिचरत नाहीं॥

जौ न फिरहु तौ सुनहु भुवाला।
बढ़हिं विस्व महं खल बिकराला॥
होहिं साधु जन दुखित अपारा।
तिहि तैं बिचरन धर्म तुम्हारा॥
कहौ सत्रुघन भूप सुजाना।
किहि कीन्हौ आगमन निदाना॥
इहि विधि सुनि सौनक मुख बानी।
हरष सकल बीर भट मानी॥
गद - गद स्वर पुलकित तिहि काला।
बोले रिपुहन बचन रसाला॥

दोहा

सुनहु मुनीस्वर परम मति, विस्मै एक विसाल।
तुम आस्रम के निकट ही, कानन मध्य कृपाल॥६॥

चौपाई

रामचंद्र : मख - बाजि सुहावा।
मन गति जाहि स्वबस तहं जावा॥
आकसमाद थकित सो भयेऊ।
मेरु समान अचल ह्वै गयेऊ॥
पुष्कलादि भट थके उठाई।
तिल सम धरनि न सके छुटाई॥
हम दुख-जलधि - मगन मुनि नाथा।
जिहि बिधि छुटै कहौ सोइ गाथा॥
येहि प्रकार सौनक मुनि काना।
निमिषि एक लगि कीन्हेउ ध्याना॥
ग्यान दृष्टि सब चरित निहारी।
बोले पंकज - नैन उघारी॥

सुनहु सचेत सत्रुघन भूपा।
अचल भयो जिमि अस्व अनूपा॥
श्रवन परत यह कथा प्रसंगा।
होइ है अवसि सकल भ्रम भंगा॥

दोहा

गौड़ देस महं प्रथम नृप, काबेरी सरि तीर।
सात्वक नाम सु विप्र इक, तह तप कीन्ह गंभीर॥१०॥

चौपाई

दिवस एक करि नीर अहारा।
दिन दूसरै मरुत उर धारा॥
दिवस तीसरे पवन न नीरा।
तप इमि करहि न गनहिं सरीरा॥
बहुत काल बीते महि पाला।
ग्रसेउ आइ दिन काल कराला॥
तिहि अवसर विमान यक आवा।
नाना मनि गन रचित सुहावा॥
सुघर अपछरा सेवहिं ताही।
रूप रासि दामिनि दुति जाही॥
निकट बिलोकि जानि दुतिकारा।
चढ़े विप्र उर हर्ष अपारा॥
कंचन गिरि के सिखर सुहाए।
कीन्ह बिहार जाइ मन भाए॥
जंबू नाम वृच्छ जहं राजै।
अति उतंग निरखत दुति भ्राजै॥

दोहा

तिहिं ते प्रगटी सरित वर, जांमवती अस नाम।
दिव्य हेम जिमि पंक कौ, अभरन धरि सुर वाम ॥११॥

चौपाई

तिहि तट बसै महा मुनि वृंदा।
करहि विविधि तप सहित अनदा ॥
कोउ त्रिकाल सध्या अनुसरही।
वेद विहित निजु धर्महि करही ॥
सात्वक द्विज तह बिविध प्रकारा।
लिये अपछरनि करहि बिहारा ॥
काम बिबस उर रहा न ग्याना।
वैभव निरखि प्रगट अभिमाना ॥
जामवती तट मुनि तप धामा।
संध्यादिक सब करहि अकामा ॥
तिन सनमुख दिन प्रति द्विज सोई।
बैठि दंभ जुत मुनि कर जोई ॥
परसहि गात, करहि इमि हाँसी।
एक दिवस लगि मुनि तप रासी ॥
दीन्ह श्राप करि कोप अपारा।
राच्छस होहु कुमति आगारा ॥

दोहा

तब सात्वक अकुलाइ उर, गहि पद बचन उचार।
मुनि कृपाल कीजे कृपा, मैं खल अघ आगार ॥
बोले हरषि रिषीस तब, क्रोधावेस बिहाइ।
जब आवहि श्री राम-हय, ग्रसियो ताहि बनाइ ॥

राम चरित सुनिहौ जबै, तब छुटिहै मम स्राप।
होइहौ मुक्त अवस्य तुम, श्री रघुनाथ प्रताप॥

सोरठा

भयौ निसाचर घोर, सात्वक नाम सुविप्र इमि।
तिमि हय ग्रस बर जोर, बरनहुँ प्रभु जस छुटहि सो॥१२॥

इति श्री पद्म पुराणे पाताल षंडे सेष वात्सायन संवादे,
मधुसूदन दास कृते, स्राप मोचनं नाम सप्तचत्वारिंसोध्यायः॥४७॥

हय-मुक्त

दोहा

सौनक मुनि मुख बचन सुनि, लवनांतक तिहि काल।
चरनि वंदि बोले तबै, विस्मय हृदय बिसाल॥

चौपाई

नाथ कर्म गति गहन अपारा।
अति बलवान सकल संसारा॥
तप-निधान द्विज सात्वक नामा।
करत भोग बहु लहि सुखधामा॥
पुनि जिहि कर्म निसाचर कीन्हा।
प्रथम पुन्य फल दलि दुख दीन्हा॥
तुम महर्षि विज्ञान - निधाना।
गहन कर्म गति करहु बखाना॥
किहि अघ कवन नरक नर लहई।
सकल कहौ मोहि जेहि स्रुति कहई॥

सुनि सौनक बोले हरषाई।
रघुकुल मनि तुम धन्य बनाई।।
जदपि विस्व पर बुद्धि तुम्हारी।
सदा सुद्ध परमोद बिहारी।।
बूझहु तदपि जगत हित लागी।
तुम उदार दीनन अनुरागी।।

दोहा

बिविधि कर्म गति कहौ मैं, अति बिचित्र जग माहि।
श्रवन करत महिपाल मनि, होइ मोक्ष सक नाहिं।।१।।

चौपाई

पर-धन पर-सुत पुनि पर-नारी।
हरहिं मोह बस जे अबिचारी।।
तिन कहं जम - किंकर बलभारी।
बरबस काल फाँस मैं डारी।।
नरक · अंध तामिस्र कराला।
जाइ निपातहि ताड़ि विसाला।।
वर्ष सहस लगि रह तिहि माहीं।
बहु प्रकार त्रासहि, सक नाहीं।।
भोगि सकल अघ - फल समुदाई।
सूकर जोनि होइं पुनि आई।।
तहाँ दुक्ख लहि बिविधि प्रकारा।
पावहि बहुरि मनुज अवतारा।।
दुष्ट रोग संजुत तन होई।
अपजस करै लोग सब जोई।।
जे नर भूत द्रोह नित करहीं।
केवल निज कुटुंब कहं भरहीं।।

दोहा

तिनहिं त्रास दै बिबिध बिधि, जम किंकर अति घोर।
निरय अंधतामिश्र बिच, डारि देहि बरजोर ॥२॥

चौपाई

बृथा जीव-बध जे नर करहीं।
रौरव नर्क जाइ ते परहीं॥
पुनि जे अजितेन्द्री अघ रासी।
स्वाद हेत खल कुमति प्रकासी॥
बधैं जीव करि आमिष भोगा।
महा मंद ते जानहु लोगा॥
धर्मराज आयस अनुसारा।
तिन पर जम-भट कोपि अपारा॥
नाना बिधि करि ताड़न भारी।
समन पास करि बांधि प्रचारी॥
निरखि महा रौरव बिख्याता।
करहिं निपात जाइ सुनु ताता॥
पितु बिरोध जे निरत निदाना।
पुनि सतत करि द्विज अपमाना॥
तिनहिं सुनौ किंकर बिकराला।
बिविधि भाँति हति करहिं बिहाला॥

दोहा

घोर नरक विख्यात अति, काल सूत्र जिहि नाम।
जो जन अयुत प्रनाम महं, सुनहु भूप बलधाम ॥३॥

चौपाई

बरबस तहाँ निपातहिं जाई।
बिपुल काल लगि बास कराई॥

धेनु बिरोध करहि खल जेई।
परें आइ इहि नरकहिं तेई॥
रोमावली तासु तन जेती।
बसें सहस्र वर्ष अति तेती॥
जे महीप दुर्मति जग माहीं।
नीति सास्त्र पथ निरखत नाहीं॥
बिनु अघ करहि प्रजा पर दंडा।
ताड़नि पुनि भू-सुरनि प्रचंडा॥
सूकर मुख इक नरक कराला।
परै तहाँ खल बिपुल बिहाला॥
काल मुखी जम भट भयकारी।
तिनहिं निपातहि तासु मझारी॥
बिविधि त्रास तहं भोगि बनाई।
मंद जोनि तहं प्रगटहि आई॥

दोहा

बिप्र बृत्ति महि वित्त जग, हरहिं स्व बल करि जोइ।
तथा धेनु कहँ वत्स-जुत, त्रासहि धन हित सोइ॥४॥

चौपाई

ते खल अंध कूप मै जाई।
परें अधोमुख दुख अधिकाई॥
अवर सुनहु रिपुदहन सुजाना।
मधुर वस्तु छिपि खाइ निदाना॥
भोगहु आपु स्वाद हित लागी।
देव सुहृद बिहित हत भागी॥
तिनहि पकरि जम भट बरजोरा।
क्रिमि भख निरय डारि अति घोरा॥

ताड़न करि लिहि बिविधि प्रकारा।
सदा करावहिं कृमि आहारा॥
पुनि जे सठ बिनु आपद काला।
हरहिं कनक पर लोभ बिसाला॥
दूसर ब्रह्म अंस अप हारी।
हतहिं इनहिं जम - भट भयकारी॥
दंस नाम यक नरक प्रचंडा।
परैं तहाँ लहि त्रास अखंडा॥

दोहा

जे पोखै निजु गात नित, परिहरि सब परिवार।
पुनि जे खल पर तियनि महं, नारि-भाव-संचार॥५॥

चौपाई

तिनकौ धरि बरबस जम दूता।
ताड़न सब बिधि करैं बहूता॥
कुंभीपाक नरक बिख्याता।
दारुन तप्त तेल निधि ताता॥
अधो बदन करि करहिं निपाता।
बसै वर्ष बहु अति बिलखाता॥
जे नर बरबस श्रुति - पथ खंडे।
तजि सु धर्म बामन पग मंडे॥
बैतरनी सरि ते खल परहीं।
रुधिर मास तहं भच्छन करहीं॥
अवर सुनहु जे लघु मति कामी।
होइ तनय हित वृषलो गामी॥
ते खल पूय कुंड करि बासा।
बिविधि प्रकार लहैं तहं त्रासा॥
प्रगटि दंभ जे कुमति निदाना।
वंचत जगहिं, न वेद प्रमाना॥

दोहा

सकल त्रासप्रद नरक यक, बैसानन तिहि नाम।
मिलहि हलाहल असन तह, सपनेउ नहि बिश्राम ॥६॥

चौपाई

बिकट समन - किकर रघुराई।
ताड़न करि तिहि डारहि जाई॥
जे सठ अधम वाम अनुरागी।
कं कुलीन तिय रति हत भागी॥
रेतु कुंड मै ते अघ मूला।
करहि निवास लहै बहु सूला॥
प्रगटै तहाँ छुधा अतिभारी।
रेत पान सोइ करै दुखारी॥
सुनहु सत्रुघन भूप उदारा।
जे जग चोरि कुमति आगारा॥
अनल लगाइ देइ खल जेई।
करि विस्वास गरल प्रद तेई॥
लूटहि भवन ग्राम जे मदा।
पर अनहित तिनको अघ कदा॥
तिनहि प्रेत पति भट बिकराला।
बाधै बिबिधि, करै बेहाला॥

सोरठा

सारमेय अस नाम, नरक घोर बिख्यात जग।
बिबिधि सूल को धाम, परै जाइ ते मंद मति ॥७॥

चौपाई

मृषा साखि जे भरहि बिमूढ़ा।
पुनि पर-वित्त हरहिं जे गूढ़ा॥

सूची बदन नरक ते परहीं ।
तहाँ घोर बृक भच्छन करहीं ॥
विविधि त्रास बहु बिधि करि भोगा ।
प्रगटहिं मंद जोनिजुत रोगा ॥
स्वाद हेत जे मंद अभागे ।
सुरा पान मँह अति अनुरागे ॥
लोह दाहि करि तोय समाना ।
जम - भट तिनहिं करावैं पाना ॥
करहि मूढ़ जे गुरु अपमाना ।
निजु विद्या आचार भुलाना ॥
कोपि निसक प्रेत अति दूता ।
बाँधि तिनहिं दै त्रास अहूता ॥
छार नाम इक नरक प्रचंडा ।
करहिं निपातन करि वपु खंडा ॥

दोहा

दुसह दुःख भोगहिं तहाँ, छिन - छिन गरहि सरीर ।
सुमिरि-सुमिरि अपराध निजु, रोदन करहिं अधोर ॥८॥

चौपाई

जो विस्वासघात जग करहीं ।
वेद धर्म पुनि चित्त न धरहीं ॥
तिनकौं मिलहिं सूल बिकराला ।
जिहि ते छुटहिं अनल - कन - माला ॥
जे संतत करि पिसुन पराई ।
तिनकी गति मैं कहौ बुझाई ॥
सब तै कठिन नरक यक ताता ।
दुंद सूल जग मै बिख्याता ॥

परै जाइ तहँ ते कुबिचारी।
डसहि भुजंग प्रलय विषधारी॥
इहि विधि अमित नरक नृप जानौ।
मैं तुम सन किहि भांति बखानौ॥
जे जस पाप करैं जग माही।
ते तस नरक लहैं, सक नाहीं॥
जिन रघुपति जस सुनै न काना।
पर उपकार न जिन मन आना॥

दोहा

सकल नरक महं परै ते, सहैं महा दुख जाल।
प्रेतराज भट हतहि बहु, छुटै नरक बहु काल॥६॥

चौपाई

जे नर इहाँ अनंद बिलासी।
ते जन जानहु सुर पुर बासी॥
जे अति दुखित सदा तन रोगी।
जानहु तिनहि निरय रस भोगी॥
वात्सायर्न यह सुनि रघुराई।
छिन - छिन कपन लगे बनाई॥
जोरि जलज - कर बोले बानी।
विस्व हेत संसय रस सानी॥
कहौ कहा मुनि मोहि बुझाई।
त्रिकालग्य तुम जन सुखदाई॥
किहि अघ कवन चिन्ह तन होई।
करि बिस्तार बखानहु सोई॥
सुनि सौनक बोले हरषाई।
महाराज मैं कहौ बुझाई॥
प्रथमहिं कीन्ह सुरा जिन पाना।
ते खल भोगि नरक दुख नाना॥

दोहा

तदनंतर ते कुमति निधि, धरहिं गात जब आनि ।
स्याम दसन पावहि तहाँ, तात सत्य जिय जानि ।।१०।।

चौपाई

भक्ष्याभक्ष असन जिन कीन्हा ।
जग प्रसिद्ध यह तिन कर चीन्हा ।।
गुल्म रोग तिहिं जठर मझारा ।
प्रगट होत अपजस आगारा ।।
पुनि जे नर अविवेक निसाना ।
रितुवंती तिय जानि निदाना ।।
तासु पानि परसत दिन तीनी ।
करहि असन नहिं धर्महि चीनी ।।
तिनके उदर माहिं कृमि होई ।
बरनहु अवर सुनहु मुनि सोई ।।
अधम नारि करि पाक बनावा ।
करहिं असन जे ग्यान न आवा ।।
मंद गंध तिनके तन आवे ।
संगम करत चित्त भ्रम पावै ।।
जे सुपाक करि विविधि प्रकारा ।
हरि अर्पन बिनु करहिं अहारा ।।

दोहा

घोर रोग तिनके जठर, प्रगट होइ नरनाथ ।
महा ब्याधि बस कुमति तं, सदा धुनहि निज माथ ।।११।।

चौपाई

जे पर पाक विदूषन रहही ।
दुष्ट सील पापनि संचरही ।।

तिनके जठर अनल भव मंदा।
करहि असन नहि सहित अनंदा॥
प्रानिन गरल देइ बल जोई।
छरद रोग तिनके तन होई॥
जो मारग नासहि जग माहीं।
तिनके चरन रोग सक नाहीं॥
करहिं सदा जे पिसुन पराई।
कास स्वास रोगहि ते पाई॥
जे जग वंचक कपट निधाना।
अपसमार लहि रोग निदाना॥
त्रासहिं जे जीवन संसारा।
सदा सूल तिन गात मझारा॥
दावानल जे देहि लगाई।
तिनकर चिन्ह कहौ समुझाई॥

दोहा

गुद मग स्रोनित स्रवहिं ते, दिन - दिन कृसहिं सरीर।
चिंता मगन रहै सदा, उदर होइ अति पीर॥१२॥

चौपाई

गर्भ - निपात करहि बर जोई।
कोढ़ादिक तिनको तन होई॥
पुनि जे सठ प्रतिमा कर खंडा।
ते पावहि जग अजस प्रचंडा॥
जिनहिं सदा कटु - बचन पियारा।
होइ भंग तन ते संसारा॥
जे निंदक पुनि अवगुन धामा।
तिनके सीस केस नहिं जामा॥

जे जन सभा माझ रघुराई।
मृषा पक्ष हठि करहिं बनाई॥
तिन कर पक्षघात अति होई।
दारुन त्रास सहै जग सोई॥

दोहा

अवर सुनहु श्रो सत्रुघन, जे नर कहि पर हास।
ते अपि कानै होइ जग, कुनखी कुमत निवास॥१३॥

चौपाई

नृप पर ताम्र चुरावहि जोई।
थाथी तासु गात मै होई॥
पुनि जे सठ पर काँस चुरावै।
सित सरीर ते जग में पावै॥
पीतरि चोर चिन्ह जग जाना।
सिर कच पिंगल होइ निदाना॥
जिन पर सीस हरा महिपाला।
अध सीस तिहिं होइ कराला॥
पर घृत हरहि लोभ बस जोई।
मद रोग तिनके दृग होई॥
हरहिं त्वचा जे जन मति हीना।
होंइ थूल ते अति बल छीना॥
जे नर मधु अप हरहि परावा।
अति कुगधि तिनके तन आवा॥
लोह चोर गति कहौं बुझाई।
तिहि तन बन्नफ होइ बनाई॥

दोहा

तेल चुरावनहार जन, जब जग धरहिं सरीर।
तब तिनके अंसन विषै, प्रगटहि दारुन पीर॥१४॥

चौपाई

जिन हरि सौज चोरि जग खाई।
तिनकी जीह रोग अधिकाई ।।
बिगत दसन ते होइ बनाई।
पुनि जे स्वाद हेत रघुराई ।।
भोगहि गृह पकवान चुराई।
तिनके चिन्ह कहौ सब गाई ।।
उपजै जीह रोग जुत सोई।
हरषित भोजन करै न जोई ।।
मातु गमन जे करहि मलीना।
ते जग प्रगटहि लिग बिहीना ।।
जे गुरु तिय गामी अघ मूला।
मूत्र करत ते पावहि सूला ।।
पुनि निजु सुता निरत जे कामी।
रक्त कुष्ट ते पावहि बामी ।।
जे सठ स्वामि नारि अनुरागी।
होइ दादु जुत सो हत - भागी ।।
अवर एक सुनियै रघुराऊ।
जिन निज गृह सौपे सति भाऊ ।।
वात्सायन मुनि सुनहु सचेता।
अवर सुनहु ज पाप समेता ।।

दोहा

तिन की तिय सन करहि रति, जे नर अस अघ खानि।
ते जब धरहि सरीर जग, गज इव त्वच पहिचानि ।।१५।।

चौपाई

जननि - भगनि रति लघु मति जोई।
दाहिन तन ताके ब्रन होई ।।

मातुल - बाम गमन जे करई।
धर्मराज भय हृदय न धरई।।
सो अपि भोगि नरक दुख नाना।
पुनि सरीर जब लहै अयाना।।
बाम अंग व्रन दारुन होई।
बरनहुं अवर सुनहु मुनि सोई।।
जो निजु जनक - बंधु - तिय माहीं।
करहिं गमन उर संकहि नाहीं।।
होइ कुष्ट तिहि कठ मझारा।
अपजस करै सकल संसारा।।
मति - वाम सन बिहरहिं जोई।
महा पोच जानहु हिय सोई।।
करहिं काम बस बिपुल विवाहू।
जियं न नारि होइ अति दाहू।।

दोहा

जे खल कुमति स्वगोत तिय, रमहि न करहि बिचार।
रोग भगदर होइ तिहि, सकल दुक्ख आगार।।१६।।

चौपाई

जे सुसील जग तापस वामा।
पति देवता सकल गुन धामा।।
तिनहि वचि जे करहि बिहारा।
भोग नरक सो बिविधि प्रकारा।।
बहुरि सरीर धरै जग माहीं।
रोग प्रमेह होइ सक नाहीं।।
पूजनीय अति बुध जन धामा।
तिय सन रमहि जे पीव सकामा।।

तासु प्रान ब्रन होइ निदाना।
स्वास लेत दारुन दुख नाना॥
जिन दीच्छा दीन्हीं संसारा।
तिन तिय सन जे करहिं बिहारा॥
संतत स्रवहि रुधिर ते लोगा।
बरनन करौं अवर कछु रोगा॥
पुनि जे कुमति स्व जाति बिहारी।
होइ बरन तिहि हृदै मझारी॥

दोहा

अति उतंग कुल बाम सन, जे बिहरहिं मति मंद।
तासु भाल बिच होय ब्रन, बहु कराल दुख कंद॥१७॥

चौपाई

करहि गमन जे पसुनि मझारा।
ते सहि मूत्र घात दुख भारा॥
अमित चिन्ह मुनु भूप सुजाना।
मैं तुम सन किमि करहुं बखाना॥
नरक भोगि जब आवहिं प्रानी।
तब तस रोग होइ तन आनी॥
अैसे नारि चिन्ह पहिचानौ।
जथा जोग अघ फल अनुमानौ॥
जिहि वय माझ कलुप करि जोई।
तिहि अनुमान रोग लहि सोई॥
नाना अघ नाना जग रोगा।
जथा जोग जन पावहि भोगा॥
दान पुन्य जप तप मन सेवा।
नाना ब्रत तीरथ पुनि देवा॥

अघ संघार करं, सक नाहीं।
भूप सुजान काल बहु माहीं॥

दोहा

श्री पति सुमिरन करत छिन, नसै पाप समुदाई।
सत्य - सत्य पुनि सत्य यह, वेद सुमृति अस गाई॥१८॥

चौपाई

राम चरित पुनीत संसारा।
सुनत अखिल अघ करहि संघारा॥
कोटि उपाइ करै किमि कोई।
ईहि विधि कलुष अमूल न होई॥
राम चरित अनंत संसारा।
अति पावन श्रुति सुमृति पुकारा॥
कलुष - पुंज - कुंजर समुदाई।
चरित प्रसिद्ध प्रबल मृग राई॥
महा पाप जग जलधि समाना।
प्रभु जस कुंभज पुनि अनुमाना॥
पुनि उप पाप पुंजर गिरि चंडा।
रघुनायक गुन पवि कर खडा॥
मन सभव अघ तिमिरि अपारा।
नाम दिनेस तेज आगारा॥
तन बच आदि कलुष जग जेते।
जान अजान अपर अघ तेते॥

दोहा

तूल समूल समान ए, रघुपति चरित कृसान।
कहत सुनत समुझत सुजन, पावैं पद निर्वान॥१९॥

चौपाई

श्री रघुनाथ सुजस सुनि काना।
जे खल करि उपहास निदाना॥
बसहिं सदा ते नरकन माहीं।
कलपांतहु अपि उबरैं नाहीं॥
जाहु सत्रुघन सहित समाजा।
तजहु सोच ह्वैहै तुव काजा॥
सब रघुवीर चरित सुखदाई।
बरनहु तुरंग अवनि महं जाई॥
होइहै मुक्त सत्य मम बैना।
इहि बिधि कह सौनक तप अैना॥
सुनि रिपुदहन जोरि दोउ हाथा।
पुलक सरीर नाव पद माथा॥
विविध प्रकार बिनय तब कीन्ही।
पुनि सब सहित प्रदच्छिन दीन्ही॥
सकल मुनिन करि दड प्रनामा।
चला ·कटक अतुलित बलधामा॥

दोहा

सुनि मुनीस तब पवन सुत, कूदि गए हय पास।
क्रम सौं रघुपति चरित सब, बरन्यौ सहित हुलास॥२०॥

चौपाई

पुनि बोले कपि बचन उचारा।
द्विज लहु मुक्ति करौ क्रम वारा॥
श्री रघुवीर चरित्र प्रतापा।
चंड विमान तजै मुनि स्रापा॥
जाहु परम पद हर्ष समेता।
जहं बसि नित्य मुक्त सुख लेता॥

इहि बिधि कहत समीर-कुमारा।
रिपुभंजन आए तिहि बारा॥
तब लगि तजि कुजोनि द्विज सोई।
सनमुख दिव्य बिमानहि जोई॥
तिहि पर चढ़ि उर हर्ष बढ़ाई।
जोरि पाणि कह पद सिरु नाई॥
तुव प्रताप रिपुहन कपिराऊ।
सुनि श्री राम चरित्र प्रभाऊ॥
सब प्रकार मैं पावन भयेऊ।
जाहि परम पद अघ नसि गयेऊ॥

दोहा

अस कहि द्विज पद वंदि पुनि, गए श्रीस आगार।
निरखि चरित हय सुभट सब, बिस्मित भए अपार॥

सोरठा

मख तुरंग तिहिकाल, मधुसूदन उबरतु भयौ।
हरषे सब महिपाल, बिचरहिं ताहि बिलोकि तब॥२१॥

इति श्री पद्म पुराणे, पाताल षंडे सेष वात्सायन संवादे ;
मधुसूदन दास कृते, हय मुक्तो नामाष्ठ चत्वारिंसोऽध्यायः॥४८॥

हय-ग्रहण

दोहा

वात्सायन गह्वर बिपनि, मख हय सकल मझाव।
सप्त मास बीते तहाँ, महा मोद सब पाव॥

चौपाई

कोटिन नृप निज निज दल साजे।
भ्रमहिं बाजि संग सिंधुहि लाजे॥
रिपुसूदन प्रताप चहुं ओरा।
धरि न सकै कोउ हय बरजोरा॥
भरत खंड अवगाहि बनाई।
हिमि गिरि लागि देस समुदाई॥
सीतापति प्रभाव मुनि काना।
मिलहिं पंथ - नृप तजि अभिमाना॥
देस कलिंग अंग पुनि बंगा।
बिपुल ग्राम बहु सैल उतंगा॥
बाजिराज निजु इच्छाचारी।
अवगाहे सब सग दल भारी॥
पुनि नृप सुरथ नगर महं गएऊ।
भवन तासु छबि अति निर्मएऊ॥
परम मनोहर सब सुखधामा।
सुनु मुनि तिहि कर कुंडल नामा॥

दोहा

अदित - श्रवन तें बार यक, कुंडल पर्यो बिहाइ।
तिहि दिन तें ता नगर कर, कुंडल नाम कहाइ॥१॥

चौपाई

सुनहु सूत इहि नगर मझारा।
कबहु न होइ धर्म अपचारा॥
संतत प्रेम सहित नर-नारी।
भजहिं राम सिय काम बिहाई॥
चल दल द्रुम, तुलसिका सुहाई।
गृह-गृह प्रति पूजहिं हरषाई॥
श्री रघुपति-सेवक सब लोगा।
सुद्ध सत्वमय, विषय-बियोगा॥
कनक पंक मनि गन बहुरंगा।
विरचित जहं-तहं भवन उतंगा॥
सियाराम प्रतिमा छवि रासी।
मनिन सहित तिन माहि प्रकासी॥
बिबिधि विभूषन बसन सुहाए।
अंग-अंग प्रति अति छवि छाए॥
कटि निषंग सौरग सर हाथा।
इहि सरूप तहं लखि रघुनाथा॥

दोहा

विधिवत पूजन करहिं जन, कामादिकनि बिहाइ।
शुद्ध चित्त जिय हर्षजुत, नित नव प्रीति बढ़ाइ॥२॥

चौपाई

सदा जीह हरि नाम उचारा।
कलह कथा तजि, करहिं बिचारा॥
राम ध्यान लवलीन सदाई।
मोक्षतादिक कछु जाँचत नाई॥
एक देव तहं श्री रघुनाथा।
कहैं सुनैं सुमिरैं हरि-गाथा॥

प्राकृत बिसन रहित नर नारी।
संतत परमानंद बिहारी॥
तिहिं पुर का किमि करौं बखाना।
भूप सुरथ प्रतिपाल निदाना॥
बचन सत्य नित बोलि नृपाला।
परम बली गुन ग्यान बिसाला॥
रघुपति भक्ति अनन्य बनाई।
चारित्रिक सहित सुनहु मुनिराई॥
सुमिरैं प्रभु-पद हर्ष समेता।
सर्वकाल तजि प्राकृत हेता॥

दोहा

रघुपति सेवन करहि नित, परिहरि आलस मान।
सुरथ भूप पर धर्म रत, मैं किमि करौं बखान॥३॥

चौपाई

तिहिं अवसर सुनु सूत सुजाना।
पुर बाहिर भ्रमि नृप भट नाना॥
तिन रघुनाथ-जग्य-हय देखा।
चंदनादि तन चर्चि विसेखा॥
सुंदर हेम पत्र जुत भ्राजै।
बिरद बरन सजुत अति राजै॥
बाँचि ताहि तिमि बिस्मय माना।
रघुपति-जग्य-बाजि-हय जाना॥
परमानंद-बिबस सब भयेऊ।
पुनि धरि धीर सभा चलि गयेऊ॥
करि प्रनाम हिय हर्ष बढ़ाई।
बोले भूप रजाइस पाई॥

सुनहु भुवाल बचन धरि काना।
पावन अवधि पुरी जग जाना॥
तासु स्वामि श्री राम उदारा।
जड़-जंगम जिहि भजि संसारा॥

दोहा

तिनकर जग्य तुरंग प्रभु, आयौ तुव पुर पास।
बिपुल सूर रच्छा करैं, धरिये सहित हुलास॥४॥

चौपाई

सुनि अस बचन सुरथ महिपाला।
हरष बिबस पुलकित तिहि काला॥
लोचन स्रवन लगे जल-धारा।
ध्यान मगन नहिं गात संभारा॥
पुनि होइ सावधान, धरि धीरा।
बोलेउ बचन परम गंभीरा॥
सुनहु सुभट हम धन्य बनाई।
अतुल कृपा कीन्ही रघुराई॥
सहित समाज बिगत-सदेहा।
निरखहु राम बदन छवि गेहा॥
कोटिन भट रच्छित मख-घोरा।
धरिहौं ताहि अवसि बरजोरा॥
आवेंगे जब श्री रघुनाथा।
तब देहौं हय धरि पद माथा॥
मैं बहु काल कीन्ह प्रभु ध्याना।
अवसि दरस देहैं भगवाना॥

दोहा

अस कहि सुरथ मुनीस सुनु, हय लगि भटनि पठाव।
नगर निकट तिन जाइ धरि, बाजि-राज लै आव॥५॥

चौपाई

रघुपति तुरंग निरखि महिपाला ।
पुलकि गात कहि बचन रसाला ।।
सुनहु सकल येहि बाजि प्रभाऊ ।
परम लाभ होइहै सब काऊ ।।
रामचंद्र - पद - कंज - उदारा ।
दुर्लभ अज शिवादि ससारा ।।
ते पद भरि लोचन मन भाए ।
करिहौं अवलोकन छवि छाए ।।
धन्य जीव सोई संसारा ।
पसु पुत्रादि सुजन परिवारा ।।
रघुनायक सरनागत जोई ।
तन मन बचन बिगत - छल होई ।।
वरहु बाजि अस हृदय बिचारी ।
स्वण - पत्र सोहत मनुहारी ।।
सुनि नृप बचन सुभट हरषाई ।
बाजि - साल हय बाँधि सजाई ।।

दोहा

दुगम थल अनुमानि जिय, सोधि जतन हय राख ।
रघुनायक के दरस लगि, सब के उर अभिलाष ।।६।।

चौपाई

राम - जग्य - हय पाइ भुवाला ।
हृदय मानि आनद बिसाला ।।
वात्सायन मुनि, सुनि मन लाई ।
नृप नित प्रजहि कहै समुझाई ।।
पर तिय - निरत होहु जनि कोई ।
तजि सब विषय धर्म - पथ जोई ।।

जनि सपनेउ पर - धन चित धरहू।
मारि विवस पुनि मति कति करहू ।।
जीह द्वार रघुपति गुन - ग्रामा ।
संतत कहौ, सुनहु सह बामा ।।
एक नारि ब्रत धरहु सदाई।
पर - अपवाद तजहु विषताई ।।
अवर सुनहु श्रुति - पंथ बिहाई।
भूलि न चलहु कहौं सभुझाई ।।
विधिवत विष्णु चक्र दर दोऊ।
बाहु मूल धारहु सब कोऊ ।।

दोहा

राम भक्ति नव विधि बिदित, नित्य धाम को दानि ।
बिगत - मान, सब काम तजि, करहु सुधर्महिं जानि ।।७।।

चौपाई

संख चक्र प्रभु सरन बिहीना ।
जे सठ मम पुर बसहिं मलीना ।।
बृद्ध तरुन सिसु पुनि नर - नारी।
कौनहु बरन होइ कु विचारी ।।
तासु काज जानहु मुहि भाई।
करिहौं पुर तें बिमुख बनाई ।।
कहौं सकल जन कपट बिहाई।
इहि मग निरत करहिं तब भाई ।।
सुनु मुनि इहि विधि सुरथ नरेसा ।
सभा मध्य नित करि उपदेसा ।।
सपनेउ तिहि के नगर मझारा ।
कोउ न करै पाप संचारा ।।

सदा करहिं सब रघुपति ध्याना।
बड़ भागी नहिं अघ अभिमाना॥
जे जन तिहिं पुर तजै सरीरा।
ते लहि मुक्ति भंजि भव - भीरा॥

दोहा

सूत सुनहु जम - राज - भट, अति कराल जग जान।
कबहुं न करै प्रवेस ते, भुगति नगर निदान॥८॥

चौपाई

धमराज करि हृदय बिचारा।
एक बार मुनिवर तनु धारा॥
अजिन वसन सिर जटा बिसाला।
तप करि मनहु उठे ततकाला॥
सभा माहि तिन कीन्ह प्रवेसा।
विद्यमान जह सुरथ नरेसा॥
श्री जुत पुंड भाल मह देखा।
जीह जपत हरि नाम विसेखा॥
श्री तुलसी सरसिज मनि माला।
अवलोकी नृप हृदय बिसाला॥
करत सबनि उपदेस पुनीता।
सियाराम गुन चरित सप्रीता॥
उहाँ सुरथ मुनिवर कह देखा।
जनु तप मूरति धरे विसेखा॥
सादर उठि प्रनाम तब कीन्हा।
अरघ पाद्य दै पूजन दीन्हा॥

दोहा

वेद विहित आतिथ्य करि, मुदित निरखि आसीन।
बोले मुनि सन भूप तब, बचन सकल छल हीन॥९॥

चौपाई

तुव दरसन प्रभाव मुनिकेतू।
भा पुनीत मै वंस - समेतू ॥
सकल समाज धन्य भा आजू।
नाग बाजि धन भट पुर राजू ॥
अब रघुपति - जस करहु बखाना।
जो पद - पद प्रति हर अघ नाना ॥
इहि विधि भूप गिरा सुनि काना।
सभा मध्य पुनि हसे निदाना ॥
रद उघारि जुग पानि बजाई।
लखि - लखि नृपहिं हाँसि अधिकाई ॥
विस्मय मानि कहा महिपाला।
केहि कारन मुनि हंसे बिसाला ॥
सकल जथारथ करहु बखाना।
करि प्रसाद निजु कृपानिधाना ॥
अस सुनि मुनि बोले तिहिं काला।
हास्य हेत मै कहौ भुवाला ॥

दोहा

प्रथमहिं बरनन कीन्ह तुम, हरि गुन कहौ बखान।
को हरि, पुनि तिहिं गुन कहा, यह केवल अज्ञान ॥६॥

चौपाई

कर्म प्रधान सकल संसारा।
आदि अंत पुनि मध्य मझारा ॥
कर्महिं तैं जन स्वर्गहि पावै।
कर्म बिबस सब नरक सिधावै ॥
पुत्र पौत्र आदिक परिवारा।
अवर सकल संपति बिस्तारा ॥

कर्म प्रभाव लहै सब कोऊ।
सुख - दुख पाप - पुन्य फल दोऊ।।
सत मख करि वासव सुनु भूपा।
पाई अमरावती अनूपा।।
करमहि तैं जग रचै बिधाता।
जाकी कीरति अति बिख्याता।।
रुद्र कर्म बस बसि कैलासा।
अत समस्त विस्व करि नासा।।
ससि रवि अपर रिच्छ नर नागा।
सिद्ध पितर स्वर जीव विभागा।।

दोहा

कम प्रभाव नरेस सुनु, सकल करै सुख भोग।
प्रगटहि पालहि हरहि जग, केवल कम सजोग।।१०।।

चौपाई

जग्यादिक अस करहु बिचारी।
अर्चहु सकल सुरनि भ्रम टारी।।
येहि तें कीरति बिमल तुमारी।
होइहै बानी सत्य हमारी।।
वात्सायन इमि सुनु नृप बानी।
मुनि सन कहा महा रिस आनी।।
कर्म कथा परिहरु मुनि मदा।
नस्वर फलदायक दुख कदा।।
जाहु बेगि मम नगर बिहाई।
हरि - पद – बिमुख कुमति अधिकाई।।
तो सगति लहि मम पुर वासी।
हुइहैं निजु - निजु कुमति निवासी।।

साधु जानि मैं कीन्ह प्रनामा।
अब पहिचानि निपट अघ धामा॥
कहा कर्म फल तुच्छ बखाना।
मैं बरनहुं अब सुनि धरि काना॥

दोहा

भोगि वर्ष सत आयु बिधि, पतन होइ श्रुति गाव।
पुनि इन्द्रादिक अमर सब, गिरहिं महा दुख पाव॥११॥

चौपाई

अब लखु रघुपति भक्ति प्रभाऊ।
सब विधि प्रबल बिदित सब काऊ॥
प्रथमहि ध्रुवहि निरखु इहि काला।
पावा अविचल धाम बिसाला॥
पुनि प्रहलाद चरित्र सुहावा।
पावन तिहू लोक मैं छावा॥
अवर विभीषन भजन प्रतापा।
अचल राज पावा बिनु तापा॥
निरखु अपर - हरि - सेवक जेते।
कबहु न पतन होइ जग तेते॥
जे खल हरि - निदक अभिमानी।
महा मंद - मति अवगुन खानी॥
धर्मराज भट कोपि अपारा।
तिनहि बधैं धरि पास मझारा॥
नरक जातना बिविधि प्रकारा।
बरबस देहि न करैं बिचारा॥

दोहा

रे द्विज अधम अधर्म रत, विप्र गात तुव देखि।
देह - दड नहि करहुँ मैं, अब तजु नगर विसेखि॥१२॥

चौपाई

नाहित ताड़न करौ कराला।
तुम हरि सेवक बुद्धि बिसाला॥
इहि विधि सुनि सरोष नृप बानी।
उठे बिपुल अनुचर खल जानी॥
मुनिहि भुजन मह धरि बरिआई।
लिय उठाइ अति खल की नाई॥
धर्मराज तब कपट बिहाई।
निज सरूप प्रगटो मुनिराई॥
मैं प्रसन्न बरु माँगु नृपाला।
तुम हरि - सेवक बुद्धि बिसाला॥
मै कहि कम लोभ उपजावा।
परम धीर तुम मनु न चलावा॥
सुनि महीप बोले तिहि काला।
धर्मराज कह निरखि दयाला॥
जो प्रसन्न मोपर सब भाँती।
तौ बर देहु दुष्ट - आराती॥

दोहा

जब लगि मै रघुपति दरस, लहौ न बस - समेत।
तब लगि छुटहि न गात मम, यह बरु देहु सहेत॥१३॥

चौपाई

धर्मराज यह मुनि हरषाई।
बोले बचन सरल सुखदाई॥
तुम मन - काम सकल सुनु राऊ।
सुफल होइ श्री राम प्रभाऊ॥
सभा बहुरि इमि दै बरदाना।
भए बहुरि जम अतरध्याना॥

वात्सायन सोइ सुरथ भुवाला।
रघुपति अस्व पकरि तिहि काला॥
निज सुभटन सन बचन उचारा।
अति गंभीर उर हरषि अपारा॥
मैं श्रीराम - जग्य - हय बाँधा।
सजहु सकल भट करि रन साधा॥
सुनि नृप बचन सबनि मन भाए।
सजि - सजि सकल सभा चलि आए॥
भूप - तनय दस अति बलवाना।
तिनके नाम सुनहु दै काना॥

दोहा

चपक, मोहक, रिपुंजय, भूरि देव, सहदेव।
बल मोदक, हरि यक्ष, पुनि, जानहिं सब रन भेव॥१४॥

चौपाई

अष्टम तनय 'सुतापन' नामा।
नवम 'प्रतापी' अति बल धामा॥
दसम पुत्र 'दुर्वारि' प्रचंडा।
सजे समर लगि सब बलमंडा॥
सुरथ निदेस पाइ तिहि काला।
साजन लगी चमू बिकराला॥
रथ अनेक मनि हेम बनाये।
सजे सारथिन अति छवि छाये॥
अति बिसाल कुंजर समुदाई।
बिबिधि भाँति तहं सजे बनाई॥
मरुत लजावन बाजि बरूथा।
पुनि अनेक सुभटनि के जूथा॥

सकल भाँति करि समर – बनावा।
सजि - सजि तन उत्साह बढावा ॥
चहुँ दिसि निरखि परै कटकाई।
कवन प्रकार कहौ मुनिराई ॥

दोहा

सकल जूथपनि हरषि हिय, मधुसूदन तिहि काल।
जाइ - जाइ बैठ सभा, नाइ भूप पद भाल ॥१५॥

इति श्री पद्म पुराणे, पाताल षडे सेष वात्सायन सवादे, मधुसूदन दास कृते, हय ग्रहन नाम नवचत्वारिसोऽध्याय: ॥४९॥

अंगद-दूत-वाक्य

सोरठा

इन रिपुदहन उदार, सुनु मुनि निजु सेवकनि सन।
बचन गभीर उचार, क्ह्यो कहाँ मम जग्य हय ॥

चौपाई

सुनि बोले अनुचर समुदाई।
महाराज कछु कहिय न जाई ॥
हम न मर्म पावा इहि काला।
इहि पुर तें भट आव कराला ॥
बरबस बाजि राज लै गयेऊ।
हमरे बलनि तुच्छ करि दयेऊ ॥
प्रभु उर नीक लाग अब जोई।
प्रमुदित हृदै कीजिये सोई ॥

रामानुज इहि बिधि सुनि काना।
दारुन रोप हृदै महं आना॥
फरकन लगे अधर दृग लाला।
रद सौं रद मर्दित तिहि काला॥
बोले गिरा बीर - रस - सानी।
सुनहु सचेत बीर भट मानी॥
जिहि मम तुरंग हर्यौ इहि बारा।
पुरजन जुत तिहि करौ संघारा॥

दोहा

अस कहि बहुरि सुमंत सन, बोले बचन गंभीर।
कवन भूप कर नगर, धर्यौ अस्व किहि धीर॥१॥

चौपाई

सचिव कोप जुन सुनि इमि बानी।
बोलत भए, सुनहु मुनि ग्यानी॥
तब रानमुख होय नगर सुहावा।
कुंडल नाम महा छबि भावा॥
सुरथ नाम नृप पालन हारा।
निरत धर्म - पथ बल - आगारा॥
रघुपति चरन जुगल छवि - धामा।
संतत भजहिं त्यागि सब कामा॥
तन मन बचन राम - पद - लीना।
जिमि हनुमान अनन्य प्रवीना॥
इहि के धर्म चरित जग भूरी।
सुनतहिं करै अमंगल दूरी॥
संग अपार कटक चतुरंगा।
अति दारुन संग्राम अभंगा॥
घोर जुद्ध होइहै इहि खेता।
परिहैं बहु भट धरनि अचेता॥

दोहा

जोपि जग्य हय धरो नृप, तौ होइहै रन घोर।
सत्य – सत्य पुनि बचन मम, सुरथ महा बरजोर ॥२॥

चौपाई

सचिव बचन इहि बिधि सुनि काना।
पुनि बोले रिपुदहन सुजाना॥
कहौ सुमंत सोधि इहि काला।
जग्य - बाजि किमि आव रसाला॥
हमहि कहा कर्तव्य निदाना।
समुझि देखु जो सब मन माना॥
प्रथमहिं सुनौ महा महिपाला।
सोधि दूत यक चतुर बिसाला॥
पठवहु नगर भूप के पासा।
सकल नीति तहं करै प्रकासा॥
इहि उपाइ जो आव तुरंगा।
तौ किमि करिय नाथ रन - रंगा॥
जौपि धरा हठि करि अनुमाना।
तौपि जुद्ध तुम करौ निदाना॥
वात्सायन सुनि सुमत सु बानी।
राम - बंधु बोले अस जानी॥

दोहा

सचिव गिरा इहि भाति सुनि, रिपुसूदन तिहि काल।
अगद सन बोलत भए, बचन बिनीत रसाल ॥३॥

चौपाई

तात जाहु नृप - सभा मझारा।
तुम बल बुद्धि नीति अगारा॥

कहो सुरथ सन बचन बुझाई।
तुम केहि भाँति धर्यो हय - राई॥
हृदय जानि अथवा बिनु ज्ञाना।
करहु जुद्ध कै मिलहु निदाना॥
जिमि तुम प्रथम लंक महं जाई।
रघुपति काज कीन्ह हरषाई॥
तिहिं प्रकार तुम बुद्धि - निधाना।
करहु बसीठी सोधि निदाना॥
बालि - तनय अस सुनि सिरु नावा।
प्रभु - प्रसाद कहि आनंद छावा॥
इत उत लखत सिंह की नाहीं।
तुरत गए कुंडल पुर माहीं॥
पुर सोभा निरखत चहुँ पासा।
पहुँचे सभा समेत हुलासा॥

दोहा

वीर मंडली मध्य कपि, सुरथ भूप कंह देख।
रतन सिंघासन पर लसत, धरे मनोहर वेष॥४॥

चौपाई

श्री तुलसी - मंजरी पुनीता।
प्रभु प्रसाद सिर धरे सप्रीता॥
सोहत उर्द्ध पुंड बर भाला।
हिरदै कंज तुलसिका माला॥
संख - चक्र भुज मूल बिराजै।
पुनि बर बसन विभूषन साजै॥
निज मुख रामचन्द्र गुन ग्रामा।
सबहि सुनावत जात अकामा॥

उहाँ भूप अंगद कहँ देखा।
जाना रिपुहन - दूत विसेखा॥
बोले बचन कहौ करि - राजू।
आए इहाँ कहौ केहि काजू॥
निज कारन सब करहु बखाना।
पुनि मैं करब आपु मन माना॥
बालि - तनय अस सुनि मुनिराई।
बहुरि बिलोकि भक्ति - अधिकाई॥

दोहा

अति विस्मय मानेउ हृदै, पुनि बर बचन उचारि।
सुनहु भूप मैं बालि - सुत, अंगद नाम बिचारि॥५॥

चौपाई

रघुपति - बंधु सत्रुहन नामा।
नृपति सिरोमनि अति बलधामा॥
तिन मोहि तुम समीप पठवावा।
सुनियै अब सदेस जो ल्यावा॥
जग्य अस्व कोउ सुभट तुमारा।
धरि लावा तुव भवन मझारा॥
बिनु जाने जो धरा नृपाला।
तौ तजि मान, सुनहु इहि काला॥
सकल राज सुत बाजि समेता।
परहु चरन, करिहैं प्रभु हेता॥
जौ न मान - बस मिलिहौ जाई।
सुनहु भूप तौ कहौ बुझाई॥
कोपि सत्रुघन तजि सर चंडा।
सैन सहित तब सिर करि खंडा॥
जिन लंकेस निमिष महं मारा।
तिहि हय धरि कित प्रान उबारा॥

दोहा

सुनि अंगद के बचन इमि, बाले सुरथ नृपाल।
मृषा न कीन्ह बखान कपि, तदपि सुनहु येहि काल ॥६॥

चौपाई

रघुपति बाजि धरा हम जानी।
मानहुं हृदय सत्य मम बानी॥
तुम रिपुदहन त्रास अति गाई।
मैं न तजहुं हय, करहुँ लराई॥
जब रघुवंस - विभूषन रामा।
देहैं दरस आइ मम धामा॥
तब मैं धरि पद - पंकज भाला।
देहौं जग्य - तुरंग रसाला॥
सकल राज धन धाम समेता।
पुनि सब बंस कटक मम जेता॥
हम निज छत्री धर्म संभारी।
कीन्ह बिरोध निसंक बिचारी॥
तदपि दरस देहैं भगवाना।
वेद स्वधर्महि प्रबल बखाना॥
सत्रुघनादि सुभट तुम जेते।
जीति सबनि मैं कटक समेते॥

दोहा

पुनि बंधन जुत जतन करि, राखौं दुर्ग मझार।
श्री रघुपति आगमन बिनु, तजहुं न, सत्य उचार ॥७॥

चौपाई

अंगद सुनि अस बचन निसंका।
बोले बिहंसि बीर अति बंका॥

तुम नृप बुद्धि - बिहीन निदाना।
मोह - बिबस जलपहु बिनु ग्याना ॥
अतुलित बल-गुन-निधि प्रभु-भ्राता।
जासु सुजसु तिहुँ पुर विख्याता ॥
तिन्हिं विदूषहु बिगत - बिचारा।
जिमि कोउ डार चंद्र परछारा ॥
लवनासुर खल परम प्रचंडा।
बिन प्रयास जिन कीन्हेउ खंडा ॥
पुनि विद्युनमाली अति घोरा।
जासु प्रताप प्रगट चहुं ओरा ॥
सहित विमान कीन्ह संधारा।
कहु महोप अस को भट भारा ॥
तिनको बंधन करन बखाना।
तुम ते मति - बिहीन नहिं आना ॥

दोहा

अपर सुनहु नृप भरत सुत पुष्कल तिन कर नाम।
बल निधान परमास्त्र-वित, सकल गुनन के धाम ॥८॥

चौपाई

बहुरि कोपि जिन समर मझारी।
बोरभद्र किय व्याकुल भारो ॥
तासु पराक्रम सब जग जाना।
अधिक एक एक तें निदाना ॥
अपर कपीस एक बलवाना।
तिहि समान भूतल नहि आना ॥
मारुत - पुत्र नाम हनुमाना।
तासु चरित्र विदित जग जाना ॥

गिरि त्रिकूट पर रावन ग्रामा।
परम दुर्ग लंका तिहि नामा॥
अच्छ निपाति भस्म करि दीन्हा।
छिन महं अति कौतुक तिहि कीन्हा॥
पुनि तिन द्रोनागिरि लै भारी।
सुरन सहित धरि पच्छ मझारी॥
बिनु प्रयास पुनि-पुनि लै आवा।
कटक जिवाइ तहाँ पहुँचावा॥

दोहा

रामचंद्र पद कंज अलि, अरिगन-विपिनि-कृसान।
स.२: सत्रुघन संघ रहि, अस कपीस हनुमान॥६॥

चौपाई

सुग्रीवादि कपीन्द्र कराला।
ग्रसहिं विगत-स्रम धरहिं बिसाला॥
ते करि रिपुसूदन सेवकाई।
सुनहु अपर भट बल अधिकाई॥
नील रतन, लछिमीनिधि बीरा।
पुनि रिपुदहन भूप रन धीरा॥
सुमद सुबाहु बिमल महि पाला।
अवर प्रताप अग्र बिकराला॥
भूप बीरमनि अति बलधारी।
सत्यवान हरि सेवक भारी॥
अपर अनेक नृपति भट मानी।
सकल समर विद्या की खानी॥
रामानुज पद सेवन करहीं।
हठि सनमुख कालहु सन लरहीं॥

सग चमू चतुरंग अपारा।
छीर समुद्र केर अनुहारा।।

दोहा

तुम नृप मसक समान लघु चाहौ तिन कर पार।
जलपहु मृषा बिमोह बस, करहु न नीति बिचार।।१०।।

चौपाई

अब मम सिख मानहु महिपाला।
तजहु मान, उर हरष बिसाला।।
परहु सत्रुघन चरन मझारा।
सहित जग्य हय सुत परिवारा।।
अति कृपाल रामानुज स्वामी।
करिहैं कृपा निरखि अनुगामी।।
पुनि तुम अवध पुरी महु जाई।
देखि राम - मुख - छवि अधिकाई।।
हुइहौ सहित समाज सनाथा।
बरनी हम तुम हित की गाथा।।
वात्सायन अस सुनि महिपाला।
बोले बचन निडर तिहि काला।।
अंगद तुम निज कटक बखाना।
रिपु सूदन आदिक नृप नाना।।
आजु सबन कर बिक्रम जेता।
भलीभाँति लखिहौ अपि खेता।।

दोहा

परम भक्त हनुमान तुम, हम सन कीन्ह बखान।
ते हय हित आए इहाँ, तजि प्रभु चरन निदान।।११।।

चौपाई

बल - बिहीन तुमरी कटकाई।
सुनु कपि अब मैं कहहु बुझाई॥
जो हम मन बच कर्म बनाई।
भजौं राम पद कपट बिहाई॥
तौ अपि देहुँ न जग्य - तुरंगा।
जब लगि लखहुँ न रघुपति – अंगा॥
नाहित हनुमतादि भट जेते।
धरिहौं प्रभु - प्रताप - जुत तेते॥
को अस परम सूर बल भारी।
जो बरबस हय लेय उबारी॥
जाउ कपीस सत्रुघन पासा।
बचन मोर सब करहु प्रकासा॥
समर - हेत साजहु कटकाई।
मैं आवौं निज सैन सजाई॥
नीक लाग पुनि कीजिय सोई।
तजहुँ न हय, रन मंडहु कोई॥

दोहा

भूप गिरा अस सत्य सुनि, अंगद करि अनुमान।
रामानुज सन आइ पुनि, कीन्हेसि सकल बखान॥१२॥

इति श्री पद्म पुराणे, पाताल खंडे, सेष वात्सायन संवादे,
मधुसूदन दास कृते, अगद दूत वाक्यौ नाम पंचासमोऽध्यायः॥५०॥

पुष्कल-मोचन

सोरठा

सुनि अंगद के बैन, सजी चमू संग्राम हित।
प्रमुदित बल भट ऐन, चढ़ि-चढ़ि रथ गर्जत भए॥

चौपाई

गोमुख भेरि प्रणव समुदाई।
अवर निसान बजे मुनिराई॥
बिविधि भाँति गर्ज सब बोरा।
नाना आयुध धरे सरोरा॥
स्यंदन चक्र घोर चहुं ओरा।
पुनि गज गन तुरंगन के सोरा॥
पूरि गयौ सब विस्व मझारा।
धरनि व्यौम कछु सुनहि न पारा॥
कादर सुनि-सुनि सोर अपारा।
त्रास विवस उर जाइ दरारा॥
अति उत्साह सहित सब बोरा।
बहु विधि गर्जहिं तर्जहिं धीरा॥
सुरथ भूप उत सभा मझारा।
सुन्यौ कुलाहल स्रवनन भारा॥
सकल तनय पुनि कटक समेता।
आए सनमुख समर सचेता॥

दोहा

बहु गज रथ पदचर तुरंग, छिति मंडल गा पूरि।
प्रलय जलधि इव सकल महि, व्यापि गई नभ धूरि॥१॥

चौपाई

निरखि परै चहुं दिसि कटकाई ।
बरनहुं किहि प्रकार मुनिराई ।।
बाजहिं संख बिपुल चहुं ओरा ।
जय जय सब्द करहि अति घोरा ।।
इत रघुनाथ चमू चतुरगा ।
प्रबल असंख्य तुल्य सब अंगा ।।
कसमसाति महि मंडल माहीं ।
जुद्ध - करन - हित हरषित जाहीं ।।
दोउ दल अरस परस तिहि काला ।
निरखि सुमति सन कहा नृपाला ।।
देखहु सुमति नीति आगारा ।
आवा सुरथ साजि दल भारा ।।
उर बिचारि अब बरनहु सोई ।
समय - जोग मोहि करतब जोई ।।
अस सुनि रिपुभजन मुख बैना ।
बोले सुमत ग्यान - गुन - सैना ।।

दोहा

सुनहु महा महिपाल मुनि, कीजिय अब संग्र म ।
तुम्हरे दल महं बिपुल भट, परम सूर बलधाम ।।२।।

चौपाई

पुष्कलादि कहं करहु निदेसू ।
मंडहिं जुद्ध सुमिरि अवधेसू ।।
पुनि हनुमान भूप सन जाई ।
करहिं समर अति बल अधिकाई ।।
सुनु मुनि इहि बिधि सुमति सुजाना ।
रिपुसूदन सन करत बखाना ।।

तब लगि सुरथ - तनय बल भारी।
आए निजु - निजु धनुक संभारी॥
तिनहिं बिलोकि समर महं आए।
पुष्कलादि भट आतुर धाए॥
अस्त्र - सस्त्र धारे बरजोरा।
मिले परस्पर स्यंदन घोरा॥
चपक सन पुष्कल रन मंडा।
दोनौं भट समान बलबडा॥
दुरथ जुद्ध बिरच्यौ भयकारी।
रन मडल सोभित भा भारी॥

दोहा

मोहक सन बिरच्यौ समर, लक्ष्मीनिधि बर बीर।
अवर रिपुंजै सुभट अति, भिरे विमल रन घोर॥३॥

चौपाई

पुनि दुर्वार संग तिहि काला।
कीन्ह समर सुबाहु महिपाला॥
नृपति प्रताप अग्र बलधामा।
रच्यौ प्रतापी सन संग्रामा॥
'बल मोदक' प्रति सुनु मुनिराई।
भिरे बालि - सुत कोपि बनाई॥
अपर सुभट 'हरि यक्ष' सुजाना।
तिहि सन नील रतन रन ठाना॥
पुनि नृप सत्यवान तिहिं काला।
'सहदेवें' संग भिरि बिकराला॥
भूप बीरमनि कोपि अपारा।
'भूरि देव' सन जुद्ध पसारा॥

तनय 'सुतापन' प्रति रन मंडा।
नृप उग्रास रोष धरि चंडा॥
इहि बिधि दुरथ जुद्ध सब करही।
नाना अस्त्र-सस्त्र परिहरहीं॥

दोहा

उहाँ सुरथ - सुत प्रबल अति, इत महीप बलधाम।
बिबिधि अस्त्र पर अस्त्र चलि, भयो घोर संग्राम॥४॥

चौपाई

कोटिन भट तजि-तजि निजु प्राना।
परे धरनि - तल भग्न निदाना॥
दोउ दिसि करहि जुद्ध विकराला।
निरखहि कौतुक नभ सुर जाला॥
तिहि अवसर सुनु मुनि मतिधीरा।
कह चपक सन पुष्कल बीरा॥
धन्य - धन्य तुम भूप - कुमारा।
जो हम सन रन घोर पसारा॥
अब निजु नामहि करहु बखाना।
तिष्ठ - तिष्ठ, किमि राखहु प्राना॥
मम आगे कित जाहु पराई।
तिहि तै जुद्ध करहु मनु लाई॥
सुनि अस भरत - तनय मुख वानी।
बोले चपक अति भट मानी॥
नाम बस तुम हम सन बूझा।
रन - मंडल यह निपट अबूझा॥

दोहा

तदपि कहैं हम नाम निजु सुनहु महा रन धीर।
मम माता रघुबंस मनि, पिता मोर रघुवीर॥५॥

चौपाई

पुनि मम बंधु सुजन परिवारा।
जानहु सर्व सु राम उदारा॥
राम जानकी रघुपति दासा।
सपनेउ तिन बिन आन न आसा॥
लौकिक नाम सुनहु अब मोरा।
जो प्रसिद्ध जग मैं चहुं ओरा॥
सुरथ नाम नृप पितु मम जानौ।
बीरमती जननी अनुमानौ॥
तुमहु कहावत चतुर सभारी।
नाम मोर सुनि लेहु बिचारी॥
सुंदर मधुरितु महंतरू जोई।
है प्रफुल्ल अति सोभित सोई॥
सुमन कनक - इव तासु सुहावा।
मध्य पराग लिग छवि छावा॥
तिहितें निकट सकै नहिं जाई।
मधु मोहित मधुकर समुदाई॥

दोहा

अस जो सुमन प्रसिद्ध जग, सो जानहु मम नाम।
पुनि मो सन कोउ विस्व मह, जीति न सक संग्राम॥६॥

चौपाई

प्रथमहिं तुम यह कीन्ह बखाना।
जुद्ध माहि किमि राखहु प्राना॥
श्री रघुपति करुना गुन सागर।
करिहैं पार प्रनत गुन आगर॥
प्रगटहु अवनि जु बिक्रम जेता।
पुनि मम बल निरखहु इहि खेता॥

इहि बिधि चंपक कीन्ह बखाना।
सुनि पुष्कल उर अति हरषाना॥
निजु मन ताहि अजित अनुमाना।
पुनि कोदंड कीन्ह संधाना॥
कोटिन बान एक ही बारा।
महा कोप जुत कीन्ह प्रहारा॥
तब चंपक उर कोपि कराला।
कर कोदंड चढ़ाइ बिसाला॥
अति तीछन धरि सर समुदाई।
तजे सुनहु मुनि लाघवताई॥

दोहा

हेम-पक्ष रिपु-दल-दहन, पुनि अंकित निजु नाम।
मधु सूदन अहिगन सरिस, चले बान सग्राम॥७॥

चौपाई

भरत-तनय इत आवत देखी।
बिनु स्रम खडम कीन्ह बिसेखी॥
पुनि अपार सर चंड चलावा।
महि अकास दिसि बिदिसि न छावा॥
चंपक निजु सायक लखि खंडा।
बोल्यौ कोपि बीर बलवडा॥
जाहु कहाँ तजि रन बिकराला।
बार-बार अस कहि तिहि काला॥
बहुरि बान दस दारुन त्यागे।
वेगवन्त पुष्कल उर लागे॥
विपुल बिथा व्यापी तन माहीं।
रूधिर - औघ तन प्रगटत जाहीं॥

बान पाँच तब कोपि अपारा।
तानि सरासन कोन्ह प्रहारा॥
अति दारुन जन काल समाना।
उर चपक लागे बहु बाना॥

दोहा

नभ मंडल मह मनहु मुनि, भिरे परस्पर बान।
छिन मै चपक ने करे, सत-सत खंड निदान॥८॥

चौपाई

अवर बान सत कीन्ह प्रहारा।
परम प्रचड ब्याल अनुहारा॥
आवत निरखि भरत - सुत बीरा।
तानि चाप छाड़े निजु तीरा॥
चपक के सर सकल प्रचंडा।
छिन महँ कीन्हे सत - सत खंडा॥
निजु सायक तब निरखि संघारा।
सुरथ - पुत्र उर कोपि अपारा॥
तानि कर्न लगि चापि बिमाला।
तजे सहस्र बान बिकराला॥
भरत - पुत्र अति लाघवताई।
कीन्हे तिन्ह सम खडि बनाई॥
अस अति अद्‌भुत विक्रम देखी।
बोले चपक हरप विसेषी॥
धन्य - धन्य कहि बारबारा।
पुनि अपार सर कीन्ह प्रहारा॥

छंद

पुनि कीन्ह बान प्रहार अगिनित, मनहुँ घन बरषै महा।
सो निरखि भरत-कुमार अपने, हृदै तह धनि-धनि कहा॥

कोदंड बहुरि संभारि कोपि, अपार विधि सर छंडेऊ।
तिहि काल परम कराल ज्वाल, प्रकास दस दिसि मडेऊ॥
निरखत सबन के सकल सर, होइ भस्म छिन महं महि परे।
मुनु सूत प्रलय समान पावक, हेरि जग खरभर भरे॥
उत भूप सुरथ कुमार सायक, घोर आवत देखि कै।
लाघव तज्यौ सोइ बान, तिहि संहार हेत बिसेखि कै॥

दोहा

व्योम मध्य दोउ ब्रह्म सर, भिरे परसपर घोर।
प्रगटी ज्वाल अपार तब, पर्‌यो सकल जग सोर॥६॥

चौपाई

प्रलय काल सब जीवन जाना।
पुनि हुइ सांति परे महि बाना॥
अस अद्‌भुत बिक्रम करि बीरा।
बोले चंपक बचन गभीरा॥
तुम अति कीन्ह पराक्रम भारी।
तिष्ठ-तिष्ठ अब समर मझारी॥
अस कहि कोपि तानि कोदंडा।
तज्यौ राम - सर परम प्रचडा॥
भरत - तनय सोइ आवत देखी।
अति प्रचड तन तेज विसेखी॥
खडन लखि मन करि अनुमाना।
तब लगि आनि लगा प्रभु बाना॥
छिन महं पुष्कल तनु ग्रसि गएऊ।
तब चंपक निजु रथ धरि लएऊ॥
पुनि - निजु पुर पहुँचावन हेता।
हृदै बिचार कीन्ह तेहि खेता॥

दोहा

पुष्कलबंधन निरखि तब, भजी चमू चतुरंग।
त्राहि - त्राहि सब भट करत, स्रवत रुधिर सब अंग ॥१०॥

चौपाई

सूत सुनहु रिपुहन तेहि काला।
निरखी आवत चमू बिहाला ॥
बोले पवन - तनय सन बानी।
अवसर - जोग बीर - रस – सानी ॥
को अस सूर महा बलवाना।
जिहि जीती मम सैन निदाना ॥
इहि बिधि बदन जात महिपाला।
आए तब लगि सूर बिहाला ॥
कपिन जोरि पानि धरि माथा।
बोले सकल सुनहु रघुनाथा ॥
सुरथ पुत्र चपक अस नामा।
तिहि बाँधे पुष्कल बलधामा ॥
सुनि अस गिरा महा रिस धारी।
बोले आतुर अरिमदहारी ॥
जाहु मरुत सुत आतुरताई।
जीतहु सुरथ - तनय कह जाई ॥

दोहा

किहि कारन इहि समय तुम, करहु विलंब निदान।
लावहु पुष्कल कह तुरत, तात जानि मम प्रान ॥११॥

चौपाई

सुनि अस वचन नाइ पद सीसा।
चले कोपि आतुर कपि - ईसा ॥

अति बिसाल वपु रन बिकराला ।
मानहुँ धाव रूप धरि काला ।।
चंपक उत संग्राम मझारा ।
निरखे आवत पवन - कुमारा ।।
तब निजु मन कीन्हौ अनुमाना ।
आए पुष्कल सैन निदाना ।।
आतुर कर चढ़ाइ कोदंडा ।
साइक सतनि सहस्त्रनि छडा ।।
आवत तिनहि निरखि हनुमाना ।
दलि बिनु श्रम किय तिल अनुमाना ।।
निजु सर - खंडन लखि तिहि काला ।
कीन्ह कोप चपक बिकराला ।।
दारुन बान समूह प्रचारे ।
कपि ते चूर - चूर करि डारे ।।

दोहा

पुनि बिसाल तरु एकु लै, कीन्ह सकोप प्रहार ।
चपक आवत देखि ते, तिल सम रज करि डार ।।१२।।

चौपाई

साल खंड लखि पवन - कुमारा ।
लाघव गज उठाइ तिहि मारा ।।
नृप सुत करि ते लच्छ रामाना ।
कीन्ह प्रहार सकोप निदाना ।।
चंपक हति सायक अतिचंडा ।
डारो गज महि करि बहु खंडा ।।
पुनि कपि सिला स्रंग द्रुम भारी ।
अगिनित एकहि बार प्रहारी ।।

सुरथ - पुत्र दलि बान कराला।
छिन महं तिल इव करि तिहि काला ॥
पुनि छाड़े नाराच अकूता।
जनु सरोस अहि बिकट बहूता ॥
दस दिसि सर पंजर करि दीना।
ब्याकुल हृदय पवन - सुत कीना ॥
तब मारुत - सुत कोपि अपारा।
धावा सनमुख समर मझारा ॥

दोहा

कपि लीला करि, भंजि सिर, कटकटाइ अति घोर।
धरि चंपक भुज पानि निज, उड़े व्योम बरजोर ॥१३॥

चौपाई

बाहु जुद्ध तह त्रिविध प्रकारा।
करहि सुभट दोउ मानि न हारा ॥
हनहिं एक कहं एक प्रचारी।
निज - निज विक्रम बुद्धि संभारी ॥
तब कपीस अति आतुरताई।
महि पटक्यौ चंपकहि भ्रमाई ॥
पुनि उठि लाघव भूप कुमारा।
पवन - तनय कहं धरनि पछारा ॥
बल संभारि पुनि उठि हनुमाना।
बरबस धरि रन पटकि निदाना ॥
रामहिं सुमिरि कोपि उर भारी।
उठा भूप - सुत कपिहि प्रचारी ॥
झपटि पूंछ धरि बिपुल भ्रमावा।
निजु भुज बल रन पटकि दिखावा ॥

पवन - पुत्र तब लाघवताई ।
पकरि लीन्ह पद झुकि मुनिराई ।।

दोहा

कोपि हृदय बिस्मय सहित, पुनि सत गुनौ भ्रमाइ ।
मत्त नाग के भाल पर, ताड़न कीन्ह बनाइ ।।
मूर्छित ह्वै चपक सुभट, 'मधु सूदन' तिहि काल ।
परे समर मडल विषै, सोभित गात बिहाल ।।

सोरठा

हाहाकार पुकार, भज्यौ कटक सब सुनहु मुनि ।
तब कपि समर मझार, पुष्कल को मोचन कियौ ।।१४।।

इति श्री पद्म पुराणे पाताल षड, सेष वात्सायन सवादे
मधुसूदन दास कृते, पुष्कल मोचन नाम एक पचासमोऽध्याय: ।।५१।।

सुरथ-विजय

दोहा

वात्सायन सुनु सुरथ नृप, परम सूर बलधाम ।
चढि स्यदन करि कोप उर, आए तिहि सग्राम ।।

चौपाई

मूर्छावन्त तहाँ सुत देखा ।
प्रगट भयो हिय सोक विसेखा ।।
बार - बार बहु लेहि उसासा ।
संग अपार कटक गत त्रासा ।।

पुनि - पुनि कपिहिं बोलावत भयेऊ।
रन हित महा कोप निर्मयेऊ॥
इत कपि निरखि भूप कह आवा।
जुद्ध हेत लगि आतुर धावा॥
सुरथ बिलोकि आव हनुमाना।
बोले गिरा गंभीर निदाना॥
धन्य कपीस महा भट मानो।
तुम अति बल - निधान मैं जानो॥
राम काज तुम कीन्ह बहूता।
लंक पुरी महं होइ करि दूता॥
मन बच क्रम प्रभु पद अनुरागी।
जीवन मुक्त परम बड़भागी॥

दोहा

मम सुत चंपक वीर वर, सो तुम कीन्ह विहाल।
बरबस बंधन करि समर, पटवहुँ पुर इहि काल॥१॥

चौपाई

अस विचारि सब भाँति सचेता।
करहु जुद्ध करि बर इहि खेता॥
सत्य गिरा हम कीन्ह उचारा।
सुनि अस बोले मरुत कुमारा॥
सुनहु सुरथ महिपाल सुजाना।
तुम रघुनाथ भक्त मैं जाना॥
पुनि हमहूँ रघुपति - पद - दासा।
बाँधो तुम मोहि सहित हुलासा॥
मम स्वामी श्री राम उदारा।
अति समर्थ करुना आगारा॥

ते प्रभु करब मोर उद्धारा।
कबहु न दासन दीख दुखारा॥
बेद सुमृति अस करहिं बखाना।
जे जन सुमिरहिं श्री भगवाना॥
तेपि होइं दुख - जलनिधि पारा।
यह बिचारि मैं निडर अपारा॥

दोहा

सत्य बचन तुम करहु निजु, सुनहु भूप बर बीर।
अस कहि मारुत - तनय पुनि, अरुगाने मनि धीर॥२॥

चौपाई

सुनि अस सुरथ हृदै हरषाई।
कीन्ह प्रसंसा, सुनु मुनिराई॥
पुनि कोदंड स्रवन लगि तानी।
तजे बान बहु तीछन जानी॥
ते सर सकल लगे तब आई।
स्रवन लागि स्रोनित समुदाई॥
तब कपि कोपि गर्जि बिकराला।
धाइ धरा कर धनु विकराला॥
खंड - खंड करि भूतल डारा।
अपर भटन नख रदन बिदारा॥
निरखि भंग निजु साइक चापा।
पुनि दूसर धनु लिय करि दापा॥
कपि सरोप सो कीन्ह निपाता।
निरखि कोप ब्यापौ नृप गाता॥
लीन्हा तोसर धनुष बहोरी।
पवन - तनय धरि दलि बर जोरी॥

दोहा

तब महीप उर कोपि कै, लीन्ह अपर कोदंड।
'मधुसूदन' कपि बीरवर, लाघव कीन्हेसि खंड ॥३॥

चौपाई

इहिं बिधि रन – मंडल हनुमाना।
भजे असी चाप सु निदाना ॥
छिन - छिन प्रति करि घोर प्रहारा।
गर्जहिं तर्जहिं अति भयकारा ॥
सुरथ नरेस कोपि तब भारी।
घोर सक्ति कपि के तन मारी ॥
सो प्रहार लागत, मुनिराई।
निमिष एक मूर्छा रन आई ॥
उठि बहोरि महा रिस धारी।
भूप सुरथ रथ धरा प्रचारी ॥
परम बेग धरि गगन उड़ाना।
उड़त भये तब पवन समाना ॥
सुरथ भूप तेहि अवसर देखा।
कपि मोहि व्योम उड़ाव विसेखा ॥
परिघ प्रचंड कोपि उर मारा।
व्याप्यौ तन सो घोर प्रहारा ॥

दोहा

तब कपीस झकझोरि रथ तज्यौ, जाइ नभ दूरि।
गिरत धरनि हय-सूत-जुत, भयौ निमिप महं चूरि ॥४॥

चौपाई

अति आतुर तब सुरथ नरेसा।
दूसर रथ महं कीन्ह प्रवेसा ॥

तानि मरासन सनमुख आवा।
तब हनुमान कोप अति धावा॥
लाघव रथ हय मूत समेता।
धरि निजु पूंछ पटकि तिहि खेता॥
सो होइ भग परा महि कैसे।
दारू सुमन दलि कुंजर जैसे॥
सुरथ दीख सग्राम मझारा।
बिनु प्रयास कपि रथ संघारा॥
तब चौथे स्यदन मैं जाई।
आरोहन होइ सनमुख आई॥
जब लगि सगुन कीन्ह कोदंडा।
तब लगि रथ कपि कीन्हेसि खडा॥
उनंचास रथ सुनहु मुनीसा।
इहि विधि गजन कीन्ह हरीसा॥

छंद

अस अद्भुत विक्रम सुरथ देखि।
रन-मंडल बिस्मय तहि बिसेखि॥
तिहि समय दुहू दल भट अपार।
अचरज समेत धनि-धनि उचार॥
तब कोपि भूप बोले सुबैन।
तुम परम सूर बल बुद्धि ऐन॥
तुम्हरे समान इहि विस्व मद्धि।
अस विक्रम काहु न किय प्रसिद्धि॥
पुनि करि न सकं को- सत्य भान।
अब सुनहु बचन कपि धारि कान॥
छिन एक तिष्ठ संजुग निदान।
जब लगि न सजौ कोदंड बान॥

श्री रामचंद्र - पद - कंज - फूल।
मै करहुँ तुमहिं अलिमत्त तूल॥
इहि भाँति भाषि करि कोप चड।
पुनि तानि चाप शिव - बान छड॥
तिहि काल भूत, बेताल जाल।
जोगिनि समूह, निसिचर कराल॥
होइ प्रगट कपीसहिं घेरि लीन्ह।
बंधन बिलोकि तिन त्रास कीन्ह॥
लखि सकल सूर हा हा पुकार।
तब पवन - पुत्र सजुग मझार॥
उर सुमिरि राम पद सोभ धाम।
शिव - पास दली जिमि गलित दाम॥

दोहा

पुनि कपि धाव सुतंत्र ह्वै, कटकटाइ बिकराल।
उहाँ भूप सग्राम मैं, आवत लखि तिहि काल॥५॥

चौपाई

परम बली निजु मन अनुमाना।
पुनि प्रयोग करि धनु सधाना॥
दारुन ब्रह्म - अस्त्र तब छडा।
प्रगटो दस दिसि ज्वाल प्रचंडा॥
आवत हेरी तब हनुमाना।
बिनु प्रयास हंसि कीन्हेसि पाना॥
निरखि सुरथ मन बिस्मय पावा।
अवर सकल सूरनि भ्रम छावा॥
तब महीप हिय प्रभु करि ध्याना।
राम बान करि धनु संधाना॥

पुनि मोचित यह बचन उचारा।
बधहुं कपीस, न होइ उबारा ॥
इहि विधि बदत भूप बल धामा।
तब लगि सुनु मुनीम सग्रामा ॥
बंधन बिबस भए हनुमाना।
मृषा न होइ राम कर बाना ॥

दोहा

तब बोले मारुत-तनय, सुनहु महीप सुजान।
मम स्वामी सर धरा मोहि, नाहिंन प्राकृत बान ॥६॥

चौपाई

तजते जौ न राम-नाराचा।
तब तुम्हार बल होतेउ साँचा ॥
अब मोहि निजु पुर देहु पठाई।
करहु सत्यपन नृप हरपाई ॥
करुनानिधि उदार रघुराई।
आइ आपु अपि हमहिं छुड़ाई ॥
अस कहि मरुत-पुत्र अरुगाने।
लखि बचन सब भट अकुलाने ॥
तब लगि भरत-तनय रन धीरा।
बधे बिलोकि मरुत-सुत बीरा ॥
कोपि तानि कोदंड कराला।
धाए नृप ऊपर तेहि काला ॥
उहाँ सुरथ रन आवत देखी।
हने अष्ठ सर निसित बिसेखी ॥
पुष्कल तब अनेक सर छंडे।
भूप एक सायक सब खंडे ॥

दोहा

पुनि सरोष होइ सुरथ नृप, इत पुष्कल बलवान।
कुंडलीक कोदंड करि, छाडे सरन प्रमान॥७॥

चौपाई

ते सायक सब तीच्छन धारा।
व्यापि गये सब विस्व मझारा॥
जड़ जगम मह पूरित कसे।
अतरजामी रघुपति जैसे॥
सुर समूह नभ कौतुक देखी।
परम मोह बग्ग भए विसेखी॥
मनुजन कै तह केतिक बाता।
सकल भए अति ब्याकुल गाता॥
महा मत्र जुत मुनि मुनिराई।
चलहि अस्त्र पर अस्त्र बनाई॥
तुमुल जुद्ध भा बरनि न जाई।
हरषहि सुभट कुभट अकुलाई॥
तब करि कोप सुरथ महिपाला।
चाप तानि तजि इप बिकराला॥
भरत - पुत्र सो खडन कीन्हा।
रन कोविद सब विद्या चीन्हा॥

दोहा

अवर बान ज्वाजल्य इक, कोपि महीप प्रहार।
खडि सके नहि भरत सुत, लागा हृदै मझार॥८॥

चौपाई

गिरे अवनि तल मूछित भारी।
परम सूर नृप अति बलधारी॥

भरत तनय कह व्याकुल देखी।
राम बंधु हिय कोपि विसेखी॥
चढ़ि बिसाल रथ आतुर धाए।
स्वेत छत्र सिर सोह सुहाए॥
सनमुख आइ बचन गभीरा।
बोले सुनहु सूत मति - धीरा॥
तुम नृप कीन्ह पराक्रम भारी।
बाँधे पवन - पुत्र बलधारी॥
पुष्कल महावीर बल धामा।
मूर्छित कीन्ह तिनहि संग्रामा॥
अपर चमू मम कीन्ह संघारा।
रन - मंडल करि रन भयकारा॥
ठाढ़ होहु अब सजग बनाई।
जाहु कहाँ रन - भूमि बिहाई॥

दोहा

अति प्रचंड नाराच हनि, डारहुँ अब संग्राम।
यह सुनि बोले सुरथ नृप, सुमिरि हृदै श्रीराम॥१॥

चौपाई

हनुमतादि तुव भट समुदाई।
हम जीते निजु बल अधिकाई॥
पुनि तुम हूं कहं सर अतिघोरा।
डारहुँ अबहि धरनि बरजोरा॥
आवहिगें जब रघुकुल नाथा।
तजिहौं तबहिं सत्य मम गाथा॥
नाहित सुनहु सत्रुहन राजा।
करिहौं बंधन सहित समाजा॥

अस कहि बान सहस्रन त्यागे।
अति कराल जिमि अहि - रस - पागे॥
परम सघन सर पंजर कीन्हा।
तब रिपु दमन अनल सर लीन्हा॥
तानि कठिन धनु कीन्ह प्रहारा।
भए सकल सायक जरि छारा॥
बरुन बान तब सुरथ चलावा।
खंडि अनल सर जल बरपावा॥

दोहा

सुनु मुनीस तब सत्रुघन, लीन्ह जोगिनी बान।
सो बिलोकि हंसि सुरथ नृप, बोले बचन प्रमान॥१०॥

चौपाई

प्रेत ग्रसित जे जन संसारा।
तिनहिं बान है मोहनहारा॥
हम रघुनाथ - जानकी - दासा।
यह सायक करि सकै न त्रासा॥
जदपि सुरथ अस बचन सुनावा।
तदपि सत्रुहन सपदि चलावा॥
बिपुल खंड होइ सायक सोई।
गिरा कछुक चलि लखि सब कोई॥
रामानुज तिहि निफल देखी।
अति अचिरिज उर कीन्ह बिसेखी॥
पुनि जेहि सर लबनासुर मारा।
कोपि हृदय सो धनु बिच धारा॥
तासु तेज नहिं जाइ बखाना।
महा प्रलय के अनल समाना॥

सुरथ बिलोकि ताहि तिहि काला।
बोले गिरा गभीर बिसाला॥

दोहा

असुर बिनासन बान यह, सुनहु सत्य मम बैन।
रघुपति सनमुख जीव जे, ते न अवधि बल अैन॥११॥

चौपाई

इहि प्रकार नृप करत बखाना।
तब्र लगि आनि लागि हिय बाना॥
प्रगटी घोर बिथा मुनिराई।
परे तुरत रथ मैं अकुलाई॥
निमिष माहं पुनि उठे भुवाला।
बोले कोपि बैन तिहि काला॥
तजि सग्राम जाहि किहि ओरा।
सहौ प्रहार एक अब मोरा॥
अस कहि सर निषग ते काढ़ी।
ज्वाल - माल छूटहि अति गाढ़ी॥
कनक पच्छ पुनि मेख सुहाई।
घोर धार कछु बरनि न जाई॥
राम चद्र पढ़ि धरि कोदंडा।
स्रवन प्रजंत तानि पुनि छडा॥
महा बेग जुत हिय बिच लागा।
निरखि सकल दल धीरज त्यागा॥

दोहा

मूछित होइ रिपुदहन तब, तु·न परे रथ माहिं।
भाज्यौ घायल कटक मुनि, त्राहि - त्राहि कर त्राहि॥
रन - मंडल मह सुरथ नृप, पाई विजय बिसाल।
श्री रघुपति तब भक्ति बल, दरसावा तिहिं काल॥

सोरठा

अंगदादि बर वीर, 'मधु सूदन' संजुग विषें।
नृप सुत अति रन धीर, सबही को जीतत भए ।।१२।।

इति श्री पद्म पुराणे पाताल षड, सेष वात्सायन सवादे, मधुसूदन दास कृते, सुरथ विजयनोनाम द्विपचासमोऽध्यायः ।।५२।।

रघुनाथ-समागमन

दोहा

सुनु मुनीस सुग्रीव तब, निरखि सकल संहार।
पुनि निजु प्रभु रिपुदहन को, मूर्च्छावन्त निहार ।।

चौपाई

सब्द कंटकटा करि तिहिं काला।
धावत भए कोपि बिकराला ।।
लोचन लाल, रूप भयकारी।
सनमुख जाइ वचन उच्चारी ।।
करहु जुद्ध मो सन महिपाला।
तुमहुँ कहावत सूर बिसाला ।।
अस कहि साल बृच्छ यक भारी।
बल समेत नृप सोस प्रहारी ।।
आवत देखि भूप बलवाना।
तिहि सर खडन कीन्ह निदाना ।।
तब सुग्रीव महा रिस धारी।
लाघव सिखर सैल-द्रुम भारी ।।

अगनित बारहि - बार प्रहारे।
पुनि नख दसननि गात बिदारे ॥
सुरथ राम - सायक तब छंडा।
जग प्रसिद्ध अति घोर प्रचडा ॥

दोहा

छिन महं बिगत - प्रयास नृप, धरि लीन्हे सुग्रीव।
जिमि अलान बस होइ गज, जदपि महा बल सीव ॥१॥

चौपाई

सुरथ राम - सेवक मुनिराई।
परम विजय रन मडल पाई ॥
सत्रुघनादि भूप रन जेते।
हनुमतादि कपि जूथ समेते ॥
सब कहं धरि - धरि रथन मझारा।
सुतन समेत सुरथ निहिं बारा ॥
चले नगर कह हर्ष समेता।
सकल सैन - जुत दुदुभि देता ॥
पुनि निजु सभा जाइ महिपाला।
हनुमतादि सन कह तिहिं काला ॥
सुमिरहु श्री रघुवीर दयाला।
करुनाकर जु प्रनत - प्रतिपाला ॥
बंधन तै छूटहिं जिहि रीती।
मन बिचारि सोइ करहु सप्रीती ॥
नाहित सबत अयुत प्रजता।
तजहुं न भूलि, सुनहु हनुमंता ॥

छंद

अस नृप मुख बानी, भय रस सानी, स्रवन सुनी हनुमान जबै।
सुनु मुनि तिहि काला, भए बिहाला, बचन बिबस बिलोकि सबै ॥

पुनि आपुहि देखो, परबस लेखी, हृदं सोक अधिकान तबं।
भरि लोचन बारी, प्रभुहि सभारी, बोले सो सुनु सूत तबं।।
हे रघुकुल भूषन, दुष्ट विदूषन, सीता पति भगवान हरे।
नव पंकज लोचन, भव भय मोचन, अति उदार गुन दिव्य भरे।।
यह नृप बल भारी, समर मझारी पन करि बंधन कीन्ह त्रिभो।
अब बेगि छोड़ावहु बिरद बढ़ावहु, सब को दीन बिलोकि बिभो।।
हा नाथ कृपाला, दीन दयाला, हा सिव वर हा सर्व वरं।
हा आरत भंजन, मनमथ रंजन, हा कृतज्ञ ब्रह्मादि परं।।
संतन हित लागो, अति अनुरागी, सदा धरहु जग रूप स्वयं।
मनमथ छवि-हारी, तन दुतिकारी, मोचहु अब प्रभु सर्वभयं।।
प्रथमहिं रघुराई, सुर समुदाई, दलि निस्चर उद्धार किये।
पुनि ग्राह संघारी, गजहि उबारी, द्रुपद सुता कह चीर दिये।।
प्रहलाद उबारे, दुक्ख निवारे, नरहरि ह्वै दलि सव खलं।
पुनि जठर मझारा, पडु कुमारा, प्रतिपाल्यो निजु बाहु बल।।

दोहा

सुनि बृंदारक बृंद महँ, जग्य करहु भगवान।
धर्म बिचारि कृपायतन मोचहु आसु निदान।।

सोरठा

जौ न करहु उद्धार, तो सुनिए रघुवंस मनि।
सकल जीव ससार, करिहै तुव उपहास अति ।।२।।

चौपाई

प्रभु सर्वग्य मुनहु मुनिराई।
सुनी अवध - पति गिरा सुहाई।।
प्रनत विमोचन हेत कृपाला।
पुष्पक जान चढ़ तिहि काला।।
लखन भरत दोउ ओर बिराजे।
व्यासादिक मुनि अंजुलि साजे।।

चले उड़ावत प्रेरि बिमाना।
अति उदार पुनि कृपानिधाना॥
छिन महं जाइ कपीसहिं देखा।
प्रथमहिं जिमि गज रच्छ विसेखा॥
तिहि अवसर अस पवन-कुमारा।
निरखे आवत राम उदारा॥
छवि निधान तन स्याम सुहावा।
कोटि मदन दुति निरखि लजावा॥
तब मारुत सुत भूपति पाहीं।
बोले बचन हरषि मन माहीं॥

दोहा

निरखहु नृप रघुवंस मनि, आये सहित समाज।
अति कृपाल करुनायतन, निज भक्तन के काज॥२॥

चौपाई

प्रथम अनेक दीन उद्धारे।
बिदित लोक बेदहु गुन भारे॥
अब तुव पास भंजि रघुराई।
हमहिं छुड़ावहि आतुरताई॥
इहि विधि बदत जात हनुमाना।
तब लगि पहुँचा निकट विमाना॥
निरखि सुरथ नृप पुलकि सरीरा।
कीन्ह प्रनाम सुतन मन धीरा॥
श्री रघुवर तब त्यागि विमाना।
धरा चतुर्भुज रूप सुजाना॥
पुनि भुज मैं भुज धरि तिहि काला।
मिलेउ सुरथ कहं कोसल-पाला॥

लोचन स्रवत प्रेम जल - धारा।
भूप सीस कर भव रुज हारा॥
बोले राम बचन सुखदाई।
भूप सुरथ तुम धन्य बनाई॥

दोहा

महत पराक्रम कीन्ह तुम, रन मंडल बर बीर।
धरि लीन्हे मारुत तनय, अवर सुभट मम धीर॥४॥

चौपाई

अस कहि राम नृपहिं सुख दीन्हा।
भक्त बछल प्रभु अघहिं न चीन्हा॥
अति आतुर पुनि श्री भगवाना।
मोचे सुकर सु जब हनुमाना॥
पुनि निजु अनुज भरत - सुत बीरा।
अपर सकल नृप अति रन धीरा॥
निजु कर रघुवर सबहिं छुड़ावा।
सुधा - दृष्टि पुनि कटक जियावा॥
ते सब उठि - उठि उर हरषाई।
रामचद्र - पद प्रनवहिं आई॥
दुर्लभ दरस पाइ तिहि काला।
भए बिगत - संजुग - स्रम - जाला॥
रच्छहि कुसल राम सब पाहीं।
परम कृतग्य मान कछु नाहीं॥
सर्व महीप महा हरषाने।
निरखि स्वामि छवि नैन जुड़ाने॥

दोहा

भूप सुरथ तिहिं समय मुनि, निरखि राम छवि खानि।
मो पर कीन्ही कृपा प्रभु, हेत रहित जिय जानि॥५॥

चौपाई

मानि कृतारथ सकल प्रकारा।
पुनि मंगाव सब राज भंडारा॥
नाना मणि भूषन पट भूरी।
गृह पुर अवर वस्तु सब रूरी॥
पुत्र पौत्र तिय सब परिवारा।
कीन्ह निवेदन हरषि अपारा॥
बोले बहुरि जोरि दोउ हाथा।
सरल सुभाय नाय पद माथा॥
नाथ सकल यह आपन जानौ।
केवल दास मोहि निज जानौ॥
सुनि बोले रघुकुल मनि रामा।
धन्य-धन्य नृप सब गुन धामा॥
सब विधि साधु कर्म तुम कीन्हा।
भलीभाँति निजु धर्महिं चीन्हा॥
क्षत्रि धर्म स्त्रुति करहिं बखाना।
स्वामि संग सेवक करि ठाना॥

दोहा

कीन्ह जुद्ध रिपुदहन सन, यह अनुचित नहिं तात।
सुनि अस प्रभु के वचन नृप, बोले पुलकित गात॥६॥

चौपाई

तिहि पुर तीनि दिवस रघुराई।
कीन्ह बास लखि भक्ति सुहाई॥
पुनि विमान चढ़ि सहित समाजा।
चले अवध कह कोसल-राजा॥
प्रभु परितोषि सबहि सुख दीन्हा।
मख-मंडप प्रवेस मुनि कीन्हा॥

सकल समाज इहाँ मुनिराई।
परम आचिरज मान बनाई॥
हरषि हृदै तब सुरथ भुवाला।
चंपक को दै राज बिसाला॥
पुनि निजु मन यह कीन्ह बिचारा।
चलहुं सत्रुघन सघ इहि बारा॥
राम अनुज लहि जग्य-तुरंगा।
हरषे कटक सहित सब अंगा॥
कोटिन सख बजहि तिहि काला।
प्रणव भेरि पुनि दुंदुभि जाला॥

दोहा

सुनहु सूत तब सत्रुघन, मख तुरंग तजि दीन्ह।
चढि बिसाल रथ सुरथ जुत, गमन हरपि मन कीन्ह॥
छीर सिधु तं अधिक अति, चली चमू चतुरंग।
'मधुसूदन' बहु देस पुर, अवगाहे हय सग॥

सोरठा

श्री सुर सरि के तीर, पहुच्यौ जग्य तुरग तब।
बालमीक मति धीर, बसहि तहा मुनि गन सहित॥७॥

इतिश्री पद्म पुराण, पाताल षंडे, सेष वात्सायन सवादे, मधुसूदन दास कृते, रघुनाथ समागमनोनाम त्रिपंचासमोऽध्याय: ॥५३॥

हय-बंधन

दोहा

प्रात क्रिया लगि सुनहु मुनि, समिध लेन तिहिं काल ।
जनक-सुता-सुत नाम लव, आए बिपिन रसाल ।।

चौपाई

संग मुनिन के बिपुल कुमारा ।
अति सुभ सील भक्ति आगारा ।।
लव सरूप किमि करहुँ बखाना ।
स्याम मृदुल रघुनाथ समाना ।।
धरे चाप सर कटितूनीरा ।
बल निधान लघु वपु बर बीरा ।।
निरखा तिन मख-तुरग सुहावा ।
दिव्य गंध चरचित मन भावा ।।
सुंदर कनक-पत्र सिर सोहै ।
तिहि बिच बिसद बरन चित छोहै ।।
बोले तब मुनि पुत्रन पाहीं ।
हरष समेत त्रास कछु नाहीं ।।
दैव जोग यह अस्व सुहावा ।
मम हित इहि आश्रम चलि आवा ।।
सकल चलहु मो संग हरषाई ।
निरखहु उर हय सकं बिहाई ।।

दोहा

अस कहि लव मुनि सुत सहित गए बेगि हय पास ।
धरे कंध कोदंड कर, सायक परम प्रकास ।।१।।

चौपाई

बाजि निकट रघुवंस कुमारा।
सुनि मुनि सोभत भए अपारा॥
शकु-तनय इव डपय भारी।
बल-पयोधि संजुग भयकारी॥
बाँचन लगे पत्र तेहि काला।
मुनि पुत्रन जुत बरन रसाला॥
दिनकर बंस बिदित संसारा।
अति महान तेहि नहिं अनुहारा॥
भए प्रगट तिन मैं नृप जेते।
सपनेउ परबस भए न तेते॥
पुनि पर द्रव्य हरैं नहिं तेई।
सतत संत सभा तिन सेई॥
राज-राज दसरथ अस नामा।
तेहि कुल प्रगट भए बलधामा॥
दिनकर बंस ध्वजा जग जाना।
तिन सम धनु धारी नहिं आना॥

दोहा

पुनि धनु-दीक्षा के विषै, गुरु हुं के गुर मान।
नवहिं सुरासुर सकल जिहि, निज मन मौलि निदान॥२॥

चौपाई

तिनके तनय महा बलवाना।
नाम राम यह सब जग जाना॥
सकल समर विद्या के रासी।
सूर सिरोमनि सुजस प्रकासी॥
संतत अरि-मद-खडनहारे।
गो सुर संत बिप्र सुख कारे॥

पुनि कोसल नृप सुता सुजाना।
कौसिल्या तिहिं नाम बखाना॥
सोई रामचंद्र की माता।
रतन प्रसव तिहुं पुर विख्याता॥
बड़भागी तिहि सम नहिं आना।
प्रगट तासु सुत रतन समाना॥
बल - निधान ते राम नृपाना।
दसकंधर बध मानि कराला॥
कुंभज मुनि निदेस धरि भाला।
बिरच्यौ मग्व हय मेघ बिसाला॥

दोहा

तज्यौ बिजय के हेत हय, स्याम करन बर बाज।
रन कोविद कोटिन सुभट, तिहि सग पालन काज॥३॥

चौपाई

बल निधि रिपुसूदन मम भ्राता।
बध्यौ लवन जिन जग बिख्याता॥
सग कटक चतुरग अपारा।
ते येहि हय के पालनहारा॥
जे नृप आपुहि उत्तिम जानौ।
पुनि निजु सम नहिं आनहि जानौ॥
सूर धनुर्धारी बलवाना।
सब प्रकार आपुहि अनुमाना॥
ते हुइ सपग धरौ गहि घोरा।
बाँचि पत्र बल वैभव मोरा॥
मम भ्राता रिपुहन बल धामा।
ताहि जीति हठि करि संग्रामा॥

लैहै अवसि तुरंग छोड़ाई।
सब प्रकार निज बल अधिकाई॥
अवर एक मैं लिखहु बनाई।
सनहु सकल क्षत्री समुदाई॥

दोहा

जे कुलीन क्षत्री सुभट, क्षत्रानी - तन - जात।
ते हठि पकरहु बाजि मम, करहु युद्ध हरषात॥४॥

चौपाई

इहि ते जोपि होइ बिपरीती।
तौपि त्यागि अभिमान सभीती॥
राजकोस परिवार लिवाई।
मिलहु सत्रुसूदन पद आई॥
इहि बिधि बाँचि पत्र लव बीरा।
बोले कोपि बचन गम्भीरा॥
सुनहु सकल मुनि - पुत्र सुजाना।
देखहु क्षत्रिन कर अभिमाना॥
निजु बल बिक्रम वैभव भारी।
लिखा भूरि हय - पत्र मझारी॥
कहा राम नृप कीट समाना।
कहा सत्रुघन दीन निदाना॥
पुनि कहु कहा [illegible] कटकाई।
सलभ समान अबल अधिकाई॥
रामहिं उत्तम क्षत्रिन माहीं।
देखहु हम कुलीन कुल नाहीं॥

दोहा

सुभट प्रसूति न कौसिला, केवल सब जग माहिं?
कुस माता श्री जानुकी, बीर प्रसूतिन नाहिं?५॥

चौपाई

रामहिं रतन रूप संसारा।
श्री कुस नहिं नर तन अनुहारा॥
जस क्षत्रीपन उन लिखि काढ़ा।
तस कोउ सूर मिला नहिं गाढ़ा॥
बिक्रम आजु सकल तिन केरा।
देखहु रन - मंडल येहि बेरा॥
धरा बाजि हम सकल प्रकारा।
को क्षत्री जो करै उबारा॥
जो रिपुदहन जोरि कर आवै;
कुस के चरन कमल सिर नावै॥
तौ मख - तुरंग देहुं तिहिं काला।
नाहित दलि नाराच कराला॥
सत्रुसमन कहं देहुं सुवाई।
छिन महं सहित सकल कटकाई॥
अस कहि मख - तुरंग तब बाँधा।
पुनि त्रिन सम रिपु गुन सर साधा॥

दोहा

जुद्ध हेत हेरहिं कटक, ठाढ़ लव बल धाम।
तिन प्रति बोले मुनि - तनय, सुमिरि हृदय श्री राम ॥६॥

चौपाई

अवध पुरी पति राम कृपाला।
अतुल बली जिन बधि दसभाला॥
तिन समान कोउ तिहु पुर नाहीं।
देव दनुज नर नागनि माहीं॥
तासु तुरंग जनि बाँधहु ताता।
तुम बालक पुनि कोमल गाता॥

हित पहिचानि बचन उर धरहू।
भूलि हृदय साहस जनि करहू॥
बासव धरि न सकै यह घोरा।
पुनि जग कवन बीर बरजोरा॥
बोले लव इहि बिधि सुनि काना।
तुम क्षत्रिन कर बल नहि जाना॥
मुनि कुमार तुम असन प्रवीना।
बिगत - जुद्ध - विद्या बल - हीना॥
पुनि क्षत्री प्रसिद्ध ससारा।
सूर बीर बल तेज अगारा॥

दोहा

जाहु सकल आतुर भवन, जननी कीन्ह रसोइ।
करहु असन उर मुदित ह्वै नाहित गत - रस होइ॥७॥

चौपाई

अस कहि बहुरि रहे अरुगाई।
गए दूरि मुनि - तनय बिहाई॥
तब लगि हय अनुचर समुदाई।
आइ गए सुनिये मुनिराई॥
बँध्यौ बिलोकि अस्व छवि खानी।
बोले गिरा कोप - रस - सानी॥
मोह विवस किहि धरा तुरगा।
कोप्यौ जम भट किहि सब अगा॥
रिपुसूदन कर बान प्रहारा।
को उर सहि, लहि बिथा अपारा॥
तब बोले लव कोप बढ़ाई।
मै बाँधा तुमार हयराई॥

जो मोचहि तुरंग इहि काला।
ता पर कुस कर कोप बिसाला ।।
कहा प्रेत - पति रंक निदाना।
जो रन चढ़े स्वयं भगवाना ।।

दोहा

तौ अपि दलि सायक निकर, करहुँ प्रसन्न अघाइ।
कहा अपर भट कीट सम, विक्रम - विगत बनाइ ।।
अस सुनि अनुचर, बाल गुनि, छोरन लगे तुरंग।
लव बिलोकि तजि घोर सर, तुरत कीन्ह कर-भंग ।।

सोरठा

भजे बिकल ते वीर, गए जहाँ नृप सत्रुघन।
बोले परम अधीर, लव सिसु खंडन कीन्ह कर ।।८।।

इति श्री पद्म पुराणे, पाताल षंडे सेष वात्सायन संवादे,
मधुसूदन दास कृते, हय बंधनोनाम चतुः पंचासमोऽध्यायः ।।५४।।

दूत षट-चारु-निदेसन

दोहा

सुनहुँ सूत लव की कथा, बल जुत परम रसाल।
वात्सायन सुनि सेस सन, बोले धरि पद भाल ।।

चौपाई

नाग - राज मम स्वामि कृपाला।
पूछहुँ, छिमहु, कहौं इहि काला ।।

नाथ प्रथम तुम कीन्ह बखाना।
रजक बचन सुनि राम सुजाना।।
तजी अकेलि सिया वन माहीं।
लोक कलंक समुझि, अघ नाहीं।।
कुस लव उभय तनय किमि भयेऊ।
पुनि अस धनु विद्या किमि लहेऊ।।
जिन बाँधा रघुनायक बाजी।
धरि कोदंड बान रन त्यागी।।
अस सुनि नागराज तिहि काला।
बोले बचन प्रसिद्ध बिसाला।।
अति अद्‌भुत रघुनायक - लीला।
सुनहु महा मुनिवर सुभ सीला।।
बहुत काल लगि रघुकुलकेतू।
कीन्ह राज्य सिय वंधु समेतू।।

दोहा

सकल भूमि - तल, धर्म जुत, सात दीप, नव खंड।
प्रजा पुत्र इव पालि प्रभु, नृपता कीन्ह अखंड।।१।।

चौपाई

सीता राम तेज तव धारा।
प्रगटयो गर्भ परम दुतिकारा।।
पाँच मास जब भए सुहाए।
अतुल सोभ सब अंगन छाए।।
एक बार प्रभु भवन मझारी।
निरखि अकेली जनक - कुमारी।।
परम सनेह सहित मृदु बानी।
बोले मनहुँ सुधा - रस - सानी।।

प्रिया माँगु बरदान सुहावा।
जो तुमार मन अति प्रिय भावा॥
मैं प्रसन्न अब सकल प्रकारा।
बचन मृषा नहिं कबहुँ उचारा॥
सुनि सनेह - जुत पति - मुख बानी।
तिहि अवसर सिय अति सकुचानी॥
जोरि पानि कह बचन रसाला।
सुनहुँ प्रान - पति परम कृपाला॥

दोहा

तुम्हरी कृपा कटाच्छ प्रभु, सर्व भोग हम भोग।
कहौ कवन सुख विस्व मह, जिहि सन भयो बियोग॥२॥

चौपाई

तुम ब्रह्मादि देव आधीसा।
सदा स्वतंत्र सर्व जगदीसा॥
अस तुम्हार वैभव भगवाना।
गावहि सतत वेद पुराना॥
ते तुम मम स्वामी अनुकूला।
कामधेनु मनि सुरतरु मूला॥
मोहि कहा दुर्लभ जग माहीं।
सपने हिय वांछा कछु नाहीं॥
तदपि तुमार बचन धरि सीसा।
मांगहु देहु कोसलाधीसा॥
प्रथमहिं मैं जब सग तुम्हारे।
गई विपिनि जहं खल गन भारे॥
लोपामुद्रादिक मुनि वामा।
मिली हमहिं तहं अति तप धामा॥

स्वागत तिन हमार बहु कीन्हा।
पुनि सुंदर पट-भूषन दीन्हा ॥

दोहा

तिनके आसिरबाद ते, कुसल छेम पुर आइ।
कीन्ही नृपता काल बहु, भोगे सुख समुदाइ ॥३॥

चौपाई

अब जो प्रभु मोहि आयसु देहू।
जाउ बिपिन तौ सहित सनेहू ॥
नाना मणि पट भूषन भूरी।
भोजनादि गधादिक रूरी ॥
इनकरि तिनकर पूजन करहूँ।
यह इच्छा तब तें उर धरहूँ ॥
जिन उन प्रथम मोहि सुख दीन्हा।
तिहि प्रसन्न मैं चाहौ कीन्हा ॥
पूजन जौ न जाउ प्रभु ताही।
होइ कृतघ्न दोष सक नाही ॥
पूरन करहु मनोरथ एहू।
सुनि बोले हरि सहित सनेहू ॥
धन्य प्रिया जानकी सुजाना।
अवसि जाहु तुम होत बिहाना ॥
सकल प्रकार पूजि मुनि नारी।
पुनि आवहु मम पास सुखारी ॥

दोहा

सुनि पति बचन सनेह जुत, हरषी जनक कुमारि।
परम लालसा कीन्ह मन, प्रात सुगमन बिचारि ॥४॥

चौपाई

अपर कथा अब सुनु मुनिराई।
संसै सोक दलनि सुखदाई।।
निजु जस स्रवन हेत रघुराई।
जानि दूत षट चतुर बनाई।।
पठवहिं नित निसि नगर मझारी।
सुनहिं प्रात सब कथा सुखारी।।
सुनहु कथा अब तिहिं निसि केरी।
जेहि दिन बरु दीन्हौं प्रभु हेरी।।
स्रवन हेत प्रभु जसु समुदाई।
चले चार तेहि हिय हरषाई।।
एक धनाढ्य भवन ढिग जाई।
ठाढ़ भयौ यक चर मुनिराई।।
राम - चरित्र - सुधा धरि काना।
सुनन लाग हिय हरष निदाना।।
सुभग चित्रसारिका मझारी।
निरखो बरत दीप दुतिकारी।।

दोहा

अति सुंदर परजंक पर, दीख तहाँ बर वाम।
सुत कहं पान कराव पय, कहति बचन लय नाम।।५।।

चौपाई

पियहु पुत्र मम पय सब भावा।
पुनि दुर्लभ यह सकल बनावा।।
इहि पुर के पति श्री रघुबीरा।
नील कंज सम स्याम सरीरा।।
जो जन इहि पुर प्रगटहि आई।
खग मृग चर थिर जे समुदाई।।

अंत परम पद पावहि तेई।
जननी गर्भ वास नहिं सेई॥
अस बिचारि मम छीर सुहावा।
करहु पान सुत निजु मन भावा॥
जे जन भजि नित राम उदारा।
सर्व काल तजि गत - मद भारा॥
ते न धरहिं जग आनि सरीरा।
कहै बेद बुध मनि मति धीरा॥
इहि विधि जननि कहै सुत पाहीं।
पय प्यावति तन अति पुलकाही॥

दोहा

रघुपति चरित सुधा सरिस, इहि विधि सुनु सो दूत।
गा बहोरि पुलकित भवन, सुकृतिन मानि बहूत॥६॥

चौपाई

तब लगि दूसर दूत सुजाना।
जाइ एक गृह निकट निदाना॥
सुनन लाग प्रभु जस धरि काना।
वात्सायन सुनु सुमनि निधाना॥
सुभग चित्रसारी तिहि देखी।
रंग - रंग मणि रचित विसेखी॥
लसहिं तहाँ मनि - दीप सुहावा।
अगर कपूर धूप गृह छावा॥
मनिमय एक सुभग परजंका।
जगमगात तहं खचित सुअंका॥
तिहि पर पति समेत यक बाला।
विद्यमान हिय मुदित बिसाला॥

रूप रासि कछु बरनि न जाई।
धरे सु पट भूषन समुदाई॥
कंकनादि रव होइ सुहाए।
रति मनमथ सम अति छवि छाए॥

दोहा

पुंगी फल सु लवंग पुनि, करपूरादि समेत।
तांबूलहि र्चचित उभय, अधर दसन छवि देत॥७॥

चौपाई

पति सरूप अति सुंदर देखी।
बोली तिय दृग चपल बिसेखी॥
तुव सरीर प्रभु सोभ निधाना।
मोहि लाग श्री राम समाना॥
नव सरोज सम नैन विसाला।
हिय कपाट इव परम रसाला॥
सुनि अस तिय के वचन रसाला।
बोलो पति सुबैन तिहि काला॥
मोहि कहा तुम राम समाना।
यह तुमार निजु धर्म निदाना॥
अस सुनि प्रिया बचन धरि काना।
मैं लघु जीव, राम भगवाना॥
कहौं कहा मै अति हत भागी।
कहाँ राम भूपति बड़ भागी॥

दोहा

कहाँ मंद मैं कीट सम, परबस कलुष निधान।
कहाँ राम ब्रह्मादि प्रभु, सुबस स्वयं भगवान॥८॥

चौपाई

मै खद्योत सरिस ससारा ।
राम भानु सम परम उदारा ।।
मै जड़ जीव सलभ अनुहारी ।
कहाँ राम खगपति सम भारी ।।
कहाँ मंद अघ उदधि बिलाई ।
कहां मृगेन्द्र सरिस रघुराई ।।
कहाँ देवसरि कलुष बिनासी ।
कहं रथ्या जल अति मल रासी ।।
कहाँ गुंज, कहं मेरु बिसाला ।
कहाँ सिघु, कहं ढाबर कताला ।।
कहं ब्रह्मादि देव समुदाई ।
कहं श्रीपति प्रन तन सुखदाई ।।
प्रिया जीव ईसहि अस भेदा ।
गावहिं मुनि पडित कवि वेदा ।।
मोहि राम कह अंतर एता ।
कहौं सत्य सुनु प्रिया सचेता ।।

दोहा

जिनके पद रज परसि करि, भइ पुनीत मुनि नारि ।
उपल देह तजि परम पद, गई स्वर्ग तनु धारि ।।९।।

चौपाई

सुनि निज पति - मुख बचन रसाला ।
पुनि पति - पद बंदे तिहि बाला ।।
राम दूत इहि विधि सुनि बैना ।
गा बहोरि गृह परम सुखैना ।।
तब लगि तीसर चर मुनि नाथा ।
सुनत भयौ रघुनायक गाथा ।।

निजु पति हेत एक बर बाला।
सुमन सेज तिहि रची रसाला॥
चंदनादि जे गंध सुहाए।
बिच बिच बर्षि दिये मन भाए॥
अलि सुगंध वस रहे लुभाई।
भोग साज सब सजी बनाई॥
मदन हेत अस सेज सजाई।
बोली गिरा परम सुखदाई॥
भोगहु नाह भोग समुदाई।
सुमन सेज मैं रची सुहाई॥

दोहा

चंदनादि वर गंध सन, चरचहु गात अनूप।
सीता राम प्रसाद तुम पावा परम सरूप॥१०॥

चौपाई

रघुपति चरन विमुख जे जीवा।
ते छुइ सकै न भाग की सीवा॥
तिनको दुर्लभ उदर अहारा।
मिलहिं न बसन विदित ससारा॥
मम सारिषी वाम तुम पाई।
चदन सरिस महा सुखदाई॥
सो केवल रघुवीर प्रभाऊ।
तुम सन कहौं नाथ सति भाऊ॥
तिहि तै करौ भो[illegible] हरषाई।
प्रभु प्रसाद मन समुझि बनाई॥
सुनि तिय गिरा नेह रस सानी।
बोला नाह हरषि मृदु बानी॥

सब विधि सत्य प्रिया तुम गावा ।
प्रभु प्रसाद यह वैभव पावा ॥
राम सुजस सुनि इहि विधि काना ।
गयौ दूत गृह मुदित निदाना ॥

सोरठा

अपर दूत तिहि काल, जाइ एक गृह निकट मुनि ।
प्रभु जस परम रसाल, सुनन लाग हिय हृष जुत ॥११॥

चौपाई

अति सुंदर सुमील यक नारी ।
रच्यौ सुभग परजक बिचारी ॥
तासु मद्धि पति कह बैठारी ।
आपु रुचिर वीगा कर धारी ॥
राम चद्र गुन गावन लागी ।
तान तरग सहित बड़ भागी ॥
पतिहि रिझाव कर्म मन बानी ।
गति अनन्य पुनि परम सयानी ॥
नाथ धन्य मै सकल प्रकारा ।
पाव बास इहि नगर मझारा ॥
इहि के पति रघुवीर कृपाला ।
पुत्र समान प्रजा नित पाला ॥
जिन बाँधा जलनिधि कर सेतू ।
भयो पार मुनि कटक समेतू ॥
सैन सहित रावनहि सघारा ।
कीन्ही सकल लक जरि छारा ॥

दोहा

दीन देखि प्रभु जानकहि, लीन्ही बेगि बुलाइ ।
दीन्ही राज्य विभीषनहि, को अस प्रभु सुखदाइ ॥१२॥

चौपाई

सुनि अस बचन मधुर सुर साला।
बोला नाह हरषि तिहि काला॥
भामिनि सुनहु बचन धरि काना।
तुम रघुपति प्रभाव नहिं जाना॥
रावनादि बध, जलनिधि बाँधा।
यह प्रभु लीला चरित सु साधा॥
केवल मनुज न श्री रघुराई।
अब सुनु प्रिया हरषि मन लाई॥
परब्रह्म श्री रघुकुल भूषन।
ब्रह्मादिक सुरपति जन भूषन॥
नेति - नेति जिहि बेद बखाना।
सुबस, परेस, अलख, भगवाना॥
जब ब्रह्मादि देव अकुलाई।
आरत छीर - सिंधु तट जाई॥
कीन्ह प्रार्थना बिबिधि प्रकारा।
तब प्रभु लीन्ह मनुज अवतारा॥

दोहा

अति पावन कीन्है चरित, निजु लीला अनुसार।
प्रनतारत भंजन सुखद, अस श्री राम उदार॥१३॥

चौपाई

प्रिया धन्य तुम मैं संसारा।
नित रघुपति निज कंज निहारा॥
ब्रह्म शिवादिक कहं जग माहीं।
प्रभु दरसन दुर्लभ, सक नाहीं॥

प्रथमहिं पुन्य पुंज हम कीन्हा।
तिहि प्रभाव अब दरस सु लीन्हा॥
इहि बिधि राम चंद्र गुन ग्रामा।
कहै परसपर पति अरु वामा॥
यह संवाद रुचिर सुनि काना।
गयौ दूत गृह मुदित निदाना॥
पंचम चार सुनहु मुनिराई।
तब लगि एक गेह ढिग जाई॥
परम बिमल रघुपति गुन श्रेनी।
सुनन लाग सो अति सुख देनी॥
स्वामि संग यक सुंदर बाला।
रची तहाँ चौपर तिहि काला॥

सोरठा

सरस सरल मृदु बैन, बोली पति सन बाल तब।
चष चलाइ जुत सैन, सुनहु नाह मम बचन वर॥१४॥

चौपाई

जीतहुं जोपि तुमहिं इहि बारा।
तौपि लेहु तुम धन भंडारा॥
पुनि जो तुम जीतहु मम साथा।
निजु मन भाव करहु तौ नाथा॥
येहि प्रकार सुनि तिय मुख बानी।
बोला पति सुसील गुन खानी॥
रामचंद्र पद सेवहि जेई।
सपनेउ अजय लहै नहिं तेई॥
प्रथम सुरनि जिमि निसिचर भारे।
हरि पद सुमिरि समर संहारे॥

तोर मनोरथ - निसिचर घोरा।
जीतहुं तिमि मैं अब बरजोरा॥
अस कहि रुचिर सुपास चलावा।
जीति दाँउ तिहि अवसर आवा॥
तब तिय सन कह अति हरषाई।
मैं जु कहा तोहि प्रथम बुझाई॥

दोहा

ज संतत भजि राम सिय, होइ अनन्य तजि काम।
तिनकी होइ न पराजय, सपनेउ सुनु पर वाम॥१५॥

चौपाई

अस कहि परम सनेह बढ़ावै।
श्री रघुपति की लीला गावै॥
पांचौ दूत मुदित इहि भाँती।
सुनि मुनि श्री रघुपति गुन पांती॥
हृदै सराहत विविधि प्रकारा।
पुनि निज - निज गृह कौ पगु धारा॥
पष्ठम दूत केरि अब गाथा।
वरनन करहुं सुनहु मुनि नाथा॥
श्री रघुपति जस स्रवनन हेतू।
गयौ मुदित जहं रजक निकेतू॥
तहाँ रजक खल कोपित भारी।
तिय सन कहै बचन दैं गारी॥
धिग - धिग तोहि [illegible] हतभागी।
पर गृह निसि गमनी किहि लागी॥
अस कहि खल तिहि ताड़न करही।
वृथा रोष तिय ऊपर धरही॥

दोहा

परिहरु मम गृह मद अब, बसु तिहि जाइ निकेत।
जिहि कै सब दिन बास किय, निदरि मोहि करि हेत ॥१६॥

चौपाई

सुनि अस बचन तासु महतारी।
बोध करन हित गिरा उचारी॥
सुत किमि त्यागहि तिय बरजोरा।
यह खल कम रहित सब ओरा॥
तुव डर कलह बिबस अकुलाई।
रही दिवस भरि पर घर जाई॥
परिहरि क्रोध, तजहि किमि बाला।
बिगत सकल अघ सुचि सब काला॥
सुनि सुनु तब खल रजक रिसाई।
कहा जननि सन भौह चढ़ाई॥
मै न राम नृप सुनु महतारी।
पर घर बसत लीन्ह जिन्ह नारी॥
जो कछु नीच ऊँच नृप करही।
प्रजा नीति गुन सोइ उर धरही॥
कीन्हा इहि पर भवन निवासा।
तिहि तै तजौं जोग यह त्रासा॥
पुनि-पुनि खल अस कहि तिहि काला।
मोहि जनि जानु राम महिपाला॥
वै श्री राम भूप छबि छाजै।
मै अब रजक मोहि नहि लाजै॥

दोहा

बसति दसानन भवन मह, भूप विदेह कुमारि।
ता कह सहित सनेह पुनि, ल्याए गृहै मझारि ॥१७॥

चौपाई

रजक गिरा सुनि इहि विधि काना।
कौप्यौ रघुपति दूत निदाना॥
सिर खंडन लगि काढ़ि कृपाना।
राम निदेस सुमिरि सकुचाना॥
तदपि कोपि नहिं रोकौ जाई।
भए अरुन चग अधर चबाई॥
पुनि जहं पंच चार मुनिराई।
गयौ तहाँ हिय दुखित बनाई॥
कहन लगे ते निज-निज बाता।
परम प्रेम जुत पुलकित गाता॥
पुनि सब तिहि सन बूझत भयेऊ।
बड़े कष्ट करि ता कहि दयेऊ॥
सुनि-सुनि सबन महा दुख पावा।
फिरि तिहि कात्र ताहि समुझावा॥
खल मुख बचन भूलि प्रभु पाहीं।
कहन जोग मन बच क्रम नाहीं॥

दोहा

इहि प्रकार मन मंत्र गुनि, पुनि-पुनि निजु गृह जाइ।
भए नीद बस सकल चर, सुमिरि हृदय रघुराइ॥१८॥

इति श्री पद्म पुराणे, पाताल षंडे सेष वात्सायन संवादे, मधुसूदन दास कृते, दूत षट चारु निदेसन नाम पंचपंचासमोऽध्याय: ॥५५॥

भरत-वाक्यम्

वात्सायन मुनिवर सुनहु, प्रात काल उठि राम।
नित्य कर्म सब वेद विधि, कीन्ह सहित अभिराम॥

चौपाई

पुनि श्रुति - निपुन बिप्र समुदाई।
हेम दान दिय निकट बुलाई॥
भए मुदित ते सकल प्रकारा।
राम सील गुन देखि उदारा॥
बहुरि कृपाल सभा मह आई।
सिघासन बैठे हरषाई॥
पुरजन सकल सु समय निहारी।
गए सभा हिय परम सुखारी॥
रामहि निरखि अतुल बलधामा।
सबन दडवत कीन्ह प्रनामा॥
पुत्र समान तिनहि रघुबीरा।
सतत प्रतिपालहिं मुनि धीरा॥
भूप - सिरोमनि सभा मझारा।
राजत बरनहुं कवन प्रकारा॥
लखन छत्र माथे पर धारैं।
भरत सत्रुहन चामर ढारैं॥

दोहा

पुनि वसिष्ठ कौ आदि दै, जे मुनि ज्ञान निधान।
ते सब सेवहि मुदित मन, परम भाव पहिचान॥१॥

चौपाई

सचिव सुमंत्र आदि तिहि काला।
नीति निपुन वर बुद्धि बिसाला॥

निजु - निजु काज करन सब लागे।
राम रूप रस मन अनुरागे।।
तिहि अवसर ते षट चर आए।
राम चरन पंकज सिरु नाए।।
निसि चरित्र सब बरनन हेतू।
सनमुख ठाढ़ भए मुनि - केतू।।
तिन्हिं बिलोकि राम भगवाना।
सिंहासन तजि उठे निदाना।।
मनि बिरचित निर्जन गृह माहीं।
दूतन सहित गए प्रभु ताहीं।।
समय विलोकि इहाँ सब भ्राता।
आए निज - निज गृह हरषाता।।
उहाँ भानु - कुल - भानु उदारा।
निजु दूतन प्रति वचन उचारा।।

दोहा

कहौ जथारथ चरित सब, निसिकर तजि भय लाज।
प्रजा लोग हम सन सकल, कहैं कहा मम राज।।२।।

चौपाई

पुनि हमार तिय सन किमि कहई।
सो सब बरनहु, जिहि विधि अहई।।
सचिव बंधु अरु राज - समाजा।
इन सन कहा कहैं तजि लाजा।।
सकल जथारथ करहु बखाना।
प्रमुदित तजि सकोच भय नाना।।
सुनि अस गिरा गंभीर उदारा।
दूतन प्रभु प्रति बचन उचारा।।

परम बिमल प्रभु सुजसु तुमारा।
अखिल विस्व महं पावनकारा॥
नाथ भवन-प्रति नर अरु नारी।
निसि दिन तुम कीरति बिस्तारी॥
हम निजु स्रवन सुनेउ भगवाना।
सो सब तुम सन करहिं बखाना॥
भानु-बस प्रगटे नित जेते।
भए विभूपित तुम करि तेते॥

सोरठा

सगर आदि भूपाल, भए बिपुल कीरति-सदन।
प्रजा समेत दयाल, लही मुक्ति तुव सुजस बल॥३॥

चौपाई

सकल प्रजा तुम कोसल पाला।
कीन्ह कृतारथ दलि दुख जाला॥
अल्प मृत्यु पुनि रोग अपारा।
सपने ह्वै न सकै संसारा॥
जिमि सुरसरि ससि भूतल माही।
तिमि तुमारि कीरति, सक नाही॥
अज्ञ शिवादि सुनि चरित तुम्हारे।
होइ न तृप्त छुधित अति भारे॥
सकल विस्व कहं स्वजसु तुम्हारा।
तिहूँ काल प्रभु पावन कारा॥
हम सब दूत सुनहु भगवाना।
भए धन्य तुम सब जग जाना॥
छिन-छिन तुव मुख-कंज-सुहावा।
निरखहि भरि चप निज मन भावा॥
इहि बिधि पंच चार मुख बानी।
सुनत भए रघुपति गुन खानी॥

दोहा

सुनत सूत पुनि राम प्रभु, षष्ठम दूतहि देखि।
मलिन बदन उर दुखित अति, बोले बचन विसेखि ।।४।।

चौपाई

चरबर सत्य कहो मो पाहीं।
महा बुद्धि तुम्हरी जग माहीं।।
मम आगे जो अनृत बखाना।
तौ होइहै अघ घोर निदाना।।
जिहि बिधि स्रवन सुनी तुम बाता।
बरनहु सकल हृदय हरपाता।।
पूछहिं प्रभु इमि बारहिंबारा।
तदपि न तिहि कछु वचन उचारा।।
पुनि निज सपथ दिवाइ कृपाला।
बूझत भए ताहि तिहि काला।।
सत्य जथारथ सकल प्रसंगा।
वरन सकोच त्यागि सब अंगा।।
प्रभु आगमु अकेल जिय जानी।
बोला सनं-सनै चरबानी।।
नाथ परम सुचि सुजस तुम्हारा।
पूरि रहा तिहुं लोक मझारा।।

दोहा

सुनहु स्वामि यक रजक खल, अति कुसील अघ खानि।
तिहि तब तिय सन मोह बस, कछु कट वचन बखानि ।।५।।

चौपाई

जदपि बखान जोग ते नाहीं।
तदपि नाथ बरनहुँ तुम पाहीं।।

कलह बिबस रजकिनि पर - धामा।
जाइ दिवस भरि किय बिश्रामा॥
निसि महं निज गृह कीन्ह प्रवेसा।
तहाँ रजक अति ठान कलेसा॥
पुनि - पुनि ता कहं ताड़न करही।
कहि कटु बचन दोष अति धरही॥
नाथ तासु जननी तिहि काला।
बोली सुत सन बचन रसाला॥
यह अपकम रहित सब ओरा।
ताड़न करहु तात किमि घोरा॥
करहुं ग्रहन नहिं त्यामन जोगू।
पर घर रही कलह संजोगू॥
सुनि अस रजक महा अघ खानी।
बोला जननी प्रति रिस आनी॥

दोहा

सुनु री जननी बचन मम, राम भूप मैं नाहि।
जिन सिय अंगीकार करि, जो बसि गृह खल माहि॥६॥

चौपाई

भूप अकर्म सुकर्म समाना।
अपर पुन्य जग तृन करि जाना॥
पुनि - पुनि खल अस करहि बखाना।
मै न राम महिपाल समाना॥
प्रभु मैं इहि प्रकार सुनि काना।
परम कोप बस भयेउं निदाना॥
नग्न खड्ग तब मैं कर लीन्हा।
तासु सीस गंजन मत कीन्हा॥
पुनि तुम बचन सुमिरि मन माहीं।
खल कर सीस भंजि मैं नाहीं॥

तिहि अवसर मैं कीन्ह बिचारा।
कहा रजक कह राम उदारा॥
अनृत बखानहि यह मति मंदा।
संतत सिया राम स्वछंदा॥
अब प्रभु आइसु दीजिय मोही।
तुम समीप आवहुं बधि ओही॥

दोहा

यह प्रसंग यद्यपि अकथ, तद्यपि कीन्ह बखान।
बोलि सचिव अब उचित मत, कोजै नाथ निदान॥७॥

चौपाई

सुनि अस गिरा कुलिस अनुहारी।
मूर्छित भए कृपाल खरारी॥
रामहिं निपट बिकल तब देखी।
दूतन उर दुख भयेउ विसेखी॥
बसन बिजन करि कीन्ह सुखाऊ।
जगे दंड जुग मैं रघुराऊ॥
पुनि दूतन सन बचन उचारा।
गहवर कंठ स्रवत जल धारा॥
जाहु भरत गृह आतुरताई।
मम ढिग आनहु तिनहि बुलाई॥
परम दुखित ते चर मुनिराई।
गए भरत गृह आतुरताई॥
करि प्रनाम सदेस सुनावा।
उठे भरत सुनि संसै छावा॥
चले सभा आतुर तिहि काला।
सुनि रहस्य-गृह माहिं कृपाला॥

सोरठा

सभा माझ तब जाइ, बुद्धिवंत - मनि श्री भरत।
बोले बचन बुझाइ, प्रतीहार प्रति सुनहु मुनि ॥८॥

चौपाई

कृपासिंधु मम बंधु उदारा।
राम भद्र किहि भवन मझारा॥
अस सुनि तिहि गृह दीन्ह बताई।
नाना रतन रचित छबिदाई॥
तिहि बिच परम उतावल गएऊ।
रामहिं व्याकुल देखत भयेऊ॥
भए दुखित तेहि अवसर भारी।
लगे बिचारन हृदय मझारी॥
किहि पर कोप कीन्ह रघुराई।
कारन कवन सोक अधिकाई॥
बार - बार प्रभु लेत उसासा।
तिन प्रति भरत सु बचन प्रकासा॥
सुनहु स्वामि रघुनाथ कृपाला।
परम मोदमय तुम सब काला॥
मन मलीन मुख मलिन दिखावा।
आँसु - औघ - जुत छबिहि न पावा॥

दोहा

मनहुँ राहु रजनीस ग्रसि, अस तुव आनन देखि।
चरित जथारथ सकल यह, बरनहु मोहि बिसेखि ॥९॥

चौपाई

तजहु सोक, किमि करहु गिलानी।
महाराज तुम सब सुख - खानी॥

गद - गद कंठ भरत इमि बरना।
सुनि बोले प्रभु भव - भय - हरना॥
मम दुख हेत सुनहु अब भ्राता।
भंजहु ता कहं होत प्रभाता॥
दिनकर बंस भए नृप जेते।
भे न अजस करि घाइल तेते॥
मोर सुजस अघ जुत लसि कैसे।
दिनकर - सुता गग मिलि जैसे॥
जिहि कर सुजस विस्व महं ताता।
जीवन जानौ सोइ बिख्याता॥
अपकीरति घाइल जन जेई।
सव समान जग जानहुँ तेई॥
तात जासु जग सुजस प्रकासा।
मानहु तासु परम पद बासा॥

दोहा

अजस उरग जेहि डसेउ जग, ताकर नरक निवास।
वेद स्मृति इतिहास सब, इहि विधि करहिं प्रकास॥१०॥

चौपाई

मम कीरति सुरसरी समाना।
विदित विस्व सुनु तात सुजाना॥
तिहि बिच रजक जो कीन्ह बखाना।
सो सब तुमहिं सुनाव निदाना॥
जनक - सुता रिपु - गृह कृतवासा।
रजक बचन इमि कीन्ह प्रकासा॥
अब मैं कहा करौं जग माहीं।
बंधु बिचारि कहौ मो पाहीं॥

तजहु प्रान कै सिय परिहरहू।
उभय काज मैं का अब करहू॥
इहि विधि कहत स्रवत जल धारा।
गह्वर सुर, उर बिकल अपारा॥
धर्म धुरधर श्री रघुराई।
मूर्छावंत भए मुनिराई॥
भरत बंधु कह मूर्छित देखी।
दारुन दुख तन भयेउ विसेखी॥

दोहा

सनै - सनै निजु बसन करि, कीन्हि मरुत तेहि काल।
तजि मूर्छा उठि बैठि प्रभु, हृदै महा दुख साल॥११॥

चौपाई

रामहिं भरत बिलोकि अचेता।
बोले सोक बिनासन हेता॥
कहा रजक मतिमद अपारा।
जिहि सिय सन दुर्बचन उचारा॥
तिहिकी जीह निपातहु आजू।
अस सुनि पुनि बोले रघुराजू॥
आदिहितै सब रजक - प्रसगा।
बरनन कीन्ह राम भव भंगा॥
सो सुनि बोले भरत सुजाना।
सोक दलन हित बचन प्रमाना॥
जग - बिख्यात सुनहु प्रभु सीता।
भई अनल करि परम पुनीता॥
पुनि ब्रह्मादि देव रन आई।
कही जानकी सुद्ध बनाई॥

दसरथ आनि कही फिरि सोई।
पावन सिया जानु सब कोई ॥

दोहा

प्रभु तुम्हार कीरति बिमल, ब्रह्मादिक करि गान।
कहो रजक के बचन करि, सो किमि होइ मलान ॥१२॥

चौपाई

तजहु सोक अस जानि कृपाला।
जनक-सुता पावन सब काला॥
तिहि जुत राज्य करहु रघुराई।
अतर पतनो जानि बनाई ॥
तुम किमि त्यागन करहु सरोरा।
सतत निष्कलंक मति धीरा ॥
तुम्हरे विकल होत भगवाना।
होइहे हम सब मृतक समाना ॥
तुम बिनु निमिष माहि रघुवीरा।
अवसि जानकी तजहि सरीरा ॥
अस बिचारि प्रभु सिया समेता।
करहु राज्य सुख करि हिय हेता ॥
पतिदेवता - सीस - मनि सोई।
सुनहु नाथ जानहि सब कोई ॥
भरत बैन इहि विधि सुनि काना।
बोले रघुपति परम सुजाना ॥

दोहा

तात धर्म जुत बचन तुम, हम सन कीन्ह बखान।
मोरि रजायसु करहु अब, तद्धपि मानि प्रमान ॥

अनल सुद्ध है जानकी, लोक पूज्य मै जान।
तदपि लोक अपवाद तें, त्यागहुं भीत निदान।।
कै तजि आवहु सियहि वन, कै कर धारि कृपान।
तात निपातहु सीस मम, इहि ते मंत्र न आन।।

सोरठा

राम गिरा सुनि कान, भए बिकल अति भरत तब।
कंपित गात निदान, मूर्छित होइ भूतल परे।।१३।।

इति श्री पद्म पुराणे, पाताल षंडे सेष वात्सायन संवादे,
मधुसूदन दास कृते, भरत वाक्यं नाम षटपंचासमोऽध्यायः।।५६।।

रजक-प्राप्त

दोहा

सुनहु सूत यह चरित सुनि, वात्सायन तिहिं काल।
बोले श्री अहिराज सन, जोरि पानि धरि भाल।।

चौपाई

सिय - कीरति जग पावनकारी।
तिन्हिं दोष किमि दीन्ह खरारी।।
प्रथमहिं कवन कलुष तिन कीन्हा।
जिहि ते रजक बचन प्रभु लीन्हा।।
प्रभु तुव मुख - पंकज तें जाता।
चरित सुधा सुनि श्रुति न अघाता।।
जिहि प्रकार मम मन सुख होई।
करुनाकरि अब कीजै सोई।।

भव - भय - भंजन कथा रसाला।
बरनन करहु अहीस कृपाला॥
सुनि अस बचन अहीस उदारा।
मुनि नायक प्रति बचन उचारा॥
परम रम्य मिथिला पुर ताता।
जनक नाम तहं नृप बिख्याता॥
धर्म सहित संतत महिपाला।
पालहि सुत सम प्रजा बिसाला॥

दोहा

घोर अवर्षन बार इक, भयो भूप के देस।
भई प्रजा तब दुखित अति, निरखि दुकाल प्रवेस॥१॥

चौपाई

निजु कर हल तब भूप चलावा।
प्रजा सोक उर चहै नसावा॥
प्रगटो सीत मध्य तब कन्या।
रूप सीलनिधि त्रिभुवन धन्या॥
तब महीप उर आनंद छावा।
सकल समाज महा सुख पावा॥
भई सीत तैं सुता सहाई।
सीता नाम धरा मुनि राई॥
सो कमला जग मोहनहारी।
पुनि प्रगटनि पालनि ससारी॥
सेवहि ताहि उमा ब्रह्मानी।
रची आदि तिय वेद बखानो॥
सो सिय एकबार पितु बागा।
खेलति सखिन सहित अनुरागा॥

तहं मुनि सुक अरु सुकी सुहाए।
चले जात मारग मुद छाए।।
नभ तें बाग अनूपम देखी।
उतरे करन बिहार विसेखी।।
देखत सकल बाग फुलवाई।
निरखत मन अति काम लजाई।।

दोहा

अति प्रसन्न ते जुगल खग, काम बिबस मुनि राइ।
कहत परस्पर बचन वर, बिहरत प्रेम सुहाइ।।२।।

चौपाई

लागे कहन परस्पर दोऊ।
सुनि रव मोहि जाइं - सब कोऊ।।
हुइहै राम भूप जग माहीं।
अति सुसील गुन - निधि सक नाहीं।।
तिनकी नारि होइगी सीता।
धरि अवतार असुर जिन जीता।।
वात्सायन मुनि सुनहु सचेता।
बरनौं सकल तुम्हारे हेता।।
सिया समेत राम जुत हरषा।
राज सहस एकादस वर्षा।।
सकल महीपनि भुज बल जीती।
नृपता करहिं सोधि श्रुति नीती।।
धन्य राम पुनि धनि सोइ सीता।
करिहैं विविध भोग जुत प्रीता।।
सुक अरु सुकी मुदित तिहि काला।
इहि बिधि बरनत बचन रसाला।।

दोहा

तिहि पादप तर जानकी, सुनै बचन धरि कान।
विस्मय जुत तिन उभै कह, सुर बर हिय उनमान ॥३॥

चौपाई

बहुरि चितय तरु ऊपर देखा।
निरखे सुक अरु सुकी बिसेखा ॥
करन लगी तहं हृदय बिचारा।
मोर कथा दोउ करहिं उचारा ॥
मम कर आवहिं कवनेहु रीती।
बूझि लेहुं सब कथा सप्रीती ॥
अस बिचारि यक सखी बुलाई।
बोली बचन मृदुल सुखदाई ॥
ए दोउ खग सखि परम सुहाए।
आनहु पकरि मोर मन भाए ॥
सुनि सोइ सखी जाइ तिहि काला।
पकरि लीन्ह करि जतन रसाला ॥
सीतहि आनि निवेदन कीना।
बहु विधि शब्द करहि ते दीना ॥
परि तोषन करि जनक कुमारी।
तिन सन सुंदर गिरा उचारी ॥

दोहा

परिहरि भय सब सुनहु खग, बरनहु मन हरषाइ।
कहौ नाम पुनि धाम निजु, मम संसय जिमि जाइ ॥४॥

चौपाई

पुनि कहु कवन राम, को सीता।
जिनकी तुम बरनी अब गीता ॥

धरिहै कवन देस अवतारा।
कवन ख्याति किहि भवन मझारा॥
यह सब कथा कहौ समुझाई।
सुनि सुक सुको कहैं मुनिराई॥
बालमीक आस्रम मम वासा।
करहिं तहाँ मुनि धर्म प्रकासा॥
सुंदरि सुनहु तहाँ तै आए।
उतरे निरखि बाग मन भाए॥
श्री मुनि वालमीक तप धामा।
बरन भविष्य राम गुन ग्रामा॥
निज सिष्यन ते तहाँ पढ़ावहिं।
सुंदरि सो हम तो सन गावहिं॥
बार-बार मुनि सिष्य सुजाना।
करहिं भविष्य राम गुन गाना॥

दोहा

राम ध्यान बल लीन ते, रहहिं सकल सब काल।
तिनके मुख ते सुनेउ हम, चरित भविष्य रसाल॥५॥

चौपाई

पुत्र जज्ञ शृंगी रिषि करिहैं।
तब हरि चारि रूप जग धरिहैं॥
जगत जननि कमला जग-खानी।
सो बिदेह गृह प्रगटहि आनी॥
सुंदरि राम महा बल भागी।
सुर-तिय गुन गावति अनुरागी॥
अनुज सहित कौसिक मुनि साथा।
धरे हाथ धनु सर कटि भाथा॥

आइ जनक पुर ते छबि रासी।
करहिं सबन कर मोद प्रकासी॥
भुज बल भंजि संभु कोदंड़ा।
पुनि करि सकल भूप मद खंडा॥
तब विवाह करि जनक कुमारी।
हुइहैं पुरजन सकल सुखारी॥
पुनि तिहि सहित राम जग माहीं।
बिपुल राज करिहैं सक नाहीं॥

दोहा

जिहि बिधि सुंदरि सुनेउ मैं, सो सब कीन्ह बखान।
अब हम कहं परिहरहु तुम, विहरहिं विपिन निदान॥६॥

चौपाई

यह सुनि जनक सुता मुनि राई।
पकरे जुग खग पानि दिढ़ाई॥
बोली गिरा बहोरि सुहाई।
होइहै राम कवन घर जाई॥
किहि के पुत्र कहौ समुझाई।
मम संसै तुम हरहु तनाई॥
पुनि जो तुमहि कहौ मम पाहीं।
सो सब करिहौ संसै नाहीं॥
यह सुनि सुक अरु सुकी सुजाना।
बोले मनमथ बिबस निदाना॥
रवि कुल ध्वज दसरथ महिपाला।
अति बल निधि पुनि बुद्धि बिसाला॥
जिन दलि असुर, देव प्रतिपाले।
रन-मंडल तजि कबहुँ न चाले॥

तिन के तीनि नारि जग जानी।
सची सरिस सुंदर गुन खानी॥

दोहा

कौसिल्या अरु केकई, बहुरि सुमित्रा नाम।
श्रीपति चारि प्रकार होइ, प्रगटहि तिन के धाम॥७॥

चौपाई

कौसिल्या सुत राम सुजाना।
सब तें जेष्ठ बन्धु छवि धाना॥
तिनके लघु श्री भरत सुजाना।
केकइ तनय सकल जग जाना॥
लखन सुमित्रा सुत अनुमानौ।
परम सुसील तासु लघु जानौ॥
तिनके लघु रिपुसूदन नामा।
जग बिख्यात महा बल धामा॥
तिन मह, छवि निधान श्री रामा।
नाम अनत बिसद गुन ग्रामा॥
मुख प्रफुल्ल पंकज अनुमाना।
दृग बिसाल जलजात समाना॥
उन्नत विसद नासिका सोहै।
भृकुटी ललित स्रवन मन मोहै॥
चारु कपोल अधर दुतिकारी।
चिबुक परम छवि निधि मनहारी॥

दोहा

परम मधुर मंजुल बचन, बरनहुं कवन प्रकार।
निरखि दसन दुति निमिष महं, नासहि उर अधियार॥८॥

चौपाई

बिसद कंबु सम कंठ सुहावा।
रेख तीनि जुत अति छवि छावा ॥
भुज आजानु ललित बलधामा।
अंगदादि जुत प्रद अभिरामा ॥
ललित पानि, पुनि करज अनूपा।
नख दुति हिम कर कर अनुरूपा ॥
उर कपाट सम सुभग बिसाला।
श्री समेत द्विज चरन बिसाला ॥
उदर मनोहर बरनि न जाई।
त्रिबली ललित महा छवि छाई ॥
नाभि कलिंद - सुता - अलि लाजै।
पुनि कटि सिह - लक - इव राजै ॥
जंघ जुगल निरखत मन मोहैं।
पद पंकज बहु छवि जुत सोहै ॥
मृदुल पदज सुंदर सब भाँती।
मनि गन सरिस सुभग नख पाँती ॥

दोहा

विविधि विभूषन बसन बर, धरै स्याम मृदु गात।
धनु सर कर तूनीर कटि, बल विक्रम बिख्यात ॥६॥

चौपाई

सुंदर राम धरे अस मेषा।
मैं किमि बरनन करौं बिसेखा ॥
सुभ गुन - निधि अतुलित प्रभुताई।
बरनन करि न सकैं अहिराई ॥

धन्य बहुरि जे जनक कुमारी।
अति छवि निधि न जासु अनुहारी॥
मुदित राम संग सो बहु काला।
बिबिधि भाँति करि भोग बिसाला॥
सुंदरि को तुम, कहि निजु नामा।
सादर सुनहु राम गुन ग्रामा॥
यह सुनि बोली जनक कुमारी।
सुनहु पक्षि-जुग गिरा हमारी॥
तुम बरनो मिथिलेस दुलारी।
सो मैं प्रगटो अवनि मझारी॥
जब मिलिहैं दसरथ-सुत मोही।
संसय रहित तजहुं तब तोही॥

दोहा

तब लगि तुम कहुं निजु भुवन, कनक पींजरन माहिं।
सब विधि प्रतिपालन करहुं, मुदित हृदै, सक नाहिं॥१०॥

चौपाई

सुनि अस जनक-सुता मुख बानी।
भय सभीत जुग खग दुख मानी॥
बहुरि परस्पर अति अकुलाई।
सीता सन बोले मुनि राई॥
सुनु सुसील मिथिलेस–कुमारी।
हम पंछी, पुनि विपिन बिहारी॥
जब लगि भ्रमत रहैं चहुं पासा।
तब लगि हम कह मोद बिलासा॥
पिंजरादिक पुनि पाले कोई।
कवनेउ भाँति प्रमोद न होई॥

अस बिचारि परिहरहु सयानी।
सत्य गिरा हम तुमहि बखानी॥
गर्भवती यह सुकी निदाना।
पुनि प्रसूति - अवसर नियराना॥
पुत्र प्रगट करि निजु थल माहीं।
आवें बहुरि इहाँ सक नाहीं॥

दोहा

अस बिचारि परिहरहु सिय, सुनि मम बचन प्रमान।
तदपि न त्यागेहु सुनहु मुनि, पुनि सुक कीन्ह बखान॥११॥

चौपाई

तजहु सिया मम नारि निदाना।
किहि लगि धरि न कारजु जाना॥
यह गर्भिनी न पुनि दुख जोगू।
तजहु, बिचरि बन भोगहिं भोगू॥
तनय प्रगट करि तब तुव पासा।
आवें अवसि समेत हुलासा॥
अस सुनि सिया सुकहि तजि दीन्हा।
बोली गिरा बहोरि नवीना॥
जाहु मुदित सुक परम सुजाना।
तजहुँ न सुकी मोर मन माना॥
इहि प्रकार पालन मैं करहूँ।
मिलिहें राम तबहि परिहरहूँ॥
इहि प्रकार सुनि सुक मुनिराई।
सिय सन कह दुख उर अधिकाई॥
जोगी जन जो करहिं बखाना।
सो न मृषा, बुध करें प्रमाना॥

दोहा

काहू सन कबहूँ कछुक, भूलि न करहिं बखान।
सत्य - सत्य पुनि सत्य यह, कीजै मौन निदान ॥१२॥

चौपाई

नाहित अवसि लहै दुख सोई।
जहं - तह बदत रहै नर जोई॥
हम तरु ऊपर बचन उचारा।
बंधन परि दुख पाव अपारा॥
करतेउ जौन कथा बिस्तारा।
तौ किमि होतेउ बंधन भारा॥
तिहि तै कीजै मौन बनाई।
पुनि सिय सन बोला अकुलाई॥
तिय बिन मैं न जिऔं वैदेही।
अस अनुमानि तजहु अब एही॥
इहि प्रकार कहि बारहिंबारा।
तदपि न कीन्ह त्याग दुख भारा॥
तब करि कोप सुकी तिहिं काला।
दीन्ह सिया कह स्राप कराला॥
मम पति सन बियोग जिमि करहू।
तिमि सगभं तुहि प्रभु परिहरहू।

सोरठा

अस कहि बारंबार, पति - वियोग तन परिहरेउ।
सुनि मुनीस, तिहि बार, सुमिरि हृदै रघुवंस मनि ॥१३॥

चौपाई

तब आवा अति सुभग विमाना।
चढ़ि सो हरि पुर कीन्ह पयाना॥

मृतक नारि लखि सुक अकुलाना।
बहु विधि रोदन कीन्ह निदाना॥
पुनि करि कोप परम मुनिराई।
सुर - सरि - तट पहुँचा तब जाई॥
तहं निज मन तिहि कीन्ह बिचारा।
होहु अवध पुर जान हमारा॥
मोर बचन सुनि राम नृपाला।
तजहि सियहि दुख होहु कराला॥
अस बिचारि सुरसरि - अलि माहीं।
परा विकल तन परिहरि ताही॥
सुनु मुनि तजे क्रोध करि प्राना।
पुनि सुक कीन्ह सिया अपमाना॥
पुनि कुवासना कीन्ह बनाई।
तिहि तें अवध रजक तन पाई॥

छंद

तिहि तै अवध महं रजक तन, तिहि पाव, मुनि कारन यहै।
जो क्रोध करि तजि गात, सो जन अत अत्यजवपु लहै॥
यह वेद सुमृति बखानि ससे, नाहिं सो साँचा सही।
तातें तजी रघुवंस मनि, सिय मानि अंत्यज की कही॥

सोरठा

जिहि विधि कीन्हे प्रस्न तुम, सो सब कीन्ह बखान।
प्रथम कथा अब सजग हुइ, स्रवन करहु धरि कान॥१४॥

इति श्री पद्म पुराणे पाताल खण्डे सेष वात्सायन सवादे,
मधुसूदन दास कृते, रजक प्राप्त नाम सप्तपचासमोध्यायः॥५७॥

गंगा-दसन

दोहा

सूत सुनहु प्रभु बिकल अति, भरतहि मूर्छित देखि।
द्वारपाल प्रति कहेउ तब, रिपुहन आनु बिसेषि॥

चौपाई

यह सुनि प्रतीहार छिन माहीं।
गयो बिकल रिपुसूदन पाही॥
कहेउ बेगि रघुनाथ बुलाए।
सुनत सत्रुघन आतुर धाए॥
अनुज समेत बिकल जहं रामा।
मुनि नायक, पहुँचे तिहि धामा॥
मूर्छावंत भरत कह देखा।
पुनि रघुनाथहि ब्याकुल पेखा॥
करि प्रनाम बोले अकुलाई।
किहि कारन अति दुख अधिकाई॥
तब अत्यज - मुख बचन - मलीना।
अनुज अग्र पुनि बरनन कीना॥
पुनि गद - गद सुर कंपत गाता।
बोले अधो बदन करि बाता॥
मम बानी सुनु सादर भाई।
करहु बेगि जिमि सोक नसाई॥

दोहा

होइ बिमल कीरति मम, सुरसरि सम संसार।
तुम सुजान सो करहु अब, सोधि सुहृदं मझार॥१॥

चौपाई

सिय सन रजक कहो जो बानी।
तात समस्त बिस्व सो जानी॥
ताते तजन चहौं निज देही।
नाहित आसु तजौं बैदेही॥
यह सुनि रिपु सूदन तेहि काला।
गिरे धरनि अपि गात बिहाला॥
उभय दण्ड भरि रहे अचेता।
उठे बहुरि जब भए सचेता॥
बोले तब रघुपति सन बानी।
बिलखत बदन स्रवत दृग पानी॥
नाथ सियहि किमि दूषन देहू।
पुनि खल बचन सत्य करि लेहू॥
जे जन दुष्ट चित्त अघ खानी।
वाम - धम - रत नरक - निसानी॥
ते जग श्रुति कहँ दूषन देहीं।
बुध - जन सो प्रमान किमि लेहीं॥

दोहा

जग पुनीत श्री सुरसरी भंजनि पाप - पहार।
पूसहि सन्त असन्त तौ, नहि मज्जहि संसार॥२॥

चौपाई

दिनकर सकल लोक सुखदाई।
एक उलूकहिं दुख अधिकाई॥
तौपि रविहिं कौ दूषन देही।
तिमि अन्त्यज दूषहि वंदेही॥
अस बिचारि जिन त्यागहु सीता।
सन्तत सो सब भाँति पुनीता॥

प्रभु करि कृपा मोहि हिय देहू।
कीजै ग्रहन सियहि जुत-नेहू॥
अनुज गिरा सुनि इहि विधि काना।
पुनि-पुनि प्रभु यह बचन बखाना॥
कै जानकिहि बिपिन परिहरहू।
कै मम सिर अब भजन करहू॥
यह सुनि सत्रुसमन महि परेऊ।
मनहुँ महा द्रुम जर परिहरेऊ॥
भई घोर मूर्छा तिहि काला।
परे सोक पाथोधि बिहाला॥

दोहा

भरत सहित रिपुसूदनहि, रघुपति मूर्छित देखि।
बोले तब प्रतिहार सन, लखनहि आनु विसेखि॥३॥

चौपाई

सो आतुर लछिमन गृह जाई।
बोले पद-पंकज सिरु नाई॥
सुनहु स्वामि तुम कह रघुराई।
कहेउ वेगि संग आनु लिवाई॥
गए उतावल यह सुनि तहंवा।
भ्रातन सहित राम प्रभु जहंवा॥
भरत सत्रुघन मूर्छित देखी!
पुनि रघुपति कहं व्याकुल देखी॥
परम विकल होइ वचन उचारा।
सुनहु स्वामि मम बधु उदारा॥
कारन कवन भई विकलाई।
पुनि मूर्छित देखहुं दोउ भाई॥

यह सुनि स्रवन राम जल धारा।
लछिमन प्रति तब बचन उचारा॥
सुनहु सकल दुख कारन भाई।
कही रजक जिमि बात ढिठाई॥

दोहा

बसी सिया रावन भवन, यह दूषन तिहि दीन्ह।
ता कारन मैं जानकिहि, चाहौ त्यागन कीन्ह॥४॥

चौपाई

अनुज सोक मम सकेउ न टारी।
तिहि त मूर्छि परे महि भारी॥
तात बेगि सोइ करहु उपाई।
जिहि विधि घोर सोक नसि जाई॥
सीता त्याग बचन सुनि काना।
लखन थकित होइ गए निदाना॥
बार-बार बहु लेहि उसाँसू।
लागे स्रवन बिलोचन आँसू॥
थर हर कंपन लगा सरीरा।
जिमि पीपर तरु चलत समीरा॥
मुख ते बचन कछू नहि आवा।
दारुन सोक हृदं मह छावा॥
तब बोले रघुपति बिलखाई।
कहा करौ इहि अवसर भाई॥
मैं कलक करि संकित भारी।
कोऊ न मो कह सकै उबारी॥

दोहा

तजहुँ गात निज अवसि अब, नाहिन आन उपाइ।
दुसह सोक किमि कहौं मैं, अवर न कछू बसाइ॥५॥

चौपाई

सदा अनुज मम आयसुकारी।
तेऊ पै प्रतिकूल निहारी॥
सकल भाँति अब मोहिं बिसारा।
अहह दई, का करहुं बिचारा॥
कहा करौं, कित जाहुं निदाना।
सुनि सुनि मोहि हसैं नृप नाना॥
अजस कलंकित मै जग भयेऊ।
जिमि कोउ कुष्ठ सुभग तन लहेऊ॥
मनु कुल माहि भए नृप जेते।
एक ते एक सरिस अति तेते॥
मो समान तिहि बस मझारा।
कोउ नहि प्रगट भयो ससारा॥
इहि विधि बदत राम तिहि काला।
गद-गद कंठ स्रवत जल जाला॥
तब बोले लछिमन मति धीरा।
सुनहु बचन मम श्री रघुवीरा॥

दोहा

रजकहि निकट बुलाइ अब, बूझहु ताहि बनाइ।
सीतहि दूषन दीन्ह किमि, सो सब कहु सति भाइ॥६॥

चौपाई

नाथ तजहु सब ससय सोगा।
जनक सुता नहि त्यागन जोगा॥
तुम्हरे राज्य माहि रघुराई।
करि न सकै कोउ निजु बरिआई॥
बूझि जथारथ ता कह बाता।
सोई करब्र सत्य जन-त्राता॥

पतिदेवता - मौलि - मनि सीता ।
तुम पद मन - बच - कर्म - सु प्रीता ॥
एक्हु अंक न त्यागन लायक ।
दूषन दोष होइ रघुनायक ॥
अब करि मो पर कृपा कृपाला ।
ग्रहन करहु सिय सुचि सब काला ॥
सुनि लछिमन मुख गिरा सुहाई ।
बोले सोक ग्रसित रघुराई ॥
धर्म समेत प्रबोधत भयेऊ ।
मन मैं सिया त्याग मत ठयेऊ ॥

दोहा

बार - बार किमि कहौ यह, सिया न त्यागन जोग ।
संतत पावन विगत अघ, जानत है सब लोग ॥७॥

चौपाई

सो सब सत्य, मृषा नहिं भाई ।
सीता सुचि, मै जान बनाई ॥
जानि लोक - अपवाद कराला ।
त्यागन करहुं अवसि तिहि काला ॥
निज जस हेत तजहुँ निज गाता ।
तुम समेत प्रिय तीनौ भ्राता ॥
पुनि गृह पुत्र मित्र वित भूरी ।
और सकल परिजन अपि रूरी ॥
करहुं अवसि त्यागन सुनु भाई ।
कही एक सीता तुम गाई ॥
मो कहँ जसु निज सुजसु पियारा ।
तस प्रियतम नहिं कछु संसारा ॥

अब रजकहि जनि बूझहु भ्राता।
अवसर पाइ देखिहै ताता॥
जो बूझहिं अब निकट बुलाई।
तौ नहिं मानहि लोग लुगाई॥

दोहा

होइ घोर रुज गात जब, तब भैषज नहि जोइ।
काल भए पर मिलै जौ, बृथा जानियौ सोइ॥८॥

चौपाई

अब सीतहि त्यागहु बन जाई।
बूझहिंगे पुनि रजक बुलाई॥
यह न करौ तौ लेहु कृपाना।
मम सिर खण्डन करहु निदाना॥
लखन राम मुख की मुनि बानी।
तिहि छन परम विथा उर आनी॥
पुनि लागे मन करन बिचारा।
परम. धीर अवसर अनुसारा॥
परसराम पितु आइसु माना।
दल्यौ मातु सिर त्रिन अनुमाना॥
तिहितैं गुर नृप-आयसु भारो।
करिय बेगि उर बिनहिं बिचारी॥
अब मैं रघुनायक हित लागी।
तजिहौं विपिन सियहिं छल त्यागी॥
अस अनुमानि जोरि जुग पानी।
बोले रामचन्द्र प्रति बानी॥

सोरठा

सुनहुँ नाथ मम बात, मोहि न यह करनीय अपि।
अब तुम आयसु तात, करिहौं जानि अकेल जिय॥९॥

चौपाई

अस सुनि राम कहा सुनु भाई।
साधु - साधु तुम साधु बनाई ॥
तुम कोविद सब भाँति सुजाना।
मोहि दीन्ह सन्तोष निदाना ॥
अब सुनु तात कहौं समुझाई।
जिहि बिधि सीतहिं त्यागहु जाई ॥
मुनि तिय हित पूजन वन जोही।
यह वरु सिय जाँच्यौ निसि मोही ॥
इहि विधि रथ चढ़ाइ बन घोरा।
तजि आवहु आयसु यह मोरा ॥
सुनत कण्ठ सूखा तिहि काला।
स्रवन लगे लोचन जल जाला ॥
भयो मलिन मन, रोदन करहीं।
कवनेउ विधि धीरज नहिं धरहीं ॥
पुनि सेवक निजु कर्म सम्हारी।
गए आपनै भवन मझारी ॥

दोहा

सचिव सुमंतहि बोलि तब, कहे बचन तिहि काल।
सजि लावहु रथ बेगि मम, जोरि तुरग रसाल ॥१०॥

चौपाई

सुनि सत्वर सजि स्यंदन आना।
चढ़ि लछिमन तब कीन्ह पयाना ॥
परम दुक्ख संपन्न सरीरा।
पुनि-पुनि लेत उसास अधीरा ॥
बरबस रोकि बिलोचन बारी।
तजि रथ गे सिय-भवन मझारी ॥

सीतहिं निरखि दंडवत कीना।
छिन-छिन लेत उसास मलीना।।
सुनहु मातु जानकी सुजाना।
पठवा मोहिं राम भगवाना।।
मुनि पतिनिन के पूजन हेतू।
रथ पठाव वर बाजि समेतू।।
लखन गिरा सुनि इमि मुनि राई।
परम प्रीति तिहि अवसर छाई।।
बोली बहुरि लखन सन बानी।
सरल सुभाय न छल कछु जानी।।

दोहा

श्री रघुपति कै किंकरी मैं धनि सकल प्रकार।
देखहु मम हित लखन करु, पठव होत भिनसार।।११।।

चौपाई

अवसि जाइ अब विपिन मझारा।
पूजहुँ मुनि-तिय मुदित अपारा।।
करि-करि तिनके पदन प्रनामा।
सब प्रकार लहिहौं विश्रामा।।
पहिरावहुँ बर बसन निदाना।
पुनि मनि-जटित विभूषन नाना।।
अस कहि सुभग दुकूल मंगाए।
अति अमोल सब भाँति सुहाए।।
बिबिधि विभूषन मनि गन नाना।
सुंदर मुक्ताहल छवि दाना।।
चंदनादि कपूर सुहाए।
अपर पदारथ सकल मंगाए।।

दासिन के कर तैं लै सीता।
आई लखन समीप सप्रीता॥
लखन समेत द्वार जब आई।
बोली बैन सुनहु मुनिराई॥

दोहा

कहौ तात स्यंदन कहाँ, जो पठवा रघुवीर।
सुनि अस लखन सुमंत सन, बोले बचन अधीर॥१२॥

चौपाई

आनहु स्यंदन निकट चलाई।
रहे सोक बस पुनि अरुगाई॥
सचिव तुरंगम हाँकन लागा।
चलहिं न पंथ, करहिं जल त्यागा॥
गिरि-गिरि परहिं धरनि अकुलाई।
धरहिं न धीर सोक अधिकाई॥
बार-बार हींसहि तिहि काला।
कवनेउ विधि मारग नहिं चाला॥
सचिव कसा तब ताड़न कीन्हा।
तदपि न चलै सोक ग्रसि लीन्हा॥
कह सुमंत तब लछिमन पाहीं।
नाथ तुरंग चलहि मग नाहीं॥
मै हार्यो करि बिपुल उपाई।
कारन मोहि न परै लखाई॥
गद - गद कठ कहा लछिमन तब।
ताड़न करि हय आनहु रथ अब॥

दोहा

कीन्हो ताड़न बाजि पुनि, चला न रथ तिहि काल।
कहा सचिव नहिं चलहि हय, बिसमय नाथ बिसाल॥१३॥

चौपाई

तहँहि चढ़ी तब सिय रथ जाई।
लछिमन चले हाँकि बरिआई॥
सिय कै दच्छिन दृग अरु बाहू।
फरकन लगे करन दुख दाहू॥
सुभ खग वाम भाग कहं आवहिं।
मानहुँ दारुन बिपति जनावहिं॥
तिनहि बिलोकि सिया अकुलाई।
देवर सन बोली, मुनिराई॥
मुनि तिय पूजन हित वन जाता।
असगुन बहुत होहि किमि ताता॥
श्री रघुपति सब अनुज समेता।
रहहिं मुदित तजि असगुन हेता॥
पुनि परिजन पुरजन समुदाई।
रहहु कुसल सब बिपति बिहाई॥
मारग लगहि भयानक भारी।
यह कारन नहि परै निहारी॥

दोहा

सुनि लछिमन इमि सिय बचन, उत्तरु कछू न दीन।
सोक विवस लोचन स्रवहि, गद गद कंठ मलीन॥१४॥

चौपाई

बहुरि सिया मृग-माल निहारी।
आई वाम भाग भयकारी॥
असगुन अपर भए मग भीमा।
जिहि ते लहै मनुज दुख सीमा॥
तब बोली अतिसै अकुलाई।
जगत जननि करुना उर छाई॥

दाहिन दिसि परिहरि इहि काला।
आवें वाम ओर मृग-जाला॥
मैं मुनि-तिय-पूजन वन आई।
रघुकुल-मनि-पद-कंज विहाई॥
तिहि तै मोहि होइ दुख जेते।
चाहिय अवसि अजोग न तेते॥
तिय कह परम धरम पति-सेवा।
नहिं जप तप संजम ब्रत देवा॥
कीन्ही मो मै पाप कराला।
जो कछु होइ थोर इहि काला॥

छंद

तिहि काल जो कछु होइ, मो सब थोर, यह साची सही।
जस करहि, तस फल पाव, अस श्रुति सुमृति कवि कोविद कही॥
इहि भाँति करत बिचार व्याकुल, असुभ बहु मग देखि कै।
तब लागि निरखी सुर सरी अघ पुंज दहन विसेखि कै॥

दोहा

सेवहि तह मुनि वृंद बहु, गो पय-सरिस प्रवाह।
श्री हरि पुर सोपान सम, उठहि तरंग उछाह॥
जा कर जल-कन परसि अपि, नसहि कलुप समुदाइ।
सूत सुनहु तिन निकट तब, स्यंदन पहुँच्यौ जाइ॥
कही लखन धरि धीर तब, गद्गद कंठ बनाइ।
त्यागहु स्यंदन जननि अब, सुर सरि पहुँची आइ॥१५॥

इति श्री पद्म पुराणे, पाताल षंडे सेष वात्सायन संवादे,
मधुसूदन दास कृते, गंगा दरसनोनाम अष्ट पंचासमोऽध्यायः॥५८॥

कुश-लव-उत्पत्ति

सोरठा

सुनि अस सिय तिहि काल लखन बाहु गहि तज्यौ रथ।
कंटक एक कराल, लग्यौ चरन बिच दुक्ख अति ॥

दोहा

सहित जानकी लखन तब, गए पार चढ़ि नाव।
कर गहि सियहि उतारि तट, चले बिपिन दुख घाव ॥

चौपाई

बिकट पंथ मुनि बरनि न जाई।
परे घोर कंटक समुदाई ॥
चलत सिया दुख दारुन पावा।
सूख बदन लोचन जल आवा ॥
लगहिं घोर कटक मग माहीं।
पद-पद गिरहि धरनि सिय ताहीं ॥
ब्याकुल लखन जाहिं बन आगे।
पाछे चितव न, दृग-जल त्यागे ॥
तिहि बन घोर दाह होइ गयेऊ।
ताते कछुक भस्म द्रुम भयेऊ ॥
त्रिकट खजूर खैर तरु जूथा।
अगिनित घौ चिंचिनी बरुथा ॥
अवर बिबिधि कंटक द्रुम भारी।
संतत सबन महा दुखकारी ॥
तिनकी खोह मध्य मुनिराई।
महा ब्याल बोलहिं भयदाई ॥

दोहा

सिंघ बाघ वृक विकट बहु, बिचरहिं तिहि वन घोर।
मत्त नाग सूकर महिष, करत सोर चहुँ ओर ॥१॥

चौपाई

बोलहिं बहु उलूक भयकारी।
पुनि सृंगाल रोदन करि भारी॥
अपर जंतु नर भच्छन हारे।
पंथ जात सिय तिनहि निहारे॥
भय बस ज्वर कराल होइ आवा।
लगे चरन कंटक दुख पावा॥
सुनहुँ तात लछिमन मम बानी।
कहौ कहाँ आस्रम सुख खानी॥
बसहिं जहाँ मुनि तियनि समेतू।
परम तपोनिधि हरि - पद - हेतू॥
जिनके हेत बिपिन मैं आई।
ते आश्रम नहिं परैं लखाई॥
तात तुम्हहि पुनि निरखौं जाता।
स्रवत बिलोचन ब्याकुल गाता॥
असगुन अमित महा भयकारी।
पद - पद हेरहुँ पंथ मझारी॥

दोहा

यह सब कारन तात मोहि, बेगि कहौ समुझाइ।
कै मो कहं लखि दुष्ट उर, रघुपति दीन्ह बिहाइ॥२॥

चौपाई

यह सुनि लखन उतरु नहिं दीना।
रुक्यौ कंठ, चख द्रवहिं मलीना॥

इहि बिधि बिकल बिपिनि पथ जाहीं।
डगमगात पद परि, सक नाहीं॥
पुनि - पुनि बूझहिं जनक - कुमारी।
लखि - लखि लखनहिं ब्याकुल भारी॥
तदपि नही कछु उत्तरु देता।
को कवि बरनि सकै दुख जेता॥
कानन इहि बिधि जात बिहाला।
मृदु पद कटक लगत कराला॥
पुनि अति अग्र कीन्ह, मुनिनाहा।
बूझति सिया लखन प्रति ताहा॥
गहवर कंठ महा बिलखाता।
कहा लखन, सुनु सिया सुमाता॥
रजक गिरा सुनि रघुकुल नाथा।
त्याग्यौ तुमहिं सत्य यह गाथा॥

दोहा

कुलिस सरिस यह वचन सुनि, परो धरनि अकुलाइ।
हरित बेलि दव विवस जिमि, तरु तजि गिरहि सुखाइ॥३॥

चौपाई

भूमि न लीन्ह सियहि, मुनिराई।
जदपि प्रान प्रिय सुता सुहाई॥
बिगत - पाप रघुपति परित्यागी।
नहिं तजिहै यह भव मन लागी॥
सीतहिं मूर्छित लखन निहारी।
नव पल्लव करि कीन्ह बयारी॥
तजि मूर्छा मिथिलेस - किसोरी।
बोली गद - गद कंठ बहोरी॥

हे मम देवर लखन सुजाना।
तात हास्य यह तजहु निदाना॥
मै अघ रहित सकल जग जाना।
तजहिं मोहि किमि कृपानिधाना॥
इहि बिधि बिलखत बिविध प्रकारा।
प्रभु - बियोग - दुख हृदय अपारा॥
पुनि लछिमनहिं निरखि बिलखाता।
जानी ह्वै सत्य यह बाता॥

दोहा

पुनि मूछित है धरनि तल, गिरी न गात सम्हारि।
बंत इहि विधि दुइ जुग, ब्यापी विपति उपार॥४॥

चौपाई

उठी बहोरि सिया तिहि काला।
परी विषाद प्रवाह बिहाला॥
रघुपति पद - पाथोज सम्हारी।
स्रवत बिलोचन गिरा उचारी॥
परम बुद्धि - निधि रघुकुल नाथा।
धरम - धुरंधर सब जग नाथा॥
ते कि मोहिं परिहरहिं निदाना।
इहि कानन बिच यह दुख जाना॥
जिन मम हेत बाँधि बारीसा।
तुम समेत संग लै कपि ईसा॥
जाइ पार दसकंधर मारा।
सदल सबंस, जानि संसारा॥
ते प्रभु मोहिं तजहिं किमि ताता।
मानि प्रमान रजक मुख बाता॥

देखि दैव प्रतिकूल बनाई।
तजहिं तौपि सुत कहा बसाई॥

दोहा

इहि बिधि अमित बिलाप करि, परी घरनि अकुलाइ।
लछिमन ब्याकुल देखि तब, भए अधीर बनाइ॥५॥

चौपाई

उच्च कंठ करि रोदन भारी।
स्रवहि अखंड विलोचन बारी॥
तजि मूर्छा तब जनक कुमारी।
निरखि लखन तहं ब्याकुल भारी॥
परम बिकल बोली तब बानी।
सुनहु तात तुम त्यागि गलानी॥
जस-निधि धर्म-मूर्ति रघुराई।
तिनके निकट जाहु सचु पाई॥
प्रमुदित मुनि-मंडली-मझारा।
बैठहि जब रघुनाथ उदारा॥
मम संदेस सब कहेहु बुझाई।
तुम सुजान सब भाँति बनाई॥
बिनु अपराध मोहि तजि दीन्हा।
यह निज बस रीति कछु चीन्हा॥
कै स्रुति-सास्त्र पढ़े जुत नेहा।
तिन तै लह्यो ग्यान बर एहा॥

दोहा

मै दासी तुव चरन की, संतत सकल प्रकार।
पुनि तुम्हार उच्छिष्ट बिनु, करहुँ न आन अहार॥६॥

चौथा

तदपि हमहिं तुम त्यागन कीन्हा।
यह प्रलब्ध भोग हम चीन्हा ॥
संतत मंगल होहु तुम्हारे।
तुम बिनु त्रिन सम बिस्व हमारे ॥
जब-जब मैं प्रगटहुं जग माही।
मिलहु तहाँ तुम पति, सक नाहीं ॥
सुमिरि संभु तुव पद सुखदाई।
भे पुनीत दलि अघ समुदाई ॥
ते तुव पद मैं सुमिरि कृपाला।
बसिहौं विपिनि सहित मृग-जाला ॥
मोहि सगर्भ भलै तजि दीन्हा।
अब निर्मल जस जग मैं सब कीन्हा ॥
सुनहु सौमित्र-तात मम बानी।
रघुपति होहु सुमंगल खानी ॥
तजती तात अबहिं निजु प्राना।
रच्छहुँ प्रभु कर तेज निदाना ॥

दोहा

तुम सेवक रघुनाथ पद, पराधीन सब काल।
होहु सुमंगल तात तुम, तजहु विषाद बिसाल ॥७॥

चौपाई

स्वामि समीप जाहु अब ताता।
होहु परम मंगल मम जाता ॥
कबहुँ कबहुँ मम सुमिरन करहू।
अपनो कृपा सदा अनुसरहू ॥
अस कहि पुनि मूर्छित ह्वै भारी।
गिरी भूमि, लखि लखन दुखारी ॥

निजु पट सन तब कीन्ह बयारी।
जगी बहुरि मिथिलेस - कुमारी ॥
कहि बहु मधुर बचन तिहि काला।
सिय परितोष हेत, मुनिपाला ॥
बाल्मीक आस्रम सुनि सीता।
इहि वन तै अति निकट पुनीता ॥
तहाँ जाइ तुम करहु निवासा।
मैं अब जाहुँ राम प्रभु पासा ॥
तुम सदेस मुनि - मंडल माहीं।
अवसि कहौ रघुनायक पाहीं ॥

दोहा

मुनिवर सुनु, अस लखन कहि, परिकर्मा पुनि कीन।
सोक बिबस करि दंडवत, चले स्रवत जल दीन ॥८॥

चौपाई

लखन विषाद - जलधि मै परेऊ।
कवनेउ बिधि धीरज नहि धरेऊ ॥
लोचन स्रवहि अखंडित नीरा।
डगमगात पद सिथिल सरीरा ॥
करत सोक उर कोटि प्रकारा।
चले जात इमि पंथ मझारा ॥
लखनहि जात सिया तब देखी।
मन मह कीन्ह बिचार विसेखी ॥
यह देवर मम परम सुजाना।
करहि हाँस्य नहि, कारन आना ॥
मैं रघुपति उर प्रान पियारी।
पाप रहित किमि देहि बिसारी ॥

निज मन इहि विधि करहि बिचारा।
इक टक लखनहिं जात निहारा॥
चढ़ि जल जान पार जब भयेऊ।
निस्चै त्याग हृचै गुनि लयेऊ॥

दोहा

गिरी भूमि व्याकुल स्रमित, घोरहि मूर्छा आइ।
भयो प्रान-संदेह मुनि, सो दुख बरनि न जाइ॥९॥

चौपाई

तिहिं अवसर बहु हंस सुहाए।
निजु पच्छन महं जल भरि लाए॥
जनक-सुतहि सब सींचन लागे।
मधुर-मधुर बोलहिं बड़ भागे॥
बिपुल मयूर आइ पुनि ताहीं।
कीन्ह सुखद पंखन करि छाँहीं॥
बहुतक मंद-मंद करि बाऊ।
बहुत बुलाइ सुमन सति भाऊ॥
प्रगटहि बिपुल सुगंध सुहाए।
निज-निज जन्म सुफल करि पाए॥
करि-गन निज–निज सुंड मझारी।
भरि-भरि सुखद सु सीतल बारी॥
सिया समीप तबैं चलि आए।
सींचि नीर मंजन करवाए॥
नाना खग मृग परम मनोहर।
आए सब समीप अति सोहर॥

दोहा

अति विस्मय जुत, चकृत चित, सियहिं निरखि तिहि काल।
वन वसंत कुसमित भयो, कानन सकल रसाल॥१०॥

चौपाई

तजि मूर्छा दारुन, मुनिराई।
उठि बैठो सिय अति बिकलाई॥
हा रघुकुल - मनि – राम कृपाला।
दीनबंधु हो नाथ दयाला॥
करुनानिधि तुम परम उदारा।
प्रनतपाल यह बिरद तुम्हारा॥
किहि अपराध मोहिं तजि दीन्हा।
मैं यह कारन कछू न चीन्हा॥
इहि विधि कहि कहि करहि बिलापा।
ब्यापौ हृदै घोर संतापा॥
बार - बार मूर्छा हुइ जाई।
किमि बरनौं मैं सुनु मुनिराई॥
सूत सुनहु तिहिं समय मझारा।
बालमीक मुनि तप आगारा॥
सिष्यन सहित बिपिन कहं आए।
सहज सुभाइ महा मुद छाए॥

दोहा

सुन्यौ दूरि तें रुदन अति, उच्चकंठ अतिदीन।
बोले तब मुनि सिष्य सन, बानी परम प्रवीन॥११॥

चौपाई

यह वन घोर महा भयकारी।
निरखु जाइ को रोदति भारी॥
सुनु गुरु - गिरा नाइ पद भाला।
सिया समीप गयो तिहि काला॥
निरखि रुदन करि तिया अपारा।
परम दीन, बहि लोचन धारा॥

राम - राम पुनि राम पुकारे।
एकहु अंक न धीरज धारे ।।
गयौ निरखि मुनिवर पर सोई।
कह्यो बाल यक रोदति जोई ।।
सुनि अस बालमीक मुनिराई।
गए निकट अति आतुरताई ।।
पतिव्रता मिथिलेस - कुमारी।
तप - निधि सनमुख मुनिहिं निहारी ।।
हे मुनि वेद - मूर्ति तप - धामा।
अस कहि कीन्ह सिया परनामा ।।

सोरठा

यह सुनि मुनि तप - सीव, दीन्ह असीस प्रसन्न होइ।
पति - समेत चिरजीव, होहु पुत्र दुइ बिदित जग ।।१२।।

चौपाई

को तुम, कवन भाँति वन आई।
कारन कवन कौन बिलखाई ।।
सकल हेत यह मोहि बुझाई।
कहु धरि धीरज, सोक बिहाई ।।
बोली सीता तब तिहि काला।
अति करुना जुत दीन बिहाला ।।
तेज उसास कंप अति गाता।
स्रवत नीर लोचन जल जाता ।।
सकल सोक कारन मुनिराई।
तुम प्रति बरनन करौं बनाई ।।
भूप - मौलि - मनि - रघुकुल - राऊ।
तिन की मैं दासी सति भाऊ ।।

बिगत - पाप मो कहँ तजि दीन्हा।
सुनहु मुनीस विपिन मम कीन्हा॥
रघुपति मुख अनुसासन पाई।
गए लखन मोहि बिपिन बिहाई॥

दोहा

अस कहि अति ब्याकुल भई, स्रवन लगे दृग नीर।
भई मलिन दुति बदन की, घरति नहीं उर धीर॥१३॥

चौपाई

तब बोले मुनि गिरा बिनीता।
वालमीकि मोहि जानहु सीता॥
तुव पितु - गुर मैं सुनु वैदेही।
परिहरु अब दारुन दुख एही॥
चलि मम आस्रम मन हरषाई।
भिन्न कुटी तोहि देहुँ बनाई॥
कै पितु गृह पहुंचावहुँ सीता।
जानहुँ मन क्रम बचन पुनीता॥
अैसे चरित देखि रघुवर के।
होत कोप मम उर मन करके॥
इहि प्रकार सुनि मुनि की बानी।
निज उर कछुक सिया हरषानी॥
बालमीकि तब चले लिवाई।
जिहि आस्रम बसि मुनि समुदाई॥
सिष्यन सहित सोह मुनि कैसे।
उडगन मध्य विमल बिधु जैसे॥

दोहा

मुनि पाछे श्री जानकी, चली जात मग माँहि।
सुमिरति प्रभु-पद-कंज उर, बिकल स्रवत चख जाँहि॥१४॥

चौपाई

इहि बिधि निज आस्रम मुनि नाथा।
पहुंचे सिष्य जानकी साथा॥
मुनि समूह तहँ करहि निवासा।
तप - पाथोधि समेत हुलासा॥
जनक – सुना निरखी मुनि वामा।
भिन्न - भिन्न तब कीन्ह प्रनामा॥
मिलीं परस्पर ते हरषाई।
पुनि – पुनि बूझि सकल कुसलाई॥
बालमीकि तव सिष्य बुलाई।
कहे कुटी रचि देहु सुहाई॥
तिन गुरु आयसु सीस चढ़ाई।
बिरचो पर्नमाल सुखदाई॥
तहाँ कीन्ह जानकी निवासा।
राम - राम जपि अपर न आसा॥
पतिदेवता करम मन . बानी।
अखिल - लोक - जननी गुन - खानी॥

दोहा

बालमीकि मुनि नाथ कै, परिचर्जा कै सोइ।
असन कद मूलादि फल, इहि विधि कालहि खोइ॥१५॥

चौपाई

समय पाइ दुइ पुत्र अनूपा।
प्रगटे रामचन्द्र - प्रतिरूपा॥
तिनकी छवि बर.ो नहि जाई।
परम मनोहर तन मुनिराई॥
यह सुधि बालमीकि मुनि पाई।
भए मोद बस मगन बनाई॥

सुख जुत बालमीकि तिहि काला।
कुस लव द्रव्य मगाइ रसाला॥
कीन्हे पुत्रन के सब कर्मा।
देस काल जस कुल कर धर्मा॥
तिहि तै कुश अरु लव यह नामा।
धरा सोधि मन मुनि तप धामा॥
इहि बिधि जात – कर्म समुदाई।
किये महा मुनि हर्षि बनाई॥
निरखि - निरखि सुत सुन्दर दोऊ।
हरषहि मुनि समेत सब कोऊ॥

दोहा

तिहि - दिन वात्सायन सुनहुँ, लवनासुरहि संघारि।
कछुक सैन जुत सत्रुघन, गे मुनि - धाम मझारि॥१६॥

चौपाई

वन्दे मुनि - पद - पंकज आई।
हर्ष सहित निजु बिनय सुनाई॥
बोले बालमीकि तिहि काला।
सुनहुं सत्रुघन बचन रसाला॥
सिय के तनय भये दुइ आजू।
अतिहि अनुप सुमंगल साजू॥
रामहि तुम न सुनावहु जाई।
मैं बरनहु कोउ अवसर पाई॥
यह सुनि भए प्रफुल्लित गाता।
गए अवध पुनि होत प्रभाता॥
सिय के तनय सुनहु मुनिराई।
कन्द मूल फल भोजन पाई॥

भए पुष्ट अति परम सुहाए।
कोटि - कोटि कंदर्प लजाए॥
थोरेइ काल भए बड़ कैसे।
सुक्ल पच्छ मैं हिम कर जैसे॥

दोहा

निरखि चतुर सब भाँति तब, वेद विहित उपवीत।
कीन्हें दोनों बन्धु के, बालमीकि जुत प्रीति॥१७॥

चौपाई

निज कृत राम चरित्र पढ़ावा।
अति पवित्र सब भाँति सुहावा॥
सहित गान विद्या सुखदाई।
तिनके गुन किमि कहौं बुझाई॥
धनु विद्या पुनि सकल पढ़ाई।
दीन्ह कनक धनुही छविदाई॥
अति अभेद रिपु - गन - संहारनि।
तिहि सम नहीं आन छवि-धारनि॥
दीन्हें अच्छय उभय निषंगा।
पुनि दारुन कर बान अभंगा॥
चर्म अभेद दीन्ह मुनिराई।
अपरहु अस्त्र – सस्त्र समुदाई॥
धरे चाप कर दोऊ भ्राता।
बिचरहिं विपिनि मनोहर गाता॥
निरखि - निरखि छवि जनक कुमारी।
मुदित होइ, दुख दीन्ह बिसारी॥

चौपाई

श्री कुश लव कर जन्म हम, तुमहिं कहा समुझाइ।
प्रथम कथा अब सुनहु मुनि, जिमि भट पहुंचे जाइ ॥१८॥

इति श्री पद्म पुराणे पाताल षंडे सेश वात्सायन सम्वादे,
मधुसूदन दास कृते, कुश लवोत्पत्तिर्नाम नव पचासमोऽध्याय: ॥५८॥

कालजित-सेनानी-मरण

दोहा

भुज विहीन लखि सुभट निजु, रामानुज तिहि काल।
अधर चापि रद मर्दि करि, बोले कोपि बिसाल॥

चौपाई

को अस बीर महा बलवाना।
जिहि तुम्हार भुज दली निदाना॥
जोपि देव सब करहि सहाई।
तदपि दलहुँ तिहि भुज बरिआई॥
श्री रघुवीर पराक्रम भारो।
नहिं जानहि सो अति कुबिचारी॥
निजु बिक्रम अब ताहि दिखावौं।
रन-मंडल बहु ख्याल खिलावौं॥
कहु किहि ठौर ठाढ़ भट सोई।
पुनि मम जग्य-बाजि कित गोई॥
किहि अब दारुन ब्याल जगावा।
चाहै अवसि काल तिहि खावा॥

यह सुनि घाइल भट समुदाई।
बोले बिस्मित दुख अधिकाई॥
बालक एक राम अनुहारी।
तिहि पकरा हय समर प्रचारी॥

दोहा

यह सुनि बोले सत्रुघन, अरुन नैन अति कोप।
देखहु सिसु मम हय धरा, अब चाहै भा लोप॥१॥

चौपाई

कालजीत सैनाधिप बीरा।
सुनु मम आयसु परम गंभीरा॥
साजहु बेगि सकल कटकाई।
अगम ब्यूह पुनि बिरचि बनाई॥
बालक निकट अब आतुर जाई।
करु संग्राम सजग हरषाई॥
तुव पाछे मैं आवहु तहंवाँ।
परम बीर वह बालक जहंवाँ॥
कै सुरेस धरि बाल सरीरा।
आवा तुरंग लेन सुनु बीरा॥
अथवा संभु कोपि बिकराला।
सिसु तन धरि आए तिहि काला॥
अवर अस्व हरि सकै न कोई।
कैसेउ प्रबल सूर रन होई॥
महा जुद्ध होइहि इहि खेता।
गिरिहैं हय गज सुभट अचेता॥

दोहा

देखहु सिसु स्वच्छंद यह, बिचरहि बिपिन मझार।
परम निडर पुनि धीर अति, देखिय समर जुझार॥२॥

चौपाई

सजग जुद्ध करु संजुग जाई।
पुनि मैं आव सहित कटकाई॥
कालजीत अस सुनि तिहि काला।
बिरच्यौ दुरगम व्यूह कराला॥
निरखि सत्रुघन आयसु दीन्हा।
कोपि कालजित गमनहि कीन्हा॥
चली चमू चतुरंग अपारा।
कंपिउ भूमि सिंधु खर भारा॥
छिपे भानु बहु रज नभ छाई।
गर्जहिं गज रथ भट समुदाई॥
चमूनाथ पहुँचो रन जाई।
हय समीप जहं लव मुनिराई॥
राम समान बाल तब देखो।
कहा कालजित बचन विसेखो॥
अहो बाल तजु राम - तुरगा।
जिन कीन्हे बहु रिपु - रन - भगा॥

दोहा

चमूनाथ मैं राम कर, कालजीत मम नाम।
अतुल बली, पुनि काल कहं, जीति लीन्ह संग्राम॥३॥

चौपाई

राम समान रूप तब देखी।
होति दया मम हृदय बिसेखी॥
नाहित घोर रोष सुनु मोरा।
होत उबार कवन विधि तोरा॥
जनक - सुता - सुत सुनि अस बानी।
बोले बिहंसि कोप उर आनी॥

जाहु राम पहं कहहु बुझाई।
मैं पकरा तुव मख हय राई॥
यहु निज नीति राखु हिय गोई।
कहहु जाइ जहं कातर होई॥
तुम समान कोटिन भटमानी।
मै आपन उर त्रिन सम जानी॥
मातु - चरन - प्रताप छिन माहीं।
जारहु समर तूल की नाहीं॥
काल जीत यह नाम तुम्हारा।
धरयौ मातु करि हृदै दुलारा॥

दोहा

बधू, बिब जिमि देखियैं, परम मनोहर लाल।
काल जीत तुव नाम तिमि, बिक्रम रहित रसाल॥४॥

चौपाई

जो बल - सजुत नाम तुम्हारा।
तौ कर बिक्रम समर मझारा॥
मैं तुव काल कराल अपारा।
जीतु, सत्य तब नाम तुम्हारा॥
पवि समान यह बचन कराला।
चमूनाथ रन सुनि तेहि काला॥
करि अत्यंत कोप मन माहीं।
बोले सुनु मुनीस, लव पाहीं॥
नाम ग्याति कुल गम तुम्हारा।
नहिं जानहु मै सिसु सुकुमारा॥
तुम पद चर, हम रथ असवारा।
करहुँ जुद्ध किमि, दोष अपारा॥

तब बोले लव कोपित भारी।
सैनापति सुनु गिरा हमारी॥
नाम ग्याति किमि बूझहु मोहीं।
रन मै आवत लाज न तोहीं॥

दोहा

नाम मोर लव परम लघु, तदपि सकल दल तोर।
तुम समेत गंजन करहुँ, छिन महं निजु भुज जोर॥५॥

चौपाई

तुमहिं करौं अब आपु समाना।
स्यदन भंजि, मारि सर नाना॥
अस कहि लव चढ़ाइ कोदंडा।
पुनि कीन्ही टकोर प्रचंडा॥
रिपु - समूह सुनि कंपन लागे।
बिजय - आस सब मन तै त्यागे॥
बालमीकि - पद - कंज सुहाए।
प्रथमहि सुमिरि सीता लव नाए॥
पुनि जननी कर सुमिरन कीन्हा।
तब सर चण्ड तून तें लीन्हा॥
संध प्रान हर बान प्रहारे।
कालजीत ते छुटत निहारे॥
करि अति कोप तज्यौ कोदण्डा।
तजे बान अगिनित अति चण्डा॥
लव के सब नाराच संघारे।
चले बेग - जुत जनु अहि भारे॥

छंद

उत लव रन धीरा, आवत तीरा, निरखे समर मझारी।
उत कोपि प्रचंडा, धरि कोदडा, तीछन बान प्रहारी।।
करि सत-सत खडा, रिपु सर चंडा, अति जब भूतल डारे।
पुनि तजि वसु बाना, निसित निदाना, रथ दलि समर पछारे।।

दोहा

कालजीत तब कोपि उर, भयो नाग असवार।
अति उनमत्त महा बलो, स्रवत जात मद - धार।।६।।

चौपाई

गजारूढ़ लव ता कहँ देखी।
सधान्यौ धनु कोपि विसेखी।।
दस - दस बिसिष सबन के मारे।
जिमि अहि अति सरोष भय कारे।।
निरखि कालजित कोपि अपारा।
विस्मित होइ करि गदा प्रहारा।।
महा बेग जुत आवहि सोई।
अष्टधातुमय जाइ न जोई।।
अयुत भार भरि भार प्रमाना।
देखिय जम - पति दण्ड - समाना।।
देखि तहाँ लव तजि इषु खण्डा।
कीन्हो तुरत गदा त्रै खण्डा।।
गदा - भंग लखि करि दृग लाला।
तज्यो परिघ यक परम कराला।।
भंज्यो तुरत कुसानुज सोई।
बिनु प्रयास, देखैं सब कोई।।

छंद

देखैं तहां सब कोइ, बिनु श्रम परिघ लव खंडन कियो।
पुनि गजारूढ़ बिलोकि रिपु कहँ, कोप करि भरि गहि लियो ॥
करबाल परम कराल धरि तब, धाइ भुज सुंडा दली।
धरि दण्ड पर निजु चरन लाघव, सीस पर पहुंचा बली ॥

दोहा

हति कह बाल कराल तब, मुकुट कीन्ह सत खण्ड।
सहस खण्ड पुनि कवच के, कीन्हो लव बलमड ॥७॥

चौपाई

पकरि केस तब धरनि पछारा।
कोप्यौ तब सैनेस अपारा ॥
मुष्ठिक पवि समान उर मारा।
पुनि लव कोपे समर मझारा ॥
करिं निजु धनु कुण्डल आकारा।
हते बान बहु हिय पर धारा ॥
अक्षय टोप कवच लव साजे।
स्याम गात सजुग अति भ्राजे ॥
इत सैनापति अति रन धीरा।
पूरि रहे सर सकल सरीरा ॥
करि बिचार धरि षड्ग कराला।
धावा बधन हेत तिहि काला ॥
मदत दसन प्रचारतु भारी।
लोचन लाल महा भयकारी ॥
अति लाघव तब लव रन धीरा।
आवत लखि सैनापति बीरा ॥

दोहा

अद्ध चन्द्र सर चण्ड तब, तज्यो तानि कोदंड।
छिन महँ खंडन कीन्ह लव, खड्ग सहित भुज दंड ।।८।।

चौपाई

निरखि खण्ड भुज खड्ग समेता।
चमूनाथ कोप्यो तिहि खेता ।।
बाम बाहु धरि गदा प्रचंडा।
धावा महा बेग बलमण्डा ।।
सोऊ भुजा काटि लव डारी।
तदपि न मरै महा भट भारी ।।
जिमि उनमत्त बितुन्ड सरीरा।
हनहिं भाल कौं सुनु मुनि धीरा ।।
करि सनमुख निज भाल कराला।
पुनि सैनेस धाव तिहि काला ।।
तब लव ताहि महा भट जाना।
मन महं कीन्ह प्रसंस निदाना ।।
पुनि धरि हाथ नग्न कर बाला।
मानहुं प्रलय अनल के ज्वाला ।।
महा मुकुट जुत सीस निपाता।
प्रान बिहाइ परयौ महि गाता ।।९।।

छंद

परयौ भूमि माहीं महावोर सोई।
गयौ राम के लोक कौ गात खोई ।।
तबै सैन ताको बि ': प्रान देखो।
भजी भीत भारी पुकारै विसेखी ।।
सुनौ सूत कोप्यौ सिया-पुत्र भारी।
तजी बान - माला महा-त्रास-कारी ।।

परे भूमि मैं ताहि बाँके बिराजैं।
स्रवैं स्रोत टेसून के बाग लाजैं॥
सबै भाँति सों सर्व सैना मझारी।
घरी धीर काहू नहीं आए पारी॥
मथ्यौ सिंधु जैसे प्रलय की मझारी।
महा विष्णु वाराह को गात धारी॥
भए भंग हाथीन के जूह नाना।
झरे कुंभ तैं भूरि मुक्तानिदाना॥
परे जुद्ध माही लसैं बीर कैसे।
मनो सैन घेरी मही सर्व जैसे॥
गिरे हेम को साज साजै तुरंगा।
सबै स्रोन धारा भए अग भंगा॥
रथी हाथ धारे रहे चाप बाना।
चढ़ी भौंह बाँकी डसे आउ नाना॥
परे हेम के जान मैं प्रान त्यागी।
चले देव ज्यौं आपनै लोक लागी॥
गिरे बीर संग्राम मै भूरि भारी।
गिरी रक्त धारा, कराहैं पुकारी॥

दोहा

अति विसाल श्रोनित सरित, प्रगटी समर मझार।
परहि भौर अति घोर तहं, देखिय दारुन धार॥१०॥

चौपाई

बिपुल चर्म कच्छप अनुमाना।
भट - भुज - दंड भुजंग - समाना॥
करिगन - सुंड मीन इव राजै।
बहुत तुरंगम करि छवि लाजै॥

सकपकात कातर तिहि देखी।
पुनि छंडे लव बान बिसेखी॥
बहुत के नासा श्रुति काटी।
पुनि बहुतन पद-भुज नभ पाटी॥
बहुतन के सिर गंजन कीन्हें।
इहि बिधि अंग भंग करि दीन्हें॥
सैनापति समेत सब बीरा।
परे खेत तजि प्रान सरीरा॥
कोउ न बचा सुनहु मुनिराई।
परम विजय लव संजुग पाई॥
ठाढ़े निडर जुद्ध के हेता।
हय समीप आनद समेता॥

दोहा

कोउक भट निजु भाग बल, बचि उबरे तिहि काल।
गए सत्रुघन निकट ते, स्रोनित स्रवत बिहाल॥११॥

चौपाई

काल जीत जिमि कटक समेता।
प्रान बिहाइ परे तिहि खेत।॥
कीन्हो सो सब कथा बखाना।
कपित गात जदपि बलवाना॥
रिपु सूदन सुनि बिस्मय पावा।
दारून रोष हृदै मह आवा॥
पुनि कछु हंसि रद मर्दन कीन्हा।
सुमिरि बाल बल मख-हय लीन्हा॥
बोले अति तब गिरा गंभीरा।
रे भट तुम किमि मत्त सरीरा॥

कै छवि - बिवस कै मति-भ्रम भयेऊ।
कै कोउ कु - ग्रहदसा होइ गयेऊ॥
प्रगटी वायुव कहौ बिचारी।
को सकि कालजीत कह मारी॥
कोटिन रिपु कह जीतन हारा।
ताहि बध्यौ किमि सिसु सुकुमारा॥

दोहा

जीति लीन्ह जम राज तिहि, बिनु प्रयास रन माहि।
तासु मरन किमि बाल कर, मम उर निस्चै नाहि॥१२॥

चौपाई

यह सुनि बोले सुभट बिहाला।
कहै सत्य हम, सुनौ नृपाला॥
नाथ न हम उनमत्त निदाना।
नहि छल बिवस, न ग्रह बलवाना॥
नहि कछु वायुन मति - भ्रम भारी।
नाथ सत्य हम गिरा उचारी॥
कालजीत कौ समर मझारा।
लव नै सदल कीन्ह संहारा॥
जो कछु मन, अब करहु उपाई।
सो प्रभु कीजै सोधि बनाई॥
केवल बाल न जानहु ताई।
महा सूर बल - निधि सोइ आई॥
सहसा करहु न अस जिय जानी।
सत्य - सत्य पुनि सत्य बखानी॥
लव कर विक्रम सुनि अस काना।
अति अचिरज तब मन महं जाना॥

दोहा

सचिव मौलि मनि सुमति सन, मधुसूदन तिहि काल ।
रन कारन संसै सहित, बोले बचन रसाल ।।१३।।

इति श्री पद्म पुराणे, पाताल षंडे, सेष वात्सायन संवादे, मधुसूदन दास कृते, सत्रुघनस्य कालजित्सेनानी मरणं नाम षष्ठितमोऽध्याय: ।।६०।।

हनुमत्-पतनं

दोहा

को यहु बालक सचिव वर, जिहि हरि लीन्ह तुरंग ।
प्रलय जलधि इव कटक मम, बिनु श्रम कीन्हसि भंग ।।

चोपाई

बोले मुनि, सुमंत तिहि काला ।
कहौं बुझाइ महा महिपाला ।।
यह मुनि बालमीक कर धामा ।
बसहिं बिपुल रिषि पूरन कामा ।।
छत्रिन कर निवास कोउ नाहीं ।
मति अनुमान कहौं तुम पाहीं ।।
कै वासव मख - हय हरि लीन्हा ।
कै पुनि संभु आनि छल कीन्हा ।।
धरि न सकै कोउ अपर तुरंगा ।
भुवन चारि - दस मैं सब अंगा ।।

कालजीत जिहि समर निपाता।
अतुल बली धारे सिसु - गाता ।।
पुष्कलादि सब भूप समेता।
तिहिं सन तुम मंडौ अब खेता ।।
जीवत ताहि समर धरि लेहू।
श्री रामहि दिखाव जुत नेहू ।।

दोहा

निज मति के अनुसार हम, कह्यौ मत्र समुझाइ।
अब जौ लागं नीक मत, सो कीजै सति भाइ ।।१।।

चौपाई

राम - बधु सुनि इहि बिधि बैना।
तुरत चलावत भे सब सैना ।।
सकल नृपन सन कहा बुझाई।
मै तुव पाछे आवहुं भाई ।।
तुम ·संग्राम करहु हरषाई।
सकल चमू जुत सजग बनाई ।।
इहि बिधि सुनि रिपुदहन निदेसू।
चले कोपि उर सकल नरेसू ।।
निज - निज चमू साजि चतुरगा।
अस्त्र - सस्त्र परिपूरन अगा ।।
विद्यमान जह लव रन माही।
पहुची सकल सैन पुनि ताहीं ।।
धरे हाथ सायक कोदडा।
गर्जहि सकल सूर बलमंडा ।।
आवा कटक इहाँ बल देखा।
अति अपार पुनि चंड विसेखा ।।

दोहा

रंचक संक न कीन्ह मन, त्रिन सन हिय अनुमानि ।
गर्जि सिंघ इव वीर वर, पुनि निजु धनु संधानि ।। २ ।।

चौपाई

बान सहस्त्रनि लाघवताई ।
तजे सरोष सुनहु मुनिराई ।।
भए बिहाल बीर समुदाई ।
खंड - खंड तन स्रोनित जाई ।।
बालक अजय सबन मन जाना ।
पुनि सक्रोध धनु तानि निदाना ।।
सहसनि भट मिलि सर वरषाई ।
चहुं दिसि लव घेरे मुनिराई ।।
लव अति लाघव बान प्रहारे ।
छिन महं सकल सूर संघारे ।।
पुनि सब सुभटन कीन्ह बिचारा ।
घेरहु सिसु कहं एकहि बारा ।।
अस बिचार करि धरि - धरि चापा ।
सायक जुत करि दारुन दापा ।।
प्रथमहिं सूर सहस्त्र प्रचंडा ।
घेरे लव चहुं दिसि बलवडा ।।

दोहा

दूसरि आवृति माहिं मुनि, भट दस सहस कराल ।
तीसरि मै ठाढ़े भएउ, उभय अयुत तिहि काल ।। ३ ।।

चौपाई

पांच अयुत जोधा बलवाना ।
चौथी परिकर मैं रन ठाना ।।

पचम माहि लच्छ बर बीरा।
साजे आयुध सकल सरीरा ॥
अयुत अधिक यक लच्छ प्रमाना।
षष्ठमि मैं जोधा बलवाना ॥
सातें आवृति मद्धि प्रचंडा।
उभय लच्छ सूरन रन खंडा ॥
चहुं दिसि तें कुंडल आकारा।
घेरो लव कह समर मझारा ॥
पाँच लच्छ नव सहस बिहीना।
इहि बिधि सब मिलि सजुग कीन्हा ॥
तिनके मध्य सिया-सुत भयेऊ।
सब कौ अनल रूप होइ गयेऊ ॥
दाह करन लागे चहुँ पासा।
सपनेहु मन रंचक नाहिं त्रासा ॥

छंद

सपनै नहीं मन त्रास रंचक, अनल इव बिरचहि बली।
काहू हने सर चंड काहू, परिघ असि दारून दली ॥
मुदगर प्रचंड प्रहारि काहू, कुंत काहू कै हनै।
पुनि गदा सक्ति कराल अति जब, दलहि लव छिन छिन घनै ॥

दोहा

सप्तावरन सघाँरि करि, येहि बिधि बिगत प्रयास।
रन मंडल के मध्य पुनि, ससि इव भयो प्रकास ॥४॥

चौपाई

कीन्ह चहूँ दिसि बीर संघारा।
परी धरनि गज तुंड अपारा ॥
देखिय जहं तंह सिर समुदाई।
पुनि रूंडन सन मेदिनि छाई ॥

स्यंदन चूर-चूर होइ गयेऊ।
अगिनित बाजि खंड बहु भयेऊ॥
लव-सायक सब पीड़ित बीरा।
काहू धरी न संजुग धीरा॥
कातर भजे कठिन सर देखी।
तजि-तजि जीवन आस बिसेखी॥
पुष्कल इमि लखि कटक बिहाला।
आए समर मध्य तिहि काला॥
चढ़े परम सुंदर रथ माहीं।
जुरे चारि हय मरुत लजाहीं॥
दारुन रोष बिबस दृग लाला।
फरकत अधर कहा तिहि काला॥

दोहा

तिष्ठ-तिष्ठ संग्राम सिसु, विजय-आसु तजि देहु।
अब अरूप रथ देहु मैं, सो प्रसन्न मन लेहु॥५॥

चौपाई

आरोहन होइ संजुग माहीं।
मंडहु जुद्ध बाल हम पाहीं॥
बिगत-जान तुम, मैं असवारा।
करहुं समर तौ दोस अपारा॥
अस सुनि पुष्कल प्रति लव बीरा।
बोले वचन सरोस गंभीरा॥
जो तुम्हार रथ होइ असवारा।
करहुं जुद्ध संग्राम मझारा॥
तौ मम सुजस सकल नसि जाई।
घोर पाप लागहि मोहि आई॥

सुनु भट बीर बिप्र हम नाहीं।
लेहिं प्रतिग्रह जे जग माहीं॥
हम छत्री प्रसिद्ध संसारा।
दान कर्म मैं निपुन अपारा॥
अब हति बान करहुं रथ भंगा।
सहित सारथी बहुरि तुरंगा॥

दोहा

निपटहि पदचर होहु जब, तब कीजौ संग्राम।
पुनि अरुगानें, सुनहु मुनि, लव अतुलित बलधाम॥६॥

चौपाई

धम धीर सजुत अस बानी।
सुनि पुष्कल अति बिस्मय मानी॥
ह्वै सरोष तब चाप चढ़ावा।
उहाँ देखि लव कोप बढ़ावा॥
सर हति कीन्ह भग कोदंडा।
तब कोपे पुष्कल अति बंडा॥
जब लगि दूसर चाप चढ़ावा।
तब लगि रथ हति भूमि गिरावा॥
हसे बहोरि बिना रथ देखी।
सिया पुत्र कौतुकी बिसेखी॥
इत पुष्कल संग्राम मझारा।
निज धनु स्यंदन भंग निहारा॥
अतुल बली ताकहं जिय जाना।
पुनि न चढ़े रन स्यंदन आना॥
इत पुष्कल उत लव बर बीरा।
सजि कोदंड तजे बहु तीरा॥

छंद

सजि दंड कर कोदंड सायक, विपुल दोउ भट छंडही।
दिसि बिदिस भूतल व्यौम पाटे, अति कठिन रन मंडही ।।
लाघव निकासत धरत खेंचत, तजत सर नहिं लखि परें।
कुंडल सरिस दोउ धनुष करन मझार अति बिस्मै करें ।।
दोउ सुभट युद्ध विरुद्ध क्रुद्धे, समर सम अतुलित बली।
तन धाइ अति विकराल पुनि, श्रोनित स्रवहिं रन छवि भली ।।
जय हेत परम सचेत, करहि प्रहार छिन - छिन बीर ते।
सुनु सूत, भंग भए निपट सिरत्रान कवच समेत ते ।।

दोहा

जिमि वासव-सुत षड - वदन, प्रथम महा रन मंड।
बहुरि सभु अरु त्रिपुर कर, भयौ समर अति चंड ।।७।।

चौपाई

तिमि पुष्कल अरु लव बल भारी।
करहिं परसपर दारुन रारी ।।
तब लव सन पुष्कल बर बीरा।
बोले रन बिच गिरा गभीरा ।।
सूर सिरोमनि बाल सुजाना।
सुनहु बचन मम धरि निजु काना ।।
तुम समान हम सुभट न देखा।
अब डारहुं हति बान बिसेखा ।।
रच्छहु रन निजु पानि बनाई।
बाल भजहि जनि, समर बिहाई ।।
अस कहि सर पंजर कहि दयेऊ।
व्योम भूमि दिसि बिदिसन छएऊ ।।

मरुत प्रवेस न करि सक ताही।
तिहि बिच लव कहं पुष्कल पाँही॥
तुम नै महत कर्म रन कीन्हा।
सर-पंजर महं मो ग्रसि लीन्हा॥

दोहा

अस कहि छिन मह सुनहु मुनि, तजि बहु बान कराल।
दलि सर-पंजर, प्रगट होइ, बोले लव तिहि काल॥८॥

चौपाई

अब तजि समर जाहु किहि ओरा।
मम नाराच सहौ उर घोरा॥
स्रवत रुधिर अवनी तल माहीं।
तुमहि निपातहुँ ससै नाहीं॥
अस कहि समर चाप संधाना।
कोपे लखि पुष्कल बलवाना॥
लागे करन परसपर रारी।
सम संरूप दोउ भट बल भारी॥
बैरि वृंद भजन यक बाना।
लीन्हीं लव करि कोप निदाना॥
छूटहि ज्वाल-माल तिन्हि माही।
निरखि जाहि लोचन मुदिताही॥
तानि कान लगि सा सर छंडा।
पुष्कल हति सर कीन्हेउ खडा॥
ताहि भगि लखि सुनि मुनि धीरा।
कोपे अति संजुग बल वीरा॥

दोहा

लीन्ह अपर सर घोर अति, तानि स्रवन लागि चाप।
तज्यौ-चल्यौ सो वेग जुत, जनु भुजग करि बाप॥९॥

चौपाई

पुष्कल के उर आइ समाना।
गिरे भूमि होइ बिकल निदाना॥
मूर्छित निरखि समीर - कुमारा।
आए पुष्कल ढिग तिहि बारा॥
धरि निजु अंक माहि कपि राई।
पहुंचे रिपुसूदन ढिग जाई॥
मूर्छावन्त निरखि तेहि काला।
भए सोक बस बिकल नृपाला॥
पुनि बोले मारुत - सुत पाहीं।
बधहु जाइ लव कहं रन माही॥
चले कोपि तब पवन - कुमारा।
धरि विसाल द्रुम पानि मझारा॥
निकट जाइ करि सब्द कराला।
वृच्छ प्रहार कीन्ह तिहि काला॥
आवत लखि रघुनाथ - कुमारा।
हति इषु तिल सम करि महि डारा॥१०॥

छंद

लखि भंग वृक्ष कपीस, उर कोपि कीन्ह मुनीस।
अति बेग पूंछ उठाइ, करि सब्द संजुग धाइ॥
द्रुम एक मूल समेत, छिति तै उपाटि सचेत।
लव सीस लक्ष बिचारि, बहु बेग संजुग डारि॥
लव चड सायक मारि, छिन माहि भूतल पारि।
पुनि कोपि श्री हनुमान, धरि सैल सम पाषान॥
सिर माझ कीन्ह प्रहार। कारं खड लव सो डार॥

दोहा

सिला शृंग गिरि वृक्ष बहु, छिन-छिन कीन्ह प्रहार।
बिन प्रयास लव बीर बर, रज तिल सम करि डार॥११॥

चौपाई

तब अति कोपि प्रबल हनुमाना।
धावा गर्जि काल अनुमाना॥
निज लगूर लपेटि निदाना।
पुनि बरबस कपि गगन उड़ाना॥
लव आपुहि लखि पूछ मझारा।
सुमिरि सिया - पद - कज उदारा॥
पुनि यक मुष्ठिक बज्र समाना।
हन्यौ कोपि उर पूंछ निदाना॥
महा बिकल मारुत सुत भयेऊ।
आतुर लवहि त्यागि तब दयेऊ॥
ह्वै स्वतत्र जानकी - कुमारा।
दले बान अगनित बर धारा॥
जिमि नभ - मास मेघ समुदाई।
बरषहि वारि महा झरिलाई॥
तिमि प्रचड सायक जनु ब्याला।
दलहिं कोस तन लव तिहि काला॥

दोहा

सिर उर धर पद पूछ मह विध बान सब गात।
याही सम भय मरुत सुत, बहु श्रोनित तन जात॥१२॥

चौपाई

भए बिकल अति समर मझारा।
लगे करन तब हृदय बिचारा॥
यह अजीत बालक बर जोरा।
अब न चल कछु बिक्रम मोरा॥
मै सब भाँति भयौ बेहाला।
किहि बिधि उबरहुं रन बिकराला॥

भाजि जाहुँ जो समर बिहाई।
तौ प्रभु अग्र लाज अधिकाई।।
कहहि सकल जन करि उपहासा।
भजे मरुत सुत बालक - त्रासा।।
पुनि बिधि कीन्ह मोहि बरदाना।
मरन न तोर होइ हनुमाना।।
अवसर दुसह, सहे नहि जाई।
करहुं कहा, कछु नाहि बसाई।।
पुनि कपीस मन कीन्ह बिचारा।
कपट मूरछा बिनु न उबारा।।

दोहा

जब लगि जीतहिं बालकहि, राम - अनुज बल धाम।
मैं तब लगि मूर्छा धरहुं, कपट सहित संग्राम।।
इहि बिधि कीन्ह बिचार मन, तब लगि लव मुनिराइ।
तज्यौ बान कपि कपट जुत, गिरे धरनि मुर्छाइ।।

सोरठा

मूर्छित कपिहि निहारि लव, छाड़े सर चड पुनि।
सब कौ समर सघारि, परम बली रघुनाथ सुत।।१३।।

इति श्री पद्म पुराणे, पाताल षडे सेष वात्सायन सवादे,
मधुसूदन दास कृते, हनुमत्पतनं नामैकषष्टितमोऽध्यायः।।६१।।

लव-मूर्छा

दोहा

वात्सायन, हनुमान को, मूर्छित सुनि रघुराइ।
सोक बिवस सोचन लगे, कीजै कवन उपाइ॥

चौपाई

यह बालक अतिसै बलवाना।
जिहि कीन्हे मूर्छित हनुमाना॥
मैं देखौं इहि समर मझारा।
इहि प्रकार मन कीन्ह बिचारा॥
भए कनक पुनि रथ असवारा।
बहु मनि रचित परम दुतिकारा॥
सजे संग पुनि रथी अपारा।
सुरथ आदि नृप परम जुझारा॥
सर्व चमू चतुरंग अकूता।
धरे बिबिधि हथियार बहूता॥
इहि बिधि रिपुभंजन मुनिराई।
पहुँचे सजि संजुग मैं जाई॥
धरे चाप सर लव कह देखा।
मनहुं राम प्रतिबिंब बिसेखा॥
निरखि सुभग तन की रुचिराई।
भए बिलोचन थकित बनाई॥

दोहा

हृदय बिचारहिं कवन यहु, धरे राम सम रूप।
नील कंज सम स्याम तन, बालक परम अनूप॥१॥

चौपाई

यह सिय सुन बिनु अपर न कोई।
मोरे उर प्रतीति अस होई॥
हमहिं जीतिहै यह रन माही।
मृगपति इव कछु ससय नाहीं॥
कवनेउ बिधि नहिं विजय हमारी।
सत्य बात इहि समर मझारो॥
विस्व जननि श्री जनक कुमारी।
परम सक्ति जग मगलकारी॥
बिनु अपराध राम तिहि त्यागा।
ता कारन सब कर बल भागा॥
सक्ति - बिहीन विजय किमि होई।
कैसेउ रन कोविद भट सोई॥
अस बिचारि रामानुज बीरा।
बोले लव सन, सुनु मुनि धीरा॥
कहहु बाल तुम सुभट हमारे।
किहि कारन सजुग सहारे॥

दोहा

भूप-मौलि-मनि राम कर, सुनेउ प्रताप न कान।
तजहु अस्व अब बाल वर, हम अध छमहु निदान॥२॥

चौपाई

कहु निजु मात पिता कर नामा।
जिन पाए तुम सुत छवि धामा॥
तिन सम बड़ भाग। नहिं कोई।
अब तोहि देखि दया मोहिं होई॥
कहु निजु नाम बिदित संसारा।
हम जानी तुम सूर जुझारा॥

तुमहिं लिवाय चलहिं निज साथा।
विद्यमान जहं रघुकुल नाथा॥
सादर तिन सन तुमहिं मिलाई।
पावहु तहाँ वस्तु समुदाई॥
इहि विधि सुनि लव सुभट सुजाना।
बोले बैन समै अनुमाना॥
मम पितु मातु नाम तुम बूझा।
रन-मंडल यह निपट अबूझा॥
जोपि भए रन भीत बनाई।
तौ उपाइ यक कहौ बुझाई॥

दोहा

जेष्ठ बंधु मम वीर वर, श्री कुस परम उदार।
तिनके पद बिच धरहु सिर, तब हय मिलहि तुमार॥३॥

चौपाई

जो तुम राम अनुज बलवाना।
निज समान भट अपर न आना॥
जानहु सक्ति आपु उर माहीं।
तौ हय लेहु जीति हम पाहीं॥
अस कहि चाप तानि तिहि काला।
तजे बिपुल नाराच कराला॥
ते सर सिर भुज हृदे मझारा।
लगे-बेग जुत दारुन धारा॥
तब कोपे रिपुदहन नृपाला।
सजो हाथ कोदंड कराला॥
कीन्ह नाद घन इव अति भारी।
लव के उर महं त्रास बिचारी॥

सायक बिपुल तजे रन माहीं।
लव लाघव खंडे तव ताँहीं ॥
पुनि बहु सर तजि मेदिनि छाई।
नभ दिसि बिदिसिन परहि जनाई ॥

छंद

दिसि बिदिसिन नभ धरनिन, परहिं न जनाइ सर कोटिन छए।
तिहिं काल रवि मंडल छिप्यौ अति, सघन इव पिंजर ठए ॥
नहिं मरुत सकहि प्रवेसि तहं मुनि, नरन की गनती कहाँ।
निज प्रान संसै सकल भट, सब कटक मैं भानेउ महाँ ॥

दोहा

बितीपात कर दान जिमि, अक्षै होइ बनाइ।
'मधुसूदन' लव बान तिमि, जहं तहं परैं लखाइ ॥४॥

चौपाई

देखि सत्रुघन बिस्मय पावा।
घोर क्रोध पुनि उर मैं छावा।
तब सर सतन सहस्रन छंडे।
लव के सकल सिलीमुख खंडे ॥
उहाँ कुसानुज लखि सर-भंगा।
भए अरुन लोचन रन-रंगा ॥
हति सर आसु कीन्ह धनु-भंगा।
नाना मनि बिरचित बहु-रंगा ॥
अवर चाप रामानुज लीन्हा।
बहु सायक प्रहार बहु कीन्हा ॥
तब लगि उत लव लाघवताई।
तजि सर दल बान रघुराई ॥

पुनि तुरंग सारथी समेता।
खंड - खंड किय स्यंदन खेता॥
कर ते भंग कीन्ह कोदंडा।
अस बिक्रम किय लव बलवंडा॥

सोरठा

विक्रम अस विकराल, निरखि राम - भ्राता समर।
कीन्ह प्रसंस विसाल, चढ़े अवर रथ जाइ पुनि॥५॥

चौपाई

रथारूढ़ लखि लव तिहि काला।
कीन्ह कोप मन परम कराला॥
बान अनेक दले खर धारा।
बिधे सरीर भये ते पारा॥
श्रोनित स्रवत लसै तन कैसे।
परम प्रफुल्लित किंसुक जैसे॥
पुनि लव कुंडलीक करि चापा।
तजे बान तीक्षन जुत दापा॥
कीन्हे कवच मुकुट के खंडा।
लगे बान तन परम प्रचंडा॥
रामानुज तब कोपि अपारा।
तजे बान दस तीछन धारा॥
उर बिचारि लव प्रान संघारा।
ते सर चले ब्याल अनुहारा॥
उत लव निरखि चंड सर छंडे।
तिल समान ते सायक खंडे॥

छंद

पुनि अष्टबान प्रचंड, उर मैं दले बलवंड।
प्रगटी विथा अति घोर, लव को गुन्यो बरजोर॥

तब सत्रुसूदन बीर, करि कोप छंडे तीर।
लव तानि निज कोदंड, सर मारि कीन्हे खंड॥
पुनि तून ते इषु एक, कर लीन्ह ज्वाल अनेक।
धरि ताहि चाप मझार, ससि अर्द्ध के अनुहार॥
लव तानि कर्न प्रजंत, उर मध्य हन्यौ तुरत।
प्रगटी विकलता भीम, रथ मैं परे बल सीम॥

दोहा

धरें सरासन हाथ मैं, चापै अधर अनूप।
लखि मूर्छित रघुराज, कहं कोपे सब रन भूप॥७॥

चौपाई

सुरथ सुबाहु बिमल महिपाला।
सुमन वीरमनि जुत तिहि काला॥
रिपु तापन उग्रास नृपाला।
कोपि प्रताप अग्र बिकराला॥
अवर सकल नृप कोपि अपारा।
अंगदादि कपि एकहि बारा॥
लवहिं घेरि चहुँदिसि तें लीन्हा।
सकल प्रकारि प्रहारन कीन्हा॥
कोउक नृप सर घोर चलावै।
कोउक मुसल वृक्ष बरसावै॥
कुंत परस कोउ साँगि प्रहारा।
तजहि अवर आयुध खर धारा॥
निरखि अधर्म-जुद्ध लव बीरा।
दारुन कोप कीन्ह मुनि धीरा॥
अति लाघव सर मुष्ठि प्रहारे।
सब के अस्त्रन दलि महि डारे॥

दोहा

पुनि दस - दस सर विकट अति, सब के दले बनाइ ।
बहुरि बान वर्षे विपुल, कोप सहित, मुनिराइ ॥८॥

चौपाई

कोउक भजे भीत होइ भारी ।
कोउक मोहे समर मझारी ॥
काहुन धीर धरी रन माही ।
प्रबल मरुत जिमि घन उड़िजाही ॥
तब लगि तजि मूर्छा तिहि काला ।
उठे समर रिपुदहन नृपाला ॥
हुइ सचेत धर सर कोदडा ।
आये जह लव भट बलमडा ॥
बोले धन्य - धन्य तुम बालक ।
हम जानी मन रिपु - दल - घालक ॥
तुम बालक अपि सुर बर कोई ।
मोरे . मन निस्चय यह होई ॥
अस सघार न काहू कीन्हा ।
पुनि मो कह मूर्छित करि दीन्हा ॥
बाल देखु अब बिक्रम मोरा ।
तोहि निपातहुँ रन वर जोरा ॥

दोहा

बाल एक सहु बाण मम, जनि रन देहु बिहाइ ।
अस कहि कर कोदड तब, धार्यो सबल दिढ़ाई ॥९॥

चौपाई

पुनि सोई सायक कर लीन्हा ।
जिहि सर लवनासुर बध कीन्हा ॥

काल बदन सम सो बिकराला।
छुटहिं विकट पावक कै ज्वाला॥
धरि कोदंड ताहि संधाना।
श्री लव हिय करि लच्छ समाना॥
कोटिन भट बन पावक रूपा।
बल-निधान लव परम अनूपा॥
उहाँ सत्रुघन करस्यो बाना।
निरख्यौ रन बिच विकट निदाना॥
दुहुँ दिसि तासु प्रकास बिराजा।
महा ज्वाल जुत जानि अकाजा॥
तब मन लागे करन बिचारा।
देखिय यह सर कठिन अपारा॥
इहि अवसर चाहिय मम भ्राता।
श्री कुस रिपु-गन-करन-निपाता॥

दोहा

परम बली, सिर मुकुट मनि, जौ होते कुस पास।
तौ रिपुसूदन बान की, मोहि कहाँ रन त्रास॥
यहि प्रकार संग्राम मैं, श्री लव करत बिचार।
तब लगि सायक चड सो, रिपुहन कीन्ह प्रहार॥

सोरठा

प्रगटी बिथा प्रचंड, मूर्छित ह्वै भूतल परे।
जदपि महा बलमंड, श्री लव सूर सिरोमनि॥१०॥

इति श्री पद्म पुराणे पाताल षंडे, सेष वात्सायन संवादे, मधुसूदन दास कृते, लव मूर्छननाम द्विषष्ठितमोऽध्यायः॥६२॥

शत्रुघन-मूर्छा

दोहा

परम बली लव बीर बर, रिपु-गन-बिपिनि-कृसान ।
तिन कह मूर्छित निरखि रन, राम अनुज बलवान ।।

चौपाई

बिजय पाइ उर हरषित भयेऊ ।
बहुरि एक रथ लव धरि लयेऊ ।।
सीस-त्रान कवचादिक साजे ।
स्याम सुगात मदन छवि लाजे ।।
अवध चलन हित तब महिपाला ।
कीन्ह बिचार मुदित तिहि काला ।।
तब सब मुनि सुत, सुनि मुनिराई ।
भए महा दुख बिबस बनाई ।।
प्रान सरिस लव मित्र पियारा ।
ताहि देखि रिपु पास मझारा ।।
आतुर जनक-सुता पह गयेऊ ।
लव कृत कर्म सुनावत भयेऊ ।।
सुनहु मातु जानकी सुजाना ।
आवा एकु भूप बलवाना ।।
लीन्हे संग अमित कटकाई ।
चारि अंग जुत अति कठिनाई ।।

दोहा

तासु जज्ञ कर बाजि बर, पकरो लव जुत मान ।
तब लगि हय रच्छक विपुल, आए अति बलवान ।।१।।

चौपाई

तिन सन कीन्ह जुद्ध लव भारी।
हत्यौ सबनि संग्राम मझारी॥
विजय पाय लव संजुग ठाढ़े।
रिपु समूह कछु गनेउ न गाढ़े॥
तब लगि सोइ महीप पुनि आवा।
लव करि बहु रन ताहि गिरावा॥
विजय बिसाल पाइ सुत तोरा।
ठाढ़ भयौ धरि धनु सर घोरा॥
तजि मूर्छा नृप दारुन भारी।
हते आनि लव समर मझारी॥
बरबस पुनि धरि स्यदन माहीं।
गयौ मातु सुनु निजु पुर माही॥
हम बरजे बल प्रथम निदाना।
जनि पकरहु हय नृप बलवाना॥
हमरे बचन कीन्ह नहि काना।
जननी लव उर अति अभिमाना॥

दोहा

इहि प्रकार मुनि बालकनु, सुनु मुनि कीन्ह बखान।
गिरी धरनि ब्याकुल सिया, रोदति बदति निदान॥२॥

चौपाई

कस वह खल नृप दया-बिहीना।
जिहि बालक सन संजुग कीन्हा॥
अति अधर्ममय कुमति निधाना।
मम सुत जिहि रन हत्यौ निदाना॥

हे लव पुत्र बीर सुकुमारा।
तुम किमि ठाउं तात इहि बारा॥
बिस्मय होत मोर मन भारी।
किमि पकरो नृप हय करि रारी॥
तुम बालक नृप अति बलवाना।
अस्त्र - सस्त्र पुनि निपुन निदाना॥
रथी भूप सुत तुम बिनु जाना।
किमि जीतेंहु, नहिं मन अनुमाना॥
मै कानन किमि राखहु प्राना।
देहि कवन धीरज मोहि दाना॥
राम - त्याग दुख कछुक भुलाना।
तात देखि तोहि हत न अयाना॥

दोहा

तात कवन बिधि बिपिन बिच, अब राखहुं निजु प्रान।
तुम बिनु सुत चहुं ओर तें, महा विपति अधिकान॥३॥

चौपाई

परिहरि अस्व तात नृप केरा।
आवहु निकट होति है बेरा॥
पाइ तुरंग भूप फिरि जैहै।
तुमहिं न तात बहुरि धरि लैहै॥
तुम बालक मम दुखहि न जाना।
मैं किहि सन अब करहुं बखाना॥
आवहु तात बेगि अस जानी।
मोचहु निजु कर मम दृग पानी॥
कुस होते इहि अवसर पाहीं।
तुमहिं उबारि लेत सक नाहीं॥

सकल सूर - सिरोमनि कुस सोई।
निजु समीप नाहीं अब जोई ॥
अब मैं करहुं कहा इहि काला।
दैव दीन्ह मोहि बिपति कराला ॥
इहि बिधि विविधि बिलाप कलापा।
करहि सिया उर सुत परितापा ॥

दोहा

महा सोक बस बिकल सिय, सुनहु सूत तिहि काल।
पद अंगुष्ठ सन लिखहि महि, नयनन स्रवहि जल जाल ॥४॥

चौपाई

पुनि बोली मुनि - पुत्रनि पाहीं।
नृप किमि लवहि बाँधि रन माहीं ॥
गयौ कवन दिसि कहौ बुझाई।
बढ़ति जाति इमि अति बिकलाई ॥
तब लगि कुस आए मुनिराई।
संग महा मुनिगन समुदाई ॥
बिसद पुरी उज्जैन बिसाला।
जग बिख्यात पुनीत रसाला ॥
तहाँ महा काली कर धामा।
पूजहि मनुज सहित अभिरामा ॥
माघ कृष्न चौदसि दिन माहीं।
करि पूजन कुस देवी पाहीं ॥
अस्त्र - सस्त्र विद्या विधि नाना।
पढ़ी सकल लहि बहु बरदाना ॥
यह सुनि जनि संसौ कोउ आनौ।
दीन्ह बड़ाई देविहि जानौ ॥

दोहा

तिहि अवसर निज मातु कुस, निरखी बिकल अपार।
सोक बिबस अति दीन तन, तजत नैन जल धार ॥५॥

चौपाई

बोलन लगे बचन तिहि काला।
फरकी तब लगि बाहु बिसाला ॥
रन सूचक भय सगुन सुहाए।
जुद्ध उछाह हृदय महं छाए ॥
मातु दुक्ख करि दुक्खित भारी।
तदपि धीर-मनि गिरा उचारी ॥
मातु विकल किहि कारन भारी।
मै तुव पुत्र अग्र सचुकारी ॥
जीवत मोहि तजो किमि आँसू।
बोलहु बच्चन त्यागि सब त्रासू ॥
मम भ्राता लव परम पियारा।
बीर धुरीन कहाँ इहि बारा ॥
मम आगम सुनि उर हरषाई।
सदा मिलन हित धावत आई ॥
किहि कारन तिहि देखौं नाहीं।
क्रीड़ा करहि कवन थल माहीं ॥

दोहा

कै मुनि बालक सहित लव, गए बिलोकन मोहिं।
मातु सत्य कहु अनुज कित, संसै बूझहु तोहि ॥६॥

चौपाई

तुम किमि रूदन करो मम माई।
यहु कारन सब कहु समुझाई ॥

पुत्र बचन सुनि जनक - कुमारी।
महा सोक - जुत गिरा उचारी ।।
सुनु सुत जग्य - हेत यक भूपा।
तज्यौ तुरंगम परम अनूपा ।।
सो हय लव पकरो वन माहीं।
आए बहु रच्छक तब ताहीं ।।
हते सकल लव समर मझारी।
तब लगि आवा नृप भट भारी ।।
मम सुत अति कोमल पुनि एका।
तात भूप संग कटक अनेका ।।
करि मूर्छित लव कहं रन माहीं।
पुनि धरि पास गयो पुर ताहीं ।।
मुनि बालकनि कहेउ मोहिं आई।
ताते महा सोक अधिकाई ।।

दोहा

तात जीति नृप कहं समर, ल्यावहु अनुज छुड़ाइ।
होत गहर अब जाहु तुम, लव दुख बिबस बनाइ ।।७।।

चौपाई

सुनि अस मातु गिरा तिहि काला।
भए रोष बस लोचन लाला ।।
दसन बिमर्दि अधर डसि बीरा।
बोले श्री कुस बचन गंभीरा ।।
नृप कै पास भंजि सुनु माता।
ल्यावहुं अबहि मोचि निजु भ्राता ।।
हति प्रचंड नृप की कटकाई।
छिन मैं करहुं बिहाल बनाई ।।

जोपि संभु सब सुर समुदाई।
चढ़हिं तासु दिसि होइ, सुनु माई॥
जीतहुं तदपि नृपहि, सक नाहीं।
हति प्रचंड सायक रन माहीं॥
मातु अनुज कहं लेहुँ उबारी।
तुम किमि रोवहु व्याकुल भारी॥
रन मैं गिरै सुभट कह सोभा।
जो पै भजै जानि जिय लोभा॥

दोहा

होइ अजसुनौ, सकल जग, पुनि लहि नरक निवास।
लव मूर्छित सनमुख भए, तुम किमि मानहु त्रास॥८॥

चौपाई

जननी दिव्य कवच मम देहू।
सीस-त्रान सजत जुत नेहू॥
गुन समेत कोदंड विसाला।
पुनि सुंदर करबाल कराला॥
अबही सकल सैन सहारा।
करहुं जाइ अपि समर मझारा॥
मूर्छित भ्रातहिं लेहुं छुड़ाई।
त्यागहु जननि सकल बिकलाई॥
जौ न बिमोचहुं लव कहं जाई।
तौ प्रन सत्य सुनहु अब माई॥
तुम पद-बिमुख होइ इहि काला।
इहि तें अधिक न पाप कराला॥
यह सुनि सिया हरषि मुनिराई।
पुनि सब अस्त्र-सस्त्र दिय आई॥

कहेउ समर जीतहु सुत जाई।
आतुर भ्रातहि लेहु छुड़ाई॥

दोहा

यह सुनि कुस संग्राम महि, सज्यौ कवच सिर त्रान।
कुंडल सुंदर सोभिजै, स्याम गात छवि दान॥९॥

चौपाई

कठिन कृपान चम जुत धारा।
लीन्ह चाप बर पानि मझारा॥
दोउ दिसि अक्षय सजे निषगा।
अतुलित बल-निधि रन रस भगा॥
सादर मातु चरन धरि सीसा।
चले सिघ इव सुनहु मुनीसा॥
सत्वर जाइ समर थल देखा।
परे महा भट मृतक न लेखा॥
कछुक दूरि रन निरखत गएऊ।
अनुज कर्म गुनि प्रमुदित भयेऊ॥
उहाँ कुसहि आवत मुनिराई।
निरखत भई राम कटकाई॥
मानहुं कोपि कृतांत अपारा।
आवा करन विस्व सहारा॥
पुनि लव महा बली बल बीरा।
निरखे कुस भ्राता रन धीरा॥

सोरठा

भए मुदित मन माहिं, कूदे रथ ते बेग जुत।
गलित दीन की नाहिं, भजन करि दृढ़ पास सब॥१०॥

चौपाई

जिमि पावक लहि मरुत प्रचंडा।
होइ प्रफुल्लित सिषा अखंडा॥
लव तिहि भाँति सोह मुनिराई।
व्याकुल भई निरखि कटकाई॥
पूरुब दिसि तें कुस रन माहीं।
लागे दहन अनल की नाहीं॥
पस्चिम तं लव कोपि प्रचंडा।
मर्दन लगे कटक बलमंडा॥
श्री लव कुस के सायक घोरा।
लागहिं विपुल सैन चहुँ ओरा॥
जिमि समुद्र महँ उठहि तरंगा।
तिमि अकुलान कटक सब अंगा॥
कुस लव बान बूंद झर लाए।
करि व्याकुल बहु सुभट गिराए॥
पुनि-पुनि मथी सकल कटकाई।
रन की आस सबनि बिसराई॥

दोहा

रथारूढ़ होइ समर बिच, काहू कीन्ह न जुद्ध।
भए महा व्याकुल सकल, निरखि बाल दोउ क्रुद्ध॥११॥

चौपाई

रिपु-गन-दहन सत्रुघन राजा।
तिहि अवसर लखि बिकल समाजा॥
चामीकर मनिमय रथ माहीं।
चढ़ि आए सजुंग कुस पाही॥

निरखे लव अनुहारि सरूपा।
धरे राम सम सोभ अनूपा॥
बिस्मय हर्ष रोष रस सानी।
बोले राम-अनुज तब बानी॥
को तुम सम सरूप दोउ भ्राता।
परम सुखद मृदु स्यामल गाता॥
पुनि निजु मातु पिता कर नामा।
हमहि बुझाइ कहौ बल-धामा॥
किहि कारन बन करहु निवासा।
तुम उत्तिम नर तेज प्रकासा॥
करहु आसु यह संसै भंगा।
तब हम मंडहि रन तुव संगा॥

दोहा

इहि प्रकार सुनि कुस समर बोले गर्जि गंभीर।
बूझत जोग न तुमहिं जहं, तदपि सुनहु रन धीर॥१२॥

चौपाई

मातु हमारी जानकी नामा।
पति-देवता बिसद गुन धामा॥
केवल तिहि बिनु पितहि न जाना।
इहि आस्रम बिच बसहिं निदाना॥
बालमीकि पद-कंज-पुनीता।
संतत सेवन करहिं सप्रीता॥
पुनि निजु मातु चरन सेवकाई।
करहिं निरंतर काम बिहाई॥
सकल समर-विद्या हम जाना।
कुस लव नाम प्रसिद्ध निदाना॥

निज बिरतांत कहा समुझाई।
कहु निजु आपनि कथा बुझाई॥
तुम को, केहि हित छाड़ेउ बाजी।
कवन हेत सैना बहु साजी॥
फिरहु समर उत्साह समेता।
जहं - तहं छत्रिन जीतहु खेता॥

दोहा

जौ तुम सूर सुजान नृप, तौ करु रन मम संग।
अब ही हति तोहि सरनि सर, डारहुं करि मद भंग॥१३॥

चौपाई

इहि विधि सुनि रिपुसूदन काना।
जानें सिय के पुत्र निदाना॥
बिस्मय भूरि चित्त मैं आनी।
पुनि सकोप कर धनु संधानी॥
कुस निरखा नृप दंड चढ़ावा।
रोष प्रचंड हृदै मह छावा॥
दृढ़ गुन सहित कीन्ह कोदंडा।
कीन्ह बहुरि टंकार प्रचंडा॥
तब लगि रिपुसूदन सर जाला।
तजे परम दारुन जनु ब्याला॥
कुस लीला करि संजुग माहीं।
खंडेउ सब सर तिल की नाहीं॥
पुनि सर सतनि सहस्रनि लच्छा।
तजहि उभय जिमि नाग सपच्छा॥
व्यापि गए सब लोक मझारा।
अति बिस्मय पुनि भा संसारा॥

छंद

संसार मै विस्मय भएउ, अति सुनहु मुनि सर देखि कै।
इत निरखि कुस बर बीर नृप, इषु बिपुल प्रबल बिसेखि कै ।।
तब अनल अस्त्र प्रचंड धरि, कोदंड बिच छड्यौ तबै।
छिन माहिं कीन्हें भस्म बिनु: श्रम रिपुदहन सायक सबै ।।

दोहा

बरुन अस्त्र करि कोप तब, रामानुज सर छंड।
कीन्ह सांति सुनु सूत सब, पावक परम प्रचड ।।१४।।

चौपाई

श्री कुस मारुत अस्त्र चलावा।
घन समूह छिन माहि उड़ावा ।।
पुनि पर्वत सर चड प्रहारा।
बर्षउ दल पर बिपुल पहारा ।।
तब रिपुसूदन पवि सर छंडा।
कीन्है रज सम सैल प्रचंडा ।।
परम मंत्र - वित कुस तिहि काला।
नारायन सर तज्यौ कराला ।।
सो सर मुनि जाजुल्प अपारा।
छिन मैं भस्म करै संसारा ।।
रामानुज ऊपर सोइ बाना।
करि न सक्यौ कछु त्रास निदाना ।।
यह बिलोकि कुस बिस्मय पावा।
पुनि निजु उर अति कोप बढ़ावा ।।
सुनहु भूप तुम अति बलवाना।
महत पराक्रम निधि हम जाना ।।

दोहा

महावीर तुम विस्व महं बहु रन जीतनहार।
श्री पति अस्त्र अभंग अति, करि न सक्यो सहार ॥१५॥

चौपाई

अब नृप हय हति डारहु धरनी।
तीनि बान सन करि निजु करनी॥
जौ न निपातहुं समर मझारी।
सुनहु प्रतिज्ञा सत्य हमारी॥
मनुज सरीर पाइ जग जोई।
कोटि पुन्य करि दुरलभ सोई॥
हुइ अनन्य तजि सर्स जाला।
जौ न भजहि हरि परम कृपाला॥
भूतल तुमहिं न देहु सुबाई।
सो अघ मो कह लागहु आई॥
सावधान नृप होहु बनाई।
डारहुं महि करि बिकल बनाई॥
अस कहि धनु बिच सायक धारा।
प्रलय काल पावक अनुहारा॥
महा घोर कछु बरनि न जाई।
करि उर लच्छ तजो मुनिराई॥

छंद

उर लच्छ करि मुनि राइ, सो सर तज्यौ परम भयंकरा।
रिपुदहन आवत देखि ता कहं, जिमि विषम अहि रिस भरा॥
हिय सुमिरि राम सरूप, धनु - संधानि बान प्रहारेऊ।
कुस - चंड सायक खंड करि, अति बेग भूतल पारेऊ॥

दोहा

निज सर भंग बिलोकि कुस, कोपे समर अपार।
अपर बान धरि धनुष बिच, बध हित कीन्ह बिचार ।।१६।।

चौपाई

तब लगि लवनांतक तजि बाना।
कर तें खडन कीन्ह निदाना ।।
बाड़व पावक सम सर सोई।
श्री कुस तासु भंग रन जोई ।।
सुमिरि सिया पद कोपि प्रचंडा।
तीसर सायक धरि कोदंडा ।।
सत्वर स्रवन लागि सो त्यागा।
चला महा जव मानहुं नागा ।।
रिपुसूदन तहं खंडन हेतू।
तब लगि चाप लीन्ह मुनि केतू ।।
तब लगि लाग हृदे सो बाना।
अति दारून कृतांत अनुमाना ।।
प्रगटी घोर बिथा अति भारो।
गिरे आसु रन भूमि मझारी ।।
रामानुजहिं धरनि तब देखी।
त्राहि - त्राहि सब करहिं बिसेखी ।।

दोहा

निजु भुज बल कुस बीर बर, पाई विजय बिसाल।
मधुसूदन संग्राम बिच, भये सकल बेहाल ।।१७।।

इति श्री पद्म पुराणे, पाताल षंडे, सेष वात्सायन संवादे, मधुसूदन दास कृते, सत्रुघन मूर्छनं नाम त्रिषठितमोऽध्यायः ।।६३।।

सैन्य-संजीवनी

दोहा

महाराज रिपु दहन कहं, मूर्छावंत निहारि।
सुनु मुनीस सुरथादि नृप, कोपे हृदय मझारि॥

चौपाई

बिसद हेम मनिमय रथ माहीं।
चढ़ि-चढ़ि चले सकल कुस पाही॥
परम सूर पुष्कल तिहि बारा।
निजु मन मैं अस कीन्हि बिचारा॥
मोहि प्रथम लव मूर्छित कीन्हा।
अब तिनहो सन संजुग लीन्हा॥
इहि प्रकार मन ठोक दिठाई।
पहुंचे लव सनमुख तब जाई॥
बिबिधि भांति भज्यौ सग्रामा।
दोनौ सुभट अतुल बल धामा॥
इहाँ सुरथ नृप कहं लखि आवा।
श्री कुस निज मन कोप बढ़ावा॥
अति तीच्छन दस बान प्रहारे।
नृपहि बिरथ करि भूतल डारे॥
दिढ़ गुन सहित चाँप किय भंगा।
तब नृप सुरथ महा रन रंगा॥

दोहा

तजहि अस्त्र पर अस्त्र बहु, अति प्रचंड संग्राम।
अति लाघव छिन छिन विषै, काटत कुस बलधाम॥१॥

चौपाई

सुभट सिरोमनि इत कुस बीरा।
उत बल पुंज सुरथ रन धीरा॥
परम तुमुल रन भा तिहि काला।
सुभट – रोम – हरषन - बिकराला॥
सुरथ भूप रन दुर्जय भारी।
छिन - छिन करहि भयानक रारी॥
तब कुस निजु मन कीन्ह बिचारा।
कहा करहुँ मै नृप बल भारा॥
करि मन ठीक लीन्ह सर चडा।
नृप - हित तज्यौ तानि कोदडा॥
प्रलय अनल सम आवत देखी।
खडन हित मन कीन्ह बिसेखी॥
तब लगि आसु आइ उर लागा।
मूछित भये तुरत रथ त्यागा॥
निरखि सारथी स्यंदन खाली।
पवन – तनय तब रन तें चाली॥

दोहा

रन बिहाइ तब पवन सुत, आए कोपि कराल।
सुरथ भूप कहं मूछि लखि, धाव मरुत सुत हाल॥२॥

चौपाई

आवत प्रबल बलीमुख देखा।
हंसि बोले कपि कोप विसेखा॥
रे कपि किमि मम सनमुख आवा।
भाजु बेगि जो चहै बचावा॥

नाहित सर सहसनि बिकराला।
इति जमपुर पठवहुं इहि काला॥
अस सुनि कपि लखि स्याम सरूपा।
जानी रघुपति तनय अनूपा॥
महा बली जानै सब ओरा।
अजित, अजोग्य जुद्ध, बरजोरा॥
पुनि निजु सेवक धर्म बिचारा।
स्वामि काज तब कर इहि बारा॥
मूल समेत साल-द्रुम भारी।
अति बिसाल सो लीन्ह उखारी॥
तब साखा संजुत बहु घोरा।
धायो धरि कपि कुस की ओरा॥

दोहा

महा बेग जुत कोपि हिय, कीन्हसि वृक्ष प्रहार।
अर्ध चद्र सर तीनि हति, कुस खडन करि डार॥३॥

चौपाई

अपर साल द्रुम एक उखारी।
हन्यौ कोपि कपि हृदै मझारी॥
दसन मर्दि यह बिक्रम कीना।
कुस रचक नहिं भए मलीना॥
निरखि सुभट सब बल बिपुलाई।
कीन्ह प्रसंसा सुनु मुनिराई॥
कुस संहार-अस्त्र तब लीन्हा।
तानि कान लगि पुनि तजि दीन्हा॥
काल रूप सो अति बिकराला।
आवत लखि हनुमत तिहि काला॥

सुमरे हृदय राम भगवाना।
भक्त - बिघन - भंजन सुखदाना॥
सो सर विकट अभंग बनाई।
प्रेरित मंत्र लाग उर आई॥
विथा प्रचंड भई उर माहीं।
मूर्छित भए गात सुधि नाहीं॥

छंद

मूर्छित भए, नहिं गात सुधि, हनिमंत संजुग मैं परे।
अवलोकि कुस रन धीर, सायक अमित छंडे रिस भरे॥
सब कटक कीन्ह बिहाल, बहुतक, निरखि रन तन परि हरे।
गज जथा बाजि बरूथ बहु भट, वान लागत बिडुरे॥

दोहा

सर प्रहार नहिं सहि सकत, श्रोनित स्रवत सरीर।
भाज्यो दल चतुरंग सब, कुस सन घरत न धीर॥४॥

चौपाई

तब संजुग सुग्रीव हरीसा।
कोपे उर अति सुनहु मुनीसा॥
कुधर बिसाल धारि कर धावा।
कुस ऊपर बल सहित चलावा॥
सैल विकट सोइ आवत देखा।
हंसि लीला करि दल्यौ विसेखा॥
पुनि द्रुम एक बिसाल प्रहारा।
कुस करि तिल प्रमान महि डारा॥
बहुरि बान अगिनित बिकराला।
दले कपीस गात तिहि काला॥

बिकट बिथा बस ब्याकुल भयेऊ।
तब करि कोप घोर गिरि लयेऊ॥
कुस मस्तक कह कीन्ह प्रहारा।
बल सम्हारि सब समर मझारा॥
आवत देखि आसु बल भ्राता।
बहु सायक तजि कीन्ह निपाता॥

छंद

तब कुस बल मडा, करि गिरि खडा, रूप प्रचंडा, प्रगट कियौ।
विक्रम बिकराला, लखि तिहि काला, मर्कट - पाला हारि हियौ॥
बिसरी जं आसा, उर अति त्रासा, जानि विनासा समर जबै।
लगूर भ्रमाई, आतुर धाई, कोप बढ़ाई, ताड़ि तबै॥

दोहा

पुनि आतुर द्रुम कुधर बहु, बध लागि कीन्ह प्रहार।
किए खड बहु बान हति, कुस सग्राम मझार॥

सोरठा

बहुरि बान बिकराल, दले कीसपति-गति महा।
प्रगटी बिथा बिसाल, लीन्ह कोपि तव साल द्रुम॥५॥

चौपाई

कुस बिलोकि कर साल विसाला।
कीन्ह कोप उर अति बिकराला॥
बरुन अस्त्र धरि चाप मझारा।
खैचि स्रवन लगि सत्वर मारा॥
प्रबल पास - बस भयेउ कपीसा।
गिरे धरनि तल, सुनहु मुनीसा॥
सोभित कीन्ह समर थल भारी।
भजी निरखि सब सेन दुखारी॥
महाबीर सिरोमनि कुल बीरा।
पाई विजय सुनहु मुनि धीरा॥

तब लगि उत संग्राम मझारी।
महा बीर बर लव बल भारी।।
जीते पुष्कलादि बर बीरा।
अंगदादि कपि जूथप धीरा।।
नृपति प्रताप अग्र जुत जेते।
प्रबल वीरमनि आदिक तेते।।

दोहा

निज भुज बल जीते सकल, दल जुत बिगत - प्रयास।
दोनौ भ्रातन कटक सब, इहि विधि कीन्ह विनास ।।६।।

चौपाई

एक सुमंत सचिव बचि गयेऊ।
बिप्र जानि तिहि बधत न भयेऊ।।
यह संजुग संक्षेप बखाना।
भये मृतक सब हय गज जाना।।
इहि बिधि जीति सकल कटकाई।
मिले बहोरि आइ दोउ भाई।।
परमानंद परसपर भयेऊ।
कुस के चरन सीस लव नयेऊ।।
पुनि लव बोले बचन विनीता।
जोरि पानि जुग सुखद सुप्रीता।।
तुव प्रसाद कुस बंधु उदारा।
मै जीत्यौ यह रन भयकारा।।
अब चलि सोधौ सब कटकाई।
देखहु जहं तहं धन अधिकाई।।
जो कछु नीक लाग सो भाई।
सो सब लेहु हृदय हरषाई।।

दोहा

अस बिचारि दोउ बंधु बर, अति निसंक मुनि राइ।
जात भये हिय हर्ष जहं, मृतक भूप समुदाइ ॥७॥

चौपाई

रिपुसूदन सिर कीट सुहावा।
अति बिचित्र मनि हेम बनावा ॥
सो उतारि कुस निजु सिर धारा।
जानि अनुपम अति दुतिकारा ॥
पुनि पुष्कल कर मुकुट रसाला।
सो लै लव धारेउ निजु भाला ॥
अंगदादि भूषन बहुतेरे।
सत्रुघनादि महीपनु केरे ॥
प्रमुदित सजत भये दोउ भाई।
सुनु मुनि अति अनूप छवि छाई ॥
लघु वय स्याम गात छवि धामा।
निरखि बारियै कोटिन कामा ॥
पास बिबस ब्याकुल कपि-ईसा।
परे समर मडलहि मुनीसा ॥
श्री कुस तिनकी पूछ बिसाला।
धरि लीन्ही निज कर तिहि काला ॥

दोहा

पुनि लव मारुत तनय की, पूछ हाथ धरि लीन्ह।
जदपि महा बलवान कपि, तदपि नहीं कछु कीन्ह ॥८॥

चौपाई

बोले बचन हरषि कुस पाहीं।
चलहु लिवाइ कपिन गृह माहीं ॥

जननो - मन - रंजन हित भाई।
पुनि खेलब मुनि सुत समुदाई॥
मम कौतुक करि बंधु उदारा।
अवसि लिवाइ चलौ आगारा॥
यह सुनि के बोलेहु संग वाही।

अस कहि बाजि सहित दोउ कीसा।
आस्रम कहु लै चलेउ मुनीसा॥
पवन - तनय अरु मर्कटपाला।
आस्रम जात निरखि तेहि काला॥
निजु - निजु पूछैं दीन बढ़ाई।
कंपवान तन भयेउ बनाई॥

दोहा

भये महा भयभीत तब, कहैं परसपर दीन।
वात्सायन कपि - राज सन, कह हनुमंत मलीन॥९॥

चौपाई

ए श्री राम तनय बलवाना।
लिये जाहिं निजु भवन निदाना॥
प्रथम जाइ हम लंक मझारी।
सिय देखत किय बिक्रम भारी॥
विपिन उजारि, भसम पुर कीना।
दले तमीचर निकर मलीना॥
तब हम सिय सनमुख कपिराई।
तिहि कारन जहं तहं जय पाई॥
बिमुख भए कर, यह फल देखा।
लिये जाइ सिसु बाँधि विसेखा॥

सो सिय हंसि है हमहि निहारी।
तब होइहै पीड़ा उर भारी॥
तजि अब अवसि गात तह प्राना।
यह दुख नहि सहि जाइ निदाना॥
अब देखिय श्री राम उदारा।
कहा करहि इहि समर मझारा॥

सोरठा

कह कपीस तिहि काल, तुम तें हम परबस अधिक।
भए निपट बेहाल, प्रान त्याग मै सक नहीं॥१०॥

चौपाई

इहि प्रकार कं भीत बनाई।
कहत परसपर सुनु मुनि राई॥
तब लगि कुस लव हर्ष समेता।
गए कपिन जुत मातु निकेता॥
सिया ´तनय दोउ आवत दखे।
विषद विभूपन सजे बिसेखे॥
परम मनोहर रूप निहारी।
भई मुदित मन सोक बिसारी॥
परम छोह जुत आतुर धाई।
कठ लगाइ लिये दोउ भाई॥
पूछ बिसाल करन बिच देखी।
बहुरि बिलोकेउ कोस विसेखी॥
परम वीर मारूत - सुत जानं।
निरखि चिन्ह कपि - पति पहिचानै॥
पास बद्ध सुत बिबस निहारी।
हसि बोली मिथिलेस - कुमारी॥

दोहा

तात तजहु दोउ कपिन कहु, अति आतुर इहि काल ।
जोपि मोहि अवलोकिहैं, तजहि प्रान ततकाल ॥११॥

चौपाई

यह हनिमंत बीर बलवाना ।
जिन दसमुख पुर दह्यो निदाना ॥
पुनि सुग्रीव नाम यह भ्राता ।
पद्म अठारह जूथप राजा ॥
कवन हेत इन कह धरि लीन्हा ।
तुव अपराध कहा इन कीन्हा ॥
पुनि किहि ठाउं इनहिं तुम पाए ।
बेगि कहौ उर ससै छाए ॥
इहि बिधि मातु बचन सुनि काना ।
बोले लव करि विनय निदाना ॥
मातु एक नृप दसरथ नामा ।
अवधपुरी पति तिहि सुत रामा ॥
आपुहि जानि परम बलवाना ।
अस्वमेध मख तिन पुर ठाना ॥
तज्यौ कनक पट सजि तिन बाजी ।
चमू तासु संग अगिनित साजी ॥

दोहा

तिहि हय के पट बिच लिखा, राम सहित अभिमान ।
बीर प्रसूतिन मातु मम, ता सम विस्व न आन ॥१२॥

चौपाई

जे छत्री मानी संसारा ।
छत्रानी तन प्रगट जुझारा ॥

होइ जोपि विपरीति बनाई।
तौ पूजहु भ्राता पद आई॥
तब मैं बाँचि हृदै अनुमाना।
देखि राम नृप कर अभिमाना॥
हम छत्री कहि नहि विख्याता।
बीर-जननि कह नाहिन माता॥
मैं हय धरा मातु अस जानी।
तब लगि आए कुस बलखानी॥
भजी सकल तासु कटकाई।
समर निपाते नृप समुदाई॥
रिपुसूदन महीप कर भाई।
कुस किरीट सिर सजे बनाई॥

दोहा

दूसर पुष्कल नाम भट, तासु मुकुट मम भाल।
रग-रग मनि हेम मय, राजत मुक्ता जाल॥१३॥

चौपाई

श्री कुस चढ़न हेत सुनु माई।
ल्याए यह अनूप हय-राई॥
ए दोउ कीस महा बलवाना।
इन कीन्हा संग्राम निदाना॥
कौतुक हेत इनहि धरि लीन्हा।
तुव समीप सब बनन कीन्हा॥
अस सुनि पुत्र गिरा बैदेही।
पुनि-पुनि कहत जु दोउ कपि एही॥
तुम विधि समर सकल कटकाई।
जग्य तुरंग ल्याए हरषाई॥
पुनि दोउ कपिन बाँधि करि आनै।
अस न कर्म कोउ करहि अयान॥

तुव पितु अस्वमेध मख ठाना।
तिन यह तज्यौ तुरग, नहि आना।।
बंस सघारि अस्व सोइ आना।
मंद कर्म सोइ कीन्ह निदाना।।

दोहा

हय समेत दोउ कपिन अब, तजहु तात ततकाल।
तुव पितु भ्राता सत्रुघन, तिन पद नावहु भाल।।१४।।

चौपाई

यह अपराध तात तिन पाहीं।
छिमा करावहुं चलि रन माहीं।।
मातु बचन अस सुनि दोउ भाई।
बोले गिरा सरल सिरु नाई।।
छत्र धर्म अनुकूल बनाई।
हम भूपहि जीत्यौ सुनु माई।।
कवन हेत दूषन मुहि देहू।
छत्रि धर्म मैं उचित सु ए हू।।
प्रथमै बालमीक मुनि नाथा।
हम सन कही पढ़त यह गाथा।।
पूर्व भुआल भरत यक भयेऊ।
सुत दुष्यन्त जुद्ध अति ठयेउ।।
स्वामी सन सेवक रन करहीं।
पुनि पितु प्रति सुत संजुग लरहीं।।
गुरु अरु सिष्य सुनहु महतारी।
रन मंडल बिच मंडहि रारी।।

दोहा

करहिं बंधु सन बंधु रन, पुनि मीतन सन मीत।
मातु हमहिं दोस न कछु, यह छत्रिन कै नीत।।१५।।

चौपाई

जो यहि आस्रम नहिं हय आवत।
तौ किमि हम उन कहं रन बाँधत ॥
अब तुव आइस मानहिं माई।
तजहिं उभय कपि जुत हय राई ॥
अस कहि मारुत तनय कपीसा।
तजे तुरत तिहि समै मुनीसा ॥
त्यागा बहुरि जग्य कर घोरा।
मानि मातु आयसु बरजोरा ॥
पुनि जानकि दोउ सुतन समेता।
गई जहाँ रिपुहन जिहि खेता ॥
रामहिं सुमिरि, भानु दै साखो।
सरल सुभाइ गिरा तब भाषी ॥
जो मैं मन बच कर्म बनाई।
भजी निरंतर श्री रघुराई ॥
संतत सब छल छिद्र विहीना।
पुनि संपनेउ मन अनत न कीन्हा ॥

दोहा

तौ जीवहु नृप सत्रुघन, पुष्कल जुत ततकाल।
पुनि जीवहु सब कटक रवि, निपट जे समर बिहाल ॥
बदति जाति इमि जानकी, 'मधुसूदन' सतिभाइ।
तब लगि निजु-निजु प्रान लहि, उठे सकल कटकाइ ॥

सोरठा

सुनु मुनि सुतन समेत, प्रमुदित ह्वै तब जानकी।
तुरतहि गई निकेत, मर्म न काहू जानि कछु ॥१६॥

इति श्री पद्म पुराणे पाताल षंडे सेष वात्सायन संवादे, मधुसूदन दास कृते, सैन्य संजीवनं नाम चतुः षष्ठो तमोऽध्यायः ॥६४॥

सुमति-निवेदन

दोहा

वात्सायन मुनि वर सुनहु, छिन महं सब लवनारि।
तजि मूर्छा जागत भए, दल जुत समर मझारि॥

चौपाई

सनमुख अस्वमेध मख देखा।
सीस त्रान बिनु आपुहि लेखा॥
जीवत हेरि सकल कटकाई।
अति बिस्मय हिय मानि बनाई॥
बुद्धिवंत वर नीति निधाना।
बोले सचिव समेत सुजाना॥
मख पूरन लगि दोनों भाई।
दीन्ह तुरंग करि कृपा बनाई॥
पुनि निजु आस्रम गे हरषाई।
सहज सुभाइ सील समुदाई॥
अब कोसल पुर चलहु नृपाला।
हय मग हेरहिं राम कृपाला॥
अस सुनि सत्रुसमन मुनि राई।
चढ़े हेम रथ बिसद मंगाई॥
कटक समेत चले तिहि काला।
हने न काहू दुंदुभि जाला॥

दोहा

भेरी संख मृदंग पुनि, गोमुखादि तिहि काल।
कोउ न सके बजाइ तहं, कुस लव भय बिकराल ॥१॥

चौपाई

इहि बिधि गए आस्रम तें दूरी।
पाछे चली चमू अति भूरी ॥
चारिहु अंग समान अपारा।
को कवि ताकी करहिं संभारा ॥
छिन - छिन लचकत अहिपति भाला।
सुनहु सूत भा भार बिसाला ॥
इहि बिधि श्री सुरसरि तट आए।
निरखि तरंग जल सुख पाए ॥
सत्वर उतरि भए सब पारा।
सहित चमू चतुरंग अपारा ॥
पुष्कल सुरथ आदि नृप जेते।
चढ़े सत्रुघन सग रथ तेते ॥
धरे सरासन परम प्रचडा।
चले अवधपुर अति बलमडा ॥
रतन माल भूषित छवि धामा।
आगे मख हय कीन्ह ललामा ॥

दोहा

स्वेत छत्र हय सीस पर, सोभित परम बिसाल।
पुनि दोउ दिसि चामर बिजन, अनुचर करहिं बिसाल ॥२॥

चौपाई

पाछे कोटिन रथी जुझारा।
चले साजि रथ होइ असवारा ॥

पुनि उनमत्त बितुंड अपारा।
सजि सजि चले स्रवत मद धारा।।
मारुत बेग लजावनहारे।
चले तुरंग अमित दुतिकारे।।
चतुर सूर तिन पर असवारा।
चले नचावत पंथ मझारा।।
पदचर सजे सकल हथियारा।
जात असख न परहिं संभारा।।
सब पाछे रिपुसूदन राजा।
चले संग सब भूप समाजा।।
नाना मणि कंचन रथ माहीं।
सुनि मुनि, भूप चढ़े जहं ताहीं।।
चारि-चारि हय जुते सुहाए।
सब प्रकार भूपित छवि छाए।।

दोहा

कपिपति संग, मुनीस सुनु मर्कट कटक अपार।
बिबिधि रंग के कीस सब, सोहत पंथ मझार।।३।।

चौपाई

कोटिन धुज पताक दल माहीं।
अति उतग देखिय जहं ताहीं।।
भेरि दुंदुभी गोमुख नाना।
बजे अपर बाजनै निदाना।।
गर्जंत बीर महा रनकारी।
पुनि हय गज स्यंदन रव भारी।।
छिपे दिवाकर रज नभ छाई।
दिसि अरु बिदिसि न परै लखाई।।

पुनि - पुनि सूत नागपति - भाला ।
लचकि - लचकि तब पर तिहि काला ।।
इहि प्रकार क्रम सौं मुनिराई ।
निरखी अवध पुरी सुखदाई ।।
अति उतंग मंदिर सुखदाई ।
दिव्य हेम मनि रचे बनाई ।।
बहु बिसाल जनु मिलहिं अकासा ।
जगमगात चहुँ पास प्रकासा ।।

दोहा

भवन भवन प्रति, सुनहु मुनि, धुज पताक अति भ्राज ।
मनि मुक्ताहल हेम मय, वदनवार बिराज ।।४।।

चौपाई

रवि बंसिन कर भूषित भारी ।
चहुं दिसि महा दुर्ग दुतिकारी ।।
सूत सुनहु, उत राम कृपाला ।
सुनेउ जग्य हय आव रसाला ।।
संग अनुज पुष्कल बर बीरा ।
कटक अपार साथ अति धीरा ।।
राम कृतज्ञ कृपा आगारा ।
भये हर्ष बस सकल प्रकारा ।।
अनुज लेन हित श्री रघुबीरा ।
पठए लखन महा मति धीरा ।।
लछिमन कटक साजि हरषाई ।
चले मिलन हित निजु लघु भाई ।।
उहाँ सत्रुघन भ्रातहिं देखा ।
पुनि लछिमन इत अनुजहि पेखा ।।

परिहरि रथ आतुर दोउ भ्राता।
मिले परसपर पुलकित गाता॥

दोहा

कुसल परसपर बूझि पुनि, मुदित बारता कीन्ह।
पुष्कलादि नृप सबन सन, बहुरि भेटि मुख दीन्ह॥५॥

चौपाई

भये लखन जुत रथ असवारा।
सहित सत्रुघन हर्षि अपारा॥
निरखि एक रथ महं दोउ भाई।
प्रमुदित भए भूप ममुदाई॥
अवध माहि तब कीन्ह प्रवेसा।
सग कटक जुत सकल नरेसा॥
कछुक दूरि चलि सरजू देखी।
अति पुनीत जल सुखद विसेखी॥
तिहूँ लोक कं पावनकारी।
तोय सरद हिमकर अनुहारी॥
रघुपति पद-पंकज रज पाई।
भई परम पावन श्रुति गाई॥
बिहरत बिपुल हंस ममुदाई।
पुनि बहु चक्रवाक मुनिराई॥
कीर कपोत कोकिला वृंदा।
बोलहि वृच्छन परम अनदा॥

दोहा

बहु मडप समुदाइ तहं, रचवाये रघुवीर।
भिन्न-भिन्न स्तुति पाठ तह करहि महा मुनि धीर॥६॥

चौपाई

बहु छत्री तिन पर रखवारे।
धरे चाप सायक बल भारे।।
करहि तहाँ निजु धनु टंकारा।
सो रव व्यापेउ सब संसारा।।
तहाँ सूपकारिन मुनिराई।
मुनिनं हेत किय पाक बनाई।।
कीन्ही पायस विमल अनूपा।
हिमकर केरि कांति अनुरूपा।।
छत कपूर सर्करा सुहाई।
नव मधु पुनि एला अधिकाई।।
मालपुआ बहु किये सोहाये।
कर्पूरादि सुगंध मिलाये।।
कीन्हे बहुरि पूप सुखदाई।
मानहुं चंद्र बिंव समुदाई।।
रुचि सौं विसद अनरसे कीन्हे।
हरहि संकुली मन कहं चीन्हे।।

छंद

मन हरहि चीन्हे संकुली अति, विमल हिम कर दुति धरै।
लुचुई अनूपम कीन्ह रुचि सों, निरखि मुनि जन चित हरै।।
पुनि बिसद गौरि कचौरि, दाइक स्वाद, विधि संजुत करी।
सुचि फेनिका मुख - देनि, कंचन थार - थारनि मैं भरी।।

दोहा

मधुर पदारथ सकल तहं, कीन्हे बिसद बिचार।
निरखत बाढ़ै रुचि महा, सुधा लजावन - हार।।७।।

चौपाई

परम विमल ओदन तहं कीन्हा।
दधि मिस्रित सर्करा नवीना ।।
कीन्हे बिविधि भोर सुखदाई।
दुधलपसी सुस्वादु अधिकाई ।।
पुनि माठे किय परम सुहाये।
बरा बिसद दधि माहि भिजाये ।।
सुचि समेत कीन्ही बहु धोई।
जथा जोग बर गध सजोई ।।
स्वादक चतुर बतावत जाही।
सूपकार बहु विरचत जाही ।।
सकल साक कीन्हे सुखकारी।
कद मूल फल बहु तरकारी ।।
विविधि अस्थानं वरे सजोई।
इहि प्रकार रचि कीन्ह रसोई ।।
विजन सकल किये मनुलाई।
नाना भांति स्वाद अधिकाई ।।

दोहा

भक्ष्य भोज्य पुनि चोष्य वर लेहा सु अमन रसाल।
मुनिन हेन कीन्हे सकल, रुचि ममेत तिहि काल ।।८।।

चौपाई

बनवासी सहसनि मुनि वृंदा।
बैठे जेवन सहित अनंदा ।।
मनिन जटित कंचन के थारा।
धरे आनि तह सबनि अगारा ।।

श्री सरजू जल पावनकारी।
भरि - भरि दीन्ह मुनिन्ह कहं झारी॥
प्रथमहिं पाइस परम सुहावा।
सब के पारस आसु करावा॥
पुनि क्रम सौं सब साज सुहाई।
परसि गए सब कै हरषाई॥
वात्सायन अब सुनु मनु लाई।
मुनि जन वार्ता करहिं सुहाई॥
पायस निज - निज थार मझारा।
निरखि परसपर बचन उचारा॥
यह कह अग्र देखियै भाई।
मन बिच विस्मय होत बनाई॥

दोहा

अंधकार ते चंद डरि, परेउ थार बिच आइ।
कै यह अमृत देखियै, मृत्यु दहन सुखदाइ॥६॥

चौपाई

अस सुनि अपर बिप्र तिहि काला।
बोले रोष बिबस दृग लाला॥
यह ससि बिंब सुधा नहिं होई।
मैं अब कहौं अहै यह सोई॥
हिमकर येक बिदित संसारा।
सो किमि बिबिधि रूप बिस्तारा॥
अयुतन विप्रन केरि अगारा।
देखिय यह प्रति थार मझारा॥
यह कपूर मोहिं परै लखाई।
कंज सुमन कै परसेउ आई॥

चंद बिंब ये निस्चै नाहीं।
अस प्रतीति मोरे मन माहीं॥
यह सुनि दोउ कर धुनि निजु भाला।
अवर विप्र बोले तिहि काला॥
मीजि उभय कर रोष बढ़ाई।
देखहु यह द्विज मूढ़ बनाई॥

दोहा

स्वाद विचच्छन जहं नहीं, हम सब भाँति प्रवीन।
इच्छु दंड - रस मैं पगे, सरसिज सुमन नवीन॥१०॥

चौपाई

पात्र - पात्र बिच देखिय सोई।
परम मधुर मुनि आन न होई॥
इहि बिधि निज - निज तर्क सुहाए।
करहि सकल मुनि बिस्मय छाए॥
कंद मूल फल अस न सु जाना।
जानहिं कहा भोग ते नाना॥
लागे करन असन मुनि वृंदा।
ग्रास - ग्रास प्रति परम अनंदा॥
तिहि समाज यक द्विज हरषाई।
बोला निजु हिय बिपुल सिहाई॥
सुफल जन्म छत्रिन कर भाई।
करहिं भोग अस सदा अघाई॥
कीन्है प्रथम सुकृत इन नाना।
ताते अब सुख करहिं निदाना॥
अस सुनि पुनि कोउक मुनि कहई।
प्रथम दये कर यह फल अहई॥

दोहा

जे न भजहिं श्री पति चरन, नर तन धरि जग माहिं।
पुनि सुंदर नैवेद्य फल, अन्न समर्पहि नाहिं ॥११॥

चौपाई

तिनकौ ए सुख सपनें नाहीं।
संतत दुखित रहैं जग माहो ॥
जिन प्रथमहिं बहु विप्र जिमाये।
नाना रस सब भाति सुहाये ॥
तिन पाछे पुनि आपन पावा।
ते जन अस सुख करहिं सुहावा ॥
इहि विधि मधुर अन्न मुनि बृंदा।
भोजन करेउ समेत अनंदा ॥
पुनि श्रुति पढ़न लगे तिहि काला।
मंडफ मध्य प्रसन्न विसाला ॥
कोउ गावहिं कोउ हंसहि निदाना।
कोउ नितंत मुनि ग्यान निधाना ॥
कोउक निरखि महोत्सव भारी।
भये थकित नहिं सकै सम्हारी ॥
पुनि कोउ मुनि करताल बजावें।
कोउक बेद पढ़त सुख पावें ॥

दोहा

तब लगि तहं नृप सत्रुघन, आये सहित समाज।
भये महा आनद बस, लखि मुनि - बृंद - समाज ॥१२॥

चौपाई

इहाँ राम रिपुसूदन देखे।
आवत पुष्कल सहित विसेखे ॥

परमानंद बिबस भये भारी।
उठि न सकेउ, बहि लोचन बारी॥
जब लगि आतुर उठहि कृपाला।
तब लगि रिपुहन हरपि बिसाला॥
परे तुरत पद-पकज माहीं।
सो सनेह मैं कहि सक नाहीं॥
परम विनय जुत चरन मझारी।
निजु भ्रातहि रघुनाथ निहारी॥
सोभित घाइ सरीर सुहावा।
बरबस गहि भुज, कठ लगावा॥
रघुपति परम नेह जल जाला।
वरषहि अनुज सीस तिहि काला॥
महा प्रेम वस भये दोउ भाई।
प्रीति पुनीति कही नहि जाई॥

दोहा

परम प्रेम विह्वल महा, तब लगि भरत-कुमार।
परे आनि आतुर त्रिपुल, रघुपति चरन मझार॥१३॥

चौपाई

राम निरखि भुज मैं भुज डारी।
आतुर लायउ हृद सुखारी॥
तब लगि मारुत सुत बल खानी।
पुनि सुकठ अगद भट मानी॥
अपर नील नल जूथप जेते।
परे आनि आतुर पद तेते॥
पुनि लछिमीनिधि के पद पावन।
परे आनि सब नृपति सुहावन॥

सुमद सुबाहु बिमल महिपाला।
नीलरत्न उग्रास भुवाला॥
पुनि नृप सत्यवान मति धीरा।
सुरथ बीरमनि अति बर बीरा॥
अवर अनेक भूप समुदाई।
परे हरषि रघुपति पद आई॥
सादर राम मिले सब पाहीं।
भये सकल प्रमुदित, मिति नाहीं॥

दोहा

भक्त बछल रघुनाथ पुनि, सचिव सुमति कह देखि।
सादर बरबस मेलि भुज, भेटि स प्रीति विसेखि॥१४॥

चौपाई

प्रभु सनमुखहि सुमति तेहि काला।
ठाढ़ भयेउ तह दास त्रिमाला॥
रघुपति निरखि प्रीति समुदाई।
बोले बेन सुनहु मुनिराई॥
हे अमात्य बर नीति निधाना।
मम उर ससय हरहु निदाना॥
ये सब भूप प्रथम कहु केते।
बरनहु भिन्न नाम पुनि जेते॥
भयउ समागम कवन प्रकारा।
कहु - कहु सब के पुर आगारा॥
पुनि मम जग्य – तुरग सुहावा।
कवन – कवन नृप देस मझावा॥
किहि - किहि भूप धरा मम बाजी।
भिरे कवन त्रिधि संजुग साजी॥

अनुज हमार महा बलसाली।
तिन किमि लीन्ह तुरग, रिपु घाली ॥

दोहा

वात्सायन रघुपति वचन, अति गम्भीर रसाल।
पुनि सुमंत बोले तबै, नाइ कज पदभाल ॥१५॥

चौपाई

तुम सर्वग्य नाथ सब काला।
बसहु सकल उर दीनदयाला ॥
विस्नु सिवादि ईस तुम स्वामी।
जीव चराचर तुव अनुगामी ॥
मै किमि बरनि सकौ भगवाना।
मद जीव अलपग्य निदाना ॥
लोक रीति जो पूछहु नाथा।
तौ तुव आइसु धरि निजु माथा ॥
वरनन करहुं सुनहु रघुराई।
छिमहु मोर अपराध बनाई ॥
सकल भूमि तल साजि तुमारा।
सोभित हेम - पत्र दुतिकारा ॥
भ्रम्यौ सुखेन सुतत्र निदाना।
धरि न सक्यौ कोउ नृप बलवाना ॥
निजु - निजु राज्य समपउ आई।
भये सग सजि - सजि कटकाई ॥

दोहा

महा बली दसकंध भट, सकल निसाचर नाथ।
ताहि बध्यौ संग्राम तुम, यह सुनि-सुनि तुव गाथ ॥१६॥

चौपाई

काहू हय न धरा रघुराई।
मिले आइ सब समर बिहाई ॥
क्रमसौं सकल कथा, भगवाना।
तुम प्रति अब मैं कहहुं बखाना ॥
प्रथम आइ छत्रापुर माहीं।
गयो तुरंग संग दल मिति नाहीं ॥
तहाँ सुमद नृप करहिं निवासा।
तिहि तुव बाजि सुनेउ पुर पासा ॥
सकल राज सुत कोस समेता।
साजि कटक पुनि आपन जेता ॥
तुव भ्राता पद भेटेउ आई।
सर्व सुअर्पउ मान बिहाई ॥
कामद हेत प्रथम तप कीन्हा।
तिहि तुव मिलन राज वर दीन्हा ॥

दोहा

सो नृप सुमद कृपायतन, अब तुहि करहि प्रनाम।
तुव दरसन की लालसा, बिमल महा बल धाम ॥१७॥

चौपाई

बहुरि गयेउ हय च्यवन निकेता।
महा मिले मुनि गन हरि हेता ॥
आगे मिलेउ बिमल महिपाला।
अर्पेउ हय गज राज बिसाला ॥
सो यह तुव पद विनवहि स्वामी।
कीजै कृपा निरखि अनुगामी ॥

पुनि पुरुषोत्तम छेत्र निहारा ।
तुम जह श्री जुत करहु बिहारा ।।
बहुरि सुबाहु नगर हय गएऊ ।
दमन तासु सुत आवत भएऊ ।।
बाँचि पत्र तिहि घरा तुरंगा ।
तहाँ भयेउ दारुन रन रगा ।।
पुष्कल तब तिहि मूर्छित कीन्हा ।
विजय पाइ मन आनंद लीन्हा ।।
यह सुनि कोपि सुभुज नृप आए ।
निरखि तबै मारुत - सुत धाए ।।

दोहा

कोपि महीपति के हिये, हनी घोर यक लात ।
मूर्छित होइ भूतल गिरे, रही न कछु सुधि गात ।।१८।।

चौपाई

तब मुनि - स्राप नास होइ गयेऊ ।
तुव सरूप हिय प्रगटत भयेऊ ।।
तजि मूर्छा तब भेंटे आई ।
सर्वस अपन कीन्ह बनाई ।।
चले सग पालन हित बाजी ।
सुतहि राज्य दै सब दल साजी ।।
सो नृप सुभुज निरखि रघुबीरा ।
वदहि तुव पद पुलकि सरीरा ।।
कृपा दृष्टि निरखहु जन त्राता ।
तब सेवक यह मन बच गाथा ।।
पुनि मख तुरग तेज पुर गयेऊ ।
सत्यवान तह - भेंटत भयेऊ ।।

करहि प्रनाम नाथ यह सोई।
धेनु - प्रसाद भक्ति तुव जोई॥
पुनि आगे चलि सुनहु कृपाला।
भयेउ पंथ बिच तम बिकराला॥

दोहा

विधुनमाली असुर तह भयौ प्रगट अति घोर।
बध्यौ तुम्हारे अनुज तिहि, कटक सहित बरजोर॥१६॥

चौपाई

पुनि मुनीस आरन्यक नामा।
गयो जग्य हय तिनके धामा॥
तिहि तुमार जस बरनन कीन्हा।
गमने अवध प्रेम लव लीन्हा॥
बहुरि अग्र चलि अस्व तुम्हारा।
प्रविसो रेवा सरित मझारा॥
तिहि के मध्य सत्रुघन जाई।
जोगिनि सस्त्र पाव रघुराई॥
पुनि तुव अस्व देवपुर माही।
जात भयौ, बसि संगन ताही॥
नाथ बीरमनि कर सोइ धामा।
तिन सन भयेउ घोर सग्रामा॥
तहाँ आपु तुम गएउ कृपाला।
जानहु सकल प्रसंग बिसाला॥
आगे चला तुरंग बहोरी।
संग चमू चतुरंग न थोरी॥

दोहा

भयौ थकित तुव बाजि तहं, आकसमाद बनाइ।
सौनक मुनि की कृपा ते, उबरत भा रघुराइ॥२०॥

चौपाई

कुंडल पुर पुनि गयेउ तुरंगा।
जथा सुरथ कीन्हेउ रन रगा॥
सो चरित्र तुम सकल निहारा।
सहित समाज आपु पगु धारा॥
सो यह सुरथ बीरमनि भूपा।
बंदहि तुव पद कंज अनूपा॥
पुनि कुंडल पुर बाजि बिहाई।
भ्रमत भयौ सर्वत्र बनाई॥
कोउ हय धरि न सक्यौ रघुनाथा।
तुव प्रभाव पुनि लखि दल साथा॥
बालमीकि आस्रम सुखदाई।
तहाँ अस्व तुव पहुँचो जाई॥
तहाँ एकु सिसु तुमहि समाना।
रूप सील गुन बुद्धि निधाना॥
बिहरत फिरहि बिपिनि विच सोई।
षोडस वर्ष केरि वपु जोई॥

दोहा

बाचि पत्र के अंक तिहि, बाँधा जग्य तुरंग।
तुव सैनापति कालजित, मंडो रन सिसु संग॥२१॥

चौपाई

बाल कराल गर्व तब कीन्हा।
हति गज सुंड दंत तहं लीन्हा॥
सिर पर जाइ कालजित - सीसा।
कीन्ह निपात कौसलाधीसा॥
पुनि अनेक भट कीन्ह संघारा।
ताके बल की नाहिं संभारा॥

पुष्कल सत्रुघनादि नृपाला।
मूर्छित सकल किये तिहि काला॥
तजि मूर्छा संजुग तुव भ्राता।
हृदै बिचार कीन्ह जन त्राता॥
पुनि बालक कहं मूर्छित करेऊ।
तिहि समेत निजु पुर पग धरेऊ॥
तब लगि अवर बाल येकु आवा।
ताही सिसु सम परम सुहावा॥
बिगत-जीव तिहि किय कटकाई।
रिपुहन मूर्छित भये बनाई॥

छंद

मूर्छित भएउ रिपुहन तबै, पुष्कल सहित भूपति हते।
पुनि परे धरनि अचेत संजुग, तुव कटक जोधा निते॥
तब हर्षि हिय, दोउ बाल, दल अवगाहि, बहु भूषन सजे।
रघुनाथ तिन की छवि विलोकि, अनेक रति नायक लजे॥
पुनि मरुत-सुत सुग्रीव अति, बल धाम बरबस धरि लये।
मख बाजि सहित, असंक मन, हिय हर्षि निजु आश्रम गये॥
करि कृपा तजि दोउ कोस, मख हय दीन्ह, पुनि रन आइकै।
निजु धाम गयेउ बहोरि रघुपति, सकल सैन जिवाइकै॥

दोहा

हय समेत तब सत्रुघन, आए प्रभु तुव पास।
नाथ निदेस चढ़ाइ सिर, मैं सब कीन्ह प्रकास॥२२॥

इति श्री पद्म पुराणे, पाताल षंडे सेष वात्सायन संवादे,
मधुसूदन दास कृते, सुमति निवेदनं नाम पंचषष्ठि
तमोऽध्यायः॥६५॥

रामायण-गान

दोहा

वात्सायन मुनिवर सुनहुं, रघुनायक तिहि काल।
सुमति बदन तैं स्रवन सुनि, अस्राम उभय कुमार।।

चौपाई

निजु सुत जानेउ हृदे मझारा।
बालमीकि प्रति बचन उचारा।।
बालमीकि मोहि कहौ बुझाई।
तुम सवग्य सकल मुनिराई।।
बालक उभय परम बलवाना।
धनु विद्या महं निपुन निदाना।।
मम सम धारें रूप सुहाये।
को बसि तुम आस्रम छबि छाये।।
सुनि अमात्य मुख तिन कै बाता।
बिस्मय परम मोर उर जाता।।
जिन रिपुसूदन मूर्छित कीन्है।
करि लीला हमुमत धरि लीन्है।।
संसय भग करहु मन मोरा।
तुव त्रिकाल - दरसी सब ओरा।।
तुव आश्रम किमि करहि निवासा।
परम प्रीति मन हृदै प्रकासा।।

दोहा

भूप-मौलि-मनि-राम-प्रभु, अति कृतज्ञ गुन ग्राम।
तिन मुख बचन विनीत सुनि, बोले मुनि तप-धाम।।१।।

चौपाई

परम पुष्टि बर बरन सुहाये।
लागे कहन सुखद मन - भाये ।।
तुम अंतरजामी रघुनाथा।
नहिं जानहु उर यह कस गाथा ।।
तदपि तुम्हारे आनंद हेतू।
बरनहुं सुनहु भानु - कुल – केतू ।।
बाल उभय मम आस्रम बासी।
तुम सम सुभग बिसद गुन रासी ।।
तिनकै सकल कथा सुखदाई।
बरनन करहुं सुनहु रघुराई ।।
संतत सुद्ध बिगत - अघ सीता।
गर्भवती गुन चरित पुनीता ।।
जब तुम ता कहं त्यागन कीन्हा।
घोर बिपिन बिच दुख लव-लीन्हा ।।

दोहा

बारहिं-बार बिलाप करि, कुरच-सरिस रघुराइ।
तब लगि मै सिष्यन सहित, पहुंचेउ तिहि वन आइ ।।२।।

चौपाई

जानि प्रिया तुव जनक - कुमारी।
निजु आस्रम लै गयेउ खरारी ।।
मुनि पत्रन कर कुटी सोहाई।
रचि दीन्ही सिय कहं रघुराई ।।
प्रगट करे तह उभय कुमारा।
भई प्रकासित दिसा अपारा ।।

कुस लव नाम धरे तिन केरे।
परम मनोहर रूप घनेरे।।
दिन-दिन प्रति सुत बाढ़हि कैसे।
सुक्ल पच्छ मह हिमकर जंसे।।
कीन्हे समय समय सब कर्मा।
वस-उचित सिखये सब धर्मा।।
सकल अग जुत वेद पढ़ाये।
सर्व रहस्य समेत सोहाये।।
धनु विद्या पुनि सकल पढ़ाई।
सर्व सास्त्र विधि दीन बताई।।

दोहा

बिसद आपु विद्या सकल, प्रभु मै तिनहि पढ़ाइ।
पुनि विद्या जालंधरी, बिधिवत सकल सिखाइ।।३।।

चौपाई

बहुरि गान-विद्या रघुराई।
पढ़ी सकल विधिवत मनु लाई।।
नाथ कहाँ लगि करौं बखाना।
सर्व कला मैं निपुन निदाना।।
करहि गान सुरसरि के तीरा।
लता कुंज वन-वन रघुवीरा।।
चंचल चपल चित्त छवि धामा।
निरखि गात दुति बारिउ कामा।।
तिनके चरित देखि भगवाना।
मम उर भा संतोष निदाना।।
तब मैं निजु हिय अति हरषाई।
सिर परसेउं निज पानि बनाई।।

दीन्हेउं सर्व सस्त्र पुनि नाथा।
सोभित परम धरे धनु भाथा॥
गान-कला महं कुसल बनाई।
सुनि-सुनि मोहें जन-समुदाई॥
सर्व राग रागिनी रसाला।
ताल-भेद सुर-भेद बिसाला॥
परम निपुन भये तनय तुम्हारे।
सुनि गंधर्व विमोहे भारे॥
मै तुव चरित भविष्य बनावा।
परम सुखद सब भाँति सुहावा॥
संतत करहिं गान दोउ ताही।
परम मनोहर बरनिन जाही॥

दोहा

वीन मृदंग बंसी प्रणव, सकल वाद्य समुदाइ।
अति प्रवीन सब के विषै, तुव सुत दोनौ भाइ॥४॥

चौपाई

विपिन-विपिन बिच चरित तुम्हारा।
करहिं गान रघुनाथ उदारा॥
अति अद्भुत अति मधुर सुहावा।
अति रसाल कछु वरनि न आवा॥
खग मृग थकित होइ सुनि गाना।
मुनिगन दसा जाइ न बखाना॥
श्री सुरसरी प्रवाह विसाला।
चलि न सके सुनि गान रसाला॥
रवि ससि होत विमोहित भारी।
सुनि जड़ सरिस होहिं सुर झारी॥

अपर नरन के केतिक बाता।
चलै न मारुत बलि तरू पाता॥
करहिं गान इमि तनय तुम्हारे।
सब विधि रूप सील गुन भारे।
रघुपति बरुन नारि यक बारा।
सुनेउ गान सोइ कर्म मझारा॥

दोहा

परम विमोहित बरुन तिय, भई सुनत कल गान।
कुस लव निकट कृपायतन, आई मुदित निदान॥५॥

चौपाई

तब निजु परी विभावरि नामा।
गई लिवाइ निरखि गुन धामा॥
तहाँ तरुन सब कुटुम समेतू।
सहित मित्र रिपि रघुकुल केतू॥
परम मधुर अति रम्य पुनीता।
तुव चरित्र नित सुनहिं सप्रीता॥
सुनि मुनि परम मनोहर गाना।
तुव चरित्र महं कृपा निधाना॥
सरिस अमिय तै स्वाद निदाना।
बरुन त्रिसि नहिं होइ भुलाना॥
विसद गान आनंद मझारा।
भये विमोहित बहुत अपारा॥
जब आवनहित सु.त मन करहीं।
पुनि जननी मम सुधि अनुसरहीं॥
महा भोग तब विविधि प्रकारा।
वरुन तिनहिं करवाव अपारा॥

दोहा

भोग विवस प्रभु तनय तुव, मोहित भये बनाइ।
मम सुधि पुनि निजु मातु कै, दीन्हसि तहाँ बिहाइ ।।६।।

चौपाई

तब मै वरुन लोक चलि गयेऊ।
तव सुत उभय विलोकत भयेऊ।।
बरुन मोहि निज भवन निहारी।
प्रेम मगन पूजा अनुसारी।।
जन्म कर्म दोउ पुत्रन केरे।
बूझेउ मो सन उर भ्रम प्रेरे।।
जब सिय तनय सुनेउ हम पाहीं।
प्रगटेउ परम मोद मन माहीं।।
विविधि विभूषन अंबर नाना।
दिये बरुन तब करि सनमाना।।
दैवी वस्तु हृदै पहिचाना।
पुनि मम आइसु गौरव जाना।।
तिहि तै बसन विभूषन लीन्हे।
तुरत द्वारपालन कहं दीन्हे।।
पुनि मै तिनहिं ल्याइ निज साथा।
आस्रम माहिं सुनहु रघुनाथा।।

दोहा

गान कला महं निपुन अति, रूप सील गुन खानि।
बरुन देखि अस तनय तुव, धन्य जन्म निजु मानि ।।७।।

चौपाई

पति - देवता - धुर धारिन सीता।
त्याग जोग नहिं परम पुनीता।।

रूप सील वय सुभ गुन खानी।
सदा पवित्र चरित जग जानी॥
जाके बीर पुत्र अस दोऊ।
महाभाग जानँ सब कोऊ॥
महत हानि सिय - त्याग मझारा।
सत्य वचन हम करहिं उचारा॥
सुनहु राम सब सिद्धिन माहीं।
परम सिद्धि सिय ससै नाहीं॥
पुनि अनुपाइन सक्ति तुम्हारी।
सत्य - सत्य यह गिरा हमारी॥
पुण्यस्रवन कीर्तन वैदेही।
कवन हेत त्यागी तुम तेही॥
हम साक्षी रघुवीर कृपाला।
परम पवित्र सिया सब काला॥

दोहा

पामर कुमति कुसील खल, सियहिं विदूषहि सोइ।
तुम सर्वज्ञ सुजान अति, तजी कवन अघ जोइ॥८॥

चौपाई

सिय पद चिंतक जे जग माहीं।
साधु सिद्ध पावहिं, सक नाहीं॥
सदा सिया कै भृकुटि विलासा।
विस्व प्रगट, प्रतिपाल, विनासा॥
जग महं होइ विविधि व्योहारा।
ऐस्वर्जादि भूरि व्यापारा॥
सिय कटाच्छ जानहु रघुराई।
जहं लगि अखिल अखंड प्रभुताई॥

मृत्य - विनासनि आनदं खानी।
निजु सेवकनि परम पद दानी।।
वर्षहि वासव, तपहि दिनेसा।
पुनि पोषहिं ससि रजनि प्रवेसा।।
सो केवल सिय आइसु पाई।
येहि विधि वेद सुमृति गुन गाई।।
स्वर्ग मोक्ष तप संजम दाना।
जोग जज्ञ विद्या विधि नाना।।

दोहा

सब के कारन जानकी, सुनहु देव रघुराइ।
ब्रह्म शिवादिक इन्द्र पुनि, लोक पाल समुदाइ।।९।।

चौपाई

संतत सिय आयसु अनुसारा।
निज – निज काज करहिं बिस्तारा।।
तुम सब विस्व - पिता रघुराई।
सीता सकल विस्व की माई।।
सिय कुदृष्टि ते सब संसारा।
कितहुँ न होइ छिमहु बिस्तारा।।
तुम सर्वग्य स्वयं भगवाना।
जानहु सीतहिं सुद्ध सुजाना।।
प्रान प्रिया पुनि आसमु कारो।
कवन हेत परिहरी खरारी।।
सब प्रकार पावन श्री सीता।
मै जानी पुनीत जग गीता।।
निकट बुलावहु कृपानिधाना।
तजि उर महं संकोच निदाना।।

जोपि कहौ सुक स्राप प्रमाना।
सो सब भाँति कीन्ह भगवाना॥

दोहा

पुनि समर्थ तुम सर्व पर, हरि सुतंत्र जगदीस।
श्राप बांध सपनेउ नहीं, सुनहु कोसलाधीस॥१०॥

चौपाई

बहुरि मनोहर तनय तुम्हारे।
परम सील गुन निधि भट भारे॥
करहिं विसद रामायन गाना।
सुनि - सुनि मोहे सुर गन नाना॥
किन्नर नाग असुर मनुजादिक।
थकित होइं सुनि पथिक मृगादिक॥
नाथ सर्व गंधर्व समाजा।
सुनत गान कलपावहिं लाजा॥
तब सुत ऊपर सुनहु कृपाला।
सकल प्रसन्न प्रसंसि बिसाला॥
निरखि रूप गुन वय समुदाई।
तिहूँ लोक मोहे रघुराई॥
लोकपाल पुनि सकल प्रकारा।
तुव सुत कीन्हें अंगीकारा॥
बहुरि सर्व मुनिवृंद सुजाना।
अगीकृत करि करहिं बखाना॥

दोहा

येक राम सब विस्व महं, प्रथम सुनेउ अरु देखि।
तीनि राम छवि धाम अब, प्रगटे जगत विसेखि॥११॥

चौपाई

कोउ - कोउ मुनि अस करहिं उचारा।
मनमथ एक सुना संसारा॥
चारि मदन अब प्रगटेउ भाई।
विस्व विमोहन छवि अधिकाई॥
कुस लव सहित सुजस प्रभु तोरा।
इहि विधि पूरि रहा चहुँ ओरा॥
ग्यानवंत तुम सकल प्रकारा।
सियहि बुलावहु राम उदारा॥
दिसि विदिसिन मैं सुजस तुम्हारा।
पूरि गयेउ तिहुँ लोक मझारा॥
एक सिया के त्यागन कीन्है।
सुजसु सरिस जग अपजसु लीन्है॥
धर्म धुरंधर नीति - निधाना।
करहु गृहस्थ - धर्म भगवाना॥
अगीकार करहु सुत अपने।
प्रभु तें त्याग – जोग नहिं सपने॥

दोहा

रूप सील विद्या विजय, सुंदर गुन आगार।
वंस - विवर्द्धन सुखद अति, प्रभु तुव जुगल कुमार॥१२॥

चौपाई

मातु - बिहाइ न आवहिं तेई।
आवहिं अवसि सहित बैदेही॥
जब कुस लव संग्राम मझारा।
कीन्हेउ सकल कटक संहारा॥

तब तिहि समर आपु तिहि आई।
रवि साक्षी करि सैंन जिवाई॥
सो किमि त्याग जोग रघुराई।
जेहि की अस कीरति जग छाई॥
तुम अरु मैं सुरेस समुदाई।
जानहि सब सिय जुद्ध बनाई॥
सीतहि नष्ट कहै प्रभु सोई।
सकल प्रकार नष्ट अपि सोई॥
वात्सायन मुनि सुनु धरि काना।
जदपि राम सवग्य सुजाना॥
तद्दपि बालमीकि मुनिराई।
उपदेसें बहु भाँति बनाई॥

दोहा

सुनि रघुपति वंदे चरन, अस्तुति किय कर जोरि।
सकुचि हरषि हिय लखन सन, बोले बचन बहोरि॥१३॥

चौपाई

जाहु तात आतुर सिय पाही।
मै पुनीत जानहुँ मन माहीं॥
पुत्रन सहित सुरथ बैठाई।
बेगि जनिकिहिं लावहु भाई॥
मम सदेश सब भाँति सुनावौ।
बचन मुनीस केर समुझावौ॥
लछिमन कहा सुनहु भगवाना।
तुव आयसु धरि सीस निदाना॥
अवसि जाहुं सिय ल्यावन हेतू।
जिहि वन ताहि मुनीस निकेतू॥

जौ आवैं मिथिलेस - कुमारी।
तो प्रभु जात्रा सुफल हमारी।।
जौ न आव मम दोष बिचारी।
प्रथम घोर वन ताहि निसारी।।
तौ मम अघ छमियौ रघुराई।
अस कहि रहे बहुरि अरुगाई।।

दोहा

बहुरि वंदि पद कंज जुग, प्रभु आयसु धरि सीस।
चढ़ि स्यंदन मुनि सिष्य जब, लछिमन चले मुनीस।।१४।।

चौपाई

मन मैं करत हृदै अनुमाना।
सिय प्रसाद किमि करहिं निदाना।।
सती सिरोमनि भगवति सीता।
विस्व मातु सब भांति पुनीता।।
पुरुष दोष जो देखहिं मोरा।
तौ निस्तार न कवनहुँ ओरा।।
जोपि राम आधीन बिचारा।
विवस हर्ष संकोच अपारा।।
स्रम नासन आस्रम सुखदाई।
तब लगि लखन लखा मुनिराई।।
तुरतहि रथ परिहरेउ निदाना।
प्रेम प्रवाह स्रवत दृग नाना।।
रुके कंठ, मुख आव न बानी।
थकेउ गात, पुनि धीरज आनी।।

दोहा

कुटी मध्य श्री जानकी, लखन विलोके जाइ।
अंब पूज्य, हे भगवती, इहि विधि बचन सुनाइ।।१५।।

चौपाई

परे दंड - इव पुनि पद माहीं।
सकल अंग जुत नैन बहाहीं॥
निरखि जानकी दीन्ह असीसा।
बहुरि उठायेउ सुनहु मुनीसा॥
प्रेम मगन लखि बचन उचारा।
कवन हेत आस्रम पगु धारा॥
घोर विपिन यह मुनि जन जोगू।
करहि इहाँ खग मृग गन भोगू॥
तात लखन मोहि कहहु बुझाई।
कौसिल्या - सुत कुसल बनाई॥
अजहू हम पर करहिं कि कोपा।
जिन मोहि तजि निजु कीरति ओपा॥
पायेउ जसु मम त्यागन माहीं।
सो कीरति जग प्रगट कि नाहीं॥
प्रभु कल्यान - गुन - सागर - भारी।
केवल कीरति जिनहि पियारी॥

दोहा

सुजस हेत तुव साथ जिन, मोहि तज्यौ वन घोर।
तिनकी कीरति विमल अब, प्रगट अहै चहुं ओर॥१६॥

चौपाई

पति - कीरति - संग कीरति मोरी।
तात त्याग के गुनहु न खोरी॥
मम मनु बसहि सदा प्रभु पासा।
ताते निकटहि मोर निवासा॥

बढ़हि दूरि तै प्रीति अपारा।
होइ निकट बसि बड़ अपचारा॥
देवर जौ उन मोहिं बिसारा।
मम मनु बसि परिचरन मझारा॥
पुनि मम त्याग करें जग माहीं।
कीरति कलपावा सक नाहीं॥
तौ इहि तै अपि कवन भलाई।
पति कीरति जिहि ते अधिकाई॥
अव तुव लछिमन कहौ बुझाई।
सदा कौसिला कृपा कराई॥
जासु पुत्र तिहि पुर कर राजा।
तासु भवन बिच कुसल समाजा॥

दोहा

भरत सत्रुघन आदि पुनि, कुसल कहौ समुझाइ।
बहुरि सुमित्रा कुसल कहु, महाभाग तुम माइ॥१७॥

चौपाई

मै तिनकौं प्रिय प्रान समाना।
संतत ही करि कृपानिधाना॥
पुनि सब भाँति कुसल रघुनाथा।
जिनहि सदा प्रिय निजु जग गाथा॥
सुजस सील जे भूप उदारा।
ते कह तजि कैसे संसारा॥
कहाँ बंधु कहं सुत परिवारा।
कहाँ राज कहं धन आगारा॥
पुनि प्रिय जिनहि न आपन प्राना।
तिनकं कह लघु नारि निदाना॥

तात बुझाइ कहौ येहि बारा।
कुसल सकल गृह नगर मझारा॥
इहि विधि बूझि सिया तेहि काला।
बोले लखन नाइ पद भाला॥
जो तुम मातु बूझि कुसलाई।
तौ अब कुसल देव रघुराई॥

दोहा

बूझी रघुपति कुसल पुनि, सकल प्रकार तुम्हारि।
पूछसि छम बहोरि तुव, कौसिल्या महतारि॥१८॥

चौपाई

बहुरि सुमित्रा ककेइ माता।
सकल प्रकार बूझि कुसलाता॥
अपर अनेक नृपन कै बाला।
तिन बूझा तुव कुसल बिसाला॥
सहित असीस प्रेम समुदाई।
सबन बूझि तुव छेम बनाई॥
भरत सत्रुघन पुनि दोउ भाई।
वदे तुव पद कज बनाई॥
बूझी कुसल प्रस्न सुनु माता।
प्रीति सहित कछु बरनि न जाता॥
श्री गुरु बूझी छेम तुम्हारी।
दीन्ह असीस सहित निज नारी॥
तियनि सहित पुनि स। मुनि वृंदा।
आसिष दीन्ह तुमहि आनंदा॥
परिजन पुरजन सबनि बहोरी।
पूछी छेम प्रीति नहि थोरी॥

दोहा

रघुपति तुमहि बुलाव अब, सुनहु मातु मम बैन।
केवल तन जानौ उहाँ, प्रान तुम्हारे ऐन ॥१९॥

चौपाई

तुम बिन कतहुं न मन अनुरागा।
तजि सरबसु येहि थल मन लागा॥
निरखि सकल दिसि तुमहि बिहीना।
करहिं रुदन नित दुख लवलीना॥
सुमिरहि तुव आस्रम नित रामा।
गुनहिं न आपन तुव-बिनु धामा॥
सदा कहैं इहि बिधि तुव गाथा।
कहौं बुझाइ सुनहु सोइ गाथा॥
बालमीक मुनि आस्रम माहीं।
जो येहि बसहि जानकी ताहीं॥
बचन मोर निज सीस चढ़ाई।
काल-छेप अपि करहिं बनाई॥
मम निकेत सोइ सकल प्रकारा।
निसि अरु दिन मै ताहि निहारा॥
तुव प्रभु कहेउ अवर कछु बाता।
मैं अब कहौ छिमहु अघ माता॥

दोहा

प्रगट जोग कछु गोप अति, सो सबु सुनहु बनाइ।
अस कहि लछिमन जोरि कर, पुनि बोले सिरुनाइ ॥२०॥

चौपाई

मोहि सकल जग ईस्वर कहई।
ब्रह्म सिवादि नाथ कहि अहई॥

सो सब सत्य मृषा कछु नाहीं।
कारन एक अहै तिहि माहीं॥
तुव पातिव्रत धरम बिसाला।
तिहि बल तैं मै तिहुँ पुर पाला॥
केवल तुम सुतंत्र तिहि कारन।
अब यह उचित कलेस निवारन॥
जो सुतंत्र मैं होत बनाई।
तौ किमि हर्ष सोक अधिकाई॥
हम भंजेउ संकर - कोदंडा।
बहुरि भई कैकेइ मति - खंडा॥
तिहि मैं भयेउ पिता कर मरना।
पुनि वन - गमन, तहाँ तुव हरना॥
उतरे बहुरि समुद्र गंभीरा।
संग रिच्छ निसिचर कपि भीरा॥

दोहा

बध्यौ तहाँ दस कंध रिपु, सहित कटक समुदाइ।
सती सिरोमनि भयेउ सब, तुम्हरे धर्म सहाइ॥२१॥

चौपाई

पुनि भेंटेउ पुर परिजन आई।
नृपता सकल विस्व की पाई॥
यह सब तोर प्रसाद बनाई।
पुनि वियोग कारन न लखाई॥
कृपा करहु अब निजु पुर आवौ।
प्रिया प्रचंड कलेस नसावौ॥
सत्य गिरा यह वेंद बखानी।
संतत सुद्ध सिया गुन खानी॥

लोक कलंक जान मैं भारी।
सो सब बानी दीन्हि बिसारी ।।
हम तुम जदपि गुनन तै न्यारे।
भक्तन हित जग मैं बपु धारे ।।
तौ अपि चलिय लोक अनुरीति।
जग उपदेस हेतु यह नीति ।।
पुनि पठई कानन जिहि हेता।
भोगि चुकी सो सब फल जेता ।।

दोहा

दुख सुख परि जो आनि कछु, दैव जोग संसार।
महत पुरुष करि भोग सब, निजु तन सहित बिचार ।।२२।।

चौपाई

तुम कह उचित प्रिया अब येहा।
जिहि तैं बढ़हि पुनीत सनेहा ।।
देखन मात्र सकल संसारा।
हम नै तुम कहं विपिन निसारा ।।
कबहु न त्याग हमार तुम्हारा।
जिमि दिनकर नहिं आतप न्यारा ।।
इहि विधि कहि प्रभु तुमहिं बुलावा।
मातु चलन कर करहु बनावा ।।
पुनि यह कहेउ बुझाइ बनाई।
जासु प्रीति बिच दोष लखाई ।।
तौ कछु काल रहिय बिलगाई।
विमल प्रीति हित येहि उपाई ।।
तुम तन मन बच सुद्ध निदाना।
हम निस्चें यह निजु उर जाना ।।

पावन प्रीति करन हित लागी।
कानन मध्य तुमहिं हम त्यागी ॥

दोहा

हेत न जानहुँ अपर कछु, प्रिया सुद्ध सब काल।
अनजानौ खल निंदही तुम्हरे चरित रसाल ॥२३॥

चौपाई

पावन सुजस हमार तुम्हारा।
रस पुनीत जानहिं संसारा ॥
निरमल चरित जान सब कोऊ।
उज्जल वंस बिदित पुनि दोऊ ॥
चरित हमार तुम्हार पुनीता।
गाइ - गाइ नर सकल सप्रीता ॥
ह्वै है पावन सकल प्रकारा।
बिन स्रम तरिहैं भव-निधि भारा ॥
येहि विधि तव गुन राम बखान्यौ।
सुनि जानकी महा सुख मान्यौ ॥
पुनि कह लखन सुनौ वैदेही।
दीन्हे रम्य बसन प्रभु येही ॥
वर भूषन वहु दिये सुहाये।
नाना अंग राग मन भाये ॥
चंदनादि सुभ गध पठाये।
तव हित लगि सब भाँति सुहाये ॥

दोहा

रथ पठाव पुनि बिसद अति, चामर उभै अनूप।
छत्र बिचित्र बिसाल अति, तव हित कोसल भूप ॥२४॥

चौपाई

पुनि गज तुरग बिचित्र पठाए।
उभै कुमार हेत मन भाये॥
तव गुन गान हेत सुनि माई।
पठये द्विज सत्तम समुदाई॥
मागध सूत बंदिजन भूरी।
गान करहिं तव कीरति रूरी॥
पुनि पठई पुर तिय समुदाई।
तुम्हरी करन हेत सेवकाई॥
चहुँ दिसि सूर करत रखवारो।
बरषत सुमन देव जुत नारी॥
बहु विधि देत द्विजन कौ दाना।
गजारूढ़ करि पुत्र निदाना॥
येहि प्रकार निज पुर कह आवौ।
होहु प्राप्त मोहि, विपिन बिहावौ॥
इहाँ परम उत सब पुर माहीं।
तुम बिन सोभ पाव कछु नाहीं॥

दोहा

सकल महीपन केरि तिय, पुनि सब मुनि जन नारि।
जुरीं अवर भामिनि सबै, येहि थल जग्य मझारि॥२५॥

चौपाई

कौसिल्या आदिक सब माता।
कीन्ह परम मंगल मुद दाता॥
तुम्हरे बिन आगम बंदेही।
सुखदायक उत्सव नहिं येही॥
भामिनि अस उर करि अनुमाना।
अब आवौ निज नगर निदाना॥

यह संदेह कहेउ रघुनाथा।
जननी मैं बरनी सोइ गाथा।।
अस प्रार्थना सिया सुनि काना।
लछिमन प्रति तव करें बखाना।।
मैं नहि रघुपति कीरति कारी।
नहिं चाहौ निज जस बिस्तारी।।
अर्थ धर्म सुभ गुन समुदाई।
तिन सब ते मै रहित बनाई।।
तुम जो कहौ रघुवीर बुलावें।
केहि प्रकार जग कीरति पावें।।

दोहा

तात निरंकुस भूप जन, को हिय करि विस्वास।
पुनि परतंत्र बनाइ तुम, मै कि चलौ उन पास।।२६।।

चौपाई

पति के गुन अरु औगुन जेते।
राखिय गोइ हृदै मैं तेते।।
ताते तात न करौ बखाना।
प्रभु तुम मगल रूप निदाना।।
पानिग्रहन अवसर मैं ताता।
निरखो सो सरूप मृदु गाता।।
सोइ सरूप मम हिय करि बासा।
बिसरै निमिष न सदा प्रकासा।।
लछिमन ये मम उभै कुमारा।
रघुपति तेज अंस अवतारा।।
बस विवर्द्धन सूर सुजाना।
पुनि धनु विद्या केरि निधाना।।

पितु समीप तुम जाहु लिवाई।
सब विधि लाड़न करौ बनाई ॥

दोहा

मै तप करि प्रभु पद कमल, भजौं इहाँ सब काल।
तुम हमारि पद-वंदना, करौ जाइ घरि भाल ॥२७॥

चौपाई

कुसल सबन सौं कहौ बुझाई।
जिन हम प्रति बूझी कुसलाई ॥
वात्सायन इमि जनक-कुमारी।
कहा लखन-प्रति गिरा-उचारी ॥
पुनि दोउ सुत कहं आयसु दीन्हा।
तदपि गमन लगि मन नहिं कीन्हा ॥
जननी तिनहि बहुरि समुझावा।
बालमीकि मुनि तुमहिं बुलावा ॥
अस सुनि मातु-चरन उठि वंदे।
दरस हेत मन परम अनदे ॥
तब लछिमन उठि पद सिरु नाई।
बहु प्रकार निज बिनै सुनाई ॥
भयौ बहोरि सुरथ असवारा।
कुस लव सहित हर्षि तेहि बारा ॥
अवध ओर हाँक्यौ पुनि बाजी।
चले महा गति मारुत लाजी ॥

दोहा

उतरि सुरसरी बेग जुत, आये सरजू तीर।
मख मंडफ लखि त्यागि रथ, निरखे मुनि गन धीर ॥२८॥

चौपाई

वंदन करत गये पुनि तहंवा ।
राजत बालमीकि मुनि जहंवा ।।
कुस लव परे चरन अकुलाई ।
वंदे बहुरि लखन पद जाई ।।
भेटेउ बालमीकि तेहि काला ।
तीनौ जन कहं हरषि बिसाला ।।
सभा मध्य तेहि रामहि जानी ।
चले लिवाइ महा मुनि ग्यानी ।।
तनै मिलाप करावन हेतू ।
अति उत्साह सहित मुनि केतू ।।
प्रथम लखन अति आतुरताई ।
परे चरन निजु बिनै सुनाई ।।
सिय प्रसंग सब कहेउ बहोरी ।
हृष सोक बम मति नहि थोरी ।।
सिय सदेस सुनहु रघुराई ।
भूतल परे तुरत मुरझाई ।।

दोहा

तजि मूर्छा रघुवंस मनि, सुनौ सूत तेहि काल ।
नीति - निपुन श्री लखन प्रति, बोले बचन रसाल ।।२६।।

चौपाई

तात सोधि हिय जतन बिसाला ।
सिय पहं जाहु आसु येहि काला ।।
आनौ बेगि समीप बोलाई ।
होउ परम मंगल तुम भाई ।।
मम संदेस यह कहौ बुझाई ।
कानन किमि तप करौ बनाई ।।

हमैं त्रिहाइ कौन गति जानौ।
तिय को गति केवल पति मानौ॥
तुम तिय धर्म सुन्यौ औ देखा।
कारन कवन न आव विसेखा॥
पुनि तुम प्रिया पाइ निज इच्छा।
गई बिपिन कछु मोर न सिच्छा॥
सकल प्रकार तहाँ मुनि-बाला।
पूजि चुकीं जुत प्रीति बिसाला॥
पुनि निरखे मुनि गन तप धामा।
पूरन भये सकल मन-कामा॥

छंद

पूरन भये मन काम सब, अब आवनहिं कारन कहा।
भामिनि न मैं तुव दोप निरखौ, मुदित जानहुं उर महा॥
तिय करे जो कछु काज, सो पति हेत, सब जग जानहीं।
पुनि कितहुँ जाइ न जाइ, केवल नाह-गति हिय मानहीं॥
निगुन मलीन कुसील क्रोधी, जठर जड़ मति-हीनहीं।
अति बधिर, लोचन त्रिगत, अबुध, अधम-रत, अति दीनहीं॥
गुन उदधि होइ बहोरि, केवल नारि गति पति एकही।
यह धर्म तुम सब भाँति जानहु, विदित श्रुति बानो सही॥

दोहा

कुल तिय जो कछु काज करि, सो पति तोपन हेत।
तुम मुनि तिय पूजी विपिन, मम हित प्रीति समेत॥३०॥

चौपाई

प्रथमै हम प्रसन्न तुव पाहीं।
अति अनकूल अजहुँ, सकनाहीं॥

जज्ञ जाप तप दान सुहाये ।
पुनि बहु व्रत तीरथ श्रुति गाये ।।
संजम दया आदि सब धर्मा ।
जह लगि कहे मुनि सुचि कर्मा ।।
मोर प्रसन्न हेत सब जानौ ।
सो मैं अति अनुकूल प्रमानौ ।।
केहि कारन तप कानन करहू ।
अब प्रसन्न ह्वै पुर पग धरहू ।।
सुनि मुनि येहि प्रकार मुनिराई ।
सिय प्रति कहेउ संदेस बनाई ।।
लछिमन सुनि अस प्रभु मुख बानी ।
बोले बँदि जोरि जुग पानी ।।
जो तुम कहेउ सिया सन नाथा ।
मै अब जाइ कहौ सब गाथा ।।

दोहा

कहिहौं बिनै समेत प्रभु, वंदि चरन निज भाल ।
अति जब संजुत सुरथ चढ़ि, चले विपिनि तेहि काल ।।३१।।

चौपाई

वालमीकि इत सभा मझारा ।
प्रभुहिं देखायौ उभ कुमारा ।।
बैठे बहुरि मुदित मन माहीं ।
कह मुनीस तव पुत्रन पाहीं ।।
मन प्रसन्न होइ तुम दोउ भ्राता ।
गावौ राम चरित मुद दाता ।।
अति अद्‌भुत कल गान रसाला ।
बीन द्वार करि ललित बिसाला ।।

यहि प्रकार सुनि गुरु मुख बानी।
हरषे उभै बंधु गुन खानी॥
राम चरित पुनि गावन लागे।
ललित बरन आनंद रस पागे॥
महा भाग कुस लव दोउ भाई।
करें गान कछु बरनि न जाई॥
ताल बीन जुत राग अलापा।
सो समस्त मंडल मैं व्यापा॥

दोहा

पद-पद करत विचित्र अति, गान-कला-अनुसार।
परम पुष्ट मृदु मंजुवर, उचरत वरन उदार॥३२॥

चौपाई

जो कछु चरित मध्य किय गाना।
सो सब मैं पुनि करौ बखाना॥
बिसद धर्म विधि तासु मझारी।
फेरि पतिव्रत विधि मुदकारी॥
सो अब नेह विधान बिसाला।
बहुरि विसद गुरु-भक्ति रसाला॥
स्वामी-सेवक-रहनि-विधाना।
मूरतिवंत सुनीति बखाना॥
जे अधर्मकारी नर-नारी।
तिनहि दंड कह चरित मझारी॥
पुनि-पुनि आदि अंत अवसाना।
प्रतिपालक रघुपति भगवाना॥
बिसद ताल सुर बीन समेता।
गान करत अस चरित सचेता॥
पूरि रहा जग सो कल गाना।
थकित भये नभ सुर सुनि नाना॥

दोहा

किन्नर सुनि - सुनि गान कल, मूर्छित भये निदान ।
लोक - पाल दिक - पाल जुत, सबन बिसार्यौ गान ।।३३।।

चौपाई

विसद बीन सुर ताल रसाला ।
गावत एक भये तिहि काला ।।
सुनि - सुनि सभा सकल मुनिराई ।
भई त्रिमोहित सुधि त्रिसराई ।।
जह् तह् थकित भये सब कैसे ।
चित्र लिखी पुतरी बहु जैसे ।।
मृगी सुनत जिमि सावर गाना ।
जिमि चकोर लखि चंद निदाना ।।
रघुपति हर्ष विवस तेहि काला ।
मोहित - स्रवत नैन जन - जाला ।।
सभा - मध्य पुनि भूपति जेते ।
परम विमोहित जल तजि तेते ।।
मुनि गन निज - निज काज बिसारे ।
मनौ चित्र बिच लिखे संवारे ।।
अपर सकल नर नारि समेते ।
पुनि खग मृग जड़ जगम जेते ।।

दोहा

मोहित भये समस्त सुनि, मैं किमि करौं बखान ।
किये पंच आलाप तिन, मूरतिवंत निदान ।।३४।।

चौपाई

श्री रघुपति सब सभा मझारा ।
गान करत लखि जुगुल - कुमारा ।।

बालमीकि मुनि सत्तम पाहीं।
बोले परम मुदित मन माहीं॥
कुटिल भृकुटि जुग कछुक चलाई।
आनन मंद - मंद मुसुकाई॥
मुनिवर महत गान इन कीन्हा।
सबही कर मन बस करि लीन्हा॥
देन चहैं हम कंचन भूरी।
विद्या निरखि सकल सब रुरी॥
राम गिरा सुनि अस दोउ भाई।
बोले तेहि औसर मुनिराई॥
लेत प्रतिगृह द्विज जग माही।
उचित इतर लोगन कहं नाहों॥
लोभ विवस छत्री लहि दाना।
परे नरक अपि बेद बखाना॥

सोरठा

हे गुरू परम-सुजान, यह नृप करै अनीति बहु।
हम किमि करै बखान, हेम दान कह देन अब॥३५॥

चौपाई

हमहीं इनहि महीपति कीन्हा।
जीति समर पुनि मख - हय लीन्हा॥
ते अब देत हमैं किमि दाना।
पुनि आपन चाहत कल्याना॥
जो हम कृपा कीन्ह इन पाहीं।
सो कछु सुरति करत उर नाहीं॥
बालमीकि अस सुनि तेहि काला।
करयौ कृपा वर वचन रसाला॥

ये रघुकुल - मनि जनक तुम्हारे।
जानौ मन सब गुन - बिधि भारे॥
तुम अनुचित जनि करौ बखाना।
नहिं अनीति लायक जग जाना॥
अस सुनि सकुचि उठे दोउ भाई।
परे जनक पद उर हरपाई॥
पुनि आपनि बहु विनै सुनाई।
मातु भक्ति करि विमल बताई॥

दोहा

श्री रघुपति हरषाइ तब, भेंटे हृदै लगाइ।
सा छवि अति उपमा विसद, मो पर बरनि न जाइ॥३६॥

चौपाई

जन समस्त मुनि अधम अनूपा।
मिले राम कहं धर्म सरूपा॥
सभा लोग लखि जुगुल कुमारा।
मुदित परसपर बचन उचारा॥
श्री जानकि पति - भक्ति सोहाई।
धरि सरूप भेटे रघुराई॥
जुगुल पुत्र जुत राम उदारा।
सुनि मुनीस छवि लही अपारा॥
सभा समस्त निरखि तेहि काला।
भई थकित, नहिं लोचन चाला॥
सुनहु बचन मम सून सुजाना।
सेष गिरा सुनि अस मुनि काना॥
राम चरित्र स्रवन हित लागी।
बोले बचन परम अनुरागी॥

सुनौ कृपाल अनंत उदारा ।
मम संदेह हरौ येहि वारा ॥

दोहा

सर्व धर्म संजुत सुखद, रामायन गुन गाव ।
बालमीकि मुनि कहौ अब, सो केहि समै बनाव ॥३७॥

चौपाई

कौन हेत पुनि बिरच्यौ नाथा ।
तेहि बिच कौन - कौन बर गाथा ॥
मोहि बुझाइ कहौ येहि काला ।
अहह स्वामि तुम परम कृपाला ॥
बोले मुनि अहिपति हरषाई ।
धन्य मुनीम सुनौ मनुलाई ॥
बालमीक मुनिवर यक बारा ।
परम बिसाल विपिनि पगु धारा ॥
तहाँ तमाल लता बहु साला ।
पुष्पित किंसुक वृच्छ बिसाला ॥
दाड़िम अंब्र कदंब सुहाये ।
चंपक बकुल बिपुल छवि छाये ॥
सुमन समेत केतकी भ्राजं ।
बिसद जुही मालती बिराजं ॥
कोविदार पुनि कुरौ सुहाये ।
चहुँ दिसि देवदार छवि पाये ॥

दोहा

और अनेक सु वृक्षगन, कुसुमित भये बनाइ ।
सौरभ सुदर सुखद अति, रहो सकल बन छाइ ॥३८॥

चौपाई

बोलत कीर कोकिला वृंदा ।
राजत अलिगन महित अनदा ॥
सो वन परम रम्य चहुं ओरा ।
प्रमुदित नृत्य करत कल मोरा ॥
तहॉं क्रौच जुग येक सोहाये ।
बिहरत काम बिवस मद छाये ॥
बधिक येक खल दया बिहीना ।
आवा तेहि थल बुद्धि मलीना ॥
क्रौची - पति कर कीन्ह निपाता ।
मास - स्वाद लालुप दुख दाता ॥
निज पति मृतक निरखि तेहि काला ।
भई निपट क्रौची बेहाला ॥
रोदन कीन्ह विविधि विधि भारी ।
तजं मोह बस लोचन बारी ॥
बालमीकि मुनि परम दयाला ।
बध बिलोकि ताकर तेहि काला ॥

दोहा

परम कोप करि बधिक पर, देन लगे तब श्राप ।
करि सुरसरि जल आचमन, निरखि घोर खल पाप ॥

श्लोक

मा निसाद प्रतिष्ठा त्वमगम: शाश्वती सम: ।
यत्क्रौच मिथुनादेकमबधी: काममोहितम् ॥

दोहा

भयो प्रगट है श्लोक मुनि, श्राप देत तेहि काल ।
चारु - चारु पद ललित अति, बरन सुपुष्ट रसाल ॥३६॥

चौपाई

यह प्रवंध सुंदर सुनि काना।
बोले हर्षि महीस्वर आना।।
साधु-साधु तुम साधु सुजाना।
मुनि सत्तम विज्ञान निधाना।।
स्राप देत तुम्हरे मुख माहीं।
आइ भारती ससै नाहीं।।
सोई श्लोक प्रवंध बनाई।
करि प्रसाद निज लोक सिधाई।।
यह प्रवंध भा परम अनूपा।
हम किमि कहैं सुनौ मुनि भूपा।।
अस सुनि बालमीकि तेहि काला।
मुदित भये निज हृदै बिसाला।।
चतुरानन तेंहि औसर माहीं।
निज पुत्रन जुत आये ताहीं।।
बालमीकि प्रति मुदित बनाई।
बोले 'सुखद सु गिरा सोहाई।।

दोहा

धन्य मुनीस उदार मति, मुखहि भारती आइ
बिरचसि प्रथम श्लोक वर, कीन्ही कृपा बनाइ।।४०।।

चौपाई

ताते अब प्रमुदित ह्वै ताता।
विरचौ रामायन सुखदाता।।
परम रम्य पद करौ बिचारी।
बरन मधुर अति आनंदकारी।।

येहि ते निरमल कीरति तोरी।
अल्प अंत लगि होइ न थोरी॥
धन्य तासु बानी संसारा।
जो श्री रघुपति नाम उचारा॥
काम कथा जे करैं बखाना।
तिनते अधम अधिक नहिं आना॥
होइ दोष जे सूतक माहीं।
सो अघ तिनहिं लाग सकनाहीं॥
ताते राम चरित्र पुनीता।
बरनन करौ मुनीस सुप्रीता॥
जो पद - पद प्रति छिन - छिन माहीं।
दलैं महा अघ संसै नाहीं॥

दोहा

अस कहि अज तब सुरन जुत, पुनि भे अंतरध्यान।
बालमीकि तब सुनौ मुनि, सोचन लगे निदान॥४१॥

चौपाई

मो सन विधि यह कहेउ बुझाई।
बिरचहु रामायन हरषाई॥
बरनौं कौन भाँति अब सोई।
प्रथम न सुना, अजौं नहि जोई॥
अस कहि मुनि सुरसरि के तीरा।
ध्यान करन लागे मति - धीरा॥
तब मुनिवर के चित्त मझारा।
भये प्रगट श्री राम उदारा॥
नीलकंज सम स्याम सो गाता।
दृग राजीव - सरिस सुख - दाता॥

आनन ललित किरीट सोहावा।
पीत बसन पहिरे छवि छावा।।
सुंदर उर बनमाल बिराजे।
बहु भूषन कौस्तुभ मनि भ्राजे।।
कटि निषंग कर चाप सुबाना।
सो सरूप नहिं जाइ बखाना।।

दोहा

रघुपति दरस प्रभाव मुनि, बालमीक तेहि काल।
भूत भव्य भव चरित सब, निरखा हृदं रसाल।।४२।।

चौपाई

तब उर परम मोद अधिकाना।
जानि राम कै कृपा निदाना।।
राम चरित पुनि बरनन लागा।
पद-पद ललित मोद रस पागा।।
तेहि बिच कथा अनेक प्रकारा।
बिसद कांड षट परम उचारा।।
प्रथमै बाल कांड मुनि जानो।
पुनि दूसर आरन्य प्रमानो।।
तीसर किषिकिंधा अस नामा।
चौथे सुंदर अति सुख धामा।।
पंचम युद्ध कांड मुनि गावा।
पुनि उत्तर सब भाँति सोहावा।।
बालकांड कर चरित रसाला।
क्रम करि प्रथम कहौं इहि काला।।
दसरथ तनं हेत हरषाई।
शृंगी रिषिहिं समीप बोलाई।।

दोहा

कीन्ह जग्य पावन परम, निज पुर सहित विधान ।
तेहि ते भूपति पाव सुत, राम स्वयं भगवान ।।४३।।

चौपाई

ते कौसिक मुनि जज्ञ मझारा ।
सानुज जात भये यक बारा ।।
तहं मारीच केर मद खंडा ।
बध्यौ सुकटक सुबाहु प्रचंडा ।।
मुनि तिय तारि जनक पुर गयेऊ ।
तहं बहु नृप मद खंडित भयेऊ ।।
बहुरि बिवाहि सियहि रघुराई ।
आये निज पुर हिय हरषाई ।।
नृप तब देन लगे जुवराजू ।
येहि सुनि हरषे सकल समाजू ।।
मातु बचन पुनि सीस चढ़ाई ।
सिय जुत वन गमने दोउ भाई ।।
उतरि सुरसरी धरि मुनि बेसा ।
चित्रकूट गिरि कीन्ह प्रवेसा ।।
इहाँ भरत कौसल पुर आये ।
तजि मातुल गृह विस्मय छाये ।।

दोहा

राम गमन सुनि विपिनि बिच, सानुज सिया समेत ।
चित्रकूट लघु बधु जुत, गये लिवावन हेत ।।४४।।

चौपाई

तब रघुपति भरतं उपदेसा ।
गमन हेत पुनि कीन्ह निदेसा ।।

सुंदर चरन पादुका पाई।
नंदीग्राम बसे पुनि आई॥
बाल चरित्र अनूपम येहा।
अब आरन्य सुनौ जुत नेहा॥
अत्रि आदि जे मुनि के धामा।
जहं जहं बसे जाइ सिय रामा॥
जानौ यह तेहि माहि प्रसंगा।
सूपनखा कौ नासा भंगा॥
खरदूषन त्रिसिरा खल भारी।
इनहि बधा जिमि समर मझारी॥
बहुरि कपट मारीच निपाता।
पुनि दसकंध हरी सिय माता॥
तब रघुनाथ मनुज अनुहारी।
कीन्ह महा दुख बिपिनि मझारी॥

दोहा

बहुरि कबंधहिं निरखि प्रभु, गीध कीन्ह उद्धार।
सेवरी भवन प्रवेस करि, पंपा सरहिं निहार॥४१॥

चौपाई

आगे बहुरि चले दोउ भाई।
मिले तहाँ मारुत सुत पाई॥
यह बन कांड मुनीस बनावा।
किसिकिंधा अब सुनौ सोहावा॥
प्रथम सुकठ मिला पर साला।
सप्त ताल मुनि दले बिसाला॥
बिन स्रम बहुरि बालि बध कीन्हा।
राज तिलक सुग्रीवहिं दीन्हा॥
वरषा बिसद निरखि नियराई।
सानुज सैल बसे रघुराई॥

लषन जाइ पुनि भै दरसाई।
आये तब कपिपतिहिं लिवाई॥
मर्कट भालु केरि कटकाई।
सिया हेत चहुं ओर पठाई॥
जलधि तीर संपातिहि देखी।
भये सकल भै-भीत विसेखी॥

दोहा

निज बल सुनि तब मरुत-सुत, लाँघि जलधि भं पार।
यह किसकिंधा कांड मुनि, बरन्यो सुखद सुचार॥८६॥

चौपाई

अब सुंदर बरनौं तुम पाहीं।
अद्‌भुत राम कथा जेहि माहीं॥
गृह-गृह प्रति कपि रजनि मझारा।
सोधि फिरेउ नहिं सियहि निहारा॥
पुनि असोक वन भीतर जाई।
निरखी सीता दुखित बनाई॥
कहि प्रभु कथा मुद्रिका दीन्हा।
कै विस्वास मुदित ह्वै लीन्हा॥
कीन्ह विपिनि पुनि भग निदाना।
बंधन बिबस भये बलवाना॥
बहुरि सकल लंका कपि जारी।
सियहि प्रबोध कीन्ह अति भारी॥
लांघि पयोधि आव कपि पारा।
मिले सकल हिय हर्ष अपारा॥
पुनि रघुपति समीप सब आई।
कही सिया की खबरि बुझाई॥

दोहा

सानुज राम पयान कै, आये जलनिधि तीर।
मिले विभीषन आइ तह प्रमुदित पुलकि सरीर ॥४७॥

चौपाई

बाँधि सेतु उतरे प्रभु पारा।
सग भालु कपि रीछ अपारा ॥
सुक सारन सब सैन दिखाई।
यह सुंदर मैं कहेउ बुझाई ॥
जुद्ध कांड मह दसमुख मारा।
कटक समेत प्रबल भट भारा ॥
आई जनक - सुता प्रभु पाहीं।
हरषी निरखि चमू जह ताहीं ॥
उत्तर मैं प्रभु निज पुर आये।
सवन कीन्ह सब भाँति बधाये ॥
कुंभज मुनि कर आयसु पाई।
बाजि मेध तव किय मुनिराई ॥
विधिवत सो सब चरित सोहावा।
वात्सायन हम तुम्हिं सुनावा ॥
ये षट कांड सकल जग जाने।
बालमीक मुनि प्रथम बखाने ॥

दोहा

संख्या चौबिस महस सब, मै सछेप बखानि।
श्रवन करत यक बरन पद, करै महा अघ हानि ॥

सोरठा

कुस लव कौ रघुराइ, निरखे निज सुत जानि जिय।
लीन्हे हृदय लगाइ, पुनि सीतहि खोजत भये ॥४८॥

इति श्री पद्म पुराणे पाताल षंडे, सेष वात्सायन सवादे,
मधुसूदन दास कृते, रामायन गान नाम षट षष्ठितमोऽध्यायः ॥६६॥

यज्ञ-समाप्त

दोहा

वात्सायन सौमित्रि इत, पहुंचे आश्रम आइ।
पुलकि राम संदेस सब, कहेउ बचन सिरु नाइ॥

चौपाई

निज सनमुख श्री जनक-कुमारी।
विनै सहित लछिमनहिं निहारी॥
पुनि सुनि पति-मुख-बचन-रसाला।
तजि संकोच बोली तेहि काला॥
तुम लछिमन जु कही हम पाही।
चलौ मुदित होइ निज पुर माहीं॥
मोहि निपट वन घोर निसारी।
हठ करि कासल नाथ खरारी॥
चलौं कौन विधि अब मैं ताता।
ताते सुनौ अपर मम बाता॥
येहि आस्रम बिच सकल प्रकारा।
भजिहौं प्रभु-पद-कंज उदारा॥
सुनि लछिमन अस सिय-मुख-बानी।
बोले गिरा महा नय सानी॥
सुनौ मातु जानकी सुजाना।
तुमहि पतिव्रत धर्म निदाना॥

दोहा

तुमहि सदा करनीय ध्रुव, पति निदस सिर धारि।
पति कृत दोष पतिव्रता, मन क्रम बचन निहारि॥१॥

चौपाई

अस बिचारि जननी प्रभु पासा।
रथ चढ़ि चलौ समेत हुलासा ।।
बार-बार मोहि कहि रघुनाथा।
लावौ सियहि आसु निजु साथा ।।
लखन कह्येउ येहि विधि बहु बाता।
सो सब स्रवन कीन्ह सिय माता ।।
निज मन रोष सकल तजि दीन्ह ।
पतिव्रता वर परम प्रवीना ।।
तब सब भाँति हृदै हरषाई।
मिलीं सकल मुनि-तियन बोलाई ।।
पुनि मुनि वृंदन कहुं सिरु नाई।
अति विनीत ह्वै बिनै सुनाई ।।
बहुरि मुदित ह्वं सकल प्रकारा।
राम सुमिरि भं रथ असवारा ।।
तब हिय हर्पि लखन तेहि काला।
चढ़ि रंथ हाँक्यो तुरग रसाला ।।

दोहा

परमानद समेत मग, चले जात मुनि राइ।
कृत सौ उतरे देव सरि, पहुंचे निज पुर आइ ।।२।।

चौपाई

पुर रम्यता लखी चहुं पासा।
बिबिधि रग मनि करत प्रकासा ।।
बहु तोरन मनि ध्वजा पताका।
मोहे निरखि न अस मन काका ।।

मख - मंडप सरजू के तीरा।
विद्यमान जहं श्री रघुबीरा॥
पहुंची तहाँ विदेह किसोरी।
सुमिरत प्रभु पद प्रीति न थोरी॥
लषन सहित तब आतुरताई।
तुरतै रथ सिय दीन्ह बिहाई॥
प्रभु - पद - कंज परी हरषाई।
प्रीति पुनीत बरनि नहिं जाई॥
रघुपति तब निज चरन मझारी।
प्रेम मगन जानकी निहारी॥
कहेउ प्रिया तुम जुत येहि काला।
करिहौं पूरन जज्ञ रसाला॥

दोहा

बालमीकि मुनिवरहि सिय, पुनि उठि कीन्ह प्रनाम।
वन्दे बहुरि मुनीस सब, सादर बहु तपधाम॥३॥

चौपाई

राम - मातु पुनि जेहि थल माहीं।
गइ जानकी प्रमुदित ताही॥
परी चरन, निज बिनै सुनाई।
कौसिल्या बिलोकि हरषाई॥
बीर मातु निज उर अनुमानी।
दीन्ह असीस प्रान सम जानी॥
भयो प्रमोद अनेक प्रकारा।
हृदै लगाइ लीन्ह तेहि बारा॥
केकई चरन गहे पुनि जाई।
बिनै समेत सुनौ मुनि राई॥

पुत्र - वधू लखि परम पियारी।
प्रमुदित भेंटि असीस उचारी ॥
चिरजीवहु पति पुत्र समेतू।
संतत करौ राम अति हेतू ॥
परी सुमित्रा चरन बहोरी।
भेंटो ललकि देह भें भोरी ॥

दोहा

पुत्र बधू लखि परम प्रिय, प्रमुदित दीन्ह असीस।
पुत्रवती अब होहु तुम, येहि विधि कहेउ, मुनीस ॥४॥

चौपाई

पुनि भरतादिक तिय तेहि बारा।
बधुन सहित हिय हर्ष अपारा ॥
परी जानकी पद बिच आई।
मिली सबन सिय हृदं लगाई ॥
जथा जोग्य पुनि दीन्ह असीसा।
सुनि - सुनि सकल नाइ पद सीसा ॥
परम अनंद प्रगट तेहि काला।
मिटा बियोग जनित दुख जाला ॥
रघुपति निकट बहुरि सिय आई।
विद्यमान जह मुनि समुदाई ॥
तव कुंभज मुनि सीतहि देखी।
परम हर्ष वस भये विसेखी ॥
पुनि उठाइ कचन सिय सोई।
राखी अंत भिन्न थल गोई ॥
रघुपति वाप अंग पुनि सीता।
विद्यमान किय परम पुनीता ॥

दोहा

जग्य मध्य रघुवंस मनि, सोभित सिया समेत।
मधुसूदन जिमि चन्द्रमा, ताराजुत छवि देत ॥५॥

चौपाई

सियहि प्राप्त ह्व श्री रघराई।
भये मुदित सब भाँति बनाई॥
लागे करन जग्य के काजू।
हष छवि लखि सकल समाजू॥
मुनि जन निरखि चकित मन भयेऊ।
परम मोद छिन - छिन प्रति लयेऊ॥
विसद बुद्धि - निधि राम कृपाला।
निज गुरु सन बोल तेहि काला॥
कहौ स्वामि येहि औसर माही।
कौन काज करतब हम पाही॥
अस मुनि श्री वसिष्ठ मुनि धीरा।
गमे जोग कह बचन गभीरा॥
पूजौ बिप्रन कौ रघुराई।
परितोपौ सब विधि हरषाई॥
मख के अंत उचित यह येहा।
तुम सुजान अपि बिसद गुन गेहा॥

दोहा

प्रथमै कीन्ह मरुत नृप, अस्वमेध मख येह।
वित्त आदि दै विप्र हिय, परितोपे जुत नेह ॥६॥

चौपाई

राम कहाँ लगि कहौ बखाना।
दीन्ह द्विजन कौ अतुलित दाना॥

लै न सकेउ तब भूसुर सोई।
महा भार कंचन कर जोई॥
हिम गिरि निकट सबं सोइ डारी।
पुनि निज निज गृह गए सुखारी॥
तुम महीप - मनि परम सुजाना।
परब्रह्म श्रीपति भगवाना॥
तेहि ते भूरि दान अब देहू।
परितोषहु भूसुर जुत नेहू॥
रघुपति येहि प्रकार सुनि काना।
हरषवंत हिय भये निदाना॥
श्री वसिष्ठ जुत कुंभज केरी।
प्रथमहि पूजा कीन्ह घनेरी॥
अगिनित रत्न भार तेहि काला।
दीन्हे परम अमोल रसाला॥

दोहा

पुनि कंचन के भार बहु, दीन्हे सादर राम।
विविधि वस्त्र भाजन विपुल, देस बिसाल सुग्राम॥७॥

चौपाई

तिन बिच बसैं नारि नर भूरी।
पुनि चहुं ओर कृषी अति रूरी॥
येहि विधि तनं सहित रघुवीरा।
पूजे गुरु कुंभज मति धीरा॥
मुदित बहोरि राम तेहि बारा।
सत्यवती - सुत - व्यास उदारा॥
याही विधि करि पूजन कीन्हा।
देस रतन कंचन बहु दीन्हा॥

वाम सहित मुनि च्यवन मुनीसा।
बहु विधि पूजि कोसलाधीसा॥
रित्विज बाल्मीकि तप खानी।
पूजेउ बहुरि तिन्हहि मनमानी॥
को कवि कर दान कर लेखा।
जो बरनै सो मूढ़ विसेखा॥
अपर जग्य-बिच मुनि गन जेते।
पूजे सब प्रकार प्रभु तेते॥

दोहा

बहु भाजन भूषन बसन, कनक रतन के भार।
दत अमित रघुवंस मनि, हरष सहित तेहि बार॥८॥

चौपाई

भूरि दच्छिना विप्रन पाई।
दीन्ह राम मंडप मैं आई॥
और अपार विप्र समुदाई।
आये देसन ते सुधि पाई॥
लक्ष-लक्ष कंचन मुनि धीरा।
येक-येक प्रति दिग रघुबीरा॥
पुनि जेहि को जैसी रुचि देखी।
ताको तिमि सनमान विसेखी॥
दीन अंध कृपिनादिक जेते।
जथा प्रीति तोषे बहु तेते॥
दान अनेक दीन्ह बहु भाँती।
पुनि धन रतन सुमन गन जाती॥
बसन बिचित्र सुभाजन भूरी।
असन चारि विधि षट रस रूरी॥

अभरन अमित विचित्र सोहाये।
देस ग्राम गृह संपति छाये ।।

दोहा

हय बितुंड सिविका सुखद, स्यंदन धेनु अपार।
अपर पदारथ सकल प्रभु, दिये अमित तेहि बार ।।९।।

चौपाई

मख बिच प्रभु सब की रुचि राखी।
निरखि न परं कितहुं अभिलाषी ।।
रिष्ठ पुष्ठ जन सकल प्रकारा।
मखमैं भये सहित परिवारा ।।
कुंभज मुनि तब रामहिं देखा।
सब कर करि परितोप विसेखा ।।
बोले बचन प्रमोद बढ़ाई।
सुनौ उदार देव रघुराई ।।
तुम •समेत चौंसठि महिपाला।
तिय जुत कर गहि कलस रसाला ।।
आनौ श्री सरजू जल पावन।
मंत्रन हेत तुरंग सोहावन ।।
वात्सायन अस मुनि रघुराई।
प्रथमै आपु उठे हरषाई ।।
सकल विभूषन भूषित सीता।
तेहि समेत सब चले सप्रीता ।।

दोहा

परम मनोहर हेम को, कलस विराजत पानि।
छवि निधान वपु स्याम मृदु, को कवि करैं बखानि ।।१०।।

चौपाई

चले लखन उर्मिला समेता।
भरत मडवी - जुत जल हेता॥
तेहि पीछे रिपुहन मुनि राई।
श्रुति - कीरति समेत हरपाई॥
पुनि पुष्कल धरि कलस रसाला।
चले कांतिवति जुत तेहि काला॥
सत्यवती समेत तेहि पाछे।
चले सुबाहु मुदित मन आछे॥
सत्यवान पुनि भूप उदारा।
सहित बीर भूपति पगु धारा॥
सुमद बहोरि चले मुनिराई।
सति कीरति संजुत हरपाई॥
रासी नाम सु नारि समेतू।
विमल नरेस चले जल हेतू॥
भूप बीरमनि पुनि पगु धारा।
सहित सूतवति जुत तेहि बारा॥

दोहा

कोमलदा जुत हर्षि हिय, चले जनक सुत भूप।
सहित अंगसेना सु तिय, नृप रिपुताप अनूप॥११॥

चौपाई

महमूरति अस नाम सुनारो।
सहित विभीषन चले सुखारी॥
बहुरि प्रताप अग्र तेहि काला।
पुनि गमन्यौ उग्रास नृपाला॥
कामगमा जुत हर्षि बिसाला।
नीर हेत लै कलस बिसाला॥

नील रतन गमने तेहि पाछे।
आधंरम्या जुत संजुत आछे।।
चले बहोरि सुरथ बल धामा।
संग मनोहर सो तिय बामा।।
पुनि गमने सुग्रीव कपीसा।
मोहनया जुत सुनौ मुनीसा।।
येहि बिधि जानौ अपर नृपाला।
तियन समेत चले तिहि काला।।
सकल समाज अग्र मग माही।
जान वसिष्ठ आदि मुनि ताही।।

छंद

मुनि परम प्रवीन सुनौ सु अबं, सरजू मह जाइ वसिष्ठ तबं।
श्रुति सोधि सुतत्र उचार कर्यौ, सब तारथ स्वागत तत्र धर्यौ।।
पुनि परम पुनीत सु बन कहे, तुम अंबु सदा सुचि दुक्ख दहे।
हय जग्य तुरगम सुद्ध करो, रघुनायक को गुन दोष हरो।।
इमि कीन्ह बखान वसिष्ठ मुनि, परस्यौ पुनि नीर पवित्र गुनी।
हरप सुनि सेन नृपाल सबं, रघुवीर भर्यौ निज कुंभ तबं।।
सिय संजुत साभ अपार लहो, अस सभु सुरेस सकं न कही।
गन नाथ गिरा छवि देखि ठगी, रति मन्मथ सजुत तुच्छ लगी।।
मृदु मजुल सुंदर स्याम तन, चपला जुत ज्यौ नभ मध्य घनं।
दृग-पकज भाल विसाल वर, पदुमाजुत पुंड अनूप वरं।।
भृकुटी अति वक विराजत है, रतिनायक को धनु लाजतु है।
श्रुति सुंदर घ्रान अनूप महा, सुक तुंड लगै लघु सेष कहा।।
छवि धाम सु आनन सोहत है, दसनावलि ओष्ट विमोहित है।
कलकठ सु कंबु समान लसं, उर सुदरता त्रिच श्री बिलसै।।
भुज दंड विसाल रसाल करं, जल संजुत कुभ विचित्र धरं।
त्रिबली हिय के तर भ्राजी रही, अति सुंदर नाभि न जाति कही।।

दोहा

जंघ परम लावन्य निधि, चरन महा छवि धाम।
मधुसूदन सिय सहित प्रभु मम हिय करि विश्राम।।

सोरठा

सकल भूप छवि पेखि, भये मगन सब भाँति हिय।
भरि भरि कलस विसेखि, प्रभु पाछे निकसे हरषि।।१२।।

चौपाई

पुनि आये मख मंडप माही।
मुनिवर सकल प्रसंसत ताही।।
तब कुंभज श्रुति मंत्र उचारी।
दीन्ह राम कर निरमल झारी।।
पुनि अस्वहि अस्नान करावा।
प्रमुदित जेहि प्रकार श्रुति गावा।।
बोले रघुवर बचन बहोरी।
बाजि राज प्रति दोउ कर जोरी।।
महा भाग हे अस्व उदारा।
द्विज बध ते अब करौ उधारा।।
पुनि तव आमिष तें सुर वृंदा।
होइं त्रिप्त उर लहैं अनंदा।।
सिया सहित इमि बचन उचारा।
पुनि परस्यौ हय तन तेहि बारा।।
मुनि समाज सब अस सुनि काना।
अति विस्मै निज - निज उर माना।।

दोहा

बचन परस्पर कहैं सब, प्रभु कस कीन्ह बखान।
जासु नाम सुमिरन करत, महा पाप कर हानि।।१४।।

चौपाई

ते रघुपति अस येहि विधि कहई।
येहि विधि कहि सब अचिरज लहई ॥
तब अगस्त कर लीन्ह कृपाना।
वेद मन्त्र पढ़ि हृष निदाना ॥
दीन्ह बहुरि रघुपति कर सोई।
अवसर सुखद मकल निधि जोई ॥
अस्व पीठ पर श्री रघुराई।
कीन्हि मु पमं मुनी मुनिराई ॥
तेहि छिन तुरत पसुत्व बिहावा।
भा सदेह वपु दिव्य सोहावा ॥
चारि बाहु चक्रादि समेता।
सीम मुकुट अतिसय छबि देता ॥
वैजती माला उर सोहै।
निरखत पीत बसन मन मोहै ॥
तुरत बिमान निकट चलि आवा।
अति बिचित्र रचना छबि छावा ॥

दोहा

भयो तुरत आरूढ़ सोइ, सहित अपछरा वृंद।
होन लगे चामर विजन, तेहि उर परम अनद ॥१५॥

चौपाई

हय तें दिव्य रूप ह्वै गयेऊ।
निरखि सकल जन विस्मित भयेऊ ॥
जदपि राम सब कारन जाना;
तदपि अस्व प्रति करैं बखाना ॥
सबहि जनावन हेत बनाई।
निज महिमा प्रभाव अधिकाई ॥

हे सुर बिसद दिव्य वपुधारी।
तुम जग परम धरम सचारी॥
को तुम दिव्य गात निमि पावा।
सेवै सुर तिय जान मोहावा॥
पुनि केहि हेत पाव हय गाता।
यह सब कहो मोहि हरषाना॥
अस सुनि सुर रघपति मुख बानी।
हमि बोले गभीर मुनि जानी॥
तुम सवग्य देव रघुराई।
जानौ कारन सकल बनाई॥

दोहा

सब काल सब देस मह, सिय समेत रघुनाथ।
बाहिर भीतर बसौ तुम, बिदित वेद बिच बात॥१६॥

चौपाई

बूझौ तदपि मोहि भगवाना।
बरनौ मै अघ छमौ निदाना॥
प्रथमै मै भूसुर तन पावा।
परम धर्मरत कपट न भावा॥
नाथ पूव प्रारब्धि प्रभाऊ।
श्रुति प्रतिकूल दीन मग पाऊ॥
ताते अस्व देह मै पाई।
सो प्रसग सब कहौ बुझाई॥
येक बार मै प्रथम कृपाला।
गा सरजू तट मुदित बिसाला॥
बिविधि वृच्छ गन सोहै ताही।
बहु फल सुमन पत्र तिन माहीं॥

मंजन कीन्ह तहाँ मैं जाई।
विधिवत तर्पन किय हरषाई॥
दीन्ह दान पुनि जथा विधाना।
कीन्ह सप्रीति बहुरि तब ध्याना॥

दोहा

देस-देस के विपुल जन, जुरे पर्व बड़ पाइ।
तिनके बंचन हेत मैं, कीन्ह दंभ हरषाइ॥१७॥

चौपाई

मख की सौंज अनेक मंगाई।
विविधि रंग पंकज समुदाई॥
बसनन के मडफ बहु छाए।
पुनि कुस सुनद समूह मगाए॥
अग्निहोत्र तहं अगनित कीन्हें।
आहुति पर आहुति बहु दीन्हें॥
प्रगट्यो तिन ते धूम अपारा।
व्यापि गयो सब विस्व मझारा॥
श्री जुत मैं वहु पुंड लगाये।
तन-तन प्रति जेनहिं श्रुति गाये॥
चित्रकार जिमि चित्रन माहीं।
रचना प्रगट करत सक नाहीं॥
पहिरी दर्भ मुद्रिका सु भूरी।
समिध अनेक लीन्ह अति रूरो॥
निज सरूप किमि करौं बखाना।
मनो दंभ तन धर्यो निदाना॥

दोहा

निज इच्छा सन सुनौ प्रभु, दुर्वासा तेहि काल।
आयो सरि तट बिदित जग, जिन कर क्रोध कराल॥१८॥

चौपाई

मोहि दंभ सजुत तिन देखा।
धरे मौन अभिमान विसेखा॥
पुनि मैं अर्घपाद्य नहि कीन्हा।
उठि क नहिं कछु स्वागत कीन्हा॥
सुनौ नाथ मैं दंभ भुलाना।
मुनि तप तेज न मन अनुमाना॥
दुर्वासा तब हृदं मझारा।
निरखि माहि इमि, कोप अपारा॥
पाय पवं जिमि जल निधि नीरा।
बाढ़ै विपुल सुनौ रघुवीरा॥
दीन्हेउ तीव्र स्राप मोहि पाहीं।
दभो गुनि सब विधि मन माहीं॥
जो सरजू तट बंठि बनाई।
कीन्हा दभ कुमति अधिकाई॥
धरा मौन पुनि मो कह देखी।
तेहि ते पसु तन होहु विसेखी॥

दोहा

रे तापस लघु पोच मति, श्रुति मत करं प्रहार।
ताते निस्चय होहु खल, पसु सरीर ससार॥१६॥

चौपाई

प्रभु मै सुनि यह स्राप कराला।
भयो परम दुख बस तेहि काला॥
परेउ तुरत मुनि चरन मझारी।
त्यागि मौन तब गिरा उचारी॥
हे मुनिवर तुम परम कृपाला।
करौ कृपा अब निरखि बिहाला॥

तब बोले मुनीस के क्रोधा।
लागे करन कृपा जुत बोधा॥
राज - राज श्री राम उदारा।
ते करिहै मख अवध मझारा॥
जग्य बाजि ह्वैहौ तिन केरे।
भ्रमिहौ देस ग्राम बहुतेरे॥
पुनि पाछे रघुवीर उदारा।
निज कर परसैं गात तुम्हारा॥
तब तुम ह्वैहौ मुक्त निदाना।
लहिहौ परम बिसद अस्थाना॥

दोहा

अति दुर्लभ जे सबन कहं, फिरहि न जीव बहोरि।
दिव्य देह धरि जाव तुम, सत्य बचन यह मोरि॥२०॥

चौपाई

मुनि के स्राप विवस रघुराई।
तब मख तुरग भयौ मै आई॥
अब तुम्हार करि चरन प्रभाऊ।
सुनौ कृपानिधि कोसल राऊ॥
गावं परम धर्म श्रुति जोई।
आयसु दहु लहौं मैं सोई॥
जहाँ न सोक मोह भ्रम नाना।
जरा न मृत्यु न काल निदाना॥
पुनि प्रभु जन्म न कर प्रभु सोई।
अमर नाग नर सकैं न जोई॥
तुम्हरी कृपा जाव मैं तहंवाँ।
परमानंद अखंडित जहंवाँ॥

अस कहि सो सुर हिय हरषाई ।
कीन्ही परिकरमा मुनिराई ॥
पुनि वदे पद - कंज सोहाये ।
विनं सहित बर बचन सुनाये ॥

दोहा

बिबिधि रतन बिरचित सुखद, चढ़ि बिमान हरषाइ ।
अच्युत धामहि गयौ सो, राखि हृदं रघुराइ ॥२१॥

चौपाई

सुनत तासु मख वचन रसाला ।
बिस्मित भये सकल तेहि काला ॥
पुनि लहि परम मुक्ति हय केरी ।
प्रभु महिमा पुनि गुनी वहोरी ॥
सुनौ मुनीस महा मति धामा ।
दंभ सहित सुमिरे तेहि वामा ॥
तापर परम मुक्त सो भयेऊ ।
महा विषम भवरुज नसि गयेऊ ॥
जे सप्रेम भजि कपट बिहाई ।
तिनकी गति किमि कहौं बुझाई ॥
कंसेउं भर्जाहि राम पद कोऊ ।
सुर दुलंभ गति पावं सोऊ ॥
यह चरित्र लखि सुर समुदाई ।
मागेउ आपुहि मुक्ति बनाई ॥
कहैं परस्पर निरखौ भाई ।
परसि राम कर मख हय राई ॥

दोहा

ह्वं सदेह सुरजान चढ़ि, प्रभु पद पंकज देखि ।
नित्य धाम आनद जुत, कीन्हो गमन विसेखि ॥२२॥

चौपाई

हमहूँ भये धन्यतम भाई।
निज नैनन देखे रघुराई॥
वात्सायन रघुपति तेहि काला।
लखि सदेह है मुक्त रसाला॥
मै कस करौं मुनीस उदारा।
अस्व सदेह गयो येहि बारा॥
सकल देव अब कौन प्रकारा।
होइ त्रिप्त मम जग्य मझारा॥
पुनि मख पूरन जेहि विधि होई।
श्रुति सवत लं बरनौं सोई॥
सुनि अस मुनि सत्तम मति धीरा।
बोले सोधि बचन गंभीरा॥

छंद

बरनौं विचारि प्रमान श्रुति मति, सोधि तुमहि बुझाइ कं।
कपूर भूरि सुपात्र भरि - भरि, लेहु मुदित मंगाइ कं॥
मम वचन करि सुर सकल हव्य, समेत ता कहं पाइ कै।
ह्व हैं प्रसन्न बनाइ सकल, प्रकार हृदै अघाइ कै॥

दोहा

अस कहि मुनि करपूर बहु, सुर हित लीन्ह मंगाइ।
तब वसिष्ट कीन्हेउ तहाँ, आवाहन हरषाइ॥

सोरठा

सकल देव तेहि काल, आयो निज - निज लोक ते।
प्रमुदित हृदं बिसाल, लिये संग परिवार सब॥२३॥

इति श्री पद्म पुराणे, पाताल खंडे, सेष वात्सायन संवादे,
मधुसूदन दास कृते, यज्ञ समाप्त नाम सप्तषष्ठितमोऽध्याय: ॥६७॥

श्री रामाश्वमेध

दोहा

नारायण श्री सहित मुनि, प्रथमै जग्य मझार।
पाइ हव्य वर मिष्ठ अति, तोषे सकल प्रकार॥

चौपाई

पुनि चतुरानन शिव सुरपाला।
बरुन कुबेर आदि तेहि काला॥
अपर सकल सुर तियन समेतू।
ठाढ़े मुदित भाग के हेतू॥
तब निज कर वसिष्ठ मुनिराई।
दीन्हा सबहिं हव्य हरपाई॥
परम मिष्ठ निज हाथ बनावा।
मंत्र सहित सब भाँति सोहावा॥
प्रभु के निरखत जग्य मझारा।
पावा सबन छुधित अनुहारा॥
भये तृप्त ते सकल प्रकारा।
तोषे सकल विप्र तेहि बारा॥

दोहा

सुर समूह तब मुदित ह्वै, गमने निज - निज धाम।
गुरु प्रेरित मख काज सब, पुनि कीन्हें श्री राम॥१॥

चौपाई

बहुरि उदार राम तेहि काला।
चहुँ दिसि करि निज राज बिसाला॥

होतादिक पुनि नायक जेते।
दीन्ह बाँटि प्रभु प्रीति समेते॥
ह्वै प्रसन्न ते सकल मुनीसा।
कह जं जंति कोसलाधीसा॥
तब वसिष्ट अतिसं हरषाई।
पूरन आहुनि कीन्ह वनाई॥
पुनि बोले मुनि अवलन पाहीं।
प्रमुदित ह्वै येहि औसर माही॥
करौ महोत्सव सकल प्रकारा।
तुमहि जोग्य मख अन मझारा॥
अस सुर तिय समूह हरषाई।
कीन्हें मंगल चारु वनाई॥
किमि वरनौ तिनकी छवि रूरी।
रवि समूह लघु लागै भूरी॥

दोहा

अगराग बहु भाँति करि, कीन्हें रघुपति केर।
अपर नेग सब कीन्ह पुनि, मगन महा छवि हेर॥२॥

चौपाई

मार अनेक राम छवि देखी।
सब प्रकार लघु लगे विसेखी॥
जज्ञ अंत मज्जन के हेतू।
बोले श्री वसिष्ठ मुनि केतू॥
सुनौ राम येहि औसर माही।
चलौ मुदित मन सरजू पाहीं॥
जग्य अंत अस्नान अनूपा।
करौ सहित सिय कोसल भूपा॥

प्रभु अस सुनि जानकी समेता।
चले मुदित सरि मज्जन हेता॥
कोटिन भूप चले चहुँ ओरा।
जान रहित हिय हृष न थोरा॥
कछुक अग्र चलि श्री रघुराई।
सरित सिरोमनि लखी सुहाई॥
गुंजत वहु विहंग तेहि तीरा।
भ्राजत विविध वृच्छ मुनि धीरा॥

छंद

भ्राजत विविधि विधि वृक्ष सुनि मुनि, धोर नहि बरनत बनैं।
विश्रांत परम विसाल सोहैं, रचित हाटक मनि घनैं॥
छवि धाम राम उदार पथ, मझार अति सोभित भये।
श्री सहित सब नृप मध्य सुंदर, स्याम तन आनंद छये॥
उपमा न दूसरि कोइ, सब जग जोइ निस्चं भाषि हूँ।
पुनि कहौ कछु संकोच संजुत, हृद अति अभिलाष हूँ॥
जिमि चद आनद कद, तारा सहित उडगन के विषै।
सोहे सरद निसि मध्य तिमि, कवि सकुच उर ग्रथन लिखं॥

दोहा

तेहि औसर सुर नाग नर, अपर सकल मुनिराई।
रघुपति मज्जन श्रवन सुनि, आये आतुर धाई॥३॥

चौपाई

सीतापति - मुख पंकज देखी।
भये अचंचल प्रीति विसेखी॥
निरखं छवि प्रमुदित सब प्रानी।
थकित भये नहिं जात बखानी॥

सब के निज - निज हृदै मझारा।
राम दरस लालसा अपारा॥
महाराज जानकी समेतू।
जात पथ सरि मज्जन हेतू॥
आगे नृत्य करत नट भूरी।
प्रगट करत विद्या अति रूरी॥
पुनि गावत गंधव प्रवीना।
परम विमल वर सुजस नवीना॥
नटिनी पुर छवि खानि सुवेषी।
कर नृत्य सब भाँति विसेषी॥
प्रभु मन छोभ करै जेहि काला।
करत गान कल कंठ रसाला॥

दोहा

सहस धार घट पानि धरि, तिय समूह हरपाई।
प्रभु सिर सीचहि पथ बिच, तेहि औसर मुनि राई॥४॥

चौपाई

बिसद हद कुमकुम समुदाई।
केसरादि सब भाँति सोहाई॥
निज - निज कर भरि - भरि ते बाला।
लेपै रघुपति गात रसाला॥
करैं मनोहर मंगल गाना।
हृदैं परम आनंद अधिकाना॥
सजे विभूषन सकल सरीरा।
नित नूतन अमोल वर चीरा॥
निज सरोज कर रघुपति गाता।
परसहिं मिस करि हिय हरपाता॥

हेम रचित कुंडल छवि रासी।
प्रभु के स्रवनन मध्य प्रकासी॥
परसति नाहिं वाम ते काला।
भई थकित लखि रूप रसाला॥
जुरे तहाँ नर नारि अपारा।
रुकेउ पथ नहिं परै सभारा॥

छंद

येहि भाँति कृपाला, कोसलपाला, आये सरजू तीरा।
पावन जल देखा, सुखद विसेखा, जाहि भजै मुनिधीरा॥
परसत यक बारा, कलुप अपारा, भजै निमिप मझारा।
तब सीय समेतू, रघुकुल केतू, प्रबिसे परम सु नीरा॥
कुल गुरु हरपाई, मुनि समुदाई, सहित प्रथम जल जाई।
श्रुति मंत्र सोहाई सब मुद छाई, पठत विसद धुन छाई॥
पुनि नृप गन वृन्दा, परम अनंदा, कीन्हों सरित प्रबेसा।
नव पंकज लोचन, जन भ मोचन, मज्जत श्री अवधेसा॥
प्रभु पद रज पाई, सुनु मुनिराई, जल भा परम पुनीता।
तब सकल नृपाला, मुदित बिसाला, भरि जल जत्र सप्रीता॥
रघुपति सिर डारं, रूप निहारैं, स्रवत विलोचन बारी।
आनद अधिकाने, परम लुभाने, निज - निज सुरति बिसारी॥

दोहा

पावन सरित प्रवाह बिच, सिया सहित रघुराई।
क्रीड़ा करि बहु काल लगि, पुनि निकसे हरषाई॥६॥

चौपाई

दिव्य दुकूल सजे तेहि काला।
सिय समेत श्री कौसलपाला॥
सीस किरीट अनप अपारा।
जगमगात सोभा आगारा॥

कुंडल स्रवन मध्य अति सोहै।
सुख उपमा कवि कितहु न जोहै॥
अति अनूप केयूर विराज।
उर भूपन, कर कंकन भ्राजं॥
अपर सकल भूषन मुनिराई।
अंग - अग प्रति सजे बनाई॥
महा महीप मुकुट मनि रामा।
सोहत तेहि औसर जुन वामा॥
कोटि - कोटि मनमथ छवि भारी।
धरी कृपा निधि गात मझारी॥
कर जोरे सब भूपति वृदा।
अस्तुति करत सहित अनंदा॥

दोहा

अखिल लोक की सुभगता, धारन कीन्ह सरीर।
तेहि औसर निरखत भये, किमि बरनौ मुनि धीर॥७॥

चौपाई

श्री वसिष्ट आयसु अनुसारा।
प्रमुदित मन रघुपति तेहि वारा॥
जग्य खंभ सरजू सरि तीरा।
गाड़ेउ जीति कुटिल नृप बीरा॥
येहि प्रकार जानकी समेता।
कीन्हि तीनि मख रघुकुल केना॥
तिहुँ पुर कीन्ह सुजस बिस्तारा।
परम विमल अति सुखद अपारा॥
पुनि जानकी सहित रघुराई।
गे निज भवन संग सब भाई॥

सिघासन मै मुदित विराज।
छवि विलोकि मनमथ रति लाजे॥
भरत लखन रिपुहन कपिराई।
अगद हनुमतादि हरषाई॥
चामर छत्र बिजन धनु बाना।
चर्म सक्ति अति आयुध नाना॥
धरे सकल निज-निज अधिकारू।
भरि लोचन छवि निरख चारू॥
भूप बृंद सन्मुख कर जोरे।
पद पाथोज सप्रेम निहोरे॥
मुनि पडित वदो जन भूरी।
गान करत नित कीरति रूरी॥
जनिनन जन्म धन्य करि माना।
पुर जन सुख नहि जात बखाना॥

दोहा

यही ध्यान सिय रमन को, सिय जुत राखें जोई।
सुनु मुनीस ताके हिये, राम भक्ति दृढ होई॥८॥

चौपाई

श्री रघुबोर चरित सुखदाई।
मै बरनौ तुम सुनु हरषाई॥
जे नर सुन गुनै अरु गाव।
श्री रघुवीर ध्यान ते पावें॥
स्रवन विधान तात तुम पाही।
बरनन करौ धरौ मन माही॥
कातिक माघ चंत्र बरु मासा।
प्रथमै नवमी सहित हुलासा॥

बाजि मेध कै कथा सुहाई।
जे जन स्रवन करैं मुनिराई॥
ते अति सकल सिद्ध जग पावें।
पुनि निजु कलुष समूह नसावें॥
यह श्री रघुपति कथा अनूपा।
करि विस्तारि सुमति अनुरूपा॥

दोहा

तुम सौं बरनी सकल हम, सुनौ महा मुनि धीर।
श्रवन करत सादर अवसि, नहिं व्यापहि भवभीर॥९॥

चौपाई

कवन चरित पुनि पूछौ मोही।
कहौ बुझाइ तात अब तोही॥
जो यह स्रवन करै हरषाई।
सो पावें हरि भक्ति सोहाई॥
रघुपति सनमुख होइ बनाई।
नसहिं ब्रह्म हत्या समुदाई॥
जे अपुत्र ससार मझारा।
सुनौ कथा प्रमुदित यक बारा॥
ते सुंदर सुत पावहि ताता।
सीलवंत सुंदर सुखदाता॥
पुनि निर्धनी होइ धनवाना।
रोगवंत तजि रोग निदाना॥
बहुरि होइ बंधन बिच जोई।
स्रवन करत अपि छूटें सोई॥

दोहा

जिनके मन सुत कामना, ते नर धरि विस्वास।
तिय संजुत नव दिन विषे, सुनौ समेत हुलास॥१०॥

चौपाई

ो सुत पावहि राम प्रभाऊ।
परम श्रेष्ठ बरनौं सति भाऊ॥
जिनकी कथा सुनत जग माहीं।
सुपच लहै पर गति सक नाहीं॥
पुनि जे श्रवन करत मुनिराई।
विप्र वैस्य छत्री समुदाई॥
राम भक्ति विस्वास बढ़ाई।
तिनकी गति को कहै बुझाई॥
लौकिक काज सिंधु सब केरे।
कौन आचरज विस्व घनेरे॥
रामै सुमिरि महा अघरासी।
भये तुरत परधाम निवासी॥
केवट भील किरात समूहा।
गीध रीछ पुनि मरकट जूहा॥
खग मृग निसिचर नाग तुरंगा।
अपर जीव सब थावर जंगा॥

दोहा

धन्य जीव ते जगत मैं, जे सुमिरैं रघुवीर।
त पाव पर धाम अपि त्यागि विषम भव भीर॥११॥

चौपाई

ब्रह्म बधादि महा अघ जेते।
जानहु सघन विपिन समेते॥
प्रभु मख बरन-वरन मुनिराई।
दावा नल इव गुनहु बनाई॥

जो यह कथा सुनावै ताता।
गुरु सम तेहि पूजै हरषाता॥
दुग्ध धेनु पुनि पूजै ताही।
ममता मान मोह उर दाही॥
असन विभूषन बसन सुहाई।
देहि ताहि तिय जुत मन भाई॥
पुनि प्रतिमा द्वय रचै अनपा।
जनक सुता अरु कोसल भूपा॥
केवल कंचन मय मुनिराई।
दीजै वक्तहि हिय हरषाई॥
येहि प्रकार पूजा बिस्तारी।
जथासक्ति पुनि तोषनकारी॥

दोहा

देव पितर तिनके सदा, कर वैकुंठ निवास।
रामधाम बस अंत अपि, सोऊ सहित हुलास॥१२॥

चौपाई

राम कथा बूझी मुनि मोहीं।
सो समस्त बरनी हम तोहीं॥
बूझौ कवन चरित तुम ताता।
बरनौ तव आगे सुख - दाता॥
स्रवन करत यह कथा रसाला।
नास ब्रह्म बधादिक जाला॥
सकल देव दुर्लभ पद जोई।
अवसि अंत नर पावै सोई॥
गोघाती कृत - घातिक जोई।
सुरापान रत संतत तेई॥

गुरु सज्या गमनी मति मंदा।
अपर अनेक महा अघ कंदा ।।
स्रवन करत यह भूपति गाथा।
होई परम पावन मुनि नाथा ।।
सुनि अस श्री अनत मुख बानी।
हरषे वात्मायन मुनि ग्यानी ।।

दोहा

जोरि उभै कर मुदित मन, पुनि निज सीस नवाय।
मानि धन्यतम आपु कहुं, कीन्ह विनै सति भाई ।।

चोपाई

तव प्रसाद त अहि कुल केतू।
सुनी कथा विस्तार समेतू ।।
करौं विनै प्रभु कौन प्रकारा।
सकल भाँति मैं दास तुम्हारा ।।
दुर्लभ राम चरित मोहि दीन्हा।
सकल प्रकार कृतारथ कीन्हा ।।
येहि विधि कहि बहु भाँति मुनीसा।
परम प्रीति जुत नायो सीसा ।।
सुनौ सूत यह चरित अनूपा।
तुम्हें कहौं मैं मति अनुरूपा ।।
श्री अनंत मुनिवर संबादा।
अति पावन पुनि समन विषादा ।।
अब तुम कह पूछा हरषाई।
तात कहौं सोइ कथा बुझाई ।।
यह सुनि सूत चरित सिरु नावा।
परमानंद हृदै मैं छावा ।।

छंद

उर छाव परमानद पुनि पुनि, बार बहु विनती करो।
प्रभु कीन्ह कृपा अपार मो पर, राम कोरति बिस्तरी ॥
अब प्रनतपाल उदार करुना सिंधु मोहि जन जानियौ।
मै भयो धन्य बनाइ सकल, प्रकार मन अनुमानियौ ॥

दोहा

पुलकि गात येहि भाँति वदि, कीन्हों चरन प्रनाम।
हृषं व्यास उदार तब, परम कृपा के धाम ॥

सोरठा

छमहु संत समुदाइ, कीन्हि ढिठाई विपुल मैं।
कीजै कृपा बनाइ, अबुध जानि निज दास लखि ॥

इति श्री पद्म पुराणे, पाताल षडे, सेष वात्सायन संवादे, मधुसूदन दास कृते, श्री रामाश्वमेधियौ नामाष्ठ षष्ठिननमोऽध्याय: ॥६८॥

॥ शुभवम्तु ॥

तभा भरतसत्रुहनरदनकरितेहिमारगपगुधारि॥सोरहसहस
मातुभमुचलिकरिअवधउजारि॥चौ॥चारिदंडभीतरनरना
रि॥पहुचेजहरघुनाथनिहारि॥मिलेजाइसवप्रभुपरिवारा॥रह
मलोकप्रथमहिपगुधारा॥अर्धदंडनवकीन्हकृपाला॥रहे
चरनमुनिमलिनविहाला॥कहप्रभुसुनहुसकलमहतारि॥तुम
सवहहुलोकअधिकारि॥अवमेलेवकुलसअवतारा॥जनि
नरअरिहोसकलतुमारा॥येहिविधिमातनवासदेवाई॥चले
संगशियतीनिउभाई॥भरतहिजाइदीन्हतपलोकहारि॥हरक
राजकरहुगतसोकु॥सत्रुहनहिमहलोकवताइ॥आपुगयेव
कुंठसिधाई॥दीन्हस्वर्गनरजोजेहिलायक॥गेवयकुंठसि
यारघुनायक॥छंद॥वयकुंठगेशियरामदेषनआइकैतविव
तीघनी॥कोटिनविलापकलापचिंताकरतजेपुरकेधनी॥प
योपरमविस्रामशोभरघुनाथकीरतिनितनई॥यहज्ञानितु
लसीदासत्रासविहाइमनसंसयगई॥दोहा॥येहिविधिशि
यरघुनाथगेस्वर्गलोकनिजधाम॥गिरिजाप्रभुलीलाअ
मितकल्पभेदकृतराम॥अगमसुगमसमुझतसुनतनिज
निजमतिअनुसार॥वरनतवेदपुराणसवकोउलहनपावतपार॰
॥इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेविमं
लवयरागसंपादिनोनामसुगीरोहिनिसंपूरनंसमाप्तम॰
जेष्ठशुले द्वादस्यां भोमवासरे शुभंभूयात संम्वत १८[illegible]

परिशिष्ट 'क'

पाठानुसन्धान

अध्याय १/चौपाई रावनादि—रावनारि ।
अध्याय १/चौपाई ज्ञान मध्य प्रभु हृदय—ज्ञान मध्य तव हृदय ।
अध्याय १/चौपाई उर छावा—उर आवा ।
अध्याय १/चौपाई इन्द्रादिक—इंदु आदि ।
अध्याय १/चौपाई मदिर देखे—मरदित देखे ।
अध्याय १/चौपाई मनु दीना—मन लीना ।
अध्याय १/पुष्पिका रघुनाथस्य भरत बार दर्शनोनाम प्रथमोऽध्याय: ।१।
—नंदी ग्राम आगमनोनाम प्रथमोध्याय: ।१।

अध्याय २/चौपाई मनु छावा—मन लावा ।
अध्याय २/चौपाई पुत्र इक—पुत्र इव ।
अध्याय २/चौपाई निर्भर प्रेम—निर्मल प्रेम ।
अध्याय २/चौपाई आमु—आजु ।
अध्याय २/चौपाई फोर—प्रेर ।
अध्याय २/चौपाई पूजन योग—पूजे मान ।
अध्याय २/चौपाई अभिमानी—अनुमानी ।
अध्याय २/चौपाई अधम—अवध ।

अध्याय ३/दोहा हृष्ट पुष्ट नर—रुष्ट पुष्ट नर ।
अध्याय ३/छंद सहित परिजन मन गुने—सहित पुरजन अनगने ।
अध्याय ३/सोरठा रचना अपन—रचना अपर ।

अध्याय ४/चौपाई तीन सरीरह दय—छीन सरीर हृदय ।
अध्याय ४/चौपाई गृजनन वाता—बीजन वात. ।
अध्याय ४/चौपाई पठावन—पढावन ।
अध्याय ४/दोहा बुड़त—तुरत ।
अध्याय ४/दोहा वचन सिय—बचन प्रिय ।
अध्याय ४/चौपाई दिन मन जानि—दिन अनुमानि ।

अध्याय ४/चौपाई   हित आनि—हित जानी ।
अध्याय ४/चौपाई   जड़ जंगम—जिव जंगम ।

अध्याय ५/चौपाई   बध गुनि—बध मुनि ।
अध्याय ५/छंद   दानव वस—दानव वेम ।
अध्याय ५/दोहा   अजया विपई स्वर विभू—अज अव्यय ईश्वर विभव ।
अध्याय ५/दोहा   गुन गनपति रघुनाथ—गुनगार रघुनाथ ।
अध्याय ५/चौपाई   रिपु रावन मारा—रिपु निकर सघारा ।
अध्याय ५/चौपाई   सरवर नलिन—सरवर विमल ।
अध्याय ५/चौपाई   सरित जग—सरित जहँ ।
अध्याय ५/चौपाई   जीवन प्रद—जीवन पर ।

अध्याय ६/चौपाई   कवन जाति—कवन ज्ञाति ।
अध्याय ६/चौपाई   विस्वश्रवा—द्विज विश्रवा ।
अध्याय ६/चौपाई   नृपता गद—नृपता गत ।
अध्याय ६/चौपाई   सुनु ताता—सुनु माता ।
अध्याय ६/चौपाई   पितु धाता—पितु माता ।
अध्याय ६/चौपाई   तप मति थोर—तप अति घोर ।
अध्याय ६/पुष्पिका   रावणोत्पत्ति वर्णनोनाम षष्ठमोऽध्याय: ।६।
—रावन तप वर्णनोनाम षष्ठमोऽध्याय: ।४८।

अध्याय ७/चौपाई   तपी तिन्ह हू—प्रीति तिन्ह हूँ ।
अध्याय ७/चौपाई   बरन भिरेउ—बरबस भिरेउ ।
अध्याय ७/चौपाई   बुद्धिमान धर्मज्ञ—बुद्धिमान सर्वज्ञ ।
अध्याय ७/चौपाई   व्याकुल माता—व्याकुल ताता ।
अध्याय ७/चौपाई   नागन रूप कुटिल—नागन कुटिल रूप ।
अध्याय ७/चौपाई   तिय तीन्ही—तिय तीनी ।
अध्याय ७/चौपाई   पीन दुर्मुख—पीन दुमर्द ।५१
अध्याय ७/चौपाई   वेगिहि उद्धरिहहु—वेगि संधारव ।
अध्याय ७/चौपाई   ज्ञाति ब्रह्म—ब्रह्म धानी ।

अध्याय ८/चौपाई   कहन हेत—कवन हेत ।
अध्याय ८/चौपाई   दुष्ट दलन—दुःख दलन ।
अध्याय ८/चौपाई   अहहिन दान—अहरन दान ।

अध्याय ९/दोहा रामवदार—राम उदार ।
अध्याय ९/चौपाई सैन सँग रहि जहँ जाही—जहँ हय जाय सैन तहँ जाही
अध्याय ९/चौपाई विस्मय मन—विस्मय तन ।
अध्याय ९/चौपाई धेनु चुमावत—धेनु चरावत ।
अध्याय ९/चौपाई जद्दपि जानहि—जद्दपि महा नहि ।

अध्याय १०/चौपाई बड धर्म—द्विज धर्म ।
अध्याय १०/दोहा मख आचरन—मख आचरज ।
अध्याय १०/चौपाई विप्र धेनु वैस्नव—विप्र धेनु वैभव ।
अध्याय १०/चौपाई लोक पति विस्नु हरि—लोक पति ब्रह्म हरि ।

अध्याय ११/चौपाई हरिहर अज—हरिहर जग ।
अध्याय ११/चौपाई गरुड़ बान—ब्रह्म बान ।

अध्याय १२/चौपाई मोहि उर्मिला—मोहि माण्डवी ।
अध्याय १२/चौपाई ठानो तप—ठाढो तप ।
अध्याय १२/चौपाई सूखे परन—सूख बान ।
अध्याय १२/चौपाई गने न एक—लगै न यक ।

अध्याय १३/चौपाई नित तन - निज तन ।
अध्याय १३/चौपाई घमासान युत—विद्यमान जुत ।
अध्याय १३/चौपाई राकेता—सुनिकेता ।
अध्याय १३/चौपाई समुद हरपाई—गुभ हरपाई ।
अध्याय १४/चौपाई तहँ सोहे—तहँ जोहे ।
अध्याय १४/चौपाई भृगु सदेश— भृगु के सदन ।
अध्याय १४/चौपाई यह वृ ा—यह वन्हि ।

अध्याय १५/चौपाई सरसत सवत—दरसत सवत ।
अध्याय १५/चौपाई विद्याप्रेम—विद्याधरी ।
अध्याय १५/चौपाई नदन वृदारक—नंदन दारुक ।

अध्याय १६/चौपाई लय लीन्हा— लव लीन्हा ।
अध्याय १६/चौपाई कर अपारा—न रि अपचारा ।
अध्याय १६/चौपाई यज्ञ कृपा कर—यज्ञ क्रिया कर ।
अध्याय १६/चौपाई नृपति ध्यान—तप निधान ।
अध्याय १६/सोरठा ब्रह्मन्य सुर—ब्रह्मन्यवर ।

अध्याय १७/चौपाई सयल—सुथल ।
अध्याय १७/चौपाई नील चपल—नीलाचल ।
अध्याय १७/चौपाई निर्जन गृह—सो निज गृह ।
अध्याय १७/चौपाई ते गर्दभ सम तूल—ते न रहैगो वृषभ सम ।

अध्याय १८/चौपाई नील चरण—नीलाचल ।
अध्याय १८/चौपाई विधि निर्मयेउ—विधि लहेउ ।
अध्याय १८/चौपाई प्रसाद मोहि—प्रसाद महि ।

अध्याय १९/दोहा सब पाप हय—सब पाप नृप ।
अध्याय १९/दोहा अपर नृप—अग्र नृप ।

अध्याय २०/चौपाई सुनि कोविद—मुनि कोविद ।
अध्याय २०/चौपाई कुठार विधि नाना—अरु कशा अमाना ।
अध्याय २०/चौपाई मग माही—वन माही ।

अध्याय २१/दोहा सरिवर—सरिता ।
अध्याय २१/चौपाई चंदनादि करि पूजि बनाई—दिये विप्र कहं सीस नवाई ।
अध्याय २१/चौपाई बहुरि दीन्ह अंधन कहँ दाना ।
यथा योग दीन्हे विधि नाना ।।
औरहु अमित भाँति के दाना ।
देत भयो भूपनि अनि स्याना ।।
अध्याय २१/चौपाई श्री पुरुपोत्तम दरसन हेता, नेत भूप पुनि सैन समेता ।
कहत सुनत इतिहास पुराना, करत जात प्रभु के गुन गाना ।
अध्याय २१/चौपाई क्रम मो हरपाई—सुनहु मुनि राई ।
अध्याय २१/चौपाई विस्तारि कै—विसारि कै ।
अध्याय २१/चौपाई त्रं दड—मँ दड ।

अध्याय २२/चौपाई विस्व करन—विस्वक सेन ।
अध्याय २२/चौपाई भवत अनुरागा—भगवत अनुरागा ।
अध्याय २२/चौपाई सकल आम—सकल त्रास ।
अध्याय २२/चौपाई तवै प्रभावते—तव प्रभावतः ।
अध्याय २२/छंद अय विभो—त्रयं विभो ।
अध्याय २२/छंद जगत अयं—जगत त्रयं ।

अध्याय २३/चौपाई सर नीनि—सत नीनि ।

अध्याय २४/चौपाई पुनि अमरपा—पुनि अग्न्य ।

अध्याय २५/चौपाई मर्दि दसन सों—मधि देसन ।
अध्याय २५/पुष्पिका मुबाहु सैन्य ममागमनोनाम—मुबाहु सैन्य क्रौच व्यूह निमाण नाम ।

अध्याय २६/दोहा गदा रहित लखि आप की, भूप वधु खिसिआइ ।
बाहु युद्ध नव कोपि उग, भिरयो महा भट जाइ ।।
पुनि लवकेउ भूपति विपे, महा क्रोध उर धारि ।
अति लाघव उठि जनक सुत, पकरी बाहु प्रचारि ।।

अध्याय २७/चौपाई बहु दापा—उर दापा ।

अध्याय २८/चौपाई गका भै उर माही व्यापेउ उर माही ।
अध्याय २८/दोहा रण कर भेंटहु आन—एक भट आन ।
अध्याय २८/चौपाई डर महिन—गुरु सहित ।

अध्याय २९/चौपाई सकल पदारथ नस्वर—मनगा वचन कर्म हित जानी ।
अध्याय २९/चौपाई अलि भूल—अलि मूल ।
अध्याय २९/चौपाई काग रूप—काम रूप ।
अध्याय २९/चौपाई क्रिया नृप—क्रिया सब ।
अध्याय २९/चौपाई पूजहि मृपा न--पूजहि मृषा न ।

अध्याय ३०/दोहा भ्रम कंद—भ्रम फद ।
अध्याय ३०/चौपाई विपम विरागी—विषय विरागी ।
अध्याय ३०/चौपाई विचित्र बखाना—विदित बखाना ।
अध्याय ३०/चौपाई जोग द्वार – जोग छार ।
अध्याय ३०/चौपाई मारुत मह— मारुत हम ।
अध्याय ३०/चौपाई सुनि बानी—सन बानो ।
अध्याय ३०/चौपाई सनु मुनि—सुनु मुनि ।

अध्याय ३१/चौपाई गिरा सोइ—गिरा सुनि
अध्याय ३१ चौपाई बुद्धि निदाना—बुद्धि निधाना ।

अध्याय ३२/चौपाई करहि रिपु इव—करहि न पुर वसि ।
अध्याय ३२/चौपाई महत अभागा – महत भाग ।
अध्याय ३२/चौपाई राम बधू—राम वधू ।

अध्याय ३३/चौपाई नाम तम चारी—नाम तम भारी।

अध्याय ३४/छंद असुर लर्‌यौ—सुभट लर्‌यौ।
अध्याय ३४/दोहा तब खंड—सत खंड।

अध्याय ३५/चौपाई सरित सरोवर—सहित सरोवर।
अध्याय ३५/चौपाई केर प्रभाहू—केर प्रबाहू।
अध्याय ३५/चौपाई प्रकास दसन—प्रकास दरस।
अध्याय ३५/चौपाई कुमति निपाता—कुमति निधाना।
अध्याय ३५/दोहा ब्रह्मादिक—विस्णादिक।
अध्याय ३५/चौपाई अब परम—सुनु अपवर्ग।
अध्याय ३५/दोहा अस विचारि बिस्वास धरि, संसय सोक बिहाइ।
सारद सुनहु जपहु नित, सेवहु श्री रघुराइ॥
=किहि विधि सुमिरहु राम पद, सेवहु कवन प्रकार।
कहहु नाथ विस्तार जुत, होहि वेगि भव पार॥

अध्याय ३६/चौपाई नृप दमता—नृप मदता।
अध्याय ३६/चौपाई सतयें दिवस—नवयें दिवस।
अध्याय ३६/चौपाई दिखरावन कपि—दिखरावा कपि।
अध्याय ३६/चौपाई दोपहु हम—देखहु हम।

अध्याय ३७/चौपाई अमित डरि प्रभु जनहिं समेता—
आयेउ रिपु भंजनहिं सहेता।
अध्याय ३७/चौपाई दृग गंज—दृग भंज।
अध्याय ३७/चौपाई दोप पावस—दोष पाप।
अध्याय ३७/छंद मम सुमिरन किय—मम स्वागत किय।

अध्याय ३८/चौपाई बली के प्रेरे—बली के घेर।
अध्याय ३८/चौपाई वर्ष भनि—वर्प भरि।

अध्याय ३९/चौपाई गंगा इमि तन दुति—गंगवत तन दुति।
अध्याय ३९/दोहा जनक निकेता—कनक निकेत।
अध्याय ३९/चौपाई समर भूमि दारुन वपु धारी—
सत्य सुनहु उर गिरा हमारी।

अध्याय ४०/चौपाई	राम वीर—नाम वीर ।
अध्याय ४०/चौपाई	इहि विपुल—इहि विपिन ।
अध्याय ४०/चौपाई	पद र जूथा—पद चर जूथा ।
अध्याय ४०/चौपाई	वि ा पर—विद्याधर ।
अध्याय ४०/चौपाई	निज भाला—निज माला ।
अध्याय ४१/चौपाई	वर इषु—खर इषु ।
अध्याय ४१/छद	दैत्य ता पर—दैत्य तारक ।
अध्याय ४२/चौपाई	वसे जामु उर राम उदारा—थावर जगम जीव अपारा ।
अध्याय ४२/चौपाई	होइ समर अति घोर अपारा/को कवि वरनि तासु सर मारा—तिहि ते विगत त्रास मे तात/नृपहिं जीति हो केतिक बाता ।
अध्याय ४२/दोहा	इत आवत लखि मभु कहं, राम अनुज बल धाम । पद तल जानन प्रेरि रथ, चले करन सग्राग । पर्म बली बल भिन्न भट, वीर सिह सुन सोइ । सुमद भूप उरि कोप उर, भिरउ महा बल दोइ ।
अध्याय ४३/चौपाई	रेनु प्रवन्ध—रे नृप व ु ।
अध्याय ४३/चौपाई	मनहु जलधि—मनहु जलह ।
अध्याय ४३/चौपाई	भृ गी मनि—भृ गी मुनि ।
अध्याय ४३/चौपाई	किकर मारा—किकर भारा ।
अध्याय ४३/चौपाई	बहुरि बुलावा—बहुरि न लावा ।
अध्याय ४३/चौपाई	पुनि गर्भेउ—पुनि गर्जेउ ।
अध्याय ४३/चौपाई	कोपि सहारी—कोपि सभारी ।
अध्याय ४४/चौपाई	मारि हरावा—बहुरि हरावा ।
अध्याय ४४/चौपाई	अति विहवल—अति विहाल ।
अध्याय ४४/चौपाई	धरि लियो—कर लियो ।
अध्याय ४४/दोहा	धावा विपुल—धावा कट ।
अध्याय ४४/चौपाई	सुनि कपि—सुनि कोपि ।
अध्याय ४५/चौपाई	साज अपारा—सान अपारा ।

अध्याय ४६/दोहा	पंकज सोच—पंकज सोत ।
अध्याय ४६/चौपाई	गिरा गभीर—गिरा गहि मोद ।
अध्याय ४६/पुष्पिका	हय पयानं नाम—हय प्राप्त वर्णनोनाम ।
अध्याय ४७/चौपाई	दच्छ वृच्छ बहु—दच्छ बहुत विधि ।
अध्याय ४७/चौपाई	मर्म न पाना—मर्म न जाना ।
अध्याय ४७/पुष्पिका	श्राप मोचनं नाम—श्राप कीर्तनं नाम ।
अध्याय ४८।चौपाई	पुनि तेते—पुनि संतत ।
अध्याय ८८/चौपाई	भाँति हति—भाँति बहु ।
अध्याय ४८/चौपाई	हरहि स्व बल—हरषि स्व बल ।
अध्याय ४८/चौपाई	फय खुंड--पूय कुंड ।
अध्याय ४८/चौपाई	लोभ दाहि—लोह दाहि ।
अध्याय ४८/चौपाई	दुंद सूल—दंद सूक ।
अध्याय ४८/चौपाई	कोहादिक—फीहा दिक ।
अध्याय ४८/चौपाई	सौह चोरि—सौज चोरि ।
अध्याय ४८/चौपाई	जनीन मगनि—जननि मगनि ।
अध्याय ४८/चौपाई	विलोकि तत्र—विलोकि वन ।
अध्याय ५०/सोरठा	बचन=ग्रहमोर=बचन गभीर ।
अध्याय ५०/दोहा	वीर मंडली बुद्धि—वीर मंडली मध्य ।
अध्याय ५०/चौपाई	रिपु दहन आस—रिपु दहन त्राम ।
अध्याय ५०/चौपाई	परम सूल—परम सूल ।
अध्याय ५०/पुष्पिका	अंगद दूत वाक्यौ नाम पंचासमोऽध्याय: ।५०। =हय ग्रहनं नाम पंचासत्तमोऽध्यायः ।५०।
अध्याय ५१/चौपाई	हरि जज्ञ—हरि यक्ष ।
अध्याय ५१/चौपाई	अस पवन—अस बचन ।
अध्याय ५१/दोहा	मधुसूदन अहिगन सरिस चले बान संग्राम । छाड़े भरत कुमार वहँ विशिख वेग के धाम ।।
अध्याय ५२/चौपाई	धोर अपारा—घोर प्रहारा ।
अध्याय ५२/चौपाई	घोर प्रचारा—घोर प्रहारा ।
अध्याय ५२/चौपाई	सर धरा—सर धाम ।
अध्याय ५२/चौपाई	रामचन्द्र हठि—रामचन्द्र पढ़ि ।

अध्याय ५३/चौपाई पुष्कल जान—पुष्पक जान ।

अध्याय ५४/दोहा मुनि समधि—मुनि समिध ।
अध्याय ५४/चौपाई लवन जिमि—लवन जिन ।

अध्याय ५५/चौपाई सबन हेत—स्रवन हेत ।

अध्याय ५५/चौपाई मख मृग—खग मृग ।
अध्याय ५५/चौपाई धर्म निधाना—धर्म निदाना ।
अध्याय ५५/चौपाई कृत भागी—हृत भागी ।
अध्याय ५५/चौपाई डाबर ताला—ढाबर ताला ।
अध्याय ५५/चौपाई तिहि बाला—तिहि काला ।
अध्याय ५५/चौपाई कबहुँ उचारा—करहुं उचारा ।
अध्याय ५५/चौपाई मर्म सारिकी—मम सा रिषी ।
अध्याय ५५/चौपाई जीति जाउ—जीति दाउ ।
अध्याय ५५/चौपाई तुव उर—तुब डर ।
अध्याय ५५/चौपाई भूप विदेह कुमारी—भूपनि देस कुमारी ।
अध्याय ५५/चौपाई पंच चारु—पंच चार ।
अध्याय ५५/पुष्पिका दूत षट चारु निदेसनं नाम पंचपंत्रासमो नामोऽध्याय: ।५५।
=षट चार निरीक्षणं नाम पंच पंचासत्तमोऽध्याय: ।५५।

अध्याय ५६/चौपाई राम सुजाना—राम गुनामा ।
अध्याय ५६/चौपाई तुब उर—तुब डर ।
अध्याय ५६/चौपाई भय माना—भय नाना ।
अध्याय ५६/चौपाई निज भमन—निज स्रवन ।
अध्याय ५६/चौपाई यह अब कर्म—यह अपकर्म ।
अध्याय ५६/चौपाई अमर पली जानु—अंतर पतनी जानु ।

अध्याय ५७/चौपाई बाग अरुपम—बाग अनुपम ।
अध्याय ५७/चौपाई कवनहु चाले—कवहु न चाले ।
अध्याय ५७/चौपाई विलास जग जात—विसाल जल जात ।
अध्याय ५७/चौपाई करज अनूपा—कर अनूपा ।
अध्याय ५७/चौपाई बधुन परि दुख—बंधन परि दुख ।
अध्याय ५७/चौपाई वंधन हारा—वंधन मारा ।

अध्याय ५८/दोहा परसहिं संत—पूर्सहि संत ।
अध्याय ५८/चौपाई लोक समुदाई—लोक सुखदाई ।
अध्याय ५८/चौपाई मोहि हिय देहू—मोहि हिय देहु ।
अध्याय ५८/चौपाई भये नित—भये नृप ।
अध्याय ५८/चौपाई स्रवत जग—स्रवत जल ।
अध्याय ५८/चौपाई मै धरि—मै धनि ।

अध्याय ५९/चौपाई मोह सोग प्रभु लै—मोहि सगर्भ भलैं ।
अध्याय ५९/चौपाई तेज निधाना—तेज निदाना ।

अध्याय ६०/चौपाई दारुन ख्याल—दारुन व्याल ।
अध्याय ६०/दोहा वधू विंव जिमि—एक विव जिमि ।
अध्याय ६०/चौपाई मम रथ—हम रथ ।
अध्याय ६०/चौपाई हनहिं माल—हनहिं भाल ।
अध्याय ६०/चौपाई बलवान—लव बान ।
अध्याय ६०/पुष्पिका सत्रु घनस्य काल जीत्सेनानी षष्ठतमोऽध्यायः ।६०।
=सत्रघनस्य कालजीत बंधनोनाम षष्ठितमोऽध्यायः ।६०।

अध्याय ६१/चौपाई यह मुनि—यह मुनि ।
अध्याय ६१/चौपाई गज तुड—गज सुंड ।
अध्याय ६१/चौपाई अब अरूप—अब अनूपम ।
अध्याय ६१/चौपाई वर धारा—खर धारा ।
अध्याय ६१/चौपाई कीजै सोक—कीजै कवन ।

अध्याय ६२/दोहा सोक उपाइ—कवन उपाइ ।
अध्याय ६२/चौपाई राज्य अनुज—राम अनुज ।
अध्याय ६२/चौपाई रन छडे—रन मंडे ।

अध्याय ६३/चौपाई कपि कोपि—कुस कोपि ।
अध्याय ६३/चौपाई सुग्रीव हरिसा—सुग्रीव कपीसा ।
अध्याय ६३/चौपाई हत्यों सम्प्रति—हत्यों सबनि ।
अध्याय ६३/चौपाई बहु रिन—बहु रन ।
अध्याय ६३/चौपाई ऐते सकल—हते सकल ।
अध्याय ६३/सोरठा रन सर—रन रस ।

अध्याय ६४/चौपाई परम तु बल—परम तुमुल ।

अध्याय ६४/चौपाई स्यंदन घाली—स्यंदन खाली ।

अध्याय ६४/चौपाई मूल समेत सूल—मूल समेत साल ।

अध्याय ६४/चौपाई श्रम कहु—आश्रम कहु ।

अध्याय ६४/चौपाई समर ब्यवहारा—समर मझारा ।

अध्याय ६४/चौपाई पुर दस्यो—पुर दह्यो ।

अध्याय ६४/चौपाई सुत दुःकंत—

अध्याय ६५/चौपाई निरखि नुरंग—निरखि तुरंग ।

अध्याय ६५/दोहा नरन धरिय—नर तन धरि ।

अध्याय ६५/चौपाई सोमित धाइ—सोमित घाइ ।

अध्याय ६५/चौपाई अनुज सीत—अनुज सीम ।

अध्याय ६५/चौपाई नील नल—नील रत्न ।

अध्याय ६५/चौपाई बचन प्रकार—कवन प्रकार ।

अध्याय ६५/चौपाइ उर पास—पुर पासा ।

अध्याय ६५/चौपाई रेवा सरिस—रेवा मरित ।

अध्याय ६५/चौपाई भूपति हिते—भूपति हते ।

अध्याय ६५/चौपाई चले साजि—चले जाहि ।

अध्याय ६५/चौपाई निरत करावत पंथ मझारा—चले नचावत पंथ मझारा

अध्याय ६५/चौपाई मंदिर सुखदाई—मंदिर समुदाई ।

अध्याय ६५/चौपाई तोहि सरद—तोय सरद ।

अध्याय ६५/चौपाई विविध ओर—विविध झोर ।

अध्याय ६५/चौपाई शिव कै पारस आसु करावा—
भरि भरि दीन्ह मुनिन्ह कहँ झारी ।

अध्याय ६५/दोहा अंधकार उर चंद डरि—अंधकार तें चंद डरि ।

अध्याय ६६/दोहा पति देवता धुर धारनि सीता
—पति देवता धरंधर सीता ।

अध्याय ६६/चौपाई परचरन मझारा—परिचरन मझारा ।

अध्याय ६६/दोहा कुशल बहु—कुशल कहु ।

अध्याय ६६/चौपाई विश्व की माई—बिस्व की पाई ।

अध्याय ६६/चौपाई विपिन बिसारी—बिपिन निकारी ।

अध्याय ६६/चौपाई निज नाथा—रघुनाथा ।

अध्याय ६६/चौपाई गुन अति औगुन—गुन अरु अवगुन ।

अध्याय ६६/चौपाई पितु समूह—पितु समीप ।
अध्याय ६६/चौपाई मगन नहिं—मन नहिं ।
अध्याय ६६/चौपाई सुरसरी तीर—सरजू तीर ।
अध्याय ६६/चौपाई तनै विलाप—तनै मिलाप ।
अध्याय ६६/चौपाई बहु वृत्त—बहु व्रत ।
अध्याय ६६/चौपाई मुनिवर—मुनि गुरु ।
अध्याय ६६/चौपाई उचित उत्तर—उचित इतर ।
अध्याय ६६/चौपाई पुनि बाकुरो—पुनि कुरौ ।
अध्याय ६६/चौपाई लोक सुहाई—लोक सिधाई ।
अध्याय ६६/चौपाई कृपा निधाना—कृपा निदाना ।
अध्याय ६६/चौपाई परम उचारा—परम उदारा ।

अध्याय ६७/चौपाई घोर बिसारी—घोर मझारी ।
अध्याय ६७/चौपाई बहु पुत्र समेतू—पति पुत्र समेतू ।
अध्याय ६७/चौपाई थल गोइ—थल जोइ ।
अध्याय ६७/चौपाई सकल सोइ सोई—सबै सोइ डारे ।
अध्याय ६७/चौपाई स्वागत तंत्र—स्वगत तत्र ।

अध्याय ६८/चौपाई होत मुदित—होतादिक ।
अध्याय ६८/चौपाई सुमन मुनि—सुनि मुनि ।
अध्याय ६८/चौपाई पुर नर नटी—नटिनी पुर ।
अध्याय ६८/चौपाई विसद धनु—विसद धुनि ।
अध्याय ६८/चौपाई सब भाँति निहारे—सप्रेम निहारे ।
अध्याय ६८/चौपाई पुर जन सम सुख—पुर जन सुख ।
अध्याय ६८/चौपाई अब पाही—अब तोही ।
अध्याय ६८/चौपाई किरीट समूहा—किरात समूहा ।
अध्याय ६८/चौपाई तुम माता—तुम ताता ।

———

परिशिष्ट 'ख'

शुद्धि पट्टिका (शुद्धि पत्र)

अशुद्ध	शुद्ध	अध्याय	पृष्ठ
गजन	गजन	१	१
वंभव	वैभव	१	२
हष	हर्ष	१	४
का	की	१	७
सोता	सीता	१	८
कोसला धोस	कोसलाधीस	१	९
दड	दंड	१	१०
सास्त्रानि	सास्त्रनि	१	११
भर्य	भय	२	१२
प्रमु	प्रभु	३	२३
प्रात	प्रति	३	२४
अका	अंका	४	३०
रत	रतं	५	३५
जस	जज्ञ	५	३९
तहँ	तहाँ	७	४९
बदि	बंदि	७	५१
बँधि	बाँधि	९	६३
रघुबारा	रघुबीरा	९	६५
मद	मंद	९	६७
सध्यन	संध्यन	९	६८
माना	मानी	१०	७२
बचन विनीत पुनि लखन	लखन बचन विनीत	१०	७३
रहयो	रह्यो	१०	७३
नर तारी	नर नारी	१०	७४
कचन	कंचन	१०	७५

अशुद्ध	शुद्ध	अध्याय	पृष्ठ
चदन	चंदन	१०	७७
खडा	खंडा	१२	६५
ऊर	उर	१२	६७
ल्यावं	ल्यावैं	१२	१०५
सोई	सोइ	१३	११३
प्रंम	प्रेम	१४	११६
चल्थौ	चल्यौ	१४	१२०
गभं	गर्भ	१४	१२७
व्हूत	बहूत	१६	१४०
मरुत ने	मरुत बेग	१६	१४२
लं	लैं	१६	१४६
संल	सैल	१७	१५०
कमं	कर्म	१७	१५४
दं	दैं	१७	१५६
निर्भयऊ	निर्मयऊ	१८	१६०
कसेहु	कैसेहुं	१९	१६७
प्रति दैं	प्रति	१९	१७२
राजं	राजैं	२०	१७६
पं	पैं	२०	१७८
मह	मंद	२०	१७९
अघमला	अघमूला	२०	१८६
नोलाचल	नीलांचल	२१	१९०
गगासागर	गंगासागर	२१	१९०
भजन	भंजन	२१	१९१
अतरजामी	अंतरजामी	२१	१९१
करं	करैं	२१	१९२
ततुकार	तंतुकार	२१	१९४
परं	परैं	२१	१९५
टकार	टंकार	२३	२१३
अए	अस	२३	२१९
प्रभुदित	प्रमुदित	२३	२२०
छाड़यो	छाड़्यो	२४	२२७

अशुद्ध	शुद्ध	अध्याय	पृष्ठ
प्रसगा	प्रसंगा	२४	२२९
पाछं	पाछे	२५	२३०
आछं	आछे	२५	२३०
सकं	सकै	२५	२३१
छडा	छंडा	२५	२३१
अहपति	अहिपति	२५	२३३
बधु	बंधु	२५	२३३
जीत	जीते	२६	२३८
सग्राम	संग्राम	२६	२३९
बनं	बनै	२६	२४०
छाड़यो	छाड्यो	२६	२४१
दि·ि	विदिसि दिसि	२७	२४८
खाना	काना	२८	२६०
वीणा	वीण	२८	२६२
सग	सग	२८	२६८
कठ	कंठ	२९	२७५
संन	सैन	२९	२७७
अग	अंग	३०	२८७
डांस	डांस	३१	२९४
निदत	निदंत	३१	२९६
वीना	वीग	३२	३०४
हरयो	हर्‍यो	३३	३०७
चढ़यो	चढ़्यो	३३	३१०
चढ़यो	चढ़्यो	३३	३१२
प्रससि	प्रसंसि	३३	३१४
बधु	बंधु	३३	३१४
निन	निज	३५	३३२
भुनिराऊ	मुनिराऊ	३५	३३४
परिचानी	पहिचानी	३५	३३५
लं	लै	३६	३५०
हर सिया	हरी सिया	३६	३५०
कज	कंज	३७	३७४

अशुद्ध	शुद्ध	अध्याय	पृष्ठ
बोथी	बीथी	३८	३८०
अगा	अंगा	३८	३८१
संसं	संसै	३८	३८६
सोमजही	सोनजही	३९	३९०
करयो	कर्‌यो	३९	३९५
दे दरस न आइ	देहैं दरस न आइ	३९	३९६
३८ (अध्याय)	३९ (अध्याय)	३९	३९६
भाजै	भ्राजै	४०	४०४
खड	खंड	४१	४०७
खड़ा	खंडा	४१	४०८
परयो	पर्‌यो	४१	४१०
भजि	भंजि	४२	४१९
खड	खंड	४२	४२०
पथ	पंथ	४३	४२६
सग्राम	संग्राम	४३	४२६
कोदडा	कोदंडा	४३	४३२
चडा	चंडा	४३	४३२
विषं	विषै	४३	४३३
बंल	बल	४३	४३३
सनहु	सुनहु	४४	४३७
प्रचडा	प्रचंडा	४४	४४१
श्रानित	श्रोनित	४४	४४७
चडा	चंडा	४५	४५५
बलमडा	बलमंडा	४५	४५५
बधु	बंधु	४५	४५६
अनत	अनत	४५	४५६
कोदडा	कोदंडा	४५	४६०
ह्वं	ह्वै	४६	४६८
सकेत	संकेत	४६	४७०
कुगधि	कुगंधि	४८	४९३
भगदर	भगंदर	४८	४९५
मोक्स्तादिक	मोक्षादिक	४९	५०१

अशुद्ध	शुद्ध	अध्याय	पृष्ठ
मदा	मंदा	४६	५०८
वोर	बीर	५०	५१५
भजन	भंजन	५१	५२३
चपक	चंपक	५१	५२८
खडि	खंडि	५१	५२८
चपक	चंपक	५१	५२८
स्रग	शृंग	५१	५३१
चडा	चंडा	५२	५३८
छडा	छंडा	५२	५३८
वपि	कपि	५२	५३८
सधाना	संधाना	५२	५३८
मत्र	मंत्र	५२	५४०
प्र ५डा	प्रचंडा	५३	५४५
डपंय	डर्पय	५६	५५२
भग	भंग	५४	५५७
प्रगटयो	प्रगट्यो	५५	५५८
ऋताला	ताला	५५	५६४
पडित	पंडित	५५	५६४
बस	बंस	५६	५७४
गग	गंग	५६	५७६
गंगा दसन (अध्याय का शीर्षक)	गंगा दर्सन	५८	५६४
बध	बधु	५८	५६६
लहयो	लह्यो	५६	६१०
हचै	हृदै	५६	६१३
५८ (अध्याय)	५६ (अध्याय)	५६	६२०
धरयो	धर्‍यो	६०	६२३
बलमड	बलमंड	६०	६२७
परयो	पर्‍यो	६०	६२७
अग	अंग	६०	६२८
बहुतके	बहुतन	६०	६२६
बधु	बंधु	६१	६३२

अशुद्ध	शुद्ध	अध्याय	पृष्ठ
बलवडा	बलमंडा	६१	६३३
नाहिं	नहिं	६१	६३४
धम	धर्म	६१	६३६
भगि	भंगि	६१	६३८
लागि	लगि	६१	६३८
संचुकारी	सचुकारी	६३	६५४
चम	चर्म	६३	६५७
भज्यौ	भंज्यौ	६४	६६०
बिड्डुरे	विह्वरे	६४	६६७
वृदा	बृंदा	६५	६८६
अस्राम	आश्रम	६६	६९५
सवंग्य	सर्वंग्य	६६	६९५
आनदं	आनँद	६६	७०२
आससु	आयसु	६६	७०२
विवद्धन	विवर्द्धन	६६	७१५
निगुन	निर्गुन	६६	७१८
करयौ	कर्‌यौ	६६	७२२
खडा	खंडा	६६	७२९
आर्घरम्याजुत	अधिरम्याजुत	६७	७४२
हृष	हर्ष	६७	७४४
दहु	देहु	६७	७४८
अत	अंत	६८	७५२
शुभंवस्तु	शुभंअस्तु	६८	७६२

———